नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के आधार पर माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ०प्र०, प्रयागराज द्वारा

शैक्षिक सत्र 2021-2022 के लिए प्रकाशन हेतु

हिन्दी

कक्षा-9

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ० प्र०, प्रयागराज द्वारा
निर्धारित पाठ्यक्रम पर आधारित

राजीव प्रकाशन
एण्ड कं०, प्रयागराज

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के आधार पर **माध्यमिक शिक्षा परिषद, उ.प्र., प्रयागराज** द्वारा
शैक्षिक-सत्र **2021-22** के नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित पाठ्य-पुस्तक

हिन्दी

कक्षा-9

सम्पादक

डॉ० रमेश कुमार उपाध्याय
एम०ए० (हिन्दी, संस्कृत), पी-एच०डी०
भूतपूर्व साहित्य विभागाध्यक्ष,
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागराज

डॉ०योगेन्द्र नारायण पाण्डेय
एम०ए० (हिन्दी, संस्कृत),
बी० एड०, पी-एच०डी०
स्नातकोत्तर (शिक्षा प्रशासन) वरिष्ठ प्रवक्ता
महगाँव इण्टर कॉलेज, महगाँव,
कौशाम्बी

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ0 प्र0, प्रयागराज द्वारा
निर्धारित पाठ्यक्रम पर आधारित प्रकाशक

राजीव प्रकाशन
एण्ड कं०, प्रयागराज

मूल्य
₹117.00

● प्रकाशक एवं मुद्रक :

राजीव प्रकाशन एण्ड कं०

90 बी, प्रथम तल, महाजनी टोला,
प्रयागराज-211003

● संस्करण : 2021-2022

● ✆ 0532-2972320, (M) +91-9519645566

● © प्रकाशकाधीन

चेतावनी

इस पुस्तक में समाहित सम्पूर्ण सामग्री (रेखा व छायाचित्रों सहित) के सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं। अतः कोई भी सज्जन इस पुस्तक का नाम, टाइटिल, डिजाइन तथा पाठ्य-सामग्री आदि को आंशिक या पूर्ण रूप से तोड़-मरोड़कर प्रकाशित करने का साहस न करें अन्यथा वे कानूनी तौर पर हर्जे-खर्चे के जिम्मेदार होंगे। समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन रहेंगे।

प्राक्कथन

आज के विद्यार्थी ही कल के भविष्य हैं। उनके विचारों और भावनाओं को अच्छी तरह से ढालने में ही राष्ट्रीय शिक्षा की सफलता निहित है। जो आदर्श विद्यार्थी-जीवन में उनके सम्मुख रहेगा, वही उनको अपने भावी जीवन में पग-पग पर प्रोत्साहित करेगा। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम में समय-समय पर परिवर्तन होता रहा है। पाठ्यक्रम शिक्षण-प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। शिक्षा रूपी सरिता के दोनों तट (अध्यापक और विद्यार्थी) पाठ्यक्रम द्वारा सम्बन्ध स्थापित करते हैं। माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक सुधार लाने के लिए राज्य सरकार ने पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन का द्वार प्रकाशकों के लिए खोल दिया है। इसलिए अपना उत्तरदायित्व समझते हुए हमने अपनी पाठ्य-पुस्तकों में वर्तमान शैक्षिक उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए 'गागर में सागर' भरने का भरसक प्रयास किया है।

प्रस्तुत पुस्तक की रचना **नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020** के आधार पर माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ. प्र., प्रयागराज द्वारा निर्धारित **कक्षा 9** के लिए नवीनतम् पाठ्यक्रमानुसार हिन्दी गद्य, हिन्दी काव्य, संस्कृत एवं एकांकी को इस पुस्तक में समाविष्ट किया गया है। प्रत्येक लेखक एवं कवि से सम्बन्धित उसका जीवन-परिचय, साहित्यिक परिचय, कृतियाँ एवं भाषा-शैली अलग-अलग अनुच्छेद में दिये गये हैं जिससे अध्ययन-अध्यापन में विशेष सुविधा होगी। पाठ के अन्त में विस्तृत उत्तरीय, लघु उत्तरीय, अतिलघु उत्तरीय, बहुविकल्पीय एवं व्याकरण-बोध सम्बन्धी प्रश्न के अन्तर्गत महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को समाहित किया गया है।

इसके अतिरिक्त ख्यातिप्राप्त एकांकीकारों की एकांकियों का चयन किया गया है, जो सामाजिक एवं यथार्थ जीवन से सम्बद्ध हैं। संस्कृत में अच्छे लेखकों एवं कवियों की रचनाओं का सृजन किया गया है, जो ज्ञानवर्द्धक एवं सुरुचिपूर्ण हैं। हिन्दी एवं संस्कृत व्याकरण का भी इस पुस्तक में समावेश है। व्याकरण के अनेक महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर भी प्रकाश डाला गया है।

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज द्वारा आमन्त्रित विषय-विशेषज्ञों का हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने विद्यार्थियों के मानसिक एवं बौद्धिक क्षमता के आधार पर पाठ्यक्रम का पुनर्गठन किया है। साथ ही हम उन सभी महान् लेखकों/कवियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं, जिनकी रचनाएँ इस पुस्तक में सम्मिलित की गयी हैं।

अन्त में, हम सभी पाठकों के बहुमूल्य रचनात्मक सुझावों को आमन्त्रित करते हुए उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

सम्पादक एवं प्रकाशक

पाठ्यक्रम

हिन्दी : कक्षा-9

पूर्णांक : 100

100 अंक के प्रश्न-पत्र के प्रथम भाग में 30 अंक के बहुविकल्पीय (वस्तुनिष्ठ) प्रश्न (समय 1 घंटा) एवं दूसरे भाग में 70 अंक के वर्णनात्मक प्रश्न (समय 2 घंटा)

- **प्रश्न-पत्र का प्रथम भाग : बहुविकल्पीय (वस्तुनिष्ठ) प्रश्न** **30 अंक**

1. **(क)** हिन्दी गद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय (भारतेन्दु युग तथा द्विवेदी युग) 5

(ख) हिन्दी पद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय–आदिकाल, मध्यकाल (केवल भक्तिकाल) 5

2. **गद्य हेतु निर्धारित पाठ्यवस्तु से–** 2+4+2=8

सन्दर्भ–

रेखांकित अंश की व्याख्या–

तथ्यपरक प्रश्न का उत्तर–

(पाठ–बात, मंत्र, गुरुनानक देव, गिल्लू, स्मृति, निष्ठामूर्ति कस्तूरबा, ठेले पर हिमालय, तोता)

3. **काव्य हेतु निर्धारित पाठ्यवस्तु से–** 2+4+2=8

सन्दर्भ–

व्याख्या–

काव्य सौन्दर्य–

(कबीर, मीरा, रहीम, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी ''निराला'', सोहनलाल द्विवेदी, हरिवंश राय बच्चन, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, शिवमंगल सिंह सुमन, सन्त रैदास)

4. **संस्कृत के निर्धारित पाठ्यवस्तु से–** 1+4=5

(गद्यांश अथवा श्लोक का सन्दर्भ सहित अनुवाद)

सन्दर्भ–

अनुवाद–

(पाठ–वन्दना, सदाचारः, पुरुषोत्तमः रामः, सिद्धिमन्त्रः, सुभाषितानि, परमहंस रामकृष्णः, कृष्णः गोपालनन्दनः)

5. **निर्धारित एकांकी से–**(कथानक, चरित्र-चित्रण एवं तथ्याधारित प्रश्न) 3

(एकांकी–दीपदान, नये मेहमान, व्यवहार, लक्ष्मी का स्वागत, सीमा रेखा)

6. निर्धारित पाठों के लेखकों तथा कवियों का जीवन परिचय एवं रचनाएँ– 3+3=6

7. **(1)** पाठ्य-पुस्तक से एक श्लोक– 2
(जो प्रश्नपत्र में न आया हो)

(2) संस्कृत के निर्धारित पाठों से पाठों पर आधारित दो प्रश्नों का उत्तर संस्कृत में (अतिलघु उत्तरीय) 2

8. **काव्य सौन्दर्य के तत्त्व–** 2+2+2=6

1. रस–शृंगार एवं वीर (स्थायीभाव, परिभाषा, उदाहरण, पहचान)

2. छन्द–चौपाई एवं दोहा-लक्षण, उदाहरण।

3. अलंकार–शब्दालंकार, अनुप्रास, यमक, श्लेष–परिभाषा, उदाहरण, पहचान।

9. **हिन्दी व्याकरण तथा शब्द रचना–** 2+2+2+2=8

क–वर्तनी तथा विराम चिन्ह

ख–शब्द रचना–तद्भव, तत्सम्, विलोम, पर्यायवाची

ग–समास-अव्ययीभाव, तत्पुरुष (परिभाषा, उदाहरण)

घ–मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ–अर्थ एवं वाक्य प्रयोग

10. **संस्कृत व्याकरण–** 2+2+2=6

क–सन्धि-दीर्घ, गुण (परिभाषा, उदाहरण, पहचान)

ख–शब्द रूप–राम, हरि, भानु, अस्मद्

ग–धातुरूप–गम्, भू, कृ, (लट्, लोट्, विधिलिंग, लङ् तथा लृट् लकार)

11. **क**–हिन्दी के दो सरल वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद 2

ख–पत्र लेखन (प्रार्थना-पत्र) 4

● आन्तरिक मूल्यांकन– 30 अंक

शैक्षणिक सत्र में प्रत्येक दो माह में–

प्रथम–अगस्त माह में – 10 अंक –वाचन (वाद-विवाद, भाषण, विचाराभिव्यक्ति आदि)

द्वितीय–अक्टूबर माह में – 10 अंक – (व्याकरण सम्बन्धी)

तृतीय–दिसम्बर माह में – 10 अंक – सृजनात्मक (नाटक, कहानी, कविता, पत्र लेखन आदि) अंक योग-30

निर्धारित पाठ्यवस्तु–(गद्य)

पाठ	लेखक
बात	प्रताप नारायण मिश्र
मंत्र	प्रेमचन्द
गुरुनानक देव	हजारी प्रसाद द्विवेदी
गिल्लू	महादेवी वर्मा
स्मृति	श्रीराम शर्मा
निष्ठामूर्ति कस्तूरबा	काका कालेलकर
ठेले पर हिमालय	धर्मवीर भारती
तोता	रवीन्द्रनाथ टैगोर
सड़क सुरक्षा एवं यातायात के नियम	

- **निर्धारित पाठ्यवस्तु – (काव्य)**

कबीर	साखी
मीराबाई	पदावली
रहीम	दोहा
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	प्रेम माधुरी
मैथिलीशरण गुप्त	पंचवटी
जयशंकर प्रसाद	पुनर्मिलन
सूर्यकान्त त्रिपाठी ''निराला''	दान
सोहन लाल द्विवेदी	उन्हें प्रणाम
हरिवंश राय बच्चन	पथ की पहचान
नागार्जुन	बादल को घिरते देखा
केदारनाथ अग्रवाल	अच्छा होता, सितार-संगीत की रात
शिवमंगल सिंह सुमन	युगवाणी
संत रैदास	प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी

- **निर्धारित पाठ्यवस्तु – (संस्कृत)**

वन्दना, सदाचारः, पुरुषोत्तमः रामः, सिद्धिमन्त्रः, सुभाषितानि, परमहंस रामकृष्णः, कृष्णः गोपालनन्दनः

- **निर्धारित एकांकी**

दीपदान	डॉ॰ रामकुमार वर्मा
नये मेहमान	उदयशंकर भट्ट
व्यवहार	सेठ गोविन्द दास
लक्ष्मी का स्वागत	उपेन्द्रनाथ ''अश्क''
सीमा रेखा	विष्णु प्रभाकर

●●

विषय-सूची

हिन्दी गद्य

- भूमिका ... 9
- विभिन्न गद्य-विधाएँ ... 15
- अध्ययन-अध्यापन ... 26
  1. प्रतापनारायण मिश्र – बात ... 29
  2. प्रेमचन्द – मन्त्र ... 37
  3. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी – गुरु नानकदेव ... 49
  4. महादेवी वर्मा – गिल्लू ... 57
  5. श्रीराम शर्मा – स्मृति ... 64
  6. काका कालेलकर – निष्ठामूर्ति कस्तूरबा ... 72
  7. धर्मवीर भारती – ठेले पर हिमालय ... 79
  8. रवीन्द्रनाथ टैगोर – तोता ... 86
  9. सड़क सुरक्षा एवं यातायात के नियम – ... 93
- **टिप्पणी** ... 99

हिन्दी काव्य

- भूमिका ... 101
- अध्ययन-अध्यापन ... 112
  1. कबीरदास – साखी ... 114
  2. मीराबाई – पदावली ... 119
  3. रहीम – दोहा ... 123
  4. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र – प्रेम-माधुरी ... 127
  5. मैथिलीशरण गुप्त – पंचवटी ... 132
  6. जयशंकर प्रसाद – पुनर्मिलन ... 137
  7. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' – दान ... 143
  8. सोहनलाल द्विवेदी – उन्हें प्रणाम ... 149
  9. हरिवंशराय बच्चन – पथ की पहचान ... 154
  10. नागार्जुन – बादल को घिरते देखा है ... 159
  11. केदारनाथ अग्रवाल – अच्छा होता, सितार-संगीत की रात ... 164
  12. शिवमंगल सिंह 'सुमन' – युगवाणी ... 169
  13. संत रैदास – प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी ... 175
- **टिप्पणी** ... 179

संस्कृत

प्रथमः पाठः	–	वन्दना	...	183
द्वितीयः पाठः	–	सदाचारः	...	186
तृतीयः पाठः	–	पुरुषोत्तमः रामः	...	189
चतुर्थः पाठः	–	सिद्धिमन्त्रः	...	192
पञ्चमः पाठः	–	सुभाषितानि	...	195
षष्ठः पाठः	–	परमहंसः रामकृष्णः	...	198
सप्तमः पाठः	–	कृष्णः गोपालनन्दनः	...	201

एकांकी

- भूमिका 204
- संकलित एकांकियों का सारांश 213

1. **डॉ॰ रामकुमार वर्मा** 217
   दीपदान
2. **उदयशंकर भट्ट** 230
   नये मेहमान
3. **सेठ गोविन्ददास** 240
   व्यवहार
4. **उपेन्द्रनाथ 'अश्क'** 251
   लक्ष्मी का स्वागत
5. **विष्णु प्रभाकर** 261
   सीमा-रेखा

व्याकरण

- काव्य-सौन्दर्य के तत्त्व 272
  (रस, छन्द एवं अलंकार)
- हिन्दी व्याकरण तथा शब्द-रचना 276
- संस्कृत व्याकरण 298
  (क) सन्धि (ख) संज्ञा शब्द-रूप (ग) धातु-रूप
- हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद 304
- पत्र लेखन 310
- **प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र** 315

●●

हिन्दी गद्य

भूमिका

गद्य क्या है?–छन्द, ताल, लय एवं तुकबन्दी से मुक्त तथा विचारपूर्ण एवं वाक्यबद्ध रचना को 'गद्य' कहते हैं। सामान्यतः दैनिक जीवन में प्रयुक्त होनेवाली बोलचाल की भाषा में गद्य का ही प्रयोग किया जाता है। गद्य का लक्ष्य विचारों या भावों को सहज, सरल एवं सामान्य भाषा में विशेष प्रयोजन सहित सम्प्रेषित करना है। ज्ञान-विज्ञान से लेकर कथा-साहित्य आदि की अभिव्यक्ति का माध्यम साधारण व्यवहार की भाषा गद्य ही है, जिसका प्रयोग सोचने, समझने, वर्णन, विवेचन आदि के लिए होता है। वक्ता जो कुछ सोचता है, उसे तत्काल गद्य के रूप में व्यक्त भी कर सकता है। ज्ञान-विज्ञान की समृद्धि के साथ ही गद्य की उपादेयता और महत्ता में वृद्धि होती जा रही है। किसी कवि या लेखक के हृद्‌गत भावों को समझने के लिए ज्ञान की आवश्यकता है और गद्य ज्ञान-वृद्धि का एक सफल साधन है। इसीलिए इतिहास, भूगोल, राजनीतिशास्त्र, धर्म, दर्शन और विज्ञान के क्षेत्र में ही नहीं, अपितु नाटक, कथा-साहित्य आदि में भी इसका एकच्छत्र प्रभाव स्थापित हो गया है। यदि विचारपूर्वक देखा जाय तो आधुनिक हिन्दी-साहित्य की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना गद्य का आविष्कार ही है और गद्य का विकास होने पर ही हमारे साहित्य की बहुमुखी उन्नति भी सम्भव हो सकी है।

हिन्दी गद्य के सम्बन्ध में यह धारणा है कि मेरठ और दिल्ली के आस-पास बोली जानेवाली खड़ीबोली के साहित्यिक रूप को ही हिन्दी गद्य कहा जाता है। भाषाविज्ञान की दृष्टि से ब्रजभाषा, खड़ीबोली, कन्नौजी, हरियाणवी, बुन्देलखण्डी, अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी इन आठ बोलियों को हिन्दी गद्य के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है। हिन्दी गद्य के प्राचीनतम प्रयोग हमें 'राजस्थानी' एवं 'ब्रजभाषा' में मिलते हैं।

गद्य और पद्य में अन्तर–हिन्दी साहित्य को दो भागों में बाँटा गया है–(1) गद्य साहित्य तथा (2) पद्य (काव्य) साहित्य। विषय की दृष्टि से गद्य और पद्य में यह अन्तर है कि गद्य के विषय विचारप्रधान और पद्य के विषय भावप्रधान होते हैं। दूसरी भाषाओं के समान इस भाषा के साहित्य में भी पद्य का अवतरण गद्य के बहुत पहले हुआ है। पद्य में कार्य की अनुभूति, उक्ति-वैचित्र्य, सम्प्रेषणीयता और अलंकार की प्रवृत्ति देखी जाती है, जबकि गद्य में लेखक अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है। गद्य में तर्क, बुद्धि, विवेक, चिन्तन का अंकुश होता है तो पद्य में स्वतन्त्र कल्पना की उड़ान होती है। गद्य में शब्द, वाक्य, अर्थ आदि सभी प्रायः सामान्य होते हैं, जबकि पद्य में विशिष्ट। कविता शब्दों की नयी सृष्टि है, इसलिए इसका कोई भी शब्द कोशीय अर्थ से प्रतिबन्धित नहीं होता, जीवन की अनुभूतियों से उसका भावात्मक सम्बन्ध होता है, जबकि गद्य भावात्मक सन्दर्भों के स्थान पर उनके वस्तुनिष्ठ प्रतीकात्मक अर्थ ग्रहण करता है। गद्य को 'निर्माणात्मक अभिव्यक्ति' कहा गया है अर्थात् ऐसी अभिव्यक्ति जिसमें शब्द निर्माता के चारों ओर प्रयोग के लिए तैयार रहते हैं। गद्य की भाषा काव्य की अपेक्षा अधिक स्पष्ट, व्याकरणसम्मत और व्यवस्थित होती है। उक्ति-वैचित्र्य और अलंकरण की प्रवृत्ति भी गद्य की अपेक्षा काव्य में अधिक होती है। गद्य में विस्तार अधिक होने के कारण किसी बात को खोलकर कहने की प्रवृत्ति रहती है, जबकि काव्य में किसी बात को संकेत रूप में ही कहने की प्रवृत्ति होती है। गद्य में यथार्थ, वस्तुपरक और तथ्यात्मक वर्णन पाया जाता है, जबकि काव्य में वर्णन सूक्ष्म, संकेतात्मक होता है। गद्य में विरला ही वाक्य अपूर्ण होता है, काव्य में विरला ही वाक्य पूर्ण होता है। इस प्रकार गद्य और पद्य विषय, भाषा, प्रस्तुति, शिल्प आदि की दृष्टि से अभिव्यक्ति के सर्वथा भिन्न दो रूप हैं और दोनों के दृष्टिकोण एवं प्रयोजन भी भिन्न होते हैं। गद्य में व्याकरण के नियमों की अवहेलना नहीं की जा सकती, जबकि पद्य में व्याकरण के नियमों पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। यद्यपि ऐसा नहीं है कि गद्य में भावपूर्ण चिन्तनशील मनःस्थितियों की अभिव्यक्ति नहीं हो सकती और पद्य में विचारों की अभिव्यक्ति नहीं हो सकती, किन्तु सामान्यतः गद्य एवं पद्य की प्रकृति उपर्युक्त प्रकार की ही होती है।

हिन्दी गद्य का स्वरूप और विकास

यद्यपि वर्तमान में प्रचलित हिन्दी भाषा खड़ीबोली का परिनिष्ठित एवं साहित्यिक रूप है, परन्तु खड़ीबोली स्वयं में कोई बोली नहीं है। इसका विकास कई क्षेत्रीय बोलियों के समन्वय के फलस्वरूप हुआ है। विद्वानों ने इसके प्राचीन रूप पर आधारित तत्त्वों की खोज करने के बाद यह माना है कि खड़ीबोली का विकास मुख्यतः ब्रजभाषा एवं राजस्थानी गद्य से हुआ है। कुछ विद्वान् इसको दक्खिनी एवं अवधी गद्य का सम्मिश्रित रूप भी मानते हैं। आज हिन्दी गद्य का जो साहित्यिक रूप है, उसमें कई क्षेत्रीय बोलियों का विकास दृष्टिगोचर होता है।

हिन्दी गद्य के आविर्भाव के सम्बन्ध में विद्वानों के अलग-अलग मत हैं। कुछ 10वीं शताब्दी मानते हैं, तो बहुतेरे 13वीं शताब्दी। 'राजस्थानी' एवं 'ब्रजभाषा' में हमें गद्य के प्राचीनतम प्रयोग मिलते हैं। राजस्थानी गद्य की समय-सीमा 11वीं शताब्दी से 14वीं शताब्दी तथा ब्रजभाषा गद्य की समय-सीमा 14वीं शताब्दी से 16वीं शताब्दी तक मानना उचित प्रतीत होता है। अतः यह स्पष्ट है कि 10वीं-11वीं से 13वीं शताब्दी के मध्य ही हिन्दी गद्य का आविर्भाव हुआ था। अध्ययन की दृष्टि से हिन्दी गद्य साहित्य के विकास को निम्नलिखित कालक्रमों में विभाजित किया जा सकता है–

1.	पूर्व भारतेन्दु-युग अथवा प्राचीन युग	–	13वीं शताब्दी से 1868 ई0 तक
2.	भारतेन्दु-युग	–	सन् 1868 ई0 से 1900 ई0 तक
3.	द्विवेदी-युग	–	सन् 1900 ई0 से 1922 ई0 तक
4.	शुक्ल-युग (छायावादी-युग)	–	सन् 1919 ई0 से 1938 ई0 तक
5.	शुक्लोत्तर-युग (छायावादोत्तर-युग)	–	सन् 1938 ई0 से 1947 ई0 तक
6.	स्वातन्त्र्योत्तर-युग	–	सन् 1947 ई0 से अब तक

प्राचीन युग–इस युग के अन्तर्गत हिन्दी गद्य के उद्भव से भारतेन्दु-युग से पूर्व तक का समय लिया गया है। वस्तुतः हिन्दी गद्य-साहित्य के आदिकाल में हिन्दी गद्य के प्राचीन रूप ही यत्र-तत्र उपलब्ध होते हैं। राजस्थान व दक्षिण भारत में तो अवश्य हिन्दी गद्य के प्रारम्भिक रूप की झलक मिलती है। उत्तर भारत में ब्रजभाषा गद्य के ही उदाहरण अधिक मात्रा में प्राप्त होते हैं। प्राचीन युग में काव्य-रचना के साथ-साथ गद्य-रचना की दिशा में भी कुछ स्फुट प्रयास लक्षित होते हैं। 'राउलवेल' (चम्पू), 'उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण' और 'वर्णरत्नाकर' इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। कुछ विद्वान् 'राउलवेल' को ही राजस्थानी गद्य की प्राचीनतम रचना मानते हैं। 'राउलवेल' (राजकुल विलास) एक शिलांकित कृति है, जिसका पाठ मुम्बई के प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय से उपलब्ध कर प्रकाशित कराया गया है। विद्वानों ने इसका रचनाकाल 11वीं शताब्दी माना है। इसकी रचना 'राउल' नायिका के नख-शिख वर्णन के प्रसंग में हुई है। आरम्भ में इस कृति के रचयिता 'रोडा' ने राउल के सौन्दर्य का वर्णन पद्य में किया है और लेख के प्रारम्भ तथा अन्त में गद्य का प्रयोग किया गया है। दूसरी रचना 'उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण' है, जिसकी रचना महाराज गोविन्दचन्द्र के सभा-पण्डित दामोदर शर्मा ने 12वीं शताब्दी में की थी। इस ग्रन्थ की भाषा का एक उदाहरण इस प्रकार है–"वेद पढ़ब, स्मृति अभ्यासिब, पुराण देखब, धर्म करब।" इससे गद्य और पद्य दोनों शैलियों की हिन्दी भाषा में तत्सम शब्दावली के प्रयोग की बढ़ती हुई प्रवृत्ति का पता चलता है। मैथिली के प्राप्त ग्रन्थों में ज्योतिरीश्वर का 'वर्णरत्नाकर' ग्रन्थ ऐसी तीसरी रचना है। मैथिली-हिन्दी में रचित गद्य की यह पुस्तक डॉ0 सुनीतिकुमार चटर्जी और पण्डित बबुआ मिश्र के सम्पादन में बंगाल एशियाटिक सोसाइटी से प्रकाशित हो चुकी है। डॉ0 हजारीप्रसाद द्विवेदी के मतानुसार इसकी रचना 14वीं शताब्दी में हुई होगी।

इसके उपरान्त तो राजस्थानी गद्य, ब्रजभाषा गद्य और खड़ीबोली का प्रारम्भिक गद्य-साहित्य आदि ही विचारणीय सामग्री है। हिन्दी-परिवार की भाषाओं में गद्य का उन्मेष कालक्रम से सर्वप्रथम राजस्थानी में प्राप्त होता है। राजस्थानी में गद्य-परम्परा निश्चित रूप से ईसा की 13वीं शताब्दी से प्रारम्भ होती है। राजस्थानी गद्य के प्रारम्भिक विकास में जैन विद्वानों का विशेष योग रहा है और इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह ब्रजभाषा के गद्य-साहित्य की अपेक्षा अधिक प्राचीन व समृद्ध है। राजस्थानी गद्य दानपत्रों, पट्टे, परवानों, सनदों, वार्त्ताओं और टीकाओं आदि के रूप में उपलब्ध होता है। उस पर संस्कृत अपभ्रंश की परम्परा

का प्रभाव स्वाभाविक रूप से पड़ा है। राजस्थानी की प्रमुख गद्य रचनाएँ हैं–'आराधना', 'बालशिक्षा टीका', 'जगत सुन्दरी प्रयोगमाला', 'अतिचार', 'नवकार' 'व्याख्यान टीका', 'सर्वतीर्थ नमस्कार स्तवन', 'तत्त्वविचार प्रकरण', 'पृथ्वीचन्द्र चरित्र', 'धनपाल कथा', 'तपोगच्छ गुर्वावली', 'अंजनासुन्दरी कथा' आदि।

ब्रजभाषा गद्य का सूत्रपात संवत् 1400 वि0 के आस-पास माना जाता है। ब्रजभाषा गद्य का प्राचीनतम रूप **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** के अनुसार सन् 1457 ई0 तक का ही उपलब्ध होता है और उन्होंने नाथपन्थी योगियों के धार्मिक उपदेशों में से कुछ उद्धृत कर संवत् 1400 वि0 के आस-पास का ब्रजभाषा गद्य मान लिया है। धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों के साथ वैद्यक, ज्योतिष, इतिहास, भूगोल, गणित, धनुर्वेद, प्रश्न, शकुन आदि विषयों का प्रतिपादन ब्रजभाषा गद्य में हुआ है। ब्रजभाषा-गद्य-साहित्य स्थूलतः चार वर्गों में विभक्त किया जा सकता है–मौलिक, टीकात्मक, अनूदित और पद्यप्रधान रचनाओं में यत्र-तत्र प्रयुक्त टिप्पणीपरक गद्य। मौलिक (स्वतन्त्र) गद्य वल्लभ सम्प्रदाय के वचनामृतों, वार्त्ताग्रन्थों, कथा पुस्तकों, दर्शन विषयक ग्रन्थों, वैद्यक, ज्योतिष आदि उपयोगी विषयों, रचनाओं और पत्रों, शिलालेखों तथा कागज-पत्रों के रूप में उपलब्ध होता है। टीका, टिप्पणी, तिलक और भावना शीर्षक से व्याख्यात्मक गद्य प्राप्त होता है। इसी प्रकार अनुवाद अथवा छायानुवाद रूप में लिखित ग्रन्थ भी प्राप्त है। गद्यप्रधान ग्रन्थों में टिप्पणीपरक गद्य चर्चा, वार्त्ता, तिलक या वचनिका शीर्षक लिखा गया है। 17वीं शताब्दी तक की लिखी हुई जो रचनाएँ उपलब्ध हैं, उनमें गोस्वामी विट्ठलनाथ का 'शृंगार रस-मण्डन', गोकुलनाथ जी की 'चौरासी वैष्णवन की वार्त्ता' और 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्त्ता', नाभादास जी का 'अष्टयाम', 'भक्तमाल', बैकुण्ठमणि शुक्ल के 'अगहन महातम' एवं 'वैसाख महातम', ध्रुवदास कृत 'सिद्धान्तविचार' तथा लल्लूलाल कृत 'माधव विलास' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन्हीं के साथ टीकाओं की परम्परा भी चलती रही। प्रमुख टीकाएँ हैं– भुवनदीपिका टीका, एकादसस्कन्ध टीका, हितसंवर्धिनी टीका, धरनीधरदास की टीका और लोकनाथ की गद्य-पद्यमयी टीका।

आधुनिक काल में जिस भाषा में हिन्दी-गद्य लिखा जा रहा है, वह **खड़ीबोली** गद्य ही है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने खड़ीबोली गद्य का प्रारम्भ अकबर के दरबारी कवि गंग द्वारा लिखित 'चन्द छन्द बरनन की महिमा' से माना है। मुसलमानों के शासन-काल में भी खड़ीबोली का उपयोग होता था और वह शिष्ट समाज की भाषा थी तथा उसका उपयोग जनसाधारण के लिए भी होता था। हाँ, यह अवश्य था कि वह एक ऐतिहासिक भाषा के रूप में नहीं थी। ज्यों-ज्यों उसका उपयोग अधिक होने लगा, त्यों-त्यों वह साहित्य-सिंहासन पर प्रतिष्ठित होने के अनुकूल समझी जाने लगी। अंग्रेजों के प्रभाव से सर्वथा पृथक् फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना के पहले भी पटियाला के रामप्रसाद निरंजनीकृत 'योग वासिष्ठ' (सन् 1741 ई0) में, बसवा (म0 प्र0) निवासी पं0 दौलतराम कृत 'जैन पद्मपुराण' के भावानुवाद (1761 ई0) में, जनप्रह्लाद के 'नृसिंह तापनी उपनिषद्' (1719 ई0) में, मथुरानाथ शुक्ल के 'पंचांग दर्शन' (1880 ई0) नामक ज्योतिष ग्रन्थ की रचना में और इसी परम्परा में आगे चलकर मुंशी सदासुखलाल के 'विष्णु पुराण' के आधार पर रचित 'सुखसागर', इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी', लल्लूलाल के 'प्रेम सागर' व सदल मिश्र के 'नासिकेतोपाख्यान' आदि ग्रन्थों में खड़ीबोली गद्य की अखण्ड परम्परा परिलक्षित होती है। इनमें से अन्तिम चार लेखकों–मुंशी सदासुखलाल, इंशा अल्ला खाँ, लल्लूलाल व सदल मिश्र को विशेष स्थान प्राप्त है और इनकी कृतियों का रचनाकाल सन् 1803 ई0 के लगभग माना जाता है। इनमें से सदल मिश्र एवं पं0 लल्लूलाल फोर्ट विलियम कॉलेज, कलकत्ता में प्राध्यापक थे, जबकि इंशा अल्ला खाँ लखनऊ के नवाब के दरबार में मुलाजिम थे तथा मुंशी सदासुखलाल दिल्ली के रहनेवाले थे।

मुंशी सदासुखलाल की कृति '**सुखसागर**' एक धार्मिक ग्रन्थ है। इसकी शैली आख्यात्मक है तथा भाषा पर पण्डिताऊपन एवं फारसी का प्रभाव है। इंशा अल्ला खाँ की रचना '**रानी केतकी की कहानी**' की शैली हास्यप्रधान है तथा इस पर उर्दू, अरबी एवं फारसी का प्रभाव है। लल्लूलाल की रचना '**प्रेमसागर**' में ब्रजभाषा का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है तथा शैली आख्यात्मक है। सदल मिश्र की रचना '**नासिकेतोपाख्यान**' की भाषा में पूर्वीपन अधिक है। इसकी वाक्य-रचना शिथिल तथा शैली आख्यात्मक है।

खड़ीबोली गद्य के विकास में ईसाई धर्म प्रचारकों ने भी अपना योग दिया। बाइबिल का उन्होंने खड़ीबोली में अनुवाद कराया और उसे उत्तर भारत के विभिन्न स्थानों में वितरित कर अपने धर्म के साथ हिन्दी का भी प्रसार किया। आगे चलकर ईसाई धर्म-

प्रचारकों के विरोध में ब्रह्मसमाज और आर्यसमाज आदि जिन समाजसुधार-आन्दोलनों का जन्म हुआ, उन्होंने भारतीय संस्कृति के मूल रूप की रक्षा करते हुए हिन्दी गद्य को भी प्रोत्साहित किया। ब्रह्मसमाज के प्रवर्तक राजा राममोहन राय ने 'बंगदूत' (सन् 1829 ई0) पत्र द्वारा हिन्दी का समर्थन किया और आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती गुजराती होते हुए भी हिन्दी को आर्यभाषा के रूप में घोषित किया। स्वामी दयानन्द जी ने अपने 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना भी हिन्दी में की थी और पहली बार हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने का प्रयास किया।

19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में शिक्षा-संस्थाओं के विकास के फलस्वरूप पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण होने से हिन्दी गद्य का विकसित रूप हमारे सामने आया। खड़ीबोली गद्य के उत्थान में समाचार-पत्रों का भी महत्त्वपूर्ण योग रहा है। हिन्दी का सर्वप्रथम समाचार-पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' 30 मई, सन् 1826 ई0 को कोलकाता में प्रकाशित हुआ। सन् 1833 ई0 तक ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने शासकीय कार्यों के लिए फारसी भाषा को ही अपनाया और सर सैयद अहमद खाँ, गार्सा-द-तासी एवं जॉन वीम्स आदि ने उर्दू का पक्ष लेकर हिन्दी को रूढ़िवादी माना, लेकिन एफ0 एस0 ग्राउज ने हिन्दी का समर्थन करते हुए उर्दू का विरोध किया।

उक्त परिस्थितियों के मध्य **राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द'** और **लक्ष्मणसिंह** नामक दो विभूतियों ने साहित्य-जगत् में प्रवेश किया। राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' हिन्दी के समर्थक थे। वे शिक्षा विभाग में उच्च अधिकारी थे। जब उन्होंने हिन्दी का विरोध होते हुए देखा तब हिन्दी में अरबी-फारसी के शब्दों का समावेश उचित माना। बाद में उनकी भाषा अरबी-फारसी शब्दों से कुछ इतना अधिक बोझिल हो गयी कि उसमें हिन्दीपन ही न रहा। राजा लक्ष्मणसिंह ने उनके विपरीत यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि बिना अरबी-फारसी के शब्दों की अधिकता के भाषा में लोच और सौन्दर्य आ सकता है तथा भाव-व्यंजकता बनी रह सकती है। वे हिन्दी उसी भाषा को मानते हैं जिसमें संस्कृत शब्दों की अधिकता हो। कुछ अहिन्दी भाषा-भाषियों ने भी हिन्दी का समर्थन किया था, जिनमें नवीनचन्द्र राय तथा श्रद्धाराम फुल्लौरी आदि प्रमुख हैं।

भारतेन्दु-युग

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** के उदय से एक नवीन क्रान्ति का श्रीगणेश हुआ, इसलिए हिन्दी गद्य के इस युग को भारतेन्दु-युग (1868 ई0 से 1900 ई0 तक) के नाम से जाना जाता है। भारतेन्दु जी से पूर्व हिन्दी गद्य का कोई निश्चित स्वरूप नहीं था। कुछ लेखकों की कृतियों में अरबी-फारसी शब्दों की प्रधानता थी, तो कुछ लेखकों की कृतियों में संस्कृत की तत्सम शब्दावली की। हिन्दी गद्य के ये दोनों ही रूप जनसामान्य की समझ से बाहर थे। भारतेन्दु जी ने पहली बार अपने गद्य में साधारण बोलचाल के शब्दों को स्थान देकर हिन्दी-गद्य को एक निश्चित रूप दिया और उसे एक प्रगतिशील भाषा प्रदान कर तत्कालीन साहित्यिक चेतना को जागृत किया। उन्होंने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया, स्वयं लिखा और अन्य लेखकों को लेखन की प्रेरणा दी। चूँकि वर्तमान हिन्दी गद्य का पौधा भारतेन्दु जी ने ही रोपा था, इसलिए इन्हें हिन्दी गद्य का जनक कहा जाता है।

साधारणतः भारतेन्दु जी की सभी रचनाओं में अरबी-फारसी के शब्द प्रयुक्त हुए हैं, पर वे ही जो व्यवहार में निरन्तर प्रवेश पा चुके थे। ऐसे शब्द व्यवहार के क्षेत्र में जहाँ कुछ विकृत रूप में पाये गये, वहाँ उसी रूप में स्वीकार किये गये हैं; राजा शिवप्रसाद की भाँति तत्सम रूप में नहीं। दूसरी ओर संस्कृत शब्दों के तद्भव रूपों का भी बड़ी सुन्दरता से व्यवहार किया गया है। इसमें उन्होंने बोलचाल के व्यावहारिक रूपों का विशेष ध्यान रखा है। उनके प्रयुक्त शब्द इतने चलते हुए हैं कि आज भी हम अपनी नित्य की भाषा में उनका प्रयोग उन्हीं रूपों में करते हैं। इन तद्भव रूपों के प्रयोग से भाषा में कहीं शिथिलता या ग्राम्यत्व आ गया हो, यह बात भी नहीं है, वरन् इसके विपरीत भाषा और अधिक व्यावहारिक एवं भावव्यंजक हो गयी है।

इस प्रकार भारतेन्दु जी ने अपनी साहित्य-सेवा द्वारा हिन्दी-साहित्य में एक नूतन युग का निर्माण किया। अपने जीवन-काल में गद्य लेखकों व कवियों का एक अच्छा-सा मण्डल तैयार किया। उनके युग के गद्य-लेखकों में बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, श्रीनिवासदास, केशवदास भट्ट, कार्तिकप्रसाद खत्री, ठाकुर जगमोहन सिंह, राधाचरण गोस्वामी, अम्बिकादत्त

व्यास, दुर्गाप्रसाद मिश्र आदि प्रमुख थे। भारतेन्दु के पश्चात् हिन्दी गद्य को स्थिरता और शक्ति प्रदान करने में बालकृष्ण भट्ट व प्रतापनारायण मिश्र ने अपना विशेष योग दिया और बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' ने तो एक नूतन व अलौकिक गद्य-शैली का रूप-निर्माण कर गद्य की शक्ति विशेष रूप से बढ़ायी। इसी काल में गोविन्दनारायण मिश्र व बालमुकुन्द गुप्त ने अपनी विभिन्न गद्य-शैलियों के प्रयोग द्वारा हिन्दी गद्य-साहित्य को समृद्ध किया। इस युग में गद्य की अनेक विधाओं पर लेखकों ने लेखनी चलायी।

इस समय भारतीय जनता की मुक्ति चेतना का नया रूप-रंग साम्राज्यवाद विरोधी स्वर लिये था, इसी स्वर की प्रखर अभिव्यक्ति इस युग की पत्रिकाओं में हुई। हिन्दी गद्य की वैचारिक शक्ति से भारतेन्दु ने 'कविवचन सुधा', 'हरिश्चन्द्र मैगजीन', 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका', पं0 बालकृष्ण भट्ट ने 'हिन्दी प्रदीप', प्रतापनारायण मिश्र ने 'ब्राह्मण' तथा बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' ने 'आनन्द कादम्बिनी'–जैसी पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से ब्रिटिश साम्राज्यवाद विरोधी संग्राम खुलकर लड़ा। हिन्दी गद्य के विकास और प्रसार में भारतेन्दु-युग की पत्र-पत्रिकाओं के योगदान के अतिरिक्त अनुवादों की भूमिका को भी कम नहीं आँका जा सकता।

- **प्रमुख लेखक**

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, राधाकृष्णदास, बालमुकुन्द गुप्त, अम्बिकादत्त व्यास, किशोरीलाल गोस्वामी, श्रीनिवासदास, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', कार्तिकप्रसाद खत्री, देवकीनन्दन खत्री।

- **प्रमुख कृतियाँ**

सत्य हरिश्चन्द्र, भारत-दुर्दशा, हठी हम्मीर, कलिकौतुक, नूतन ब्रह्मचारी, सौ अजान एक सुजान, नहुष, चन्द्रावली नाटिका, महाराणा प्रताप, शिव-शम्भु का चिट्ठा, चन्द्रकान्ता।

हिन्दी-गद्य-साहित्य के इस युग में हिन्दी गद्य की प्रेरणा देनेवाली राजनीतिक जागृति भी प्रमुख शक्ति थी। इसी युग में सन् 1893 ई0 में 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' की स्थापना हुई, जिसने हिन्दी साहित्य के विकास का एक नवीन अध्याय प्रारम्भ किया। इसी प्रकार 1897 ई0 में नागरी प्रचारिणी पत्रिका का प्रकाशन भी इस युग की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना है। इस युग के अन्य लेखकों में बाबू नवीनचन्द्र राय, बाबू तोताराम, राजा रामपाल सिंह, मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या, भीमसेन शर्मा, देवीप्रसाद मुन्सिफ उल्लेखनीय हैं। अतः इसमें कोई सन्देह नहीं कि हिन्दी गद्य के विकास की दृष्टि से यह युग अर्थात् 1868 ई0 से 1900 ई0 तक का समय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इन वर्षों में न केवल खड़ीबोली का विकास हुआ, अपितु हिन्दी-गद्य-साहित्य की उन्नति भी हुई।

द्विवेदी-युग

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के पश्चात् हिन्दी गद्य के क्षेत्र में एक महान् व्यक्तित्व **आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी** का आगमन हुआ। हिन्दी गद्य के इस युग का नामकरण उन्हीं के नाम पर हुआ। इण्डियन प्रेस, प्रयाग से सन् 1903 ई0 में 'सरस्वती' मासिक पत्रिका का प्रकाशन हिन्दी साहित्य की महत्त्वपूर्ण घटना है। 'सरस्वती' के सम्पादक के रूप में द्विवेदी जी ने हिन्दी भाषा और उसके गद्य के परिष्कार एवं परिमार्जन का कार्य आरम्भ किया। उन्होंने गद्य की त्रुटियों की ओर साहित्यकारों का ध्यान आकृष्ट किया, अपरिपक्व लेखकों की भाषा-शैली की आलोचना की और उन्हें सुझाव दिये तथा नये लेखकों को प्रोत्साहित भी किया। स्वयं द्विवेदी जी ने कला, इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, पुरातत्त्व और प्राचीन साहित्य पर श्रेष्ठ रचनाएँ प्रस्तुत कीं। शब्द-भण्डार की वृद्धि के अतिरिक्त गद्य की विविध शैलियाँ भी इस युग में विकसित हुईं। यों तो 'सरस्वती' के प्रथम वर्ष की सम्पादन समिति में कार्तिकप्रसाद खत्री, किशोरीलाल गोस्वामी, जगन्नाथदास रत्नाकर, राधाकृष्णदास और श्यामसुन्दरदास-जैसे महान् व प्रतिष्ठित हिन्दीसेवी थे, पर बाद में दो वर्षों तक केवल श्यामसुन्दरदास जी ने इसका सम्पादन कार्य सँभाला तथा सन् 1903 से 17 वर्षों तक तो महावीरप्रसाद द्विवेदी ही इसके सम्पादक रहे।

द्विवेदी-युग में विविध प्रकार की भाषा-शैलियों के जन्म के साथ-साथ गद्य के विविध रूपों का विकास हुआ। प्रेमचन्द, प्रसाद, बालमुकुन्द गुप्त, पद्मसिंह शर्मा, श्यामसुन्दरदास और रामचन्द्र शुक्ल-जैसे लेखक इसी युग की देन हैं। निबन्ध के क्षेत्र में स्वयं द्विवेदी जी के अतिरिक्त बालमुकुन्द गुप्त, पूर्णसिंह, यशोदानन्दन अखौरी, पद्मसिंह शर्मा, श्यामसुन्दरदास व रामचन्द्र

शुक्ल का कार्य प्रशंसनीय है।

कहानी का तो जन्म ही 'सरस्वती' से हुआ। पहले अंग्रेजी और संस्कृत साहित्य की प्रसिद्ध कृतियों के कहानी-रूपान्तर 'सरस्वती' में प्रकाशित हुए। इसके बाद हिन्दी की मौलिक कहानी ने जन्म लिया और धीरे-धीरे घटनाप्रधान, चरित्रप्रधान, वातावरणप्रधान, भावनाप्रधान कहानियाँ प्रकाश में आयीं। प्रेमचन्द, प्रसाद, कौशिक, चन्द्रधरशर्मा 'गुलेरी' और सुदर्शन इस युग के प्रतिनिधि कहानीकार हैं। उपन्यास और कहानी के क्षेत्र में प्रेमचन्द का उत्तराधिकार जिन लेखकों ने सफलतापूर्वक वहन किया, उनमें जैनेन्द्र कुमार, उग्र, कौशिक, अज्ञेय, चतुरसेन शास्त्री, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, भगवतीचरण वर्मा, राहुल सांकृत्यायन, यशपाल, इलाचन्द्र जोशी, अमृतलाल नागर आदि के नाम स्मरणीय हैं।

● प्रमुख लेखक

महावीरप्रसाद द्विवेदी, श्यामसुन्दरदास, मिश्रबन्धु, पद्मसिंह शर्मा, चन्द्रधरशर्मा 'गुलेरी', बद्रीनाथ भट्ट, पूर्णसिंह, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी।

● प्रमुख कृतियाँ

रसज्ञ-रंजन, साहित्य सीकर, नैषध चरित चर्चा, साहित्यालोचन, रूपक रहस्य, भाषाविज्ञान, काव्य के रूप, सिद्धान्त और अध्ययन।

पत्र-पत्रिकाओं में 'सरस्वती' के अतिरिक्त 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका', 'इन्दु', 'माधुरी', 'मर्यादा', 'सुधा', 'जागरण', 'हंस', 'प्रभा', 'कर्मवीर', 'विशाल भारत' आदि ने हिन्दी साहित्य के सर्वतोमुखी विकास में बहुत बड़ी भूमिका अदा की।

उपन्यास साहित्य में देवकीनन्दन खत्री के चमत्कारप्रधान तिलस्मी उपन्यासों की परम्परा से हटकर मानव-चरित्र की ओर इस युग के रचनाकार सचेष्ट हुए। जैसे तिलस्मी, जासूसी, सामाजिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, चरित्रप्रधान, भावप्रधान आदि सभी प्रकार के उपन्यास इस युग में लिखे गये। द्विवेदी-युग के उपन्यासकारों में प्रेमचन्द के अतिरिक्त किशोरीलाल गोस्वामी, गोपालराम गहमरी, वृन्दावनलाल वर्मा, विश्वम्भरनाथ कौशिक और चतुरसेन शास्त्री उल्लेखनीय हैं। भारतेन्दु के बाद नाटक के क्षेत्र में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान जयशंकर प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों का है। प्रसाद के परवर्ती नाटककारों में लक्ष्मीनारायण मिश्र, हरिकृष्ण प्रेमी, डॉ० रामकुमार वर्मा, सेठ गोविन्ददास, उदयशंकर भट्ट आदि के नाम लिये जा सकते हैं।

द्विवेदी-युग के बाद तो हिन्दी गद्य-लेखकों के एक नवीन वर्ग का उदय हुआ जिसमें वृन्दावनलाल वर्मा, जैनेन्द्र, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, निराला, भगवतीचरण वर्मा, नन्ददुलारे वाजपेयी, सेठ गोविन्ददास, डॉ० रामकुमार वर्मा, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी, गुलाबराय, राहुल सांकृत्यायन, महादेवी वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, माखनलाल चतुर्वेदी, सुमित्रानन्दन पन्त आदि उल्लेखनीय हैं। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् तो हिन्दी को सभी क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। स्वाभाविक रूप में ज्यों-ज्यों हिन्दी गद्य के विविध साहित्यिक रूपों का विकास होता गया, त्यों-त्यों हिन्दी गद्य भी समृद्ध होता रहा।

अनेक संघर्षों का सामना करते-करते हिन्दी गद्य अब विकास-क्रम की सीमा तक पहुँच चुका है तथा उसे एक सार्वभौम रूप भी प्राप्त हो रहा है।

●●●

विभिन्न गद्य–विधाएँ

● निबन्ध

निबन्ध का अर्थ है–अच्छी तरह बँधा हुआ। संक्षेप में निबन्ध उस गद्य-रचना को कहते हैं, जिसमें लेखक किसी विषय पर अपने विचारों को सीमित, सजीव, स्वच्छन्द और सुव्यवस्थित रूप से व्यक्त करता है। आलोचकों ने निबन्ध को गद्य की कसौटी कहा है। निबन्ध में लेखक किसी भी विषय का पूर्ण विवेचन, विश्लेषण, परीक्षण, व्याख्या एवं मूल्यांकन करता है। वह विषय का निर्वाह अपनी इच्छानुसार करता है, जिसमें वह स्वतन्त्र रहता है। निबन्ध आत्मपरक होता है तथा इसमें आत्मीयता और भावमयता के साथ-साथ विचारों की तर्कपूर्ण अभिव्यक्ति होती है। आधुनिक हिन्दी निबन्ध संस्कृत के निबन्ध से पूर्णतया भिन्न है तथा अंग्रेजी के 'एसे' के अधिक निकट है। यद्यपि प्राचीन संस्कृत और प्राकृत साहित्य में निबन्ध तथा प्रबन्ध शब्दों का प्रयोग चिरकाल से मिलता है, पर जिस अर्थ में आजकल इन शब्दों का प्रयोग हो रहा है, उस अर्थ में पहले उसका प्रचलन कभी न था। इसलिए निबन्ध-लेखन की परम्परा का आरम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से ही मानना चाहिए। अतः कहा जा सकता है कि भारतेन्दु-युग में निबन्ध का आविर्भाव हुआ, द्विवेदी-युग में इसका परिमार्जन हुआ और आधुनिक युग में इसमें प्रौढ़ता आ गयी। विषय एवं शैली की दृष्टि से इसके प्रमुख चार भेद हैं–

(अ) विचारात्मक निबन्ध–विचारात्मक निबन्ध में लेखक अपने चिन्तन और मनन के फलस्वरूप उत्पन्न विचारों को प्रस्तुत करता है। इसमें तर्कपूर्ण विवेचन, विश्लेषण एवं गवेषणा का आधिपत्य होता है तथा विषय भी अधिकांशतः दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, शास्त्रीय, विवेचनात्मक आदि होते हैं। प्रस्तुत संकलन में श्यामसुन्दर दास का 'कर्त्तव्य और सत्यता', विनोबा भावे का 'चिर तारुण्य की साधना' विचारात्मक निबन्ध ही हैं।

(ब) भावात्मक निबन्ध–भावात्मक निबन्ध में बुद्धितत्त्व गौण तथा भावतत्त्व प्रमुख होता है। ऐसे निबन्धों का लक्ष्य पाठक की बुद्धि की अपेक्षा उसके हृदय को प्रभावित करना होता है। इसकी भाषा सरल, सुन्दर, ललित तथा मधुर होती है तथा भावों को उत्कर्ष प्रदान करने के लिए कल्पना एवं अलंकारों का भी समुचित प्रयोग रहता है। इनका वाक्य-विन्यास सरल तथा शैली कवित्वपूर्ण होती है। प्रस्तुत संकलन में रामवृक्ष बेनीपुरी का 'नींव की ईंट' तथा वियोगी हरि का 'विश्व-मन्दिर' इसी प्रकार के निबन्ध हैं।

(स) वर्णनात्मक निबन्ध–ऐसे निबन्धों में किसी घटना, दृश्य अथवा वस्तु का विस्तार से वर्णन किया जाता है अर्थात् वस्तु, स्थान, व्यक्ति, दृश्य आदि के निरीक्षण के आधार पर आकर्षक, सरस एवं रमणीय वर्णन जिन निबन्धों में होता है, उन्हें वर्णनात्मक निबन्ध कहा जाता है। इनकी शैली दो प्रकार की होती है। एक में यथार्थ वर्णन तथा दूसरी में अलंकृत वर्णन होता है। यथार्थ वर्णन सूक्ष्म निरीक्षण एवं निजी अनुभूति के आधार पर होता है तथा अलंकृत वर्णन में कल्पना का प्रयोग होता है। ऐसे निबन्धों में चित्रात्मकता, रोचकता, कौतूहल और मानसिक प्रत्यक्षीकरण कराने की क्षमता होती है।

(द) विवरणात्मक निबन्ध–ऐतिहासिक तथा सामाजिक घटनाओं, स्थानों, दृश्यों, यात्राओं एवं जीवन के अन्य कार्य-कलापों का विवरण जिन निबन्धों में दिया जाता है, उन्हें विवरणात्मक निबन्ध कहते हैं। इनमें आख्यानात्मकता का पुट रहता है तथा विषय-वस्तु के प्रत्येक ब्यौरे का सुसम्बद्ध विवरण रोचक, हृदयग्राही और क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इनकी शैली सरल, आकर्षक, भावानुकूल, व्यावहारिक एवं चित्रात्मक होती है। प्रस्तुत संकलन में श्रीराम शर्मा का 'स्मृति' तथा काका कालेलकर का 'निष्ठामूर्ति कस्तूरबा' इसी प्रकार के निबन्ध हैं।

भारतेन्दु-युग के निबन्धकारों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', लाला श्रीनिवास दास, केशवराम भट्ट, अम्बिकादत्त व्यास, प्रतापनारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी, बाबू बालमुकुन्द गुप्त आदि की गणना प्रमुख रूप से की जाती है। द्विवेदी-युग के उल्लेखनीय निबन्धकारों के नाम इस प्रकार हैं–आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी, बालमुकुन्द गुप्त, माधवप्रसाद मिश्र, सरदार पूर्णसिंह, मिश्रबन्धु, गोपालराम गहमरी, चन्द्रधरशर्मा गुलेरी, श्यामसुन्दर दास, रामदास गौड़, गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', रामचन्द्र शुक्ल, डॉ0 पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, पद्मसिंह शर्मा आदि। बाबू बालमुकुन्द गुप्त भारतेन्दु-युग और द्विवेदी-युग के मध्य की कड़ी थे।

कहानी–'कहानी' वह साहित्यिक गद्य-विधा है, जिसमें जीवन के किसी एक पक्ष का कल्पनामिश्रित, मार्मिक एवं रोचक चित्रण होता है। कहानी आधुनिक साहित्य की सबसे लोकप्रिय विधा है, क्योंकि आधुनिक कहानी रोचकता, कलात्मकता, संवेदनशीलता, संक्षिप्तता, प्रभावोत्पादकता, भावात्मकता आदि गुणों को समेटे हुए है। मानव-सृष्टि के विकास के साथ ही कहानी का विकास भी हुआ है। कहानी कहना-सुनना मनुष्य की आदिम प्रवृत्तियों में से एक है। आरम्भ में मनोरंजन और आत्म-परितोष के लिए कहानी कही-सुनी जाती थी। यद्यपि कहानी का प्रधान लक्ष्य मनोरंजन होता है, किन्तु उसमें जीवन का सन्देश-पूर्वजों के अनुभव आदि भी निहित होते हैं।

आज की कहानी जीवन के बहुत निकट आ गयी है। वह जीवन में यथार्थ की प्रतिच्छाया है। वह आज अभिव्यक्ति का सर्वाधिक सशक्त माध्यम बन गयी है। आज की कहानी मानव-जीवन के किसी एक पक्ष अथवा घटना का सूक्ष्मता के साथ चित्रण करती है। हिन्दी की प्रथम आधुनिक कहानी कौन है, इस पर विवाद है। लेकिन अधिकांश समीक्षकों ने किशोरीलाल गोस्वामी की 'इन्दुमती' को पहली कहानी माना है। विषय-वस्तु के आधार पर हिन्दी की कहानियों का विभाजन इस प्रकार किया जा सकता है–ऐतिहासिक, सामाजिक, यथार्थवादी, दार्शनिक, प्रतीकवादी, मनोवैज्ञानिक, हास्य-व्यंग्यप्रधान आदि। कहानी-लेखन में प्रायः कथात्मक, पत्रात्मक, आत्मचरित्रप्रधान, डायरी, नाटकीय, मिश्रित आदि शैलियों का प्रयोग होता है। इस संकलन में प्रेमचन्द जी की कहानी 'मन्त्र' कहानीकार की शैलीगत विशिष्टताओं का परिचय कराती है।

भारतेन्दु-युग के कहानीकारों में अम्बिकादत्त व्यास, चण्डीप्रसाद सिंह आदि हैं तथा द्विवेदी-युग के प्रमुख कहानीकारों में किशोरीलाल गोस्वामी, गिरिजाकुमार घोष, गोपालराम गहमरी, विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', जयशंकर प्रसाद, प्रेमचन्द, चन्द्रधरशर्मा 'गुलेरी' और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के नाम उल्लेखनीय हैं।

नाटक–रंगमंच पर अभिनय द्वारा प्रस्तुत करने की दृष्टि से लिखी गयी तथा पात्रों एवं संवादों पर आधारित एक से अधिक अंकों वाली दृश्यात्मक साहित्यिक रचना को नाटक कहते हैं। नाटक वस्तुतः रूपक का एक भेद है। रूप का आरोप होने के कारण नाटक को रूपक कहा गया है। अभिनय के समय नट पर दुष्यन्त या राम-जैसे ऐतिहासिक पात्र का आरोप किया जाता है। नट (अभिनेता) से सम्बद्ध होने के कारण इसे नाटक कहते हैं। नाटक में ऐतिहासिक पात्र-विशेष की शारीरिक एवं मानसिक अवस्था का अनुकरण किया जाता है। आज नाटक शब्द अंग्रेजी 'ड्रामा' या 'प्ले' का पर्याय बन गया है। हिन्दी में मौलिक नाटकों का आरम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से माना जाता है। द्विवेदी-युग में इसका अधिक विकास नहीं हुआ। छायावाद-युग में जयशंकर प्रसाद ने ऐतिहासिक नाटकों के विकास में महत्त्वपूर्ण योग दिया। छायावादोत्तर-युग में लक्ष्मीनारायण मिश्र, उदयशंकर भट्ट, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', सेठ गोविन्ददास, डॉ0 रामकुमार वर्मा, जगदीशचन्द्र माथुर, मोहन राकेश आदि ने इस विधा को विकसित किया है। नाटकों का एक महत्त्वपूर्ण रूप **एकांकी** है। 'एकांकी' किसी एक महत्त्वपूर्ण घटना, परिस्थिति या समस्या को आधार बनाकर लिखा जाता है और उसकी समाप्ति एक ही अंक में उस घटना के चरम क्षणों को मूर्त करते हुए कर दी जाती है। हिन्दी में एकांकी नाटकों का विकास छायावाद-युग से माना जाता है। सामान्यतः श्रेष्ठ नाटककारों ने ही श्रेष्ठ एकांकियों की भी रचना की है।

आलोचना–'आलोचना' का शाब्दिक अर्थ है 'किसी वस्तु को भली प्रकार देखना'। किसी वस्तु को अच्छी तरह से देखने पर उसके गुण-दोष प्रकट हो जाते हैं, इसलिए किसी कृति का अध्ययन करके जब उसके गुण-दोषों को प्रकट किया जाता है तो उसे 'आलोचना' कहते हैं। इसके लिए 'समीक्षा' शब्द का प्रयोग भी किया जाता है। हिन्दी में आधुनिक आलोचना का प्रारम्भ 'भारतेन्दु युग' से माना जाता है।

उपन्यास—'उपन्यास' शब्द संस्कृत के 'उपन्यस्त' से बना है, जिसका अर्थ 'सामने रखना' है। इस प्रकार मानव-जीवन, समाज या इतिहास के यथार्थ सत्य को संवाद एवं दृश्यात्मक घटनाक्रमों पर आधारित चित्रण के माध्यम से पाठकों के सामने रखने अथवा प्रस्तुत करनेवाली विधा ही उपन्यास कहलाती है। विषय के आधार पर हिन्दी उपन्यासों के सामाजिक, ऐतिहासिक, आंचलिक, मनोवैज्ञानिक, पौराणिक, राजनीतिक, रहस्यात्मक आदि भेद किये जा सकते हैं। लाला श्रीनिवासदास का 'परीक्षा गुरु' ही हिन्दी की सर्वप्रथम औपन्यासिक कृति है और उनके अतिरिक्त भारतेन्दु-युग के अन्य कई लेखकों ने भी उपन्यास-लेखन की ओर ध्यान दिया, जिनमें रत्नचन्द प्लीडर का 'नूतन चरित्र', बालकृष्ण भट्ट का 'नूतन ब्रह्मचारी' और 'सौ अजान एक सुजान', राधाकृष्णदास का 'निस्सहाय हिन्दू', राधाचरण गोस्वामी का 'विधवा विपत्ति', कार्तिकप्रसाद खत्री का 'जया', बालमुकुन्द गुप्त का 'कामिनी' आदि उल्लेखनीय हैं।

प्रेमचन्द जी हिन्दी-उपन्यास-साहित्य के महत्त्वपूर्ण स्तम्भ माने जाते हैं। 'सेवासदन' उनका सर्वप्रथम उपन्यास है, इसमें नागरिक जीवन और समाज के मध्यवर्ग की सामाजिक समस्याओं का अत्यन्त चित्ताकर्षक वर्णन किया गया है। आपके अन्य प्रमुख उपन्यास हैं—प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, गोदान आदि। प्रेमचन्द जी के समसामयिक उपन्यासकारों में जयशंकर प्रसाद, विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', चतुरसेन शास्त्री, वृन्दावनलाल वर्मा, पाण्डेय बेचनशर्मा 'उग्र', रामवृक्ष बेनीपुरी, जैनेन्द्र कुमार, इलाचन्द्र जोशी, भगवतीचरण वर्मा, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', यशपाल आदि की गणना की जाती है। इसके अतिरिक्त बहुत-से लोगों ने उपन्यास पर अपनी लेखनी चलायी है।

जीवनी—किसी व्यक्ति-विशेष के जीवन की, जन्म से मृत्यु तक की घटनाओं के क्रमबद्ध विवरण को 'जीवनी' कहा जाता है। अंग्रेजी में इसे लाइफ अथवा बायोग्राफी कहते हैं। हिन्दी में जीवनी को जीवन-चरित्र भी कहा जाता है। 'जीवन' शब्द जहाँ व्यक्ति के जीवन की बाह्य घटनाओं को प्रकट करता है, वहाँ चरित्र उसकी आन्तरिक विशेषताओं को प्रकाशित करता है। इस प्रकार जीवनी में किसी व्यक्ति-विशेष के बाह्य एवं आन्तरिक जीवन का प्रकाशन किया जा सकता है। जीवनी का प्रामाणिक होना आवश्यक है। हिन्दी साहित्य में 'भक्तमाल', 'चौरासी वैष्णवन की वार्त्ता' तथा 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्त्ता' को जीवनी के क्षेत्र में प्रयास मात्र कहा जा सकता है।

हिन्दी में जीवनी लिखने की परम्परा का उद्भव भारतेन्दु-युग में सन् 1881 ई० के आस-पास हुआ। इसी वर्ष गोपालशर्मा शास्त्री ने उस युग की महान् विभूति स्वामी दयानन्द सरस्वती पर हिन्दी की पहली जीवनी 'दयानन्द दिग्विजय' लिखी। इसके पश्चात् ही हिन्दी साहित्य में जीवनी लिखने का क्रम चल पड़ा। **भारतेन्दु-युग** के प्रमुख जीवनी-लेखकों में कार्तिकप्रसाद खत्री ने मीराबाई, विक्रमादित्य, शिवाजी, अहिल्याबाई की जीवनियाँ लिखीं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'चरितावली' लिखी। राधाकृष्णदास ने भारतेन्दु का जीवन-चरित्र लिखा और मुंशी देवीप्रसाद ने महाराज मानसिंह कछवाहा, अकबर, बीरबल, उदयसिंह की जीवनियाँ लिखीं। द्विवेदी-युग के जीवनी लेखकों में डॉ० सम्पूर्णानन्द ने सम्राट् अशोक, हर्षवर्द्धन, महाराज छत्रसाल, चेतसिंह और महात्मा गाँधी की जीवनियाँ लिखीं। महादेव भट्ट ने लाला लाजपत राय, अरविन्द; रामचन्द्र वर्मा ने महात्मा गाँधी; स्वामी सत्यानन्द ने दयानन्द; डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने गाँधीजी (चम्पारन में गाँधी) की जीवनियाँ लिखीं।

आत्मकथा—जिस गद्य साहित्य में लेखक अपने जीवन की स्मरणीय घटनाओं का क्रमबद्ध वर्णन एवं विश्लेषण करता है, उस गद्य साहित्य को ही 'आत्मकथा' कहते हैं। जीवन के आत्मकथा और परकथा दो भेद किये जा सकते हैं। आत्मकथा में व्यक्ति अपने जीवन के सम्बन्ध में लिखता है, जबकि परकथा में दूसरे के सम्बन्ध में। आत्मकथा में तटस्थ एवं निर्दोष दृष्टि का होना आवश्यक है। व्यक्ति अपने सम्बन्ध में लिखते समय तटस्थ नहीं रह पाता। जब वह अपनी कमजोरियों का वर्णन करता है, उसकी कलम लड़खड़ा जाती है। हिन्दी में सर्वप्रथम भक्तिकाल में बनारसीलाल जैन ने 'अर्द्धकथा' लिखी। इस आत्मकथा में अकबर के समय की परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण हुआ है। इसमें आत्मकथा के तटस्थता, निरपेक्षता आदि गुण मिलते हैं। सन् 1860 ई० में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपनी अधूरी आत्मकथा लिखी। आत्मकथा का जन्म और विकास भी गद्य की अन्य विधाओं की तरह भारतेन्दु-युग से ही होता है।

भारतेन्दु-युग के अन्तर्गत सत्यानन्द अग्निहोत्री की 'मुझमें देव जीवन का विकास', अम्बिकादत्त व्यास की 'निज वृत्तान्त'

और भारतेन्दु जी की 'कुछ आप बीती कुछ जग बीती' सामने आती है। द्विवेदी-युग में परमानन्द कृत 'आप बीती', स्वामी श्रद्धानन्द कृत 'कल्याण मार्ग का पथिक', रामविलास शुक्ल कृत 'मैं क्रान्तिकारी कैसे बना' आदि आत्मकथाएँ लिखी गयीं। द्विवेदी जी ने स्वयं अपनी आत्मकथा लिखी है। द्विवेदी-युग के बाद भी उत्कृष्ट आत्मकथाएँ लिखी गयीं जिनमें डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद की 'आत्मकथा', बच्चन की 'नीड़ का निर्माण फिर', वियोगी हरि की 'मेरा जीवन प्रवाह', वृन्दावनलाल वर्मा की 'अपनी कहानी', उग्र की 'अपनी खबर' आदि आत्मकथाएँ प्रसिद्ध हैं।

रेखाचित्र—रेखाचित्र जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, किसी घटना अथवा स्थान का ऐसा वर्णन किया जाय कि पाठक के मन-मस्तिष्क पर एक रेखा-सी खिंच जाय, उसका चित्र उपस्थित हो जाय। रेखाचित्र शब्द अंग्रेजी के 'स्केच' शब्द का अनुवाद है तथा दो शब्दों रेखा और चित्र के योग से बना है। रेखाचित्र में चित्रकला तथा साहित्य का सुन्दर सामंजस्य दिखायी पड़ता है। जिस प्रकार चित्रकार तूलिका तथा रंगों के माध्यम से किसी सजीव चित्र का निर्माण करता है, उसी प्रकार रेखाचित्रकार शब्दों के द्वारा ऐसा भावपूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है जो उसकी वास्तविक संवेदना को मूर्त रूप प्रदान करने में सफल होता है। किसी जीव, वस्तु या पदार्थ को हम सामने देखने लगते हैं। इसमें रेखाएँ सजीव होकर अभिप्रेत-भाव को मुखर बना देती हैं। रेखाचित्र अपनी इन्हीं विशेषताओं के साथ साहित्य में अवतरित हुआ। साहित्यिक विधा हो जाने पर भी चित्रकला की विशेषताएँ उसमें यथावत् बनी रहीं। रेखाचित्र का साहित्यिक विधा में चित्र में उद्घाटन, रेखाओं के स्थान पर शब्दों द्वारा किया जाने लगा। शब्दों में जीव, पदार्थ या वस्तु के चित्र बनाये जाने लगे। रेखाचित्र हमारे सामने अनुभव में आये किसी चरित्र की विशेषताओं का मार्मिक रूप उपस्थित करता है।

हिन्दी में रेखाचित्र का सूत्रपात सन् 1929 ई0 में प्रकाशित पं0 पद्मसिंह शर्मा के 'पद्म-प्रबन्ध' निबन्धों से होता है। इन निबन्धों को यद्यपि आधुनिक रेखाचित्र नहीं कहा जा सकता, परन्तु इनमें वर्तमान रेखाचित्रों के पर्याप्त तत्त्व हैं और ये रेखाचित्रों की पृष्ठभूमि का कार्य करते हैं। सन् 1936-37 ई0 से हिन्दी रेखाचित्र में विकास की रेखाएँ क्रमिक रूप से मिलने लगती हैं। पं0 श्रीराम शर्मा का रेखाचित्रों का एक संग्रह 'बोलती प्रतिमा' के नाम से प्रकाशित हुआ। निराला, महादेवी वर्मा, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, रामवृक्ष बेनीपुरी, प्रकाशचन्द्र गुप्त, बनारसीदास चतुर्वेदी, डॉ0 विनयमोहन शर्मा, देवेन्द्र सत्यार्थी आदि ने रेखाचित्रों का सृजन किया है। प्रस्तुत संकलन में महादेवी वर्मा का 'गिल्लू' इस विधा की ही रचना है। इधर के चन्द्रमौलि बख्शी का 'संन्यासी बाबा', प्रकाशकुमार का 'सीता दीदी', रामप्रकाश कपूर का 'अंजो दीदी' आदि रेखाचित्र महत्त्वपूर्ण हैं।

संस्मरण—संस्मरण गद्य की वह विधा है, जिसमें लेखक स्वयं अपनी अनुभूतियाँ स्मरण के आधार पर अंकित करता है। इसमें प्रायः किसी महापुरुष के साथ रहने की घटनाओं का यथावत्, प्रामाणिक, किन्तु सरस-सटीक वर्णन होता है। जब किसी यात्रा का वर्णन होता है तो उसे यात्रा-संस्मरण कहा जाता है। किसी घटना, स्थल या व्यक्ति से सम्बन्धित अनुभूति लेखक के हृदय-पटल पर छाकर उसके मन को भीतर-ही-भीतर कुरेदती रहती है। यह अभिव्यक्ति के रूप में आकर संस्मरण बन जाती है।

संस्मरण-साहित्य के क्षेत्र में सबसे पहले आचार्य चतुरसेन शास्त्री के संस्मरण हमारे सामने आते हैं। 'पहली सलामी' संस्मरण में शास्त्री जी ने एसेम्बली में भगतसिंह द्वारा बम फेंकने का आँखों-देखा वर्णन किया है। हिन्दी के प्रमुख संस्मरण लेखकों में रामवृक्ष बेनीपुरी, महादेवी वर्मा, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', बनारसीदास चतुर्वेदी आदि हैं। स्वतन्त्रता के पश्चात् पत्र-पत्रिकाओं में बहुत-से संस्मरण प्रकाशित हुए, जिनमें भगवतीप्रसाद वाजपेयी का 'महाप्राण निराला', विनयमोहन शर्मा का 'लक्ष्मीधर वाजपेयी', देवेन्द्र सत्यार्थी का 'बलराज साहनी' आदि संस्मरण उल्लेखनीय हैं।

रिपोर्ताज—जिस गद्य-विधा में किसी घटना या आयोजन का आँखों-देखा विवरण प्रभावशाली एवं कलात्मक ढंग से होता है, उसे रिपोर्ताज कहते हैं। युग-चेतना, युग-संघर्ष और जीवन की साधारणता को कला में स्थापित करने की प्रवृत्ति से ही इसे साहित्यिकता प्राप्त होती है। घटनाओं की तत्कालीन मार्मिक प्रतिक्रिया ही आकर्षक शैली का परिधान ग्रहण कर 'रिपोर्ताज' बनती है। इससे घटनाओं का सहज मनोवैज्ञानिक विश्लेषण होता है। लेखक अपनी अनुभूतियों को अत्यन्त निखरे रूप में प्रस्तुत कर दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता रखता है।

रिपोर्ताज हिन्दी की सर्वथा नवीन विधा है। फ्रांसीसी शब्द रिपोर्ताज अंग्रेजी के रिपोर्ट के निकट है। हिन्दी में इसे वृत्त-निर्देशन या सूचनिका कहते हैं। रिपोर्ताज में तथ्यों में कलात्मकता और साहित्यिकता का आवरण प्रदान किया जाता है। शिवदानसिंह चौहान ने 'मौत के खिलाफ जिन्दगी की लड़ाई' रिपोर्ताज में राष्ट्र की स्वतन्त्रता से पूर्व का जीवन्त परिवेश चित्र प्रस्तुत किया है। रांगेय राघव ने 'अदम्य जीवन' शीर्षक से 'विशाल भारत' के लिए रिपोर्ताज लिखा। तूफानों के बीच आपका 'बंगाल का अकाल' (सन् 1943-44) रिपोर्ताजों का ही संग्रह है। अन्य रिपोर्ताज लेखकों में प्रकाशचन्द्र गुप्त, भगवतशरण उपाध्याय, अमृतलाल नागर, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', प्रभाकर माचवे, लक्ष्मीचन्द जैन, डॉ0 धर्मवीर भारती, डॉ0 विष्णुकान्त शास्त्री आदि हैं।

यात्रा-साहित्य—वह रचना जिसमें लेखक किसी स्थान-विशेष की यात्रा के अनुभव का यथार्थ एवं कलात्मक वर्णन करता है, उसे यात्रा-साहित्य कहते हैं। मनुष्य ने भ्रमण और पर्यटन के सुन्दर अनुभवों और उल्लासपूर्ण क्षणों को शब्दों में उतारने का प्रयास किया। इस प्रवृत्ति से यात्रा-साहित्य का विकास हुआ। हिन्दी साहित्य में यह नवीन विधा पाश्चात्य साहित्य के सम्पर्क से आयी। इस विधा से पाठक किसी सुदूर स्थल के बारे में पूरी जानकारी घर बैठे कर लेता है। उस स्थान के रहन-सहन, खान-पान, वहाँ के निवासियों का आचार-विचार, प्राकृतिक और सौन्दर्यपरक जीवन का परिचय मिल जाता है। पाश्चात्य साहित्य में कुछ उत्कृष्ट यात्रा-विवरण लिखे गये जिनसे प्रभावित होकर कहा गया है कि उनमें एक साथ महाकाव्य और उपन्यास का विराट् तत्त्व, कहानी का आकर्षण, गीतिकाव्य की मोहक भावशीलता, संस्मरणों की आत्मीयता और निबन्धों की मुक्ति दिखायी पड़ती है।

यात्रा-साहित्य में प्राकृतिक दृष्टि, दार्शनिक दृष्टि और मनोरंजनमूलक दृष्टि इन तीन बातों का रहना अनिवार्य है। यात्रा-साहित्य की अधिकतर रचना गद्य में हुई है। कहीं-कहीं गद्य-पद्य मिश्रित शैली भी मिल जाती है। शैली की दृष्टि से यात्रा-साहित्य के ये भेद किये जा सकते हैं—विवरणात्मक, संस्मरणात्मक, विचारात्मक, आत्मपरक यात्रा-साहित्य। महादेवी वर्मा द्वारा लिखित 'लन्दन यात्रा' यात्रा-साहित्य का प्रथम ग्रन्थ है। भारतेन्दु-युग में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र आदि ने यात्रा-वृत्तान्त लिखे। द्विवेदी-युग के उल्लेखनीय यात्रा-साहित्य ठाकुर गदाधरसिंह द्वारा लिखित 'भारत भ्रमण', शिवप्रसाद गुप्त द्वारा लिखित 'पृथ्वी-प्रदक्षिणा', स्वामी सत्यदेव परिव्राजक द्वारा लिखित 'मेरी जर्मन-यात्रा', 'यूरोप की सुखद स्मृतियाँ', 'अमरीका प्रवास की मेरी अद्भुत कहानी', 'मेरी कैलास-यात्रा', राहुल साँकृत्यायन द्वारा लिखित 'मेरी यूरोप-यात्रा', 'मेरी तिब्बत-यात्रा' आदि हैं। इस संकलन में **शिकार साहित्य** से भी सम्बन्धित **'स्मृति'** पाठ श्रीराम शर्मा का दिया गया है।

गद्य-काव्य—छन्दविहीन होते हुए भी कविता के समान आनन्द प्रदान करनेवाली गद्य-रचना को गद्य-काव्य कहा जाता है अर्थात् गद्य-काव्य वह रचना है, जिसमें कविता-जैसी संवेदनशीलता और रसात्मकता होती है। फलस्वरूप उसका बाह्य रूप भी साधारण पद्य की अपेक्षा अधिक अलंकृत और सधा हुआ होता है। गद्य-काव्य गद्य और काव्य के बीच की विधा है। इसमें विचारों की अभिव्यक्ति की अपेक्षा भावों की सरस अभिव्यक्ति की ओर लेखक का अधिक ध्यान रहता है। गद्य-काव्य में भावात्मक निबन्धों की अपेक्षा वैयक्तिकता और एकतथ्यता अधिक होती है। इसमें एक ही केन्द्रीय भावना की प्रधानता होने के कारण भावात्मक निबन्ध की अपेक्षा इसका आकार भी छोटा होता है।

हिन्दी गद्य-काव्य का प्रारम्भ छायावाद-युग और विकास छायावादोत्तर-युग में हुआ। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने गीताञ्जलि की रचना अंग्रेजी गद्य में की थी। इसका अनुवाद हिन्दी गद्य में प्रकाशित हुआ। अतः हिन्दी गद्य-काव्य 'गीताञ्जलि' की ही देन माना जा सकता है। गीताञ्जलि से प्रभावित होकर सन् 1916 ई0 में राय कृष्णदास ने 'साधना' की रचना की। 'साधना' को ही हिन्दी गद्य-काव्य की प्रथम रचना होने का गौरव प्राप्त है। अन्य गद्य-काव्य लेखकों में वियोगी हरि, चतुरसेन शास्त्री, वृन्दावनलाल वर्मा, डॉ0 रामकुमार वर्मा, दिनेश नन्दिनी डालमिया, राजनारायण मेहरोत्रा, राजेन्द्र सिंह आदि का नाम लिया जा सकता है।

• •

सत्य कथन की पहचान

निम्नलिखित कथनों में से कोई एक कथन सही है, उसे पहचान कर लिखिए–

1. (क) पद्य में यथार्थ, वस्तुपरक और तथ्यात्मक वर्णन पाया जाता है,
   (ख) हिन्दी साहित्य की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना पद्य का आविष्कार है,
   (ग) गद्य ज्ञान-वृद्धि का एक सफल साधन है,
   (घ) पद्य की भाषा गद्य की अपेक्षा अधिक स्पष्ट और व्यवस्थित होती है।

2. (क) खड़ीबोली का विकास ब्रजभाषा एवं राजस्थानी गद्य से हुआ,
   (ख) गद्य में स्वतन्त्र कल्पना की उड़ान होती है,
   (ग) पद्य में व्याकरण के नियमों की अवहेलना नहीं की जा सकती है,
   (घ) गद्य में वर्णन सूक्ष्म एवं संकेतात्मक होता है।

3. (क) 'चन्द छन्द बरनन की महिमा' के रचनाकार तुलसीदास हैं,
   (ख) 'सुखसागर' के रचनाकार मुंशी सदासुखलाल हैं,
   (ग) 'चौरासी वैष्णवन की वार्त्ता' के रचनाकार गोस्वामी विट्ठलनाथ हैं,
   (घ) 'शृंगार रस-मण्डन' गोकुलनाथ की रचना है।

4. (क) 'नासिकेतोपाख्यान' की भाषा में पश्चिमीपन अधिक है,
   (ख) 'ब्रह्म समाज' के प्रवर्तक राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द थे,
   (ग) लल्लूलाल की रचना 'रानी केतकी की कहानी' हास्य प्रधान है,
   (घ) स्वामी दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना हिन्दी में की थी।

5. (क) सदल मिश्र ने हिन्दी को आर्यभाषा के रूप में घोषित किया,
   (ख) भारतेन्दु के पूर्व हिन्दी गद्य का स्वरूप निश्चित नहीं था,
   (ग) 'उदन्त मार्तण्ड' 30 मई, सन् 1826 ई0 में दिल्ली में प्रकाशित हुआ था,
   (घ) सर सैयद अहमद खाँ ने 'बंगदूत' पत्र द्वारा हिन्दी का समर्थन किया था।

6. (क) 'सरस्वती' पत्रिका के प्रथम सम्पादक रामचन्द्र शुक्ल थे,
   (ख) महावीरप्रसाद द्विवेदी धर्मयुग के सम्पादक रहे,
   (ग) इण्डियन प्रेस, प्रयाग से सन् 1903 ई0 में 'इन्दु' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ,
   (घ) 'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन हिन्दी साहित्य की महत्त्वपूर्ण घटना है।

7. (क) द्विवेदी युग का समय 1800-1822 ई0 तक है,
   (ख) हिन्दी खड़ीबोली का आविर्भाव 19वीं शताब्दी के जागरणकाल में हुआ,
   (ग) 'रानी केतकी की कहानी' हिन्दी की प्रथम कहानी है,
   (घ) भारतेन्दु की रचनाएँ 'मानसरोवर' में प्रकाशित हुई हैं।

8. (क) द्विवेदी युग में प्रायः जासूसी उपन्यास लिखे गये,
(ख) 'भाषा रहस्य' विनयमोहन शर्मा का निबन्ध है,
(ग) 'हंस' पत्रिका के संस्थापक मुंशी प्रेमचन्द हैं,
(घ) 'अशोक के फूल' वियोगी हरि का नाटक है।

9. (क) राउलवेल मैथिली-हिन्दी में रचित गद्य की पुस्तक है,
(ख) 'वर्णरत्नाकर' रोडा की तीसरी रचना है,
(ग) छायावादोत्तर-युग का कालक्रम सन् 1919 ई0 से 1938 ई0 तक है,
(घ) 'राउलवेल' एक शिलांकित कृति है जिसके रचयिता रोडा हैं।

10. (क) माखनलाल चतुर्वेदी भारतेन्दु युग के श्रेष्ठ निबन्धकार थे,
(ख) महावीरप्रसाद द्विवेदी सन् 1903 से 17 वर्षों तक 'सरस्वती' के सम्पादक रहे,
(ग) आचार्य चतुरसेन शास्त्री 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' के प्रथम सम्पादक थे,
(घ) प्रतापनारायण मिश्र ने 'हिन्दी प्रदीप' पत्रिका का सम्पादन किया।

11. (क) किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'इन्दुमती' हिन्दी की पहली कहानी है,
(ख) हिन्दी की प्रथम कहानी इंशा अल्ला कृत 'रानी केतकी की कहानी' है,
(ग) बाबू बालमुकुन्द गुप्त भारतेन्दु युग के श्रेष्ठ उपन्यासकार थे,
(घ) 'एकलव्य' डॉ0 रामकुमार वर्मा का श्रेष्ठ उपन्यास है।

12. (क) भारतेन्दु युग का कालक्रम 13वीं शताब्दी से 1868 ई0 तक है,
(ख) द्विवेदी युग का कालक्रम सन् 1900 ई0 से 1922 ई0 तक है,
(ग) शुक्लोत्तर युग का कालक्रम सन् 1919 ई0 से 1938 ई0 तक है,
(घ) स्वातन्त्र्योत्तर-युग का कालक्रम सन् 1938 ई0 से 1947 ई0 तक है।

13. (क) महादेवी वर्मा का 'गिल्लू' रेखाचित्र विधा की रचना है,
(ख) रेखाचित्र विधा की रचना 'अंजो दीदी' के लेखक चन्द्रमौलि बख्शी हैं,
(ग) श्रीराम शर्मा का एक संग्रह 'बोलती प्रतिमा' रिपोर्ताज विधा का है,
(घ) 'मौत के खिलाफ जिन्दगी की लड़ाई' शिवदानसिंह चौहान का रेखाचित्र संग्रह है।

14. (क) हिन्दी में एकांकी नाटकों का विकास भारतेन्दु युग में हुआ,
(ख) आधुनिक आलोचना का प्रारम्भ द्विवेदी युग से माना जाता है,
(ग) 'स्कन्दगुप्त' जयशंकर प्रसाद का प्रभावशाली ऐतिहासिक नाटक है,
(घ) बनारसीलाल जैन कृत 'अर्द्धकथा' में औरंगजेब काल की परिस्थितियों का चित्रण है।

15. (क) 'नीड़ का निर्माण फिर' वियोगी हरि की आत्मकथा है,
(ख) शिवप्रसाद गुप्त लिखित 'पृथ्वी-प्रदक्षिणा' रिपोर्ताज है,
(ग) 'मेरी तिब्बत यात्रा' राहुल सांकृत्यायन कृत यात्रा-साहित्य है,
(घ) रांगेय राघव कृत 'अदम्य जीवन' यात्रा-साहित्य है।

16. (क) 'निस्सहाय हिन्दू' राधाकृष्णदास का उपन्यास है,
(ख) मुंशी प्रेमचन्द का सामाजिक उपन्यास 'कंकाल' है,

(ग) 'सौ अजान एक सुजान' बालमुकुन्द गुप्त का उपन्यास है,
(घ) भूपेन्द्र अबोध के उपन्यास 'तितली' का प्रकाशन पटना में हुआ था।

17. (क) एकांकियों के विकास का श्रेष्ठ काल भारतेन्दु-युग रहा है,
(ख) द्विवेदी-युग में नाटकों का सर्वाधिक विकास हुआ,
(ग) मोहन राकेश भारतेन्दु-युग के श्रेष्ठ एकांकीकार थे,
(घ) श्रेष्ठ नाटककारों ने ही श्रेष्ठ एकांकियों की रचना की है।

18. (क) नन्ददुलारे वाजपेयी भारतेन्दु-युग के निबन्धकार हैं,
(ख) राहुल सांकृत्यायन द्विवेदी-युग के गद्यकार हैं,
(ग) भगवतीप्रसाद वाजपेयी छायावादोत्तर-काल के निबन्धकार हैं,
(घ) पूर्णसिंह द्विवेदी-युग के उपन्यासकार हैं।

19. (क) हिन्दी गद्य-काव्य का विकास शुक्ल-युग में हुआ,
(ख) डॉ० विष्णुकान्त शास्त्री श्रेष्ठ गद्य-काव्य लेखक हैं,
(ग) गद्य-काव्य मुख्यतः भावात्मक निबन्ध हैं,
(घ) गद्य और पद्य के बीच की विधा गद्य-काव्य है।

20. (क) महादेवी वर्मा लिखित 'लन्दन यात्रा' रिपोर्ताज का प्रथम ग्रन्थ है,
(ख) रिपोर्ताज हिन्दी की सर्वथा नवीन विधा है,
(ग) वैयक्तिकता और एकतथ्यता रिपोर्ताज में अधिक होती है,
(घ) वृन्दावनलाल वर्मा मूलतः रिपोर्ताज लेखक हैं।

●●

हिन्दी गद्य का विकास एवं विधाओं पर आधारित प्रश्न

1. 'रानी केतकी की कहानी' के लेखक का नाम लिखिए।
2. हिन्दी के प्रथम मौलिक उपन्यास का नाम लिखिए।
3. भारतेन्दु-युग के दो निबन्धकारों के नाम लिखिए।
4. द्विवेदी-युग के दो निबन्धकारों के नाम लिखिए।
5. भारतेन्दु-युग के तीन नाटकों के नाम लिखिए।
6. संकलन-त्रय का क्या अर्थ है?
7. आत्मकथा से क्या आशय है?
8. जीवनी का अर्थ लिखिए।
9. हिन्दी के प्रमुख तीन जीवनी-लेखकों के नाम लिखिए।
10. जीवनी और आत्मकथा में अन्तर बताइये।
11. संस्मरण किसे कहते हैं?
12. हिन्दी के दो संस्मरण-लेखकों के नाम लिखिए।
13. रेखाचित्र तथा संस्मरण में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
14. हिन्दी के प्रमुख रेखाचित्रकारों के नाम लिखिए।
15. यात्रावृत्त किसे कहते हैं?
16. यात्रावृत्त की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
17. रिपोर्ताज से आप क्या समझते हैं?
18. चार रिपोर्ताज-लेखकों के नाम लिखिए।
19. गद्य-काव्य से क्या तात्पर्य है?
20. गद्य-काव्य के किन्हीं दो लेखकों के नाम लिखिए।
21. प्रेमचन्द के उपन्यासों के नाम लिखिए।
22. प्रेमचन्द के उपन्यास किन विषयों पर आधारित हैं?
23. हिन्दी के सर्वप्रथम यात्रा वृत्त-लेखक एवं उनकी रचना का नाम लिखिए।
24. पाश्चात्य दृष्टि से नाटक के तत्त्व लिखिए।
25. जयशंकर प्रसाद के नाटकों के नाम लिखिए।
26. आधुनिक साहित्य की सबसे अधिक लोकप्रिय विधा का नाम लिखिए।
27. अच्छी जीवनी की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
28. द्विवेदी-युग के दो समीक्षकों के नाम लिखिए।
29. विषय एवं शैली की दृष्टि से निबन्ध के भेद लिखिए।
30. अध्यापक पूर्णसिंह किस युग के निबन्धकार हैं?
31. भारतेन्दु-युग नाम कैसे पड़ा?

32. द्विवेदी-युग नाम कैसे पड़ा?
33. नाटक के तत्त्वों के नाम लिखिए।
34. हिन्दी में रेखाचित्र का सूत्रपात कब हुआ?
35. भारतेन्दु-युग के दो जीवनी-लेखकों के नाम लिखिए।
36. द्विवेदी-युग के दो जीवनी-लेखकों का नामोल्लेख करते हुए उनकी एक-एक कृति का नाम लिखिए।
37. किन्हीं दो आत्मकथा-लेखकों एवं उनकी एक-एक कृति का नाम लिखिए।
38. किन्हीं चार गद्य-विधाओं के नाम लिखिए।
39. पद्मसिंह शर्मा किस युग के लेखक हैं?
40. हिन्दी साहित्य के दो विचारात्मक निबन्धकारों के नाम लिखिए।
41. शिकार साहित्य के प्रसिद्ध लेखक का नाम लिखिए।
42. हिन्दी साहित्य का प्रचार-प्रसार करने वाली दो संस्थाओं के नाम लिखिए।
43. गद्य किसे कहते हैं?
44. हिन्दी गद्य का आविर्भाव किस शताब्दी में हुआ?
45. गद्य की उपयोगिता क्या है?
46. हिन्दी गद्य के प्राचीनतम प्रयोग किस भाषा में मिलते हैं?
47. ब्रजभाषा गद्य का सूत्रपात कब हुआ?
48. ब्रजभाषा गद्य के दो प्रसिद्ध लेखकों के नाम लिखिए।
49. खड़ीबोली गद्य का जनक किसे माना जाता है?
50. खड़ीबोली गद्य के प्रथम लेखक और उनकी प्रथम रचना का नाम लिखिए।
51. खड़ीबोली गद्य के चार उन्नायकों के नाम लिखिए।
52. हिन्दी खड़ीबोली का आविर्भाव कब हुआ?
53. हिन्दी गद्य के प्रसार में ईसाई पादरियों का क्या योगदान रहा?
54. भारतेन्दु से पूर्व हिन्दी गद्य के प्रमुख चार लेखकों के नाम लिखिए।
55. भारतेन्दु से पूर्व किन दो राजाओं ने हिन्दी गद्य के विकास में योगदान दिया?
56. गद्य और पद्य में क्या अन्तर है?
57. भारतेन्दु-युग की कालावधि लिखिए।
58. भारतेन्दु-युग के दो गद्य-लेखकों तथा उनकी एक-एक रचनाओं के नाम लिखिए।
59. भारतेन्दु-युग की प्रमुख पत्रिकाओं के नाम लिखिए।
60. भारतेन्दु-युग की दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
61. 'चन्द्रकान्ता' उपन्यास के लेखक का नामोल्लेख करते हुए युग का नाम लिखिए।
62. हिन्दी गद्य के विकास में भारतेन्दु-युग का महत्त्व लिखिए।
63. भारतेन्दु द्वारा सम्पादित दो पत्रिकाओं के नाम लिखिए।
64. 'कवि वचन सुधा' पत्रिका का सम्पादन-काल लिखिए।
65. हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु जी के योगदान का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
66. भारतेन्दुयुगीन भाषा की मुख्य विशेषता एक वाक्य में लिखिए।
67. द्विवेदी-युग का समय लिखिए।

68. द्विवेदी-युग के तीन प्रमुख गद्य-लेखकों और उनकी रचनाओं के नाम लिखिए।
69. हिन्दी-गद्य को आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी की सबसे बड़ी देन क्या है?
70. द्विवेदी-युग की दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
71. 'सरस्वती' पत्रिका के प्रमुख सम्पादक का नाम लिखिए।
72. द्विवेदी-युग के दो प्रतिनिधि कहानीकारों के नाम लिखिए।
73. द्विवेदी-युग की चार प्रसिद्ध पत्रिकाओं के नाम लिखिए।
74. नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना किसने की?
75. द्विवेदी-युग के तीन उपन्यासकारों के नाम लिखिए।
76. द्विवेदी-युग के तीन प्रसिद्ध आलोचकों के नाम लिखिए।
77. द्विवेदी-युग के निबन्धों के विषय क्या थे?
78. हिन्दी साहित्य का प्रचार और प्रसार करनेवाली दो संस्थाओं के नाम लिखिए।
79. हिन्दी-गद्य की किन्हीं तीन नवीन विधाओं के नाम लिखिए।
80. हिन्दी-गद्य की दो प्रमुख विधाओं के नाम लिखिए।
81. विचारात्मक और भावात्मक निबन्ध में क्या अन्तर है?
82. हिन्दी गद्य-काव्य लेखकों में से किन्हीं दो लेखकों के नाम लिखिए।
83. विचारात्मक और वर्णनात्मक निबन्ध में अन्तर लिखिए।
84. हिन्दी की प्रथम कहानी का नाम लिखिए।

●●●

अध्ययन-अध्यापन

मनुष्य के भाषा-ज्ञान पर सबसे अधिक प्रभाव शिक्षा का पड़ता है, क्योंकि वह प्रत्यक्ष रूप से भाषा का ज्ञान कराती है। विद्यालय में अध्ययन और अध्यापन का कार्य भाषा के माध्यम से ही होता है। शिक्षा द्वारा ही साहित्य का विकास हुआ और साहित्य के विकास से भाषा बनी। नयी-नयी शैलियों को जन्म मिला। भाषा शिक्षा का सहारा पाकर दिन-पर-दिन बढ़ती गयी। अतः कहा जा सकता है कि शिक्षा और भाषा का चोली और दामन का साथ है।

भाषा का स्वरूप प्रारम्भ में स्थूल जगत् पर आधारित होता है जो क्रमशः अमूर्तता की ओर बढ़ते हुए गहन विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम बनता है। भाषा के इसी वैचारिक स्तर पर अधिकार प्राप्त करना भाषा-शिक्षण का प्रमुख लक्ष्य है। यों तो भाषा का यह विकास स्वाभाविक रूप में होता ही रहता है, किन्तु विद्यालयों में सुनियोजित शिक्षण द्वारा इसके स्तर को उच्च तथा विकास की गति को सरल, रुचिकर तथा क्षिप्रतर बनाया जा सकता है। पाठ्य-पुस्तक सुनियोजित शिक्षा का प्रमुख साधन है।

भाषा का सीखना एक कौशल सीखने के समान है। यह प्रयोग से ही सीखी जा सकती है। अपने सामान्य जीवन में हम भाषा का प्रयोग दूसरों के विचार ग्रहण करते समय सुनने या पढ़ने में, अपना विचार व्यक्त करते समय बोलने या लिखने में तथा किसी विषय पर सोचने या विचारने में करते हैं। अतः भाषा-शिक्षण में हमें इनके प्रयोग की उपर्युक्त समस्त स्थितियों का उपयोग करना चाहिए। दूसरे शब्दों में बच्चों में वैचारिक स्तर की भाषा का विकास हम बालक को सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने तथा चिन्तन-मनन करने की योग्यताओं का विकास करके ही कर सकते हैं। अतः भाषा-शिक्षण के प्रमुख साधन गद्य की पाठ्य-पुस्तक का प्रयोग इस रूप में होना चाहिए कि उपर्युक्त समस्त क्षमताओं का विकास होता चले।

जूनियर हाईस्कूल स्तर तक बच्चों में भाषा-सम्बन्धी उपर्युक्त क्षमताओं का विकास सामान्य रूप में हो जाता है, पर माध्यमिक स्तर पर इनके सुदृढ़ीकरण की आवश्यकता बनी रहती है। अतः विविध भाषा-कौशलों का ध्यान रखते हुए माध्यमिक स्तर पर भाषा-शिक्षण के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किये जा सकते हैं :

(1) छात्रों और छात्राओं को मौन तथा व्यक्त पठन में कुशल बनाना। (2) उनके शब्द-भण्डार में पर्याप्त वृद्धि करना। (3) उन्हें विविध स्थितियों के अनुरूप लिखित एवं मौखिक अभिव्यक्ति में कुशल बनाना। (4) उन्हें शुद्ध, सशक्त और प्रभावपूर्ण भाषा के प्रयोग में कुशल बनाना। (5) उन्हें विविध साहित्यिक विधाओं और भाषा-शैलियों से अवगत कराना। (6) उनमें भावात्मक और साहित्यिक सौन्दर्य की अनुभूत्यात्मक क्षमता का विकास करना। (7) उनमें भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन की रुचि उत्पन्न करना। (8) उनमें समीक्षा-शक्ति का विकास करना।

उपर्युक्त में से प्रत्येक उद्देश्य को छात्र-छात्राओं में अपेक्षित व्यावहारिक परिवर्तन के सन्दर्भ में विश्लेषित करने पर अनेक विशिष्ट उद्देश्य सामने आयेंगे। उदाहरणार्थ, मौन-पठन में कुशलता प्राप्त कराने का तात्पर्य है कम-से-कम समय में अधिकाधिक मुद्रित संकेतों (पठन-सामग्री) को देखकर उनका अर्थ ग्रहण कर लेने की क्षमता का विकास करना। इसके लिए पर्याप्त पठन-अभ्यास अपेक्षित होगा। इसी प्रकार व्यक्त-पठन में कुशलता प्राप्त कराने का तात्पर्य है उच्चारण की शुद्धता, स्वर के भावानुकूल आरोहावरोह, अर्थ की स्पष्टता, उचित गति और प्रवाह आदि का ध्यान रखते हुए मुद्रित सामग्री को दूसरों के समक्ष प्रस्तुत करने की क्षमता विकसित करना। मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति के अन्तर्गत भी कई बातें सम्मिलित हैं, जैसे उच्चारण, वर्तनी, वाक्यों की रचना तथा शब्दों के प्रयोग में शुद्धता, अभिव्यक्त विचारों में व्यवस्था तथा भाषा में प्रभविष्णुता आदि। आशा की जाती है कि अध्यापक अन्य उद्देश्यों से विस्तृत रूप में परिचित होंगे।

कक्षा में प्रस्तुत पाठ्य-पुस्तक का प्रयोग इस रूप में होना चाहिए कि भाषा-शिक्षण के उपर्युक्त समस्त उद्देश्यों की पूर्ति होती चले। इस मूल तथ्य को ध्यान में रखते हुए अध्यापक भाषा-शिक्षण की कोई भी विधि अपना सकता है। यह भी ध्यान

में रखना होगा कि उस विधि के सोपान उचित क्रम में हों तथा सम्पूर्ण पाठन-कार्य में रोचकता बनी रहे। सभी पाठों को एक ही ढंग से पढ़ाना अनिवार्य नहीं है। पाठों की प्रकृति के अनुसार प्रत्येक पाठ में अलग-अलग बातों पर बल देना होगा। फिर भी कुछ बातें अधिकांश पाठों के लिए महत्त्वपूर्ण हैं और पाठों को पढ़ाते समय हमें उनका ध्यान रखना चाहिए।

कक्षा में पाठ किस प्रकार आरम्भ किया जाय, यह प्रश्न अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रत्येक पाठ को नवीन मानकर प्रस्तावना देने की आवश्यकता पर बल दिया जाता है। इसका वास्तविक अभिप्राय न समझकर येन-केन-प्रकारेण पाठ का शीर्षक निकलवाने को ही प्रस्तावना का उद्देश्य मान लिया जाता है। पाठ्य-पुस्तकें छात्रों के पास रहती हैं और अधिकांश छात्र पाठों के शीर्षकों से परिचित रहते हैं। अतः इस प्रकार की प्रस्तावना प्रायः नीरस और उद्देश्यरहित हो जाती है। प्रस्तावना का उद्देश्य पाठ के प्रति रुचि उत्पन्न करना होना चाहिए। इस दृष्टि से यह अधिक उपादेय होगा कि जो पाठ अगले दिन प्रारम्भ करना हो उसके विषय में पहले ही दिन कुछ बातचीत की जाय और छात्रों को सम्पूर्ण पाठ घर से पढ़कर आने के लिए प्रेरित किया जाय। इससे छात्र पाठ की विषय-वस्तु से न्यूनाधिक रूप में परिचित हो जायँगे और अगले दिन एक-एक अनुच्छेद लेकर उसका विस्तृत विवेचन करने में सुविधा होगी। तात्पर्य यह है कि पाठों को पढ़ाने में पूर्ण से अंश की ओर चलने के सिद्धान्त का पालन करना अधिक लाभप्रद होता है।

यह सम्भव है कि कुछ छात्र घर से पाठ पढ़कर न आयें। अतः कक्षा में पाठ प्रारम्भ करने से पूर्व आवश्यक होगा कि पढ़कर आये हुए छात्रों की सहायता से सम्पूर्ण पाठ की विषय-वस्तु पर दो-तीन प्रश्नों द्वारा सामान्य चर्चा की जाय। तत्पश्चात् विस्तृत अध्ययन के लिए पाठ की एक-एक अन्विति ली जाय।

यह विवादास्पद हो सकता है कि कक्षा में विस्तृत अध्ययन के लिए ली गयी अन्विति का पठन किस रूप में हो–मौन-पठन के रूप में अथवा व्यक्त-पठन के रूप में। यह निश्चय बहुत-कुछ कक्षा के स्तर और पाठ के स्वरूप पर निर्भर करेगा। यदि पाठ कक्षा के लिए कठिन है तो उसका पठन व्यक्त रूप में होना चाहिए। शिक्षक को स्वयं आदर्श पाठ देकर एक या दो बालकों से भी पढ़वाना चाहिए और तत्पश्चात् व्याख्या और भाषा-कार्य प्रारम्भ करना चाहिए। किन्तु ऐसी स्थिति कुछ ही पाठों अथवा विद्यालयों में आ सकती है। अधिकांश पाठ स्तरानुकूल होते हैं। अतः माध्यमिक कक्षाओं में मौन-पठन को ही महत्त्व दिया जाना चाहिए। मौन-पठन को सोद्देश्य बनाने की दृष्टि से अध्यापक को चाहिए कि वह प्रेरणात्मक अध्यापकीय कथन में कुछ प्रश्न उठाये जिनका समाधान सम्बन्धित अन्विति में दिये गये विचारों से होता हो। तत्पश्चात् वह उसके मौन-पठन का आदेश दे। पठन की गति बढ़ाने की दृष्टि से आवश्यक होगा कि अध्यापक मौन-पठन के लिए समय निर्धारित कर दे।

सम्पूर्ण अन्विति का पठन हो जाने के पश्चात् अध्यापक को चाहिए कि वह उसमें निहित तथ्यों का प्रश्नों द्वारा विश्लेषण कराये। साथ ही उसके सम्बन्ध में तर्क-वितर्क और आलोचना करने तथा निष्कर्ष निकालने का उन्हें अवसर भी दिया जाय। प्रश्न और अध्यापकीय कथन ऐसे होने चाहिए जिनसे छात्रों को अन्य पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने की प्रेरणा मिले। जहाँ आवश्यक हो, बीच-बीच में विलोम, पर्याय, शब्द-रचना, पंक्तियों की व्याख्या, भाषा-शैली, चरित्र-चित्रण आदि से सम्बन्धित प्रश्न भी किये जायँ। शब्दार्थ बोध कराने में व्युत्पत्तिमूलक अर्थ और प्रयोग पर विशेष ध्यान दिया जाय। सम्पूर्ण कार्य यथासम्भव प्रश्नों के माध्यम से होना चाहिए और छात्रों को आत्माभिव्यक्ति का अवसर देना चाहिए। छात्रों द्वारा दिये गये उत्तरों को आवश्यकतानुसार सुधार कर छात्रों के समक्ष रखने से छात्रों का पाठ के विकास में समुचित योगदान होता है और कोई बात बलात् लादी जा रही नहीं प्रतीत होती। इससे कक्षा का वातावरण सजीव रहता है और पाठ में रोचकता बनी रहती है।

उपर्युक्त कार्य करते समय अध्यापक को आवश्यकतानुसार श्यामपट्ट-कार्य भी करते रहना चाहिए। शब्दार्थ या व्याख्या लिखने में संक्षिप्तता और सरलता का ध्यान रखना चाहिए। लिखावट का सुन्दर होना आवश्यक है ही, लिखने की गति भी अपेक्षित स्तर की होनी चाहिए। आवश्यकतानुसार श्यामपट्ट के दो खण्ड किये जा सकते हैं–एक भाग सन्धि-विच्छेद, समास, शब्दार्थ आदि के लिए और दूसरा भाग पाठ-सारांश के लिए। पर इसकी आवश्यकता कुछ ही पाठों में पड़ेगी। अधिकांश पाठों में श्यामपट्ट-कार्य सरल शब्दार्थ, विलोम, सन्धि, समास, प्रत्यय, उपसर्ग आदि द्वारा शब्द-रचना के स्पष्टीकरण आदि तक सीमित रहेगा। अच्छे श्यामपट्ट-कार्य से बच्चों को सुलेख और शुद्ध वर्तनी में विशेष सहायता मिलती है।

सम्बन्धित अन्विति का सम्पूर्ण कार्य समाप्त हो जाने पर यदि पाठ मौन-पठन से प्रारम्भ हुआ है तो अध्यापक को चाहिए कि वह अब उसका आदर्श पाठ प्रस्तुत करें। तत्पश्चात् एक-दो अच्छे छात्रों से सस्वर पठन कराकर पिछड़े हुए अथवा साधारण स्तर के छात्रों के समक्ष आदर्श पठन के नये नमूने प्रस्तुत किये जायँ, फिर साधारण स्तर के बच्चों को पढ़ने का अवसर दिया जाय।

इसी प्रकार प्रत्येक अन्विति के सम्बन्ध में उपर्युक्त कार्य कराया जाय। पाठ के अन्त में प्रमुख पाठ बिन्दुओं की आवृत्ति भी हो जानी चाहिए। इसके लिए अध्यापक रोलर बोर्ड पर प्रश्न, अभ्यास अथवा सारांश लिखकर ला सकता है और उनकी सहायता से पुनरावृत्ति करा सकता है। पुनरावृत्ति में प्रमुख शिक्षण बिन्दु ही रखे जाने चाहिए और उनमें वैचारिक और भाषायी, दो प्रकार की सामग्री का समावेश होना चाहिए।

पाठ के अन्त में कुछ गृह-कार्य भी दिया जाना चाहिए जिससे छात्र घर जाकर पुनः उस पाठ को पढ़ें। गृह-कार्य के द्वारा शिक्षक विद्यार्थियों की लिखित अभिव्यक्ति तथा तत्सम्बन्धी गुण-दोषों को जान सकता है। साथ-ही-साथ गुणों के विकास और दोषों के निवारण का प्रयत्न कर सकता है। इसलिए गृह-कार्य के लिए दिये गये प्रश्न अर्जित ज्ञान पर आधारित हों और अधिक विस्तृत न हों, अपितु विद्यार्थी अपनी बुद्धि से उन प्रश्नों का उत्तर दें। गृह-कार्य पाठ के सारांश, किन्हीं पंक्तियों तथा अनुच्छेदों की व्याख्या, शब्दों का वाक्यों में प्रयोग, शब्द-रचना, पाठ की सामग्री का पाठ से भिन्न स्थिति एवं क्रिया में प्रस्तुतीकरण आदि से सम्बन्धित हो सकता है। आवश्यकतानुसार अगला पाठ, किसी पत्र-पत्रिका का कोई लेख या किसी अन्य पुस्तक की सामग्री भी पढ़ने को दी जा सकती है। ऐसा करने से विद्यार्थियों की विचार-शक्ति भी बढ़ेगी और उनका बौद्धिक विकास भी होगा।

भाषा-शिक्षण की दृष्टि से परीक्षाओं का भी अत्यधिक महत्त्व है। छात्र प्रायः उन्हीं बातों पर विशेष ध्यान देते हैं जो परीक्षा में पूछी जाती हैं। अतः मासिक, सत्रीय और वार्षिक परीक्षाओं में उन समस्त शिक्षण-सामग्रियों पर प्रश्न देने चाहिए जिन्हें अध्यापक आवश्यक समझते हों। इन परीक्षाओं में माध्यमिक शिक्षा परिषद् की समापन परीक्षा का अनुकरणमात्र नहीं होना चाहिए। अच्छा हो यदि गृह-परीक्षाओं में श्रवण, पठन, लेखन, मौखिक अभिव्यक्ति आदि समस्त भाषा-कौशलों का समावेश किया जाय जिससे जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सीखे गये भाषा-कौशलों का सुदृढ़ीकरण हो सके। इससे निश्चय ही बालकों की भाषा-सम्बन्धी शैक्षिक उपलब्धि उच्च-स्तर की होगी और अन्य विषयों के उपलब्धि-स्तर पर भी इसका अनुकूल प्रभाव पड़ेगा। प्रश्न-पत्रों की रूपरेखा ऐसी होनी चाहिए कि छात्रों को सभी पाठों को पढ़ने की प्रेरणा मिले। इसके लिए वस्तुनिष्ठ, लघु उत्तरीय तथा निबन्धात्मक प्रश्नों का उचित अनुपात में प्रयोग करते हुए उनके अन्तर्गत अधिकाधिक पाठ्यक्रम का समावेश किया जा सकता है। इस पाठ्य-पुस्तक के पाठों के अन्त में विविध प्रकार के प्रश्न और अभ्यास दिये गये हैं। उनमें विविध उद्देश्यों को समाविष्ट करने का प्रयत्न किया गया है। कुछ प्रश्न पाठ के सारांश पर आधारित हैं तो कुछ तथ्यों के तर्कपूर्ण विवेचन, निष्कर्ष-ग्रहण, चरित्र-चित्रण, भाषा-शैली, व्याख्या, शब्द-रचना तथा सैद्धान्तिक व्याकरण से सम्बन्धित हैं। व्याख्या-लेखन में निपुणता लाने के उद्देश्य से कुछ प्रत्यक्ष या सहायक प्रश्न-अभ्यास में भी दिये गये हैं; प्रश्न-पत्र की दृष्टि से उनकी उपादेयता स्पष्ट ही है। प्रश्नों के स्वरूप में भी विविधता का ध्यान रखा गया है। अध्यापकों को चाहिए कि वे पाठों की समाप्ति के मूल्यांकन में तो इसका प्रयोग करें ही, इसी प्रकार के अन्य प्रश्नों की रचना कर गृह-परीक्षाओं में भी उनका प्रयोग करें।

पाठ्य-पुस्तक का सम्बन्ध विविध पाठ-सहगामी क्रियाओं से भी जोड़ा जा सकता है। उदाहरणार्थ, पाठों में दिये गये विचार, समीक्षकों के मत तथा लेखकों के जीवनवृत्त आदि भाषण, वाद-विवाद तथा अभिनय के विषय बनाये जा सकते हैं। विद्यालयों में हिन्दी कक्ष की व्यवस्था की जा सकती है और वहाँ छात्र-छात्राओं को लेखकों के जीवन-वृत्त, उनकी रचनाओं, विशेषताओं एवं भाषा और व्याकरण से सम्बन्धित चित्र और चार्ट बनाकर रखने के लिए उत्साहित किया जा सकता है।

सारांश यह है कि गद्य की पाठ्य-पुस्तक विविध भाषा-कौशलों के विकास का सर्वोत्तम साधन हो सकती है। अध्यापकों को चाहिए कि वे इसे पर्याप्त महत्त्व दें और इसके प्रयोग में मौलिकता लाकर इसके माध्यम से छात्रों की भाषा-योग्यता के स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयास करें।

यह शंका उठायी जा सकती है कि यदि उपर्युक्त विधि से ही प्रत्येक पाठ पढ़ाया जाय तो अध्यापन नीरस हो सकता है और यह भी सम्भव है कि वर्ष के अन्त में पुस्तक समाप्त ही न हो। पहले ही कहा जा चुका है कि प्रत्येक पाठ में उपर्युक्त समस्त सोपानों का अनुसरण आवश्यक नहीं है। अध्यापक जहाँ आवश्यक समझें, अन्य विधियाँ अपना सकते हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हाईस्कूल स्तर पर छात्रों की मौखिक और लिखित भाषा में अपेक्षित सम्प्राप्ति पर विशेष ध्यान दिया जाय। अपेक्षित उद्देश्य पूर्ण हो जाने पर अध्यापक कतिपय बातें छोड़ भी सकते हैं और कुछ अन्य आवश्यक बातों का समावेश भी कर सकते हैं। उदाहरणार्थ, यदि अध्यापक देखता है कि उसकी कक्षा के छात्र सुन्दर मुखर वाचन कर लेते हैं तो इसका अभ्यास यदा-कदा ही करना चाहिए। इसी प्रकार यदि अध्यापक देखता है कि इस स्तर पर भी छात्रों को श्रुतलेख में अभ्यास देने की आवश्यकता है तो वह इसका पाठ्यक्रम में उल्लेख न होते हुए भी अपने शिक्षण में स्थान दे सकता है। तात्पर्य यह है कि अब तक जो भी बातें कही गयी हैं उन्हें सुझावमात्र समझना चाहिए। अध्यापक अपने अनुभव के आधार पर अपनी विधियाँ निश्चित करने में स्वविवेक का प्रयोग करें।

●●

1 प्रतापनारायण मिश्र

जीवन-परिचय—पं० प्रतापनारायण मिश्र का जन्म सन् 1856 ई० में उन्नाव जिले के बैजे नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता संकटाप्रसाद एक विख्यात ज्योतिषी थे और इसी विद्या के माध्यम से वे कानपुर में आकर बसे थे। पिता ने प्रतापनारायण को भी ज्योतिष की शिक्षा देना चाहा, पर इनका मन उसमें नहीं रम सका। अंग्रेजी शिक्षा के लिए इन्होंने स्कूल में प्रवेश लिया, किन्तु उनका मन अध्ययन में भी नहीं लगा। यद्यपि इन्होंने मन लगाकर किसी भी भाषा का अध्ययन नहीं किया, तथापि इन्हें हिन्दी, उर्दू, फारसी, संस्कृत और बँगला का अच्छा ज्ञान हो गया था। एक बार ईश्वरचन्द्र विद्यासागर इनसे मिलने आये तो इन्होंने उनके साथ पूरी बातचीत बँगला भाषा में ही किया। वस्तुतः मिश्र जी ने स्वाध्याय एवं सुसंगति से जो ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त किया, उसे गद्य, पद्य एवं निबन्ध आदि के माध्यम से समाज को अर्पित कर दिया। मात्र 38 वर्ष की अल्पायु में ही सन् 1894 ई० में कानपुर में इनका निधन हो गया।

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म-स्थान**—बैजे गाँव (उन्नाव), उ०प्र०।
- **जन्म एवं मृत्यु सन्**—1856 ई०, 1894 ई०।
- **पिता**—संकटाप्रसाद (ज्योतिषी)।
- **प्रमुख कृतियाँ**—कलि-कौतुक, हठी हम्मीर, प्रताप पीयूष, मन की लहर, भारत-दुर्दशा, प्रताप समीक्षा, गौ-संकट।
- **सम्पादन**—'ब्राह्मण' एवं 'हिन्दुस्तान'।
- **भाषा**—व्यावहारिक एवं खड़ीबोली।
- **हिन्दी साहित्य में स्थान**—हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान रहा।

साहित्यिक परिचय—मिश्र जी ने अपना साहित्यिक जीवन ख़्याल एवं लावनियों से प्रारम्भ किया था, क्योंकि आरम्भ में इनकी रुचि लोक-साहित्य का सृजन करने में थी। यहीं से ये साहित्यिक पथ के सतत प्रहरी बन गये। कुछ वर्षों के उपरान्त ही ये गद्य-लेखन के क्षेत्र में उतर आये। मिश्र जी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित होने के कारण उनको अपना गुरु मानते थे। उनकी-जैसी ही व्यावहारिक भाषा-शैली अपनाकर मिश्र जी ने कई मौलिक और अनूदित रचनाएँ लिखीं तथा 'ब्राह्मण' एवं 'हिन्दुस्तान' नामक पत्रों का सफलतापूर्वक सम्पादन किया। भारतेन्दु जी की 'कवि-वचन-सुधा' से प्रेरित होकर मिश्र जी ने कविताएँ भी लिखीं। इन्होंने कानपुर में एक 'नाटक सभा' की स्थापना भी की, जिसके माध्यम से पारसी थियेटर के समानान्तर हिन्दी का अपना रंगमंच खड़ा करना चाहते थे। ये स्वयं भारतेन्दु जी की तरह एक कुशल अभिनेता थे। बँगला के अनेक ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद करके भी इन्होंने हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि की। इनकी साहित्यिक विशेषता ही थी कि 'दाँत', 'भौं', 'वृद्ध', 'धोखा', 'बात', 'मुच्छ'-जैसे साधारण विषयों पर भी चमत्कारपूर्ण और असाधारण निबन्ध लिखे।

कृतियाँ—मिश्र जी ने अपनी अल्पायु में ही लगभग 40 पुस्तकों की रचना की। इनमें अनेक कविताएँ, नाटक, निबन्ध,

आलोचनाएँ आदि सम्मिलित हैं। इनकी ये कृतियाँ मौलिक एवं अनूदित दो प्रकार की हैं।

मौलिक : निबन्ध-संग्रह–'प्रताप पीयूष', 'निबन्ध नवनीत', 'प्रताप समीक्षा'।

नाटक–'कलि प्रभाव', 'हठी हम्मीर', 'गौ-संकट'।

रूपक–'कलि-कौतुक', 'भारत-दुर्दशा'।

प्रहसन–'ज्वारी-खुआरी', 'समझदार की मौत'।

काव्य–'मन की लहर', 'शृंगार-विलास', 'लोकोक्ति-शतक', 'प्रेम-पुष्पावली', 'दंगल खण्ड', 'तृप्यन्ताम्', 'ब्राडला-स्वागत', 'मानस विनोद', 'शैव-सर्वस्व', 'प्रताप-लहरी'।

सम्पादन–'ब्राह्मण' एवं 'हिन्दुस्तान'।

अनूदित : 'पंचामृत', 'चरिताष्टक', 'वचनावली', 'राजसिंह', 'राधारानी', 'कथामाला', 'संगीत शाकुन्तल' आदि। इनके अतिरिक्त मिश्र जी ने लगभग 10 उपन्यासों, कहानी, जीवन-चरितों और नीति पुस्तकों का भी अनुवाद किया; जिनमें–राधारानी, अमरसिंह, इन्दिरा, देवी चौधरानी, राजसिंह, कथा बाल-संगीत आदि प्रमुख हैं।

भाषा-शैली–सर्वसाधारण के लिए अपनी रचनाओं को ग्राह्य बनाने के उद्देश्य से मिश्र जी ने सर्वसाधारण की बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। इसमें उर्दू तथा अंग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है; जैसे-कलामुल्लाह, वर्ड ऑफ गॉड आदि। यत्र-तत्र कहावतों, मुहावरों एवं ग्रामीण शब्दों के प्रयोग से उनके वाक्य में रत्न की भाँति ये शब्द जड़ जाते हैं, अतः भाषा प्रवाहयुक्त, सरल एवं मुहावरेदार है।

मिश्र जी की शैली के दो रूप मिलते हैं–(1) हास्य-व्यंग्यपूर्ण विनोदात्मक शैली, (2) गम्भीर विचारात्मक एवं विवेचनात्मक शैली। **'बात'** मिश्र जी की हास्य–व्यंग्यप्रधान शैली में लिखा गया निबन्ध है।

●●

बात

यदि हम वैद्य होते तो कफ और पित्त के सहवर्ती बात की व्याख्या करते तथा भूगोलवेत्ता होते तो किसी देश के जल-बात का वर्णन करते, किन्तु दोनों विषयों में से हमें एक बात कहने का भी प्रयोजन नहीं है। हम तो केवल उसी बात के ऊपर दो-चार बातें लिखते हैं, जो हमारे-तुम्हारे सम्भाषण के समय मुख से निकल-निकल के परस्पर हृदयस्थ भाव को प्रकाशित करती रहती हैं।

सच पूछिये तो इस बात की भी क्या ही बात है जिसके प्रभाव से मानव जाति समस्त जीवधारियों की शिरोमणि (अशरफ-उल मखलूकात) कहलाती है। शुकसारिकादि पक्षी केवल थोड़ी-सी समझने योग्य बातें उच्चारित कर सकते हैं, इसी से अन्य नभचारियों की अपेक्षा आदृत समझे जाते हैं। फिर कौन न मानेगा कि बात की बड़ी बात है। हाँ, बात की बात इतनी बड़ी है कि परमात्मा को लोग निराकार कहते हैं, तो भी इसका सम्बन्ध उसके साथ लगाये रहते हैं। वेद, ईश्वर का वचन है, कुरआनशरीफ कलामुल्लाह है, होली बाइबिल वर्ड ऑफ गाड है। यह वचन, कलाम और वर्ड बात ही के पर्याय हैं जो प्रत्यक्ष मुख के बिना स्थिति नहीं कर सकती। पर बात की महिमा के अनुरोध से सभी धर्मावलम्बियों ने 'बिन बानी वक्ता बड़ जोगी' वाली बात मान रखी है। यदि कोई न माने तो लाखों बातें बना के मनाने पर कटिबद्ध रहते हैं। यहाँ तक कि प्रेम सिद्धान्ती लोग निरवयव नाम से मुँह बिचकावेंगे। 'अपाणिपादो जवनो ग्रहीता' पर हठ करनेवाले को यह कह के बातों में उड़ावेंगे कि "हम लूले-लँगड़े ईश्वर को नहीं मान सकते, हमारा प्यारा तो कोटि काम सुन्दर श्याम वर्ण विशिष्ट है।" निराकार शब्द का अर्थ श्री शालिग्राम शिला है जो उसकी श्यामता का द्योतन करती है अथवा योगाभ्यास का आरम्भ करनेवाले को आँखें मूँदने पर जो कुछ पहले दिखायी देता है वह निराकार अर्थात् बिलकुल काला रंग है। सिद्धान्त यह कि रंग-रूप रहित को सब रंग-रंजित एवं अनेक रूप सहित ठहरावेंगे, किन्तु कानों अथवा प्राणों व दोनों को प्रेम-रस से सिंचित करनेवाली उसकी मधुर मनोहर बातों के मजे से अपने को वंचित न रहने देंगे।

जब परमेश्वर तक बात का प्रभाव पहुँचा हुआ है तो हमारी कौन बात रही? हम लोगों के तो 'गात माँहि बात करामात है।' नाना शास्त्र, पुराण, इतिहास, काव्य, कोश इत्यादि सब बात ही के फैलाव हैं जिनके मध्य एक-एक बात ऐसी पायी जाती है जो मन, बुद्धि, चित्त को अपूर्व दशा में ले जानेवाली अथच लोक-परलोक में सब बात बनानेवाली है। यद्यपि बात का कोई रूप नहीं बतला सकता कि कैसी है पर बुद्धि दौड़ाइये तो ईश्वर की भाँति इसके भी अगणित ही रूप पाइयेगा। बड़ी बात, छोटी बात, सीधी बात, खोटी बात, टेढ़ी बात, मीठी बात, कड़वी बात, भली बात, बुरी बात, सुहाती बात, लगती बात इत्यादि सब बात ही तो हैं।

बात के काम भी इसी भाँति अनेक देखने में आते हैं। प्रीति-वैर, सुख-दुःख, श्रद्धा-घृणा, उत्साह-अनुत्साह आदि जितनी उत्तमता और सहजता बात के द्वारा विदित हो सकते हैं, दूसरी रीति से वैसी सुविधा ही नहीं। घर बैठे लाखों कोस का समाचार मुख और लेखनी से निर्गत बात ही बतला सकती है। डाकखाने अथवा तारघर के सहारे से बात की बात में चाहे जहाँ की जो बात हो, जान सकते हैं। इसके अतिरिक्त बात बनती है, बात बिगड़ती है, बात आ पड़ती है, बात जाती रहती है, बात उखड़ती है। हमारे तुम्हारे भी सभी काम बात पर ही निर्भर करते हैं। 'बातहि हाथी पाइये बातहि हाथी पाँव' बात ही से पराये अपने और अपने पराये हो जाते हैं। मक्खीचूस उदार तथा उदार स्वल्पव्ययी, कापुरुष युद्धोत्साही एवं युद्धप्रिय शान्तिशील, कुमार्गी सुपथगामी अथच सुपन्थी कुराही इत्यादि बन जाते हैं।

बात का तत्त्व समझना हर एक का काम नहीं है और दूसरों की समझ पर आधिपत्य जमाने योग्य बात गढ़ सकना भी ऐसों-वैसों का साध्य नहीं है। बड़े-बड़े विज्ञवरों तथा महा-महा कवीश्वरों के जीवन बात ही के समझने-समझाने में व्यतीत हो जाते हैं। सहृदयगण की बात के आनन्द के आगे सारा संसार तुच्छ जँचता है। बालकों की तोतली बातें, सुन्दरियों की मीठी-मीठी प्यारी-प्यारी बातें, सत्कवियों की रसीली बातें, सुवक्ताओं की प्रभावशालिनी बातें जिनके जी को और का और न कर दें, उसे पशु नहीं पाषाणखण्ड कहना चाहिए; क्योंकि कुत्ते, बिल्ली आदि को विशेष समझ नहीं होती तो भी पुचकार के 'तू-तू', 'पूसी-पूसी' इत्यादि बातें कह दो तो भावार्थ समझ के यथासामर्थ्य स्नेह प्रदर्शन करने लगते हैं। फिर वह मनुष्य कैसा जिसके चित्त पर दूसरे हृदयवान् की बात का असर न हो।

हमारे परम पूजनीय आर्यगण अपनी बात का इतना पक्ष करते थे कि "तन तिय तनय धाम धन धरनी। सत्यसंध कहँ तृन सम बरनी।" अथच "प्रानन ते सुत अधिक है सुत ते अधिक परान। ते दूनो दशरथ तजे, वचन न दीन्हों जान।" इत्यादि उनकी अक्षर-सम्बद्धा कीर्ति सदा संसार-पट्टिका पर सोने के अक्षरों से लिखी रहेगी। पर आजकल के बहुतेरे भारत कुपुत्रों ने यह ढंग पकड़ रखा है 'मर्द की जबान' (बात का उदय स्थान) और गाड़ी का पहिया चलता-फिरता ही रहता है। आज जो बात है कल ही स्वार्थान्धता के वश हुजूरों की मरजी के मुवाफिक दूसरी बातें हो जाने में तनिक भी विलम्ब की सम्भावना नहीं है। यद्यपि कभी-कभी अवसर पड़ने पर बात के अंश का कुछ रंग-ढंग परिवर्तित कर लेना नीति-विरुद्ध नहीं है। पर कब? जात्युपकार, देशोद्धार, प्रेम-प्रचार आदि के समय न कि पापी पेट के लिए।

एक हम लोग हैं जिन्हें आर्यकुल रत्नों के अनुगमन की सामर्थ्य नहीं है? किन्तु हिन्दुस्तानियों के नाम पर कलंक लगानेवालों के भी सहमार्गी बनने में घिन लगती है। इससे यह रीति अंगीकार कर रखी है कि चाहे कोई बड़ा बतकहा अर्थात् बातूनी कहे, चाहे यह समझे कि बात कहने का भी शऊर नहीं है, किन्तु अपनी मति के अनुसार ऐसी बातें बनाते रहना चाहिए जिनमें कोई-न-कोई किसी-न-किसी के वास्तविक हित की बात निकलती रहे। पर खेद है कि हमारी बातें सुननेवाले उँगलियों ही पर गिनने भर को हैं। इससे 'बात-बात में बात' निकालने का उत्साह नहीं होता। अपने जी को 'क्या बने बात जहाँ बात बनाये न बने' इत्यादि विदग्धालापों की लेखनी से निकली हुई बातें सुना के कुछ फुसला लेते हैं और बिन बात की बात को बात का बतंगड़ समझ के बहुत बात बढ़ाने से हाथ समेट लेना ही समझते हैं कि अच्छी बात है।

● **प्रतापनारायण मिश्र**

अभ्यास प्रश्न

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. **निम्नलिखित गद्यांशों में रेखांकित अंशों की व्याख्या और तथ्यपरक प्रश्नों के उत्तर दीजिये–**

(क) यदि हम वैद्य होते तो कफ और पित्त के सहवर्ती बात की व्याख्या करते तथा भूगोलवेत्ता होते तो किसी देश के जल-बात का वर्णन करते, किन्तु दोनों विषयों में से हमें एक बात कहने का भी प्रयोजन नहीं है। हम तो केवल उसी बात के ऊपर दो चार बातें लिखते हैं, जो हमारे-तुम्हारे सम्भाषण के समय मुख से निकल-निकल के परस्पर हृदयस्थ भाव को प्रकाशित करती रहती हैं।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

(iii) हम अपने हृदयस्थ भावों की अभिव्यक्ति किसके माध्यम से करते हैं?

(iv) भूगोलवेत्ता किसका अध्ययन करता है?

(v) वैद्य किस बात का वर्णन करते हैं?

(ख) जब परमेश्वर तक बात का प्रभाव पहुँचा हुआ है तो हमारी कौन बात रही? हम लोगों के तो 'गात माँहि बात करामात है।' नाना शास्त्र, पुराण, इतिहास, काव्य, कोश इत्यादि सब बात ही के फैलाव हैं जिनके मध्य एक-एक बात ऐसी पायी जाती है जो मन, बुद्धि, चित्त को अपूर्व दशा में ले जाने वाली अथच लोक-परलोक में सब बात बनानेवाली है। यद्यपि बात का कोई रूप नहीं बतला सकता कि कैसी है पर बुद्धि दौड़ाइये तो ईश्वर की भाँति इसके भी अगणित ही रूप पाइयेगा। बड़ी बात, छोटी बात, सीधी बात, खोटी बात, टेढ़ी बात, मीठी बात, कड़वी बात, भली बात, बुरी बात, सुहाती बात, लगती बात इत्यादि सब बात ही तो हैं।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश के शीर्षक एवं लेखक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) "गात माँहि बात करामात है।" का क्या तात्पर्य है?
(iv) कौन-सी बात चित्त, मन और बुद्धि को अपूर्व दिशा की ओर अग्रसर करती है?
(v) 'बड़ी बात', 'छोटी बात' एवं 'सीधी बात' मुहावरे का क्या अभिप्राय है?

(ग) सच पूछिये तो इस बात की भी क्या ही बात है जिसके प्रभाव से मानव जाति समस्त जीवधारियों की शिरोमणि (अशरफ-उल मखलूकात) कहलाती है। शुकसारिकादि पक्षी केवल थोड़ी-सी समझने योग्य बातें उच्चारित कर सकते हैं, इसी से अन्य नभचारियों की अपेक्षा आदृत समझे जाते हैं। फिर कौन न मानेगा कि बात की बड़ी बात है। हाँ, बात की बात इतनी बड़ी है कि परमात्मा को लोग निराकार कहते हैं, तो भी इसका सम्बन्ध उसके साथ लगाये रहते हैं। वेद, ईश्वर का वचन है, कुरआनशरीफ कलामुल्लाह है, होली बाइबिल वर्ड ऑफ गाड है। यह वचन, कलाम और वर्ड बात ही के पर्याय हैं जो प्रत्यक्ष मुख के बिना स्थिति नहीं कर सकती। पर बात की महिमा के अनुरोध से सभी धर्मावलम्बियों ने 'बिन बानी वक्ता बड़ जोगी' वाली बात मान रखी है।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) निराकार परमात्मा का सम्बन्ध बात से कैसे है?
(iv) मानव जाति समस्त जीवधारियों में क्यों शिरोमणि है?
(v) 'बिन बानी वक्ता बड़ जोगी' का क्या अभिप्राय है?

(घ) बात के काम भी इसी भाँति अनेक देखने में आते हैं। प्रीति-वैर, सुख-दुःख, श्रद्धा-घृणा, उत्साह-अनुत्साह आदि जितनी उत्तमता और सहजता बात के द्वारा विदित हो सकते हैं, दूसरी रीति से वैसी सुविधा ही नहीं। घर बैठे लाखों कोस का समाचार मुख और लेखनी से निर्गत बात ही बतला सकती है। डाकखाने अथवा तारघर के सहारे से बात की बात में चाहे जहाँ की जो बात हो, जान सकते हैं। इसके अतिरिक्त बात बनती है, बात बिगड़ती है, बात आ पड़ती है, बात जाती रहती है, बात उखड़ती है। हमारे तुम्हारे भी सभी काम बात पर ही निर्भर करते हैं। 'बातहि हाथी पाइये बातहि हाथी पाँव' बात ही से पराये अपने और अपने पराये हो जाते हैं। मक्खीचूस उदार तथा उदार स्वल्पव्ययी, कापुरुष युद्धोत्साही एवं युद्धप्रिय शान्तिशील, कुमार्गी सुपथगामी अथच सुपन्थी कुराही इत्यादि बन जाते हैं।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) लाखों कोस का समाचार कौन बतला सकता है?
(iv) पाँच वाक्यों में बात का महत्त्व लिखिए।
(v) 'बातहि हाथी पाइये बातहि हाथी पाँव' का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ङ) बात का तत्त्व समझना हर एक का काम नहीं है और दूसरों की समझ पर आधिपत्य जमाने योग्य बात गढ़

सकना भी ऐसे-वैसों का साध्य नहीं है। बड़े-बड़े विज्ञवरों तथा महा-महा कवीश्वरों के जीवन बात ही के समझने-समझाने में व्यतीत हो जाते हैं। सहृदयगण की बात के आनन्द के आगे सारा संसार तुच्छ जँचता है। बालकों की तोतली बातें, सुन्दरियों की मीठी-मीठी प्यारी-प्यारी बातें, सत्कवियों की रसीली बातें, सुवक्ताओं की प्रभावशालिनी बातें जिनके जी को और का और न कर दें, उसे पशु नहीं पाषाणखण्ड कहना चाहिए, क्योंकि कुत्ता, बिल्ली आदि को विशेष समझ नहीं होती तो भी पुचकार के 'तू-तू', 'पूसी-पूसी' इत्यादि बातें कह दो तो भावार्थ समझ के यथासामर्थ्य स्नेह प्रदर्शन करने लगते हैं। फिर वह मनुष्य कैसा जिसके चित्त पर दूसरे हृदयवान् की बात का असर न हो।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) बालकों की बातें कैसी होती हैं?
(iv) इस अवतरण में पाषाणखण्ड से क्या आशय है?
(v) विद्वानों और कवियों का जीवन कैसे बीतता है?

(च) 'मर्द की जबान' (बात का उदय स्थान) और गाड़ी का पहिया चलता-फिरता ही रहता है। आज जो बात है कल ही स्वार्थान्धता के वश हुजूरों की मरजी के मुवाफिक दूसरी बातें हो जाने में तनिक भी विलम्ब की सम्भावना नहीं है। यद्यपि कभी-कभी अवसर पड़ने पर बात के अंश का कुछ रंग-ढंग परिवर्तित कर लेना नीति-विरुद्ध नहीं है। पर कब? जात्युपकार, देशोद्धार, प्रेम-प्रचार आदि के समय न कि पापी पेट के लिए।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) लेखक ने किसे नियमों का उल्लंघन नहीं माना है?
(iv) 'मर्द की जबान' के चलते-फिरते रहने से क्या तात्पर्य है?
(v) बात के ढंग का कुछ रंग-ढंग परिवर्तित कर लेना किस प्रकार नीति विरुद्ध नहीं है?

2. प्रतापनारायण मिश्र का जीवन-परिचय बताते हुए उनकी साहित्यिक सेवाओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

प्रतापनारायण मिश्र का जीवन एवं साहित्यिक परिचय स्पष्ट कीजिए।

3. प्रतापनारायण मिश्र के साहित्यिक परिचय एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

4. प्रतापनारायण मिश्र का जीवन-परिचय बताते हुए उनकी कृतियों पर प्रकाश डालिए।

5. प्रतापनारायण मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रतापनारायण मिश्र की भाषा एवं शैली की दो-दो विशेषताएँ लिखिए।

2. 'बात के कारण ही मनुष्य सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।' इस तथ्य को लेखक ने किस प्रकार सिद्ध किया है?

3. 'बातहि हाथी पाइये बातहि हाथी पाँव' से लेखक का क्या तात्पर्य है?

4. प्रतापनारायण मिश्र ने किन पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया?

5. 'अपाणिपादो जवनो ग्रहीता' सूक्ति का अर्थ बताइये।

6. आर्यगण अपनी बात का ध्यान रखते थे, इस बात का क्या प्रमाण है?

7. 'बात' पाठ से मुहावरों की सूची बनाइये।

8. 'बात' पाठ में 'बात' और 'ईश्वर' में क्या साम्य बताया गया है?

9. प्रथम अनुच्छेद में 'बात' शब्द का प्रयोग किन-किन अर्थों में किया गया है?
10. किस प्रकार के व्यक्ति को हमें पाषाणखण्ड समझना चाहिए और क्यों?
11. 'बात' शब्द की गूढ़ता पर 30 शब्द लिखिए।
12. 'बात' पाठ से 10 सुन्दर वाक्य लिखिए।
13. 'बात' पाठ का मुख्य उद्देश्य बताइये।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. लेखक ने भारत के कुपुत्रों द्वारा 'मर्द की जबान' का क्या अर्थ बताया है?
2. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइये–
   (अ) प्रतापनारायण मिश्र भारतेन्दु-युग के लेखक हैं। ( )
   (ब) निराकार शब्द का अर्थ शालिग्राम शिला है। ( )
   (स) प्रतापनारायण मिश्र ने 'ब्राह्मण' पत्रिका का सम्पादन नहीं किया। ( )
   (द) 'बात' के कई रूप हैं। ( )
3. प्रतापनारायण मिश्र किस युग के लेखक हैं?
4. प्रतापनारायण मिश्र किस महान् साहित्यकार को अपना गुरु मानते थे?
5. प्रतापनारायण मिश्र द्वारा लिखित दो नाटकों के नाम लिखिए।
6. कलामुल्लाह का क्या अर्थ है?

व्याकरण-बोध

1. **निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्य-प्रयोग कीजिए–**
   बात जाती रहना, बात जमना, बात बिगड़ना, बात का बतंगड़ बनाना, बात उखड़ना, बात की बात।
2. **निम्नलिखित में सनियम सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम बताइये–**
   निराकार, निरवयव, परमेश्वर, धर्मावलम्बी, विदग्धालाप, युद्धोत्साही, स्वार्थान्धता, कवीश्वर, योगाभ्यास।
3. **निम्नलिखित में समास-विग्रह करके समास का नाम भी लिखिए–**
   कापुरुष, पाषाणखण्ड, सुपथ, यथासामर्थ्य, अपाणिपादो, कुमार्गी।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. प्रताप नारायण मिश्र का जन्म कब हुआ था?
   (अ) **1856 ई.** (ब) 1860 ई. (स) 1862 ई. (द) 1864 ई.
2. प्रताप नारायण मिश्र का निधन कब हुआ था?
   (अ) 1890 ई. (ब) 1892 ई. (स) **1894 ई.** (द) 1896 ई.
3. प्रताप नारायण मिश्र ने किस पत्रिका का सम्पादन किया था?
   (अ) **ब्राह्मण** (ब) सरस्वती (स) कादम्बिनी (द) प्रतीप

4. निम्न में कौन-सी रचना प्रताप नारायण मिश्र की है?
(अ) भारत दुर्दशा (ब) गौ संकट (स) हठी हम्मीर (द) **इनमें से सभी**

5. 'बात' निबन्ध के लेखक हैं—
(अ) **प्रताप नारायण मिश्र** (ब) रामचन्द्र शुक्ल
(स) श्यामसुन्दर दास (द) हजारी प्रसाद द्विवेदी

6. 'गात माँहि बात करामात है' उक्त पंक्ति किस निबन्ध से उद्धृत है?
(अ) मित्रता (ब) **बात**
(स) भारतीय सभ्यता (द) भारतीय संस्कृति

7. पाठानुसार निम्न में कौन-सा बात के भेद हैं?
(अ) भली बात (ब) बुरी बात (स) लगती बात (द) **इनमें सभी**

8 'बातहिं हाथी पाइये बातहिं हाथी पाँव' उक्त पंक्ति किस निबन्ध से उद्धृत है?
(अ) **बात** (ब) करुणा
(स) मित्रता (द) आचरण की सभ्यता

9. ''मर्द की जबान' (बात का उदय स्थान) और गाड़ी का पहिया चलता-फिरना ही रहता है।'' उक्त पंक्ति किस निबन्ध से उद्धृत है?
(अ) लोभ और प्रीति (ब) **बात**
(स) राष्ट्र का स्वरूप (द) इनमें से कोई नहीं

10. 'हिन्दुस्तान' पत्रिका का सम्पादन किसने किया था?
(अ) **प्रताप नारायण मिश्र** (ब) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(स) हजारी प्रसाद द्विवेदी (द) सम्पूर्णानन्द

11. प्रताप नारायण मिश्र किस युग के लेखक थे?
(अ) **भारतेन्दु युग** (ब) शुक्ल युग
(स) द्विवेदी युग (द) इनमें से कोई नहीं

12. 'बात उखड़ना' का अर्थ है—
(अ) ठीक तरह से बात समझ में आना
(ब) **बात न बनना**
(स) बात बनना
(द) बातों में उलझाना

13. प्रताप नारायण मिश्र की मृत्यु कितनी वर्ष की अवस्था में हुयी थी?
(अ) **38 वर्ष** (ब) 40 वर्ष (स) 42 वर्ष (द) 44 वर्ष

14. निम्न में कौन-सा नाटक प्रताप नारायण मिश्र द्वारा लिखित है?
(अ) गौ संकट (ब) कलि प्रभाव (स) हठी हम्मीर (द) **उपर्युक्त सभी**

उत्तरमाला : 1. (अ) 2. (स) 3. (अ) 4. (द) 5. (अ) 6. (ब) 7. (द) 8. (अ) 9. (ब) 10. (अ) 11. (अ) 12. (ब) 13. (अ) 14. (द)

●●

2 प्रेमचन्द

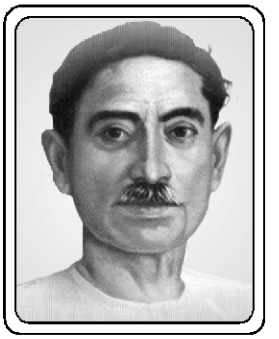

जीवन-परिचय–उपन्यास सम्राट् प्रेमचन्द का जन्म एक गरीब घराने में काशी से चार मील दूर लमही नामक गाँव में 31 जुलाई, 1880 ई0 को हुआ था। इनके पिता अजायब राय डाक-मुंशी थे। सात साल की अवस्था में माता का और चौदह वर्ष की अवस्था में पिता का देहान्त हो गया। घर में यों ही बहुत निर्धनता थी, पिता की मृत्यु के पश्चात् इनके सिर पर कठिनाइयों का पहाड़ टूट पड़ा। रोटी कमाने की चिन्ता बहुत जल्दी इनके सिर पर आ पड़ी। ट्यूशन करके इन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की। आपका विवाह कम उम्र में हो गया था, जो इनके अनुरूप नहीं था, अतः शिवरानी देवी के साथ दूसरा विवाह किया।

स्कूल-मास्टरी की नौकरी करते हुए इन्होंने एफ0 ए0 और बी0 ए0 पास किया। स्कूल-मास्टरी के रास्ते पर चलते-चलते सन् 1921 में वह गोरखपुर में स्कूलों के डिप्टी इन्स्पेक्टर बन गये। जब गाँधीजी ने सरकारी नौकरी से इस्तीफे का बिगुल बजाया तो उसे सुनकर प्रेमचन्द ने भी तुरन्त त्याग-पत्र दे दिया। उसके बाद कुछ दिनों तक इन्होंने कानपुर के मारवाड़ी स्कूल में अध्यापन किया फिर 'काशी विद्यापीठ' में प्रधान अध्यापक नियुक्त हुए। इसके बाद अनेक पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन करते हुए काशी में प्रेस खोला। सन् 1934-35 में आपने आठ हजार रुपये वार्षिक वेतन पर मुम्बई की एक फिल्म कम्पनी में नौकरी कर ली। जलोदर रोग के कारण 8 अक्टूबर, 1936 ई0 को काशी स्थित इनके गाँव में इनका देहावसान हो गया।

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म-स्थान**–लमही (वाराणसी), उ0प्र0।
- **जन्म एवं मृत्यु सन्**–1880 ई0, 1936 ई0।
- **पिता**–अजायब राय।
- **माता**–आनन्दी देवी।
- **प्रमुख कृतियाँ**–गोदान, गबन, सेवासदन, प्रेमाश्रम, निर्मला, कर्मभूमि, रंगभूमि।
- शुक्ल-युग के लेखक।
- **बचपन का नाम**–धनपत राय।
- **हिन्दी साहित्य में स्थान**–एक श्रेष्ठ कहानी एवं उपन्यास सम्राट के रूप में चर्चित।

साहित्यिक परिचय–प्रेमचन्द जी में साहित्य-सृजन की जन्मजात प्रतिभा विद्यमान थी। आरम्भ में 'नवाब राय' के नाम से उर्दू भाषा में कहानियाँ और उपन्यास लिखते थे। इनकी 'सोजे वतन' नामक क्रान्तिकारी रचना ने स्वाधीनता-संग्राम में ऐसी हलचल मचायी कि अंग्रेज सरकार ने इनकी यह कृति जब्त कर ली। बाद में 'प्रेमचन्द' नाम रखकर हिन्दी साहित्य की साधना की और लगभग एक दर्जन उपन्यास और तीन सौ कहानियाँ लिखीं। इसके अतिरिक्त इन्होंने 'माधुरी' तथा 'मर्यादा' पत्रिकाओं का सम्पादन किया तथा 'हंस' व 'जागरण' नामक पत्र का प्रकाशन किया। जनता की बात जनता की भाषा में कहकर तथा अपने कथा साहित्य के माध्यम से तत्कालीन निम्न एवं मध्यम वर्ग का सच्चा चित्र प्रस्तुत करके प्रेमचन्द जी भारतीयों के हृदय में समा गये। सच्चे अर्थों में 'कलम के सिपाही' और जनता के दुःख-दर्द के गायक इस महान् कथाकार को भारतीय साहित्य-

जगत् में 'उपन्यास सम्राट्' की उपाधि से विभूषित किया गया।

कृतियाँ–प्रेमचन्द जी की निम्नलिखित कृतियाँ उल्लेखनीय हैं–

(1) उपन्यास–'कर्मभूमि', 'कायाकल्प', 'निर्मला', 'प्रतिज्ञा', 'प्रेमाश्रम', 'वरदान', 'सेवासदन', 'रंगभूमि', 'गबन', 'गोदान', 'मंगलसूत्र'।

(2) नाटक–'कर्बला', 'प्रेम की वेदी', 'संग्राम' और 'रूठी रानी'।

(3) जीवन-चरित–'कलम', 'तलवार और त्याग', 'दुर्गादास', 'महात्मा शेखसादी' और 'राम चर्चा'।

(4) निबन्ध-संग्रह–'कुछ विचार'।

(5) सम्पादित–'गल्प रत्न' और 'गल्प-समुच्चय'।

(6) अनूदित–'अहंकार', 'सदासुख', 'आजाद-कथा', 'चाँदी की डिबिया', 'टॉलस्टाय की कहानियाँ' और 'सृष्टि का आरम्भ'।

(7) कहानी-संग्रह–(1) 'सप्त सरोज', (2) 'नवनिधि', (3) 'प्रेम पूर्णिमा', (4) 'प्रेम पचीसी', (5) 'प्रेम प्रतिमा', (6) 'प्रेम द्वादशी', (7) 'समर-यात्रा', (8) 'मानसरोवर', (9) 'कफन'।

भाषा-शैली–प्रेमचन्द जी की भाषा के दो रूप हैं–एक रूप तो वह है, जिसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों की प्रधानता है और दूसरा रूप वह है, जिसमें उर्दू, संस्कृत, हिन्दी के व्यावहारिक शब्दों का प्रयोग किया गया है। यह भाषा अधिक सजीव, व्यावहारिक और प्रवाहमयी है। इनकी भाषा सहज, सरल, व्यावहारिक, प्रवाहपूर्ण, मुहावरेदार एवं प्रभावशाली है। प्रेमचन्द विषय एवं भावों के अनुरूप शैली को परिवर्तित करने में दक्ष थे। इन्होंने अपने साहित्य में प्रमुख रूप से पाँच शैलियों का प्रयोग किया है–(1) वर्णनात्मक, (2) विवेचनात्मक, (3) मनोवैज्ञानिक, (4) हास्य-व्यंग्यप्रधान शैली तथा (5) भावात्मक शैली।

'मन्त्र' प्रेमचन्द की एक मर्मस्पर्शी कहानी है, जो उच्च एवं निम्न स्थिति के भेदभाव पर आधारित है जिसमें लेखक ने विरोधी घटनाओं, परिस्थितियों और भावनाओं का चित्रण करके कर्त्तव्य-बोध का मार्ग दिखाया है। पाठक मन्त्र-मुग्ध होकर पूरी कहानी को पढ़ जाता है।

●●

मन्त्र

सन्ध्या का समय था। डॉक्टर चड्ढा गोल्फ खेलने के लिए तैयार हो रहे थे। मोटर कार सामने खड़ी थी कि दो कहार एक डोली लिये आते दिखायी दिये। डोली के पीछे बूढ़ा लाठी टेकता चला आ रहा था। डोली औषधालय के सामने आकर रुक गयी। बूढ़े ने धीरे-धीरे आकर द्वार पर पड़ी हुई चिक से झाँका। ऐसी साफ-सुथरी जमीन पर पैर रखते हुए भय हो रहा था कि कोई घुड़क न बैठे। डॉक्टर साहब को मेज के सामने खड़े देखकर भी कुछ कहने का साहस न हुआ।

डॉक्टर साहब ने चिक के अन्दर से गरजकर कहा–कौन है? क्या चाहता है? बूढ़े ने हाथ जोड़कर कहा–हुजूर, बड़ा गरीब आदमी हूँ। मेरा लड़का कई दिन से.....।

डॉक्टर साहब ने सिगार जलाकर कहा–कल सबेरे आओ, कल सबेरे; हम इस वक्त मरीजों को नहीं देखते।

बूढ़े ने घुटने टेककर जमीन पर सिर रख दिया और बोला–दुहाई है सरकार की, लड़का मर जायगा। हुजूर चार दिन से आँखें नहीं.....।

डॉक्टर चड्ढा ने कलाई पर नजर डाली केवल दस मिनट समय और बाकी था, गोल्फ स्टिक खूँटी से उतारते हुए बोले–कल सवेरे आओ, कल सवेरे; यह हमारे खेलने का समय है।

बूढ़े ने पगड़ी उतारकर चौखट पर रख दी और रोकर बोला–हुजूर, एक निगाह देख लें! बस, एक निगाह! लड़का हाथ से चला जायगा हुजूर। सात लड़कों में यही एक बच रहा है हुजूर! हम दोनों आदमी रो-रो मर जायँगे, सरकार! आपकी बढ़ती होय, दीनबन्धु!

ऐसे उजड्ड देहाती यहाँ प्रायः रोज आया करते थे। डॉक्टर साहब उनके स्वभाव से खूब परिचित थे। कोई कितना ही कुछ कहे, पर वे अपनी ही रट लगाते जायँगे, किसी की सुनेंगे नहीं। धीरे से चिक उठायी और बाहर निकलकर मोटर की तरफ चले। बूढ़ा यह कहता हुआ उनके पीछे दौड़ा–सरकार, बड़ा धरम होगा। हुजूर दया कीजिए, बड़ा दीन-दुःखी हूँ, संसार में कोई नहीं है, बाबूजी।

मगर डॉक्टर साहब ने उसकी ओर मुँह फेरकर देखा तक नहीं। मोटर पर बैठकर बोले–कल सवेरे आना।

मोटर चली गयी। बूढ़ा कई मिनट तक मूर्ति की भाँति निश्चल खड़ा रहा। संसार में ऐसे मनुष्य भी होते हैं, जो अपने आमोद-प्रमोद के आगे किसी की जान की भी परवाह नहीं करते, शायद इसका उसे अब भी विश्वास न आता था। सभ्य संसार इतना निर्मम, इतना कठोर है, इसका ऐसा मर्मभेदी अनुभव अब तक न हुआ था। वह उन पुराने जमाने के जीवों में था, जो लगी हुई आग को बुझाने, मुर्दे को कन्धा देने, किसी के छप्पर को उठाने और किसी कलह को शान्त करने के लिए सदैव तैयार रहते थे। जब तक बूढ़े को मोटर दिखायी दी, वह खड़ा टकटकी लगाये उस ओर ताकता रहा। शायद उसे अब भी डॉक्टर साहब के लौट आने की आशा थी। फिर उसने कहारों से डोली उठाने को कहा। डोली जिधर से आयी थी, उधर ही चली गयी। चारों ओर से निराश होकर वह डॉक्टर चड्ढा के पास आया था। इनकी बड़ी तारीफ सुनी थी। यहाँ से निराश होकर फिर वह किसी दूसरे डॉक्टर के पास न गया। किस्मत ठोक ली!

उसी रात को उसका हँसता-खेलता सात साल का बालक अपनी बाललीला समाप्त करके इस संसार से सिधार गया। बूढ़े माँ-बाप के जीवन का यही एक आधार था। इसी का मुँह देखकर वे जीते थे। इस दीपक के बुझते ही जीवन की अँधेरी रात भायँ-भायँ करने लगी। बुढ़ापे की विशाल ममता टूटे हुए हृदय से निकलकर उस अन्धकार में आर्तस्वर से रोने लगी।

× × ×

कई साल गुजर गये। डॉक्टर चड्ढा ने खूब यश और धन कमाया, लेकिन इसके साथ ही अपने स्वास्थ्य की रक्षा भी की, जो एक असाधारण बात थी। यह उनके नियमित जीवन का आशीर्वाद था कि पचास वर्ष की अवस्था में भी उनकी चुस्ती और

फुर्ती युवकों को भी लज्जित करती थी। उनके हर एक काम का समय नियत था, इस नियम से वह जौ-भर भी न टलते थे। बहुधा लोग स्वास्थ्य के नियमों का पालन उस समय करते हैं, जब रोगी हो जाते हैं। डॉक्टर चड्ढा उपचार और संयम का रहस्य खूब समझते थे। उनकी सन्तान-संख्या भी इसी नियम के अधीन थी। उनके केवल दो बच्चे हुए, एक लड़का और एक लड़की। तीसरी सन्तान न हुई। इसलिए श्रीमती चड्ढा भी अभी जवान मालूम होती थीं। लड़की का तो विवाह हो चुका था। लड़का कॉलेज में पढ़ता था। वही माता-पिता के जीवन का आधार था। शील और विनय का पुतला, बड़ा ही रसिक, बड़ा ही उदार, विद्यालय का गौरव, युवक-समाज की शोभा। मुख-मण्डल से तेज की छटा-सी निकलती थी। आज उसी की बीसवीं सालगिरह थी।

सन्ध्या का समय था। हरी-हरी घास पर कुर्सियाँ बिछी हुई थीं। शहर के रईस और हुक्काम एक तरफ, कॉलेज के छात्र दूसरी तरफ बैठे भोजन कर रहे थे। बिजली के प्रकाश से सारा मैदान जगमगा रहा था। आमोद-प्रमोद का सामान भी जमा था। छोटा-सा प्रहसन खेलने की तैयारी थी। प्रहसन स्वयं कैलाशनाथ ने लिखा था। वही मुख्य ऐक्टर भी था। इस समय वह एक रेशमी कमीज पहने, नंगे सिर, नंगे पाँव इधर-से-उधर मित्रों की आवभगत में लगा हुआ था। कोई पुकारता–'कैलाश, जरा इधर तो आना। कोई उधर से बुलाता–कैलाश, क्या उधर ही रहोगे?' सभी उसे छेड़ते थे, चुहलें करते थे, बेचारे को जरा दम मारने का भी अवकाश न मिलता था। सहसा एक रमणी ने उसके पास आकर कहा–क्यों कैलाश, तुम्हारा साँप कहाँ है? जरा मुझे दिखा दो।

कैलाश ने उससे हाथ मिलाकर कहा–मृणालिनी, इस वक्त क्षमा करो, कल दिखा दूँगा।

मृणालिनी ने आग्रह किया–जी नहीं, तुम्हें दिखाना पड़ेगा, मैं आज नहीं मानने की। तुम रोज 'कल-कल' करते हो।

मृणालिनी और कैलाश दोनों सहपाठी थे और एक-दूसरे के प्रेम में पगे हुए। कैलाश को साँपों के पालने, खेलाने और नचाने का शौक था। तरह-तरह के साँप पाल रखे थे। उनके स्वभाव और चरित्र की परीक्षा करता रहता था। थोड़े दिन हुए, उसने विद्यालय में साँपों पर एक मार्के का व्याख्यान दिया था। साँपों को नचाकर दिखाया भी था। प्राणिशास्त्र के बड़े-बड़े पण्डित भी यह व्याख्यान सुनकर दंग रह गये थे। यह विद्या उसने एक बूढ़े सँपेरे से सीखी थी। साँपों की जड़ी-बूटियाँ जमा करने का उसे मर्ज था। इतना पता भर मिल जाय कि किसी व्यक्ति के पास कोई अच्छी जड़ी है, फिर उसे चैन न आता था। उसे लेकर ही छोड़ता था। यही व्यसन था। इस पर हजारों रुपये फूँक चुका था। मृणालिनी कई बार आ चुकी थी, पर कभी साँपों को देखने के लिए इतनी उत्सुक न हुई थी। कह नहीं सकते, आज उसकी उत्सुकता सचमुच जाग गयी थी या वह कैलाश पर अपने अधिकार का प्रदर्शन करना चाहती थी, पर उसका आग्रह बेमौका था। उस कोठरी में कितनी भीड़ लग जायगी, भीड़ को देखकर साँप कितने चौंकेंगे और रात के समय उन्हें छेड़ा जाना कितना बुरा लगेगा, इन बातों का उसे जरा भी ध्यान न आया।

कैलाश ने कहा–नहीं, कल जरूर दिखा दूँगा। इस वक्त अच्छी तरह दिखा भी न सकूँगा, कमरे में तिल रखने की भी जगह न मिलेगी।

एक महाशय ने छेड़कर कहा–दिखा क्यों नहीं देते, जरा-सी बात के लिए इतना टाल-मटोल कर रहे हो? मिस गोविन्द हर्गिज न मानना। देखें, कैसे नहीं दिखाते।

दूसरे महाशय ने और रद्दा चढ़ाया–मिस गोविन्द इतनी सीधी और भोली हैं, तभी आप इतना मिजाज करते हैं, दूसरी सुन्दरी होती, तो इसी बात पर बिगड़ खड़ी होती।

तीसरे साहब ने मजाक उड़ाया–'अजी बोलना छोड़ देती। भला, कोई बात है। इस पर आपको दावा है कि मृणालिनी के लिए जान हाजिर है।' मृणालिनी ने देखा कि ये शोहदे उसे रंग पर चढ़ा रहे हैं तो बोली–'आप लोग मेरी वकालत न करें, मैं खुद अपनी वकालत कर लूँगी। मैं इस वक्त साँपों का तमाशा नहीं देखना चाहती। चलो, छुट्टी हुई।'

इस पर मित्रों ने ठहाका लगाया। एक साहब बोले–देखना तो आप सब-कुछ चाहें, पर कोई दिखाये भी तो?

कैलाश को मृणालिनी की झेंपी हुई सूरत देखकर मालूम हुआ कि इस वक्त उसका इनकार वास्तव में उसे बुरा लगा है। ज्यों ही प्रीतिभोज समाप्त हुआ और गाना शुरू हुआ, उसने मृणालिनी और अन्य मित्रों को साँपों के दरबे के सामने ले जाकर महुअर बजाना शुरू किया। फिर एक-एक खाना खोलकर एक-एक साँप को निकालने लगा। वाह! क्या कमाल था! ऐसा जान पड़ता था कि वे कीड़े उसकी एक-एक बात, उसके मन का एक-एक भाव समझते हैं। किसी को उठा लिया, किसी को गर्दन में डाल लिया, किसी को हाथ में लपेट लिया। मृणालिनी बार-बार मना करती कि उन्हें गर्दन में न डालो, दूर ही से दिखा दो। बस जरा नचा दो। कैलाश की गर्दन में साँपों को लिपटते देखकर उसकी जान निकल जाती थी। पछता रही थी कि मैंने व्यर्थ ही इनसे साँप दिखाने को कहा, मगर कैलाश एक न सुनता था। प्रेमिका के सम्मुख अपने सर्प-कला प्रदर्शन का ऐसा अवसर

पाकर वह कब चूकता। एक मित्र ने टीका की–'दाँत तोड़ डाले होंगे।'

कैलाश हँसकर बोला–'दाँत तोड़ डालना मदारियों का काम है। किसी के दाँत नहीं तोड़े गये हैं। कहिये तो दिखा दूँ?' कहकर उसने एक काले साँप को पकड़ लिया और बोला–'मेरे पास इससे बड़ा और जहरीला साँप दूसरा नहीं है। अगर किसी को काट ले, तो आदमी आनन-फानन में मर जाय। लहर भी न आये। इसके काटे का मन्त्र नहीं। इसके दाँत दिखा दूँ।'

मृणालिनी ने उसका हाथ पकड़कर कहा–'नहीं-नहीं, कैलाश, ईश्वर के लिए उसे छोड़ दो। तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ।'

इस पर दूसरे मित्र बोले–'मुझे तो विश्वास नहीं आता, लेकिन तुम कहते हो, तो मान लूँगा।'

कैलाश ने साँप की गर्दन पकड़कर कहा–'नहीं साहब, आप आँखों से देखकर मानिये। दाँत तोड़कर वश में किया तो क्या किया! साँप बड़ा समझदार होता है। अगर उसे विश्वास हो जाय कि इस आदमी से मुझे कोई हानि न पहुँचेगी, तो वह उसे हर्गिज न काटेगा।'

मृणालिनी ने जब देखा कि कैलाश पर इस वक्त भूत सवार है, तो उसने यह तमाशा न करने के विचार से कहा–'अच्छा भाई, अब यहाँ से चलो। देखो गाना शुरू हो गया है। आज मैं भी कोई चीज सुनाऊँगी।' यह कहते हुए उसने कैलाश का कन्धा पकड़कर चलने का इशारा किया और कमरे से निकल गयी, मगर कैलाश विरोधियों का शंका-समाधान करके ही दम लेना चाहता था। उसने साँप की गर्दन पकड़कर जोर से दबायी, इतनी जोर से दबायी कि उसका मुँह लाल हो गया, देह की सारी नसें तन गयीं। साँप ने अब तक उसके हाथों ऐसा व्यवहार न देखा था। उसकी समझ में न आता था कि यह मुझसे क्या चाहते हैं? उसे शायद भ्रम हुआ कि यह मुझे मार डालना चाहते हैं, अतएव वह आत्मरक्षा के लिए तैयार हो गया।

कैलाश ने उसकी गर्दन खूब दबाकर मुँह खोल दिया और उसके जहरीले दाँत दिखाते हुए बोला–जिन सज्जनों को शक हो, आकर देख लें। आया विश्वास या अब भी कुछ शक है? मित्रों ने आकर उसके दाँत देखे और चकित हो गये। प्रत्यक्ष प्रमाण के सामने सन्देह को स्थान कहाँ? मित्रों का शंका-निवारण करके कैलाश ने साँप की गर्दन ढीली कर दी और उसे जमीन पर रखना चाहा, पर वह काला गेहुँअन क्रोध से पागल हो रहा था। गर्दन नरम पड़ते ही उसने सिर उठाकर कैलाश की उँगली में जोर से काटा और वहाँ से भागा। कैलाश की उँगली से टप-टप खून टपकने लगा। उसने जोर से उँगली दबा ली और अपने कमरे की तरफ दौड़ा। वहाँ मेज की दराज में एक जड़ी रखी हुई थी, जिसे पीसकर लगा देने से घातक विष भी रफू हो जाता था।

मित्रों में हलचल बढ़ गयी। बाहर महफिल में भी खबर हुई। डॉक्टर साहब घबड़ाकर दौड़े। फौरन उँगली की जड़ कसकर बाँधी गयी और जड़ी पीसने के लिए दी गयी। डॉक्टर साहब जड़ी के कायल न थे। वह उँगली का डसा भाग नश्तर से काट देना चाहते थे, मगर कैलाश को जड़ी पर पूर्ण विश्वास था। मृणालिनी प्यानो पर बैठी हुई थी। यह खबर सुनते ही दौड़ी और कैलाश की उँगली से टपकते हुए खून को रूमाल से पोंछने लगी। जड़ी पीसी जाने लगी, पर उसी एक मिनट में कैलाश की आँखें झपकने लगीं, ओंठों पर पीलापन दौड़ने लगा। यहाँ तक कि वह खड़ा न रह सका। फर्श पर बैठ गया।

सारे मेहमान कमरे में जमा हो गये। कोई कुछ कहता था, कोई कुछ। इतने में जड़ी पीसकर आ गयी। मृणालिनी ने उँगली पर लेप किया। एक मिनट और बीता, कैलाश की आँखें बन्द हो गयीं। वह लेट गया और हाथ से पंखा झलने का इशारा किया। माँ ने दौड़कर उसका सिर गोद में रख लिया और बिजली का टेबुल-फैन लगा दिया।

डॉक्टर साहब ने झुककर पूछा–'कैलाश, कैसी तबीयत है?' कैलाश ने धीरे से हाथ उठा दिया, मगर कुछ बोल न सका। मृणालिनी ने करुण स्वर में कहा–'क्या जड़ी कुछ असर न करेगी?' डॉक्टर साहब ने सिर पकड़कर कहा–'क्या बताऊँ, मैं इसकी बातों में आ गया। अब तो नश्तर से भी कुछ फायदा न होगा।'

आधा घण्टे तक यही हाल रहा–'कैलाश की दशा प्रतिक्षण बिगड़ती जाती थी। यहाँ तक कि उसकी आँखें पथरा गयीं, हाथ-पाँव ठण्डे हो गये, मुख की कान्ति मलिन पड़ गयी, नाड़ी का कहीं पता नहीं, मौत के सारे लक्षण दिखायी देने लगे। घर में कोहराम मच गया। मृणालिनी एक ओर सिर पीटने लगी, माँ अलग पछाड़ें खाने लगी। डॉक्टर चड्ढा को मित्रों ने पकड़ लिया नहीं तो वह नश्तर अपनी गर्दन में मार लेते।

एक महाशय बोले–कोई मन्त्र झाड़नेवाला मिले, तो सम्भव है, अभी भी जान बच जाय।

एक मुसलमान सज्जन ने इसका समर्थन किया–अरे साहब, कब्र में पड़ी हुई लाशें जिन्दा हो गयी हैं। ऐसे-ऐसे बाकमाल पड़े हुए हैं।

डॉक्टर चड्ढा बोले–'मेरी अक्ल पर पत्थर पड़ गया था कि इसकी बातों में आ गया। नश्तर लगा देता, तो यह नौबत क्यों आती? बार-बार समझाता रहा कि बेटा साँप न पालो, मगर कौन सुनता था! बुलाइये, किसी झाड़-फूँक करनेवाले को ही बुलाइये। मेरा सब-कुछ ले-ले, मैं अपनी सारी जायदाद उसके पैरों पर रख दूँगा, लँगोटी बाँधकर घर से निकल जाऊँगा, मगर मेरा कैलाश, मेरा प्यारा कैलाश उठ बैठे। ईश्वर के लिए किसी को बुलवाइये।'

एक महाशय का किसी झाड़नेवाले से परिचय था। वह दौड़कर उसे बुला लाये, मगर कैलाश की सूरत देखकर उसे मन्त्र चलाने की हिम्मत न पड़ी। बोला–अब क्या हो सकता है सरकार, जो कुछ होना था, हो चुका।

'अरे मूर्ख, यह क्यों नहीं कहता कि जो कुछ न होना था, हो चुका। जो कुछ होना था वह कहाँ हुआ? माँ-बाप ने बेटे का सेहरा कहाँ देखा? मृणालिनी का कामना-तरु क्या पल्लव और पुष्प से रंजित हो उठा? मन के वह स्वर्ण-स्वप्न जिनसे जीवन आनन्द का स्रोत बना हुआ था, क्या पूरे हो गये? जीवन के नृत्यमय तारिका-मण्डित सागर में आमोद की बहार लूटते हुए क्या उसकी नौका जलमग्न नहीं हो गयी? जो न होना था, वह हो गया!'

वही हरा-भरा मैदान था, वही सुनहरी चाँदनी एक निःशब्द संगीत की भाँति प्रकृति पर छायी हुई थी, वही मित्र-समाज था। वही मनोरंजन के सामान थे। मगर जहाँ हास्य की ध्वनि थी, वहाँ अब करुण-क्रन्दन और अश्रु-प्रवाह था।

× × ×

शहर से कई मील दूर एक छोटे-से घर में एक बूढ़ा और बुढ़िया अँगीठी के सामने बैठे जाड़े की रात काट रहे थे। बूढ़ा नारियल पीता था और बीच-बीच में खाँसता था। बुढ़िया दोनों घुटनियों में सिर डाले आग की ओर ताक रही थी। एक मिट्टी के तेल की कुप्पी ताक पर जल रही थी। घर में न चारपाई थी, न बिछौना। एक किनारे थोड़ी-सी पुआल पड़ी हुई थी। इसी कोठरी में एक चूल्हा था। बुढ़िया दिन-भर उपले और सूखी लकड़ियाँ बटोरती थी। बूढ़ा रस्सी बटकर बाजार में बेच आता था। यही उसकी जीविका थी। उन्हें न किसी ने रोते देखा, न हँसते। उनका सारा समय जीवित रहने में कट जाता था। मौत द्वार पर खड़ी थी, रोने या हँसने की कहाँ फुर्सत! बुढ़िया ने पूछा–कल के लिए सन तो है नहीं, काम क्या करोगे?

'जाकर झगड़ू साह से दस सेर सन उधार लाऊँगा।'

'उसके पहले के पैसे तो दिये ही नहीं, और उधार कैसे देगा?'

'न देगा न सही। घास तो कहीं नहीं गयी है। दोपहर तक क्या दो आने की भी न काटूँगा?'

इतने में एक आदमी ने द्वार पर आवाज दी–'भगत, भगत, क्या सो गये? जरा किवाड़ खोलो।'

भगत ने उठकर किवाड़ खोल दिये। एक आदमी ने अन्दर आकर कहा–'कुछ सुना, डॉक्टर चड्ढा बाबू के लड़के को साँप ने काट लिया।'

भगत ने चौंककर कहा–'चड्ढा बाबू के लड़के को! वही चड्ढा बाबू हैं न, जो छावनी के बँगले में रहते हैं?'

'हाँ-हाँ, वही। शहर में हल्ला मचा हुआ है। जाते हो तो जाओ, आदमी बन जाओगे।'

बूढ़े ने कठोर भाव से सिर हिलाकर कहा–'मैं नहीं जाता। मेरी बला जाय। वही चड्ढा हैं। खूब जानता हूँ। भैया को लेकर उन्हीं के पास गया था। खेलने जा रहे थे। पैरों पर गिर पड़ा कि एक नजर देख लीजिये, मगर सीधे मुँह से बात तक न की। भगवान् बैठे सुन रहे थे। अब जान पड़ेगा कि बेटे का गम कैसा होता है? कई लड़के हैं?'

'नहीं जी, यही तो एक लड़का था। सुना है, सब ने जवाब दे दिया।'

'भगवान् बड़ा कारसाज है। उस बखत मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े थे पर उन्हें तनिक भी दया न आयी थी। मैं तो उनके द्वार पर होता, तो भी बात न पूछता।'

'तो न जाओगे? हमने जो सुना था, सो कह दिया।'

'अच्छा किया–अच्छा किया। कलेजा ठण्डा हो गया, आँखें ठण्डी हो गयीं। लड़का भी ठण्डा हो गया होगा। तुम जाओ। आज चैन की नींद सोऊँगा। (बुढ़िया से) जरा तमाखू दे-दे। एक चिलम और पीऊँगा। अब मालूम होगा लाला को! सारी साहबी निकल जायगी, हमारा क्या बिगड़ा? लड़के के मर जाने से कुछ राज तो नहीं चला गया? जहाँ छह बच्चे गये थे, वहाँ एक और चला गया, तुम्हारा तो राज सूना हो जायगा। उसी के वास्ते सबका गला दबा-दबाकर जोड़ा था न! अब क्या करोगे? एक बार देखने जाऊँगा, पर कुछ दिन बाद। मिजाज का हाल पूछूँगा।'

आदमी चला गया। भगत ने किवाड़ बन्द कर लिये, तब चिलम पर तमाखू रखकर पीने लगा।

बुढ़िया ने कहा–इतनी रात गये जाड़े-पाले में कौन जायगा?

'अरे दोपहर ही होता तो मैं न जाता। सवारी दरवाजे पर लेने आती, तो भी मैं न जाता। भूल नहीं गया हूँ। पन्ना की सूरत आज भी आँखों में फिर रही है। इसी निर्दयी ने उसे एक नजर देखा तक नहीं। क्या मैं न जानता था कि वह न बचेगा? खूब जानता था? चड्ढा भगवान् नहीं थे कि उनके एक निगाह देख लेने से अमृत बरस जाता। नहीं, खाली मन की दौड़ थी। जरा तसल्ली हो जाती। बस, इसलिए उनके पास दौड़ा गया था। अब किसी दिन जाऊँगा और कहूँगा–'क्यों साहब, कहिये, क्या रंग हैं? दुनिया बुरा कहेगी, कहे, कोई परवाह नहीं। छोटे आदमी में तो सब ऐब होते हैं। बड़ों में कोई ऐब नहीं होता, देवता होते हैं।'

भगत के लिए जीवन में यह पहला अवसर था कि ऐसा समाचार पाकर वह बैठा रह गया हो। अस्सी वर्ष के जीवन में ऐसा कभी न हुआ था कि साँप की खबर पाकर वह दौड़ा न गया हो। माघ-पूस की अँधेरी रात, चैत-बैसाख की धूप व लू, सावन-भादों की चढ़ी हुई नदी और नाले, किसी की उसने कभी परवाह न की। वह तुरन्त घर से निकल पड़ता था निःस्वार्थ, निष्काम। लेन-देन का विचार कभी दिल में आया नहीं। यह ऐसा काम ही न था। जान का मूल्य कौन दे सकता है? यह एक पुण्य कार्य था। सैकड़ों निराशों को उसके मन्त्रों ने जीवनदान दे दिया था, पर वह आज घर से कदम नहीं निकाल सका। यह खबर सुनकर सोने जा रहा है।

बुढ़िया ने कहा–'तमाखू अँगीठी के पास रखी हुई है। उसके भी आज ढाई पैसे हो गये। देती ही न थी।'

बुढ़िया यह कहकर लेटी। बूढ़े ने कुप्पी बुझायी, कुछ देर खड़ा रहा, फिर बैठ गया, अन्त को लेट गया, पर यह खबर उसके हृदय पर बोझ की भाँति रखी हुई थी। उसे मालूम हो रहा था उसकी कोई चीज खो गयी है, जैसे सारे कपड़े गीले हो गये हैं या पैरों में कीचड़ लगा हुआ है, जैसे उसके मन में कोई बैठा हुआ उसे घर से निकलने के लिए कुरेद रहा है। बुढ़िया जरा देर में खर्राटे लेने लगी। बूढ़े बातें करते-करते सोते हैं और जरा-सा खटका होते ही जागते हैं। तब भगत उठा, अपनी लकड़ी उठा ली और धीरे से किवाड़ खोले।

बुढ़िया ने पूछा–'कहाँ जाते हो?'

'कहीं नहीं, देखता हूँ कितनी रात है?'

'अभी बहुत रात है, सो जाओ।'

'नींद नहीं आती।'

'नींद काहे को आयेगी? मन तो चड्ढा के घर पर लगा हुआ है।'

'चड्ढा ने मेरे साथ कौन-सी नेकी कर दी है, जो वहाँ जाऊँ? वह आकर पैरों पड़े तो भी न जाऊँ।'

'उठे तो तुम इसी इरादे से हो।'

'नहीं री, ऐसा पागल नहीं हूँ कि जो मुझे काँटे बोये, उसके लिए फूल बोता फिरूँ।'

बुढ़िया फिर सो गयी। भगत ने किवाड़ लगा दिये और फिर आकर बैठा। पर उसके मन की कुछ ऐसी दशा थी, जो बाजे की आवाज कान में पड़ते ही उपदेश सुननेवालों की होती है। आँखें चाहे उपदेशक की ओर हों, पर कान बाजे ही की ओर होते हैं। दिल में भी बाजे की ध्वनि गूँजती रहती है। शर्म के मारे जगह से नहीं उठता। निर्दयी प्रतिघात का भाव भगत के लिए उपदेशक था, पर हृदय उस अभागे युवक की ओर था, जो इस समय मर रहा था, जिसके लिए एक-एक पल का विलम्ब घातक था।

उसने फिर किवाड़ खोले, इतने धीरे से कि बुढ़िया को खबर न हुई। बाहर निकल आया। उसी वक्त गाँव का चौकीदार गश्त लगा रहा था, बोला–'कैसे उठे भगत? आज तो बड़ी सरदी है। कहीं जा रहे हो क्या?'

भगत ने कहा–'नहीं जी, जाऊँगा कहाँ? देखता था, अभी कितनी रात है। भला, कै बजे होंगे?'

चौकीदार बोला–'एक बजा होगा और क्या! अभी थाने से आ रहा था, तो डॉक्टर चड्ढा बाबू के बँगले पर भीड़ लगी हुई थी। उनके लड़के का हाल तो तुमने सुना होगा, कीड़े ने छू लिया है। चाहे मर भी गया हो। तुम चले जाओ तो शायद बच जाय। सुना है, दस हजार देने को तैयार हैं।'

भगत–'मैं तो न जाऊँ, चाहे वह दस लाख भी दें। मुझे दस हजार या दस लाख लेकर करना क्या है; कल मर जाऊँगा, फिर कौन भोगनेवाला बैठा हुआ है?'

चौकीदार चला गया। भगत ने आगे पैर बढ़ाया। जैसे नशे में आदमी की देह अपने काबू में नहीं रहती, पैर कहीं रखता है, पड़ता कहीं है, कहता कुछ है, जबान से निकलता कुछ है, वही हाल इस समय भगत का था। मन में प्रतिकार था, पर कर्म मन के अधीन न था। जिसने कभी तलवार नहीं चलायी, वह इरादा करने पर भी तलवार नहीं चला सकता। उसके हाथ काँपते हैं, उठते ही नहीं।

भगत लाठी खट-खट करता लपका चला जाता था। चेतना रोकती थी, पर उपचेतना ठेलती थी। सेवक स्वामी पर हावी था।

आधी राह निकल जाने के बाद सहसा भगत रुक गया। हिंसा ने क्रिया पर विजय पायी–'मैं यों ही इतनी दूर चला आया। इस जाड़े-पाले में मरने की मुझे क्या पड़ी थी, आराम से सोया क्यों नहीं; नींद न आती, न सही, दो-चार भजन ही गाता। व्यर्थ इतनी दूर दौड़ा आया! चड्ढा का लड़का रहे या मरे, मेरी बला से। मेरे साथ इन्होंने कौन-सा सलूक किया था कि मैं उनके लिए मरूँ, दुनिया में हजारों मरते हैं, हजारों जीते हैं। मुझे किसी के मरने-जीने से क्या मतलब?'

मगर उपचेतना ने अब एक दूसरा रूप धारण किया, जो हिंसा से बहुत-कुछ मिलता-जुलता था–वह झाड़-फूँक करने नहीं जा रहा है, वह देखेगा कि लोग क्या कर रहे हैं। डॉक्टर साहब का रोना-पीटना देखेगा कि किस तरह पछाड़ें खाते हैं। वह देखेगा कि बड़े लोग भी छोटों की ही भाँति रोते हैं या सबर भी कर जाते हैं। वे लोग, जो विद्वान् होते हैं, सबर कर जाते होंगे। हिंसा-भाव को यों धीरज देता हुआ वह फिर आगे बढ़ा।

इतने में दो आदमी आते दिखायी दिये। दोनों बातें करते चले आ रहे थे। 'चड्ढा बाबू का घर उजड़ गया, वही तो एक लड़का था।'

भगत के कान में यह आवाज पड़ी। उसकी चाल और भी तेज हो गयी। थकान के मारे पाँव न उठते थे। शिरो भाग इतना बढ़ा जाता था, मानो अब मुँह के बल गिर पड़ेगा। इस तरह कोई 10 मिनट चला होगा कि डॉक्टर साहब का बँगला नजर आया। बिजली की बत्तियाँ जल रही थीं, मगर सन्नाटा छाया हुआ था। रोने-पीटने की आवाज भी न आती थी। भगत का कलेजा धक्-धक् करने लगा। कहीं मुझे बहुत देर तो नहीं हो गयी, वह दौड़ने लगा। अपनी उम्र में वह इतना तेज कभी न दौड़ा था। बस, यही मालूम होता था, मानो उसके पीछे मौत दौड़ी आ रही है।

दो बज गये थे। मेहमान विदा हो गये। रोनेवालों में केवल आकाश के तारे रह गये थे और सभी रो-रोकर थक गये थे। बड़ी उत्सुकता के साथ लोग रह-रहकर आकाश की ओर देखते थे कि किसी तरह सुबह हो और लाश गंगा की गोद में दी जाय।

सहसा भगत ने द्वार पर पहुँचकर आवाज दी। डॉक्टर साहब समझे कोई मरीज आया होगा। किसी और दिन उन्होंने उस आदमी को दुत्कार दिया होता, मगर आज बाहर निकल आये। देखा, एक बूढ़ा आदमी खड़ा है–कमर झुकी हुई, पोपला मुँह, भौंहें तक सफेद हो गयी थीं। लकड़ी के सहारे काँप रहा था। बड़ी नम्रता से बोले–'क्या है भाई, आज तो हमारे ऊपर ऐसी मुसीबत पड़ गयी है कि कुछ कहते नहीं बनता, फिर कभी आना। इधर एक महीना तक शायद मैं किसी मरीज को न देख सकूँगा।'

भगत ने कहा–'सुन चुका हूँ बाबूजी, इसीलिए आया हूँ। भैया कहाँ हैं? जरा मुझे दिखा दीजिये। भगवान् बड़ा कारसाज है, मुरदे को जिला सकता है। कौन जाने, अब भी उसे दया आ जाय।'

चड्ढा ने व्यथित स्वर से कहा–'चलो देख लो मगर तीन-चार घण्टे हो गये। जो कुछ होना था, हो चुका। बहुतेरे झाड़ने-फूँकनेवाले देख-देखकर चले गये।'

डॉक्टर साहब को आशा तो क्या होती? हाँ, बूढ़े पर दया आ गयी। अन्दर ले गये। भगत ने लाश को एक मिनट तक देखा। तब मुस्कराकर बोला–'अभी कुछ नहीं बिगड़ा है, बाबू जी! वह नारायण चाहेंगे, तो आधा घण्टे में भैया उठ बैठेंगे। आप नाहक दिल छोटा कर रहे हैं। जरा कहारों से कहिये, पानी तो भरें।'

कहारों ने पानी भर-भर कैलाश को नहलाना शुरू किया। पाइप बन्द हो गया था। कहारों की संख्या अधिक न थी, इसलिए मेहमानों ने अहाते के बाहर कुएँ से पानी भर-भरकर कहारों को दिया, मृणालिनी कलसा लिये पानी ला रही थी। बूढ़ा भगत खड़ा मुस्करा-मुस्कराकर मन्त्र पढ़ रहा था, मानो विजय उसके सामने खड़ी है। जब एक मन्त्र समाप्त हो जाता, तब वह एक जड़ी

कैलाश को सुँघा देता। इस तरह न जाने कितने घड़े कैलाश के सिर पर डाले गये और न जाने कितनी बार भगत ने मन्त्र फूँका। आखिर जब ऊषा ने अपनी लाल-लाल आँखें खोलीं, तो कैलाश की भी लाल-लाल आँखें खुल गयीं। एक क्षण में उसने अँगड़ाई ली और पानी पीने को माँगा। डॉक्टर चड्ढा ने दौड़कर नारायणी को गले लगा लिया। नारायणी दौड़कर भगत के पैरों पर गिर पड़ी और मृणालिनी कैलाश के सामने आँखों में आँसू भरे पूछने लगी–'अब कैसी तबीयत है?'

एक क्षण में चारों तरफ खबर फैल गयी। मित्रगण मुबारकवाद देने आने लगे। डॉक्टर साहब बड़े श्रद्धा-भाव से हर एक के सामने भगत का यश गाते फिरते थे। सभी लोग भगत के दर्शनों के लिए उत्सुक हो उठे, मगर अन्दर जाकर देखा, तो भगत का कहीं पता न था। नौकरों ने कहा–'अभी तो यहीं बैठे चिलम पी रहे थे। हम लोग तमाखू देने लगे, तो नहीं ली, अपने पास से तमाखू निकालकर भरी।'

यहाँ तो भगत की चारों ओर तलाश होने लगी और भगत लपका हुआ घर चला जा रहा था कि बुढ़िया के उठने के पहले पहुँच जाऊँ।

जब मेहमान लोग चले गये, तो डॉक्टर साहब ने नारायणी से कहा–'बुड्ढा न जाने कहाँ चला गया। एक चिलम तमाखू का भी खादार न हुआ।'

नारायणी–'मैंने तो सोचा था, इसे कोई बड़ी रकम दूँगी।'

चड्ढा–'रात को मैंने नहीं पहचाना, पर जरा साफ हो जाने पर पहचान गया। एक बार यह एक मरीज को लेकर आया था। मुझे अब याद आता है कि मैं खेलने जा रहा था और मरीज को देखने से इनकार कर दिया था। आज उस दिन की बात याद करके मुझे जितनी ग्लानि हो रही है, उसे प्रकट नहीं कर सकता। मैं उसे खोज निकालूँगा और पैरों पर गिरकर अपना अपराध क्षमा कराऊँगा। वह कुछ लेगा नहीं, यह जानता हूँ, उसका जन्म यश की वर्षा करने ही के लिए हुआ है। उसकी सज्जनता ने मुझे ऐसा आदर्श दिखा दिया है, जो अब से जीवन-पर्यन्त मेरे सामने रहेगा।'

● **प्रेमचन्द**

अभ्यास प्रश्न

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. **निम्नलिखित गद्यांशों में रेखांकित अंशों की व्याख्या और तथ्यपरक प्रश्नों के उत्तर दीजिये–**

(क) मोटर चली गयी। बूढ़ा कई मिनट तक मूर्ति की भाँति निश्चल खड़ा रहा। संसार में ऐसे मनुष्य भी होते हैं, जो अपने आमोद-प्रमोद के आगे किसी की जान की भी परवाह नहीं करते, शायद इसका उसे अब भी विश्वास न आता था। सभ्य संसार इतना निर्मम, इतना कठोर है, इसका ऐसा मर्मभेदी अनुभव अब तक न हुआ था। वह उन पुराने जमाने के जीवों में था, जो लगी हुई आग को बुझाने, मुर्दे को कन्धा देने, किसी के छप्पर को उठाने और किसी कलह को शान्त करने के लिए सदैव तैयार रहते थे। जब तक बूढ़े को मोटर दिखायी दी, वह खड़ा टकटकी लगाये उस ओर ताकता रहा।

प्रश्न (i) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

(iii) पुराने जमाने के जीवों का व्यवहार कैसा था?

(iv) भगत को किस बात पर विश्वास नहीं हो रहा था?

(v) भगत के अनुसार सभ्य संसार कैसा है?

(ख) 'अरे मूर्ख, यह क्यों नहीं कहता कि जो कुछ न होना था, हो चुका। जो कुछ होना था वह कहाँ हुआ? माँ-बाप ने बेटे का सेहरा कहाँ देखा? मृणालिनी का कामना-तरु क्या पल्लव और पुष्प से रंजित हो उठा? मन

के वह स्वर्ण-स्वप्न जिनसे जीवन आनन्द का स्रोत बना हुआ था, क्या पूरे हो गये? जीवन के नृत्यमय तारिका-मण्डित सागर में आमोद की बहार लूटते हुए क्या उसकी नौका जलमग्न नहीं हो गयी? जो न होना था, वह हो गया।'

प्रश्न (i) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) माँ-बाप ने क्या नहीं देखा?
(iv) 'नौका जलमग्न होना' का क्या अर्थ है?
(v) मृणालिनी का कामना-तरु क्या था?

(ग) वही हरा-भरा मैदान था, वही सुनहरी चाँदनी एक निःशब्द संगीत की भाँति प्रकृति पर छायी हुई थी, वही मित्र-समाज था। वही मनोरंजन के सामान थे। मगर जहाँ हास्य की ध्वनि थी, वहाँ अब करुण-क्रन्दन और अश्रु-प्रवाह था।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रकृति पर क्या छायी हुई थी?

(घ) वह एक जड़ी कैलाश को सुँघा देता। इस तरह न जाने कितने घड़े कैलाश के सिर पर डाले गये और न जाने कितनी बार भगत ने मन्त्र फूँका। आखिर जब ऊषा ने अपनी लाल-लाल आँखें खोलीं, तो कैलाश की भी लाल-लाल आँखें खुल गयीं। एक क्षण में उसने अँगड़ाई ली और पानी पीने को माँगा। डॉक्टर चड्ढा ने दौड़कर नारायणी को गले लगा लिया। नारायणी दौड़कर भगत के पैरों पर गिर पड़ी और मृणालिनी कैलाश के सामने आँखों में आँसू भरे पूछने लगी–'अब कैसी तबीयत है?'

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) आँखें खुलते ही अँगड़ाई लेते हुए कैलाश ने क्या माँगा?

(ङ) चड्ढा–'रात को मैंने नहीं पहचाना, पर जरा साफ हो जाने पर पहचान गया। एक बार यह एक मरीज को लेकर आया था। मुझे अब याद आता है कि मैं खेलने जा रहा था और मरीज को देखने से इन्कार कर दिया था। आज उस दिन की बात याद करके मुझे जितनी ग्लानि हो रही है, उसे प्रकट नहीं कर सकता। मैं उसे खोज निकालूँगा और पैरों पर गिरकर अपना अपराध क्षमा कराऊँगा। वह कुछ लेगा नहीं, यह जानता हूँ, उसका जन्म यश की वर्षा करने ही के लिए हुआ है। उसकी सज्जनता ने मुझे ऐसा आदर्श दिखा दिया है, जो अब से जीवन-पर्यन्त मेरे सामने रहेगा।'

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) ग्लानि किसको हो रही थी?
(iv) डॉ० चड्ढा किस आदर्श पर जीवन भर चलने का संकल्प लेते हैं?
(v) प्रस्तुत पंक्तियों में भगत की किस चारित्रिक विशेषता का पता चलता है?

2. प्रेमचन्द के जीवन-परिचय एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

3. प्रेमचन्द के जीवन एवं साहित्यिक परिचय का उल्लेख कीजिए।

अथवा प्रेमचन्द की जीवनी एवं साहित्यिक सेवाएँ स्पष्ट कीजिए।

4. प्रेमचन्द के जीवन-परिचय एवं कृतियों का उल्लेख कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. क्या 'मन्त्र' एक मर्मस्पर्शी कहानी है, तो क्यों?
2. 'भगवान् बड़ा कारसाज है।' इस वाक्य का भाव स्पष्ट कीजिए।
3. अन्ततः भगत डॉ0 चड्ढा के पुत्र को बचाने क्यों चला गया?
4. डॉ0 चड्ढा के सामने भगत ने अपनी पगड़ी उतारकर क्यों रख दी?
5. कैलाश को सर्प ने क्यों काट लिया था?
6. 'मन्त्र' कहानी का सन्देश अपने शब्दों में लिखिए।
7. नारायणी ने भगत के लिए क्या सोचा था?
8. कैलाश के जन्म-दिवस की तैयारियों को अपने शब्दों में लिखिए।
9. डॉ0 चड्ढा और बूढ़े से सम्बन्धित दस वाक्य लिखिए।
10. इस पाठ से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'भगवान् बड़ा कारसाज है' यह वाक्य कहानी में कितनी बार आया है?
2. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइये–
   (अ) भगत कठोर हृदय का व्यक्ति नहीं था। ( )
   (ब) कैलाश नारायणी का पुत्र था। ( )
   (स) बुढ़िया ने ही भगत को दूसरी बार डॉ0 चड्ढा के यहाँ भेजा था। ( )
   (द) अन्ततः कैलाश की मृत्यु हो गयी थी। ( )
3. प्रेमचन्द का जन्म एवं मृत्यु सन् बताइये।
4. प्रेमचन्द किस युग के लेखक हैं?
5. कैलाश और मृणालिनी कौन थे?
6. 'हंस' पत्रिका के संस्थापक कौन थे?

व्याकरण-बोध

1. **निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ बताकर वाक्य-प्रयोग कीजिए–**
   आँखें ठण्डी होना, चैन की नींद सोना, किस्मत ठोंकना, कलेजा ठण्डा होना, हाथ से चला जाना, सूरत आँखों में फिरना।
2. **निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद करते हुए सन्धि का नाम लिखिए–**
   पल्लव, विद्यालय, सज्जन, औषधालय, निश्चल, निःस्वार्थ।
3. **निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग बताइये–**
   उपदेशक, निर्दयी, निवारण, आमोद, प्रतिघात।
4. **निम्नलिखित समस्त पदों में समास-विग्रह कीजिए और समास का नाम लिखिए–**
   महाशय, कामना-तरु, सावन-भादों, जीवनदान, जलमग्न, आत्मरक्षा, मित्र-समाज।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. निम्न में से कौन उपन्यास सम्राट के रूप में जाना जाता है?
   (अ) **प्रेमचन्द** (ब) हजारी प्रसाद द्विवेदी
   (स) जयशंकर प्रसाद (द) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
2. प्रेमचन्द जी का जन्म कब हुआ था?
   (अ) 1870 ई. (ब) 1875 ई. (स) **1880 ई.** (द) 1890 ई.
3. प्रेमचन्द जी का जन्म कहाँ हुआ था?
   (अ) **वाराणसी** (ब) गोरखपुर (स) कानपुर (द) लखनऊ
4. प्रेमचन्द जी का निधन कब हुआ था?
   (अ) 1930 ई. (ब) 1932 ई. (स) **1936 ई.** (द) 1940 ई.
5. निम्नलिखित में से कौन-सी कहानी मुंशी प्रेमचन्द द्वारा लिखित है?
   (अ) मन्त्र (ब) कफन (स) पूस की रात (द) **इनमें सभी**
6. 'हंस' नामक पत्रिका का प्रकाशन किया था—
   (अ) **प्रेमचन्द ने** (ब) हजारी प्रसाद द्विवेदी ने
   (स) महावीर प्रसाद द्विवेदी ने (द) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने
7. 'मंत्र' कहानी के रचनाकार हैं—
   (अ) हजारी प्रसाद द्विवेदी (ब) **प्रेमचन्द** (स) फणीश्वरनाथ रेणु (द) अमरकान्त
8. 'मन्त्र' कहानी के प्रमुख पात्र कैलाश किसका पुत्र था?
   (अ) **डॉ. चड्ढा** (ब) बूढ़ा भगत (स) पन्ना (द) इसमें कोई नहीं
9. मंत्र कहानी में मृणालिनी कौन है?
   (अ) **कैलाश की सहपाठी** (ब) कैलाश की पत्नी (स) कैलाश की बहन (द) कैलाश की माँ
10. 'मंत्र' कहानी में किस पात्र को सर्प ने डसा था?
    (अ) पन्ना (ब) **कैलाश** (स) भगत (द) डॉ. चड्ढा
11. डॉ. चड्ढा के कितने लड़के थे?
    (अ) **एक** (ब) दो (स) तीन (द) चार
12. कैलाश को मृत्यु से किसने बचाया?
    (अ) **बूढ़े भगत ने** (ब) डॉ. चड्ढा ने (स) मृणालिनी ने (द) किसी ने नहीं
13. प्रेमचन्द किस युग के लेखक हैं?
    (अ) भारतेन्दु युग (ब) **शुक्ल युग**
    (स) शुक्लोत्तर युग (द) इनमें से कोई नहीं
14. कैलाश का कौन-सा जन्म दिवस मनाया जा रहा था?
    (अ) **बीसवाँ** (ब) इक्कीसवाँ (स) बाइसवाँ (द) चौबीसवाँ
15. निम्न में से कौन-सा उपन्यास प्रेमचन्द द्वारा रचित है?
    (अ) गबन (ब) गोदान (स) कर्मभूमि (द) **इनमें सभी**

उत्तरमाला : 1. (अ) 2. (स) 3. (अ) 4. (स) 5. (द) 6. (अ) 7. (ब) 8. (अ) 9. (अ) 10. (ब) 11. (अ) 12. (अ) 13. (ब) 14. (अ) 15. (द)

3 आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

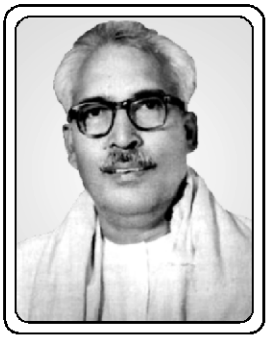

जीवन-परिचय—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का जन्म सन् 1907 ई0 में बलिया जिले के 'आरत दुबे का छपरा' नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री अनमोल द्विवेदी एवं माता का नाम श्रीमती ज्योतिषमती था। इनकी शिक्षा का प्रारम्भ संस्कृत से हुआ। इण्टर की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद इन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से ज्योतिष तथा साहित्य में आचार्य की उपाधि प्राप्त की। सन् 1940 ई0 में हिन्दी एवं संस्कृत के अध्यापक के रूप में शान्ति-निकेतन चले गये। यहीं इन्हें विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर का सान्निध्य मिला और साहित्य-सृजन की ओर अभिमुख हो गये। सन् 1956 ई0 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में अध्यक्ष नियुक्त हुए। कुछ समय तक पंजाब विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया। सन् 1949 ई0 में लखनऊ विश्वविद्यालय ने इन्हें 'डी0लिट्0' तथा सन् 1957 ई0 में भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' की उपाधि से विभूषित किया। 18 मई, 1979 ई0 को इनका देहावसान हो गया।

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म-स्थान**—'आरत दुबे का छपरा' (बलिया), उ0प्र0।
- **जन्म एवं मृत्यु सन्**—1907 ई0, 1979 ई0।
- **पिता**—पं0 अनमोल द्विवेदी।
- **माता**—श्रीमती ज्योतिषमती।
- शुक्लोत्तर-युग के लेखक।
- **भाषा**—शुद्ध संस्कृतनिष्ठ साहित्यिक खड़ीबोली।
- **शैली**—विचारात्मक, समीक्षात्मक, भावात्मक, व्यंग्यात्मक, उद्धरणात्मक, गवेषणात्मक।
- **हिन्दी साहित्य में स्थान**—एक सफल साहित्यकार के रूप में।

साहित्यिक परिचय—द्विवेदी जी ने बाल्यकाल से ही श्री व्योमकेश शास्त्री से कविता लिखने की कला सीखनी आरम्भ कर दी थी। शान्ति-निकेतन पहुँचकर इनकी प्रतिभा और अधिक निखरने लगी। कवीन्द्र रवीन्द्र का इन पर विशेष प्रभाव पड़ा। बँगला साहित्य से भी ये बहुत प्रभावित थे। ये उच्चकोटि के शोधकर्त्ता, निबन्धकार, उपन्यासकार एवं आलोचक थे। सिद्ध साहित्य, जैन साहित्य एवं अपभ्रंश साहित्य को प्रकाश में लाकर तथा भक्ति-साहित्य पर उच्चस्तरीय समीक्षात्मक ग्रन्थों की रचना करके इन्होंने हिन्दी साहित्य की महान् सेवा की। वैसे तो द्विवेदी जी ने अनेक विषयों पर उत्कृष्ट कोटि के निबन्धों एवं नवीन शैली पर आधारित उपन्यासों की रचना की है, पर विशेष रूप से वैयक्तिक एवं भावात्मक निबन्धों की रचना करने में ये अद्वितीय रहे। द्विवेदी जी 'उत्तर प्रदेश ग्रन्थ अकादमी' के अध्यक्ष और 'हिन्दी संस्थान' के उपाध्यक्ष भी रहे। कबीर पर उत्कृष्ट आलोचनात्मक कार्य करने के कारण इन्हें 'मंगलाप्रसाद' पारितोषिक प्राप्त हुआ। इसके साथ ही 'सूर-साहित्य' पर 'इन्दौर साहित्य समिति' ने 'स्वर्ण-पदक' प्रदान किया।

कृतियाँ—द्विवेदी जी की प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं—**निबन्ध**—'विचार और वितर्क', 'कल्पना', 'अशोक के फूल',

'कुटज', 'साहित्य के साथी', 'कल्पलता', 'विचार-प्रवाह', 'आलोक पर्व' आदि। **उपन्यास**–'पुनर्नवा', 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'चारु चन्द्रलेख', 'अनामदास का पोथा'। **आलोचना साहित्य**–'सूर-साहित्य', 'कबीर', 'सूरदास और उनका काव्य', 'हमारी साहित्यिक समस्याएँ', 'हिन्दी साहित्य की भूमिका', 'साहित्य का साथी', 'साहित्य का धर्म', 'हिन्दी-साहित्य', 'समीक्षा-साहित्य', 'नख-दर्पण में हिन्दी-कविता', 'साहित्य का मर्म', 'भारतीय वाङ्मय', 'कालिदास की लालित्य-योजना' आदि। **शोध-साहित्य**–'प्राचीन भारत का कला विकास', 'नाथ सम्प्रदाय', 'मध्यकालीन धर्म साधना', 'हिन्दी-साहित्य का आदिकाल' आदि। **अनूदित साहित्य**–'प्रबन्ध चिन्तामणि', 'पुरातन-प्रबन्ध-संग्रह', 'प्रबन्धकोश', 'विश्व परिचय', 'मेरा बचपन', 'लाल कनेर' आदि। **सम्पादित साहित्य**–'नाथ-सिद्धों की बानियाँ', 'संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो', 'सन्देश-रासक' आदि।

भाषा-शैली–द्विवेदी जी भाषा के प्रकाण्ड पण्डित थे। संस्कृतनिष्ठ शब्दावली के साथ-साथ आपने निबन्धों में उर्दू, फारसी, अंग्रेजी एवं देशज शब्दों का भी प्रयोग किया है। इनकी भाषा प्रौढ़ होते हुए भी सरल, संयत तथा बोधगम्य है। मुहावरेदार भाषा का प्रयोग भी इन्होंने किया है। विशेष रूप से इनकी भाषा शुद्ध संस्कृतनिष्ठ साहित्यिक खड़ीबोली है। इन्होंने अनेक शैलियों का प्रयोग विषयानुसार किया है, जिनमें प्रमुख हैं–गवेषणात्मक शैली, आलोचनात्मक शैली, भावात्मक शैली, हास्य-व्यंग्यात्मक शैली, उद्धरण शैली।

गुरु नानकदेव में मानवतावादी मूल्यों का सहज सन्निवेश पाने के लिए द्विवेदी जी भाव-पेशल हो गये हैं। प्रस्तुत निबन्ध 'गुरु नानकदेव' में निबन्ध की समस्त विशेषताएँ उपस्थित हैं। इस निबन्ध में स्थान-स्थान पर उपमा, रूपक एवं उत्प्रेक्षा अलंकारों का प्रयोग लेखक ने किया है।

●●

गुरु नानकदेव

कार्तिकी पूर्णिमा इस देश की बहुत पवित्र तिथि है। इस दिन सारे भारतवर्ष में कोई-न-कोई उत्सव, मेला, स्नान या अनुष्ठान होता है। शरत्काल का पूर्ण चन्द्रमा इस दिन अपने पूरे वैभव पर होता है, आकाश निर्मल, दिशाएँ प्रसन्न, वायुमण्डल शान्त, पृथ्वी हरी-भरी, जलप्रवाह मृदुमन्थर हो जाता है। कुछ आश्चर्य नहीं कि इस दिन मनुष्य का सामूहिक चित्त उद्वेलित हो उठे। इसी दिन महान् गुरु नानकदेव के आविर्भाव का उत्सव मनाया जाता है। आकाश में जिस प्रकार षोडश कला से पूर्ण चन्द्रमा अपनी कोमल स्निग्ध किरणों से प्रकाशित होता है, उसी प्रकार मानव चित्त में भी किसी उज्ज्वल प्रसन्न ज्योतिपुंज का आविर्भाव होना स्वाभाविक है। गुरु नानकदेव ऐसे ही षोडश कला से पूर्ण स्निग्ध ज्योति महामानव थे। लोकमानस में अर्से से कार्तिकी पूर्णिमा के साथ गुरु के आविर्भाव का सम्बन्ध जोड़ दिया गया है। गुरु किसी एक ही दिन को पार्थिव शरीर में आविर्भूत हुए होंगे, पर भक्तों के चित्त में वे प्रतिक्षण प्रकट हो सकते हैं। पार्थिव रूप को महत्त्व दिया जाता है, परन्तु प्रतिक्षण आविर्भूत होने को आध्यात्मिक दृष्टि से अधिक महत्त्व मिलना चाहिए। इतिहास के पण्डित गुरु के पार्थिव शरीर के आविर्भाव के विषय में वाद-विवाद करते रहें, इस देश का सामूहिक मानव चित्त उतना महत्त्व नहीं देता।

गुरु जिस किसी भी शुभ क्षण में चित्त में आविर्भूत हो जायँ, वही क्षण उत्सव का है, वही क्षण उल्लसित कर देने के लिए पर्याप्त है। **नवो नवो भवसि जायमान** :–गुरु, तुम प्रतिक्षण चित्तभूमि में आविर्भूत होकर नित्य नवीन हो रहे हो। हजारों वर्षों से शरत्काल की यह सर्वाधिक प्रसन्न तिथि प्रभामण्डित पूर्णचन्द्र के साथ उतनी ही मीठी ज्योति के धनी महामानव का स्मरण कराती रही है। इस चन्द्रमा के साथ महामानवों का सम्बन्ध जोड़ने में इस देश का समष्टि चित्त आह्लाद अनुभव करता है। हम 'रामचन्द्र', 'कृष्णचन्द्र' आदि कहकर इसी आह्लाद को प्रकट करते हैं। गुरु नानकदेव के साथ इस पूर्णचन्द्र का सम्बन्ध जोड़ना भारतीय जनता के मानस के अनुकूल है। आज वह अपना आह्लाद प्रकट करती है।

गुरु नानकदेव का आविर्भाव आज से लगभग पाँच सौ वर्ष पूर्व हुआ। भारतवर्ष की मिट्टी में युग के अनुरूप महापुरुषों को जन्म देने का अद्भुत गुण है। आज से पाँच सौ वर्ष पहले का देश अनेक कुसंस्कारों में उलझा था। जातियों, सम्प्रदायों, धर्मों और संकीर्ण कुलाभिमानों से वह खण्ड-विच्छिन्न हो गया था। देश में नये धर्म के आगन्तुकों के कारण एक ऐसी समस्या उठ खड़ी हुई थी, जो इस देश के हजारों वर्षों के लम्बे इतिहास में अपरिचित थी। ऐसे ही दुर्घट काल में इस देश की मिट्टी ने ऐसे अनेक महापुरुषों को उत्पन्न किया, जो सड़ी रूढ़ियों, मृतप्राय आचारों, बासी विचारों और अर्थहीन संकीर्णताओं के विरुद्ध प्रहार करने में कुण्ठित नहीं हुए और इन जर्जर बातों से परे सबमें विद्यमान सबको नयी ज्योति और नया जीवन प्रदान करनेवाले महान् जीवन-देवता की महिमा प्रतिष्ठित करने में समर्थ हुए। इन सन्तों की ज्योतिष्क मण्डली में गुरु नानकदेव ऐसे सन्त हैं, जो शरत्काल के पूर्णचन्द्र की तरह ही स्निग्ध, उसी प्रकार शान्त-निर्मल, उसी प्रकार रश्मि के भण्डार थे। कई सन्तों ने कस-कस के चोटें मारीं; व्यंग्य-बाण छोड़े, तर्क की छुरी चलायी, पर महान् गुरु नानकदेव ने सुधा-लेप का काम किया। यह आश्चर्य की बात है कि विचार और आचार की दुनिया में इतनी बड़ी क्रान्ति ले आनेवाला यह सन्त इतने मधुर, इतने स्निग्ध, इतने मोहक वचनों का बोलनेवाला है। किसी का दिल दुखाये बिना, किसी पर आघात किये बिना, कुसंस्कारों को छिन्न करने की शक्ति रखनेवाला, नयी संजीवनी धारा से प्राणिमात्र को उल्लसित करनेवाला यह सन्त मध्यकाल की ज्योतिष्क मण्डली में अपनी निराली शोभा से शरत् पूर्णिमा के पूर्णचन्द्र की तरह ज्योतिष्मान् है। आज उसकी याद आये बिना नहीं रह सकती। वह सब प्रकार से लोकोत्तर है। उसका उपचार प्रेम और मैत्री है। उसका शास्त्र सहानुभूति और हित-चिन्ता है। वह कुसंस्कारों के अन्धकार को अपनी स्निग्ध ज्योति से भेदता है, मुमूर्षु प्राणधारा को अमृत का भाण्ड उँड़ेलकर प्रवाहशील बनाता है। वह भेदों में अभेद देखता है, नानात्व

में एक का सन्धान बताता है, वह सब प्रकार से निराला है। इस कार्तिक पूर्णिमा को अनायास उसके चरणों में नत हो जाने की इच्छा होती है।

गुरु नानक ने प्रेम का सन्देश दिया है। उनका कथन था कि ईश्वर नाम के सम्मुख जाति और कुल के बन्धन निरर्थक हैं, क्योंकि मनुष्य जीवन का जो चरम प्राप्तव्य है वह स्वयं प्रेमरूप है। प्रेम ही उसका स्वभाव है, प्रेम ही उसका साधन है। अरे ओ मुग्ध मनुष्य, सच्ची प्रीति से ही तेरा मान-अभिमान नष्ट होगा, तेरी छोटाई की सीमा समाप्त होगी, परम मंगलमय शिव तुझे प्राप्त होगा। उसी सच्चे प्रेम की साधना तेरे जीवन का परम लक्ष्य है। बाह्य आडम्बरों को तू धर्म समझ रहा है। मूल संस्कारों को तू आस्था मानता है? नहीं प्यारे, यह सब धर्म नहीं है। धर्म तो स्वयं रूप होकर भगवान् के रूप में तेरे भीतर विराजमान है। उसी अगम-अगोचर प्रभु की शरण पकड़। क्या पड़ा है इन छोटे अहंकारों में। ये मुक्ति के नहीं, बन्धन के हेतु हैं। उनका मत था कि विश्व का परित्याग कर संन्यास लेना ईश्वर की दृष्टि में आवश्यक नहीं है, उसके लिए तो धार्मिक संन्यास तथा भक्त व गृहस्थ सभी समान हैं। उन्होंने मृत्यु-पर्यन्त, हिन्दू-मुसलमानों के तीव्र मतभेदों को दूर करने की सफल चेष्टा की। इनके शिष्यों में हिन्दू व मुसलमान दोनों ही थे। इनके अनुयायी बाद में सिख कहलाये और उन्होंने उनके सिद्धान्तों को 'ग्रन्थ-साहब' में संगृहीत किया।

धन्य हो, हे अगम, अगोचर, अलख, अपार देव, तुम्हीं मेरी चिन्ता करो। जहाँ तक देखता हूँ वहाँ तक–जल में, थल में, पृथ्वी में सर्वत्र तुम्हारी ही लीला व्याप्त है, घट-घट में तुम्हारी ज्योति उद्भासित हो रही है–

अगम अगोचर अलख अपारा, चिन्ता करहु हमारी।
जलि थलि माही अलि भरिपुरि ला, घट-घट ज्योति तुम्हारी।।

अद्भुत है गुरु की बानी की सहज बेधक शक्ति। कहीं कोई आडम्बर नहीं, कोई बनाव नहीं, सहज हृदय से निकली हुई सहज प्रभावित करने की अपार शक्ति। सहज जीवन बड़ी कठिन साधना है। सहज भाषा बड़ी बलवती आस्था है। सीधी लकीर खींचना टेढ़ा काम है। गुरु का आडम्बर सहज धर्म ऐसे ही सहजवाणी से प्रचारित हो सकता था। कितनी अद्भुत निरभिमान शैली है। कहीं भी पाण्डित्य का दुर्धर बोझ नहीं और फिर भी पण्डितों को आन्दोलित करनेवाली यह वाणी धन्य है–

कोई पढ़ता सहसा किरता कोई पढ़े पुराना
कोई नामु जपै जपमाली-लागे तिसै धियाना
अब ही कब ही किछू न जाना।
तेरा एको नाम पेछाना
न जाना हरे मेरी कवण गती
हम मूरख अगियान सरन प्रभु तेरी
कोई किरपा राखहु मेरी लाज पते।

ऐसी मीठी निरहंकारी सीधी वाणी से गुरु ने भटकती जनता को उसका लक्ष्य बताया। आज विद्वान् चकित हैं, पण्डित अचरज में हैं–कितनी बड़ी ताकत और कैसा निरीह रूप? कालिदास ने ठीक ही कहा था–**ध्रुवं वपुः काञ्चनपद्मनिर्मितम् मृदुप्रकृत्या च ससारमेव च।** जो रूप से स्वर्णकमल के धर्मवाला होता है वह निश्चय ही स्वभाव से मृदु होता है। किन्तु सारवान् भी होता है। गुरु नानकदेव ऐसे ही कांचन पद्मधर्मी महामानव थे–मृदुप्रकृत्या च ससारमेव च।

किसी लकीर को मिटाये बिना छोटी बना देने का उपाय है बड़ी लकीर खींच देना। क्षुद्र अहमिकाओं और अर्थहीन संकीर्णताओं की क्षुद्रता सिद्ध करने के लिए तर्क और शास्त्रार्थ का मार्ग कदाचित् ठीक नहीं है। सही उपाय है बड़े सत्य को प्रत्यक्ष कर देना। गुरु नानक ने यही किया। उन्होंने जनता को बड़े-से-बड़े सत्य के सम्मुखीन कर दिया, हजारों दीये उस महाज्योति के सामने स्वयं फीके पड़ गये।

भगवान् जब अनुग्रह करते हैं तो अपनी दिव्य ज्योति ऐसे महान् सन्तों में उतार देते हैं। एक बार जब यह ज्योति मानव देह को आश्रय करके उतरती है तो चुपचाप नहीं बैठती। वह क्रियात्मक होती है, नीचे गिरे हुए अभाजन लोगों को वह प्रभावित

करती है, ऊपर उठाती है। वह उतरती है और ऊपर उठाती है। इसे पुराने पारिभाषिक शब्दों में कहें तो कुछ इस प्रकार होगा कि एक ओर उसका 'अवतार' होता है, दूसरी ओर औरों का 'उद्धार' होता है। अवतार और उद्धार की यह लीला भगवान् के प्रेम का सक्रिय रूप है, जिसे पुराने भक्तजन 'अनुग्रह' कहते हैं। आज से लगभग पाँच सौ वर्ष से पहले परम प्रेयान् हरि का यह 'अनुग्रह' सक्रिय हुआ था, वह आज भी क्रियाशील है। आज कदाचित् गुरु की वाणी की सबसे अधिक तीव्र आवश्यकता अनुभूत हो रही है।

महागुरु, नयी आशा, नयी उमंग, नये उल्लास की आशा में आज इस देश की जनता तुम्हारे चरणों में प्रणति निवेदन कर रही है। आशा की ज्योति विकीर्ण करो, मैत्री और प्रीति की स्निग्ध धारा से आप्लावित करो। हम उलझ गये हैं, भटक गये हैं, पर कृतज्ञता अब भी हम में रह गयी है। आज भी हम तुम्हारी अमृतोपम वाणी को भूल नहीं गये हैं। कृतज्ञ भारत का प्रणाम अंगीकार करो।

● **हजारीप्रसाद द्विवेदी**

अभ्यास प्रश्न

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. **निम्नलिखित गद्यांशों में रेखांकित अंशों की व्याख्या और तथ्यपरक प्रश्नों के उत्तर दीजिये–**

(क) आकाश में जिस प्रकार षोडश कला से पूर्ण चन्द्रमा अपनी कोमल स्निग्ध किरणों से प्रकाशित होता है, उसी प्रकार मानव चित्त में भी किसी उज्ज्वल प्रसन्न ज्योतिपुंज का आविर्भाव होना स्वाभाविक है। गुरु नानकदेव ऐसे ही षोडश कला से पूर्ण स्निग्ध ज्योति महामानव थे। लोकमानस में अर्से से कार्तिकी पूर्णिमा के साथ गुरु के आविर्भाव का सम्बन्ध जोड़ दिया गया है। गुरु किसी एक ही दिन को पार्थिव शरीर में आविर्भूत हुए होंगे, पर भक्तों के चित्त में वे प्रतिक्षण प्रकट हो सकते हैं। पार्थिव रूप को महत्त्व दिया जाता है, परन्तु प्रतिक्षण आविर्भूत होने को आध्यात्मिक दृष्टि से अधिक महत्त्व मिलना चाहिए। इतिहास के पण्डित गुरु के पार्थिव शरीर के आविर्भाव के विषय में वाद-विवाद करते रहें, इस देश का सामूहिक मानव चित्त उतना महत्त्व नहीं देता।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) लेखक की दृष्टि में गुरु के पार्थिव शरीर के आविर्भाव के स्थान पर किसको महत्त्व मिलना चाहिए?
(iv) चन्द्रमा कितनी कलाओं से परिपूर्ण होता है?
(v) कार्तिक पूर्णिमा का सम्बन्ध किस महामानव से है?

(ख) गुरु जिस किसी भी शुभ क्षण में चित्त में आविर्भूत हो जायँ, वही क्षण उत्सव का है, वही क्षण उल्लसित कर देने के लिए पर्याप्त है। **नवो नवो भवसि जायमान :–**गुरु, तुम प्रतिक्षण चित्तभूमि में आविर्भूत होकर नित्य नवीन हो रहे हो। हजारों वर्षों से शरत्काल की यह सर्वाधिक प्रसन्न तिथि प्रभामण्डित पूर्णचन्द्र के साथ उतनी ही मीठी ज्योति के धनी महामानव का स्मरण कराती रही है। इस चन्द्रमा के साथ महामानवों का सम्बन्ध जोड़ने में इस देश का समष्टि चित्त आह्लाद अनुभव करता है। हम 'रामचन्द्र', 'कृष्णचन्द्र' आदि कहकर इसी आह्लाद को प्रकट करते हैं। गुरु नानकदेव के साथ इस पूर्णचन्द्र का सम्बन्ध जोड़ना भारतीय जनता के मानस के अनुकूल है। आज वह अपना आह्लाद प्रकट करती है।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) शरद काल की यह तिथि किसकी याद कराती रही है?

(iv) उत्सव का क्षण कौन-सा है?

(v) शरद पूर्णिमा किसका स्मरण कराती है?

(ग) विचार और आचार की दुनिया में इतनी बड़ी क्रान्ति ले आनेवाला यह सन्त इतने मधुर, इतने स्निग्ध, इतने मोहक वचनों का बोलनेवाला है। किसी का दिल दुखाये बिना, किसी पर आघात किये बिना, कुसंस्कारों को छिन्न करने की शक्ति रखनेवाला, नयी संजीवनी धारा से प्राणिमात्र को उल्लसित करनेवाला यह सन्त मध्यकाल की ज्योतिष्क मण्डली में अपनी निराली शोभा से शरत् पूर्णिमा के पूर्णचन्द्र की तरह ज्योतिष्मान् है। आज उसकी याद आये बिना नहीं रह सकती। वह सब प्रकार से लोकोत्तर है। उसका उपचार प्रेम और मैत्री है। उसका शास्त्र सहानुभूति और हित-चिन्ता है।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

(iii) गुरुनानक जी का उपचार क्या है?

(iv) क्रान्ति लाने वाले यहाँ किस सन्त का वर्णन है?

(v) शरद पूर्णिमा के पूर्ण चन्द्र की तरह कौन ज्योतिष्मान् है?

(घ) किसी लकीर को मिटाये बिना छोटी बना देने का उपाय है बड़ी लकीर खींच देना। क्षुद्र अहमिकाओं और अर्थहीन संकीर्णताओं की क्षुद्रता सिद्ध करने के लिए तर्क और शास्त्रार्थ का मार्ग कदाचित् ठीक नहीं है। सही उपाय है बड़े सत्य को प्रत्यक्ष कर देना। गुरु नानक ने यही किया। उन्होंने जनता को बड़े-से-बड़े सत्य के सम्मुखीन कर दिया, हजारों दीये उस महाज्योति के सामने स्वयं फीके पड़ गये।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

(iii) हजारों दीये किसके सामने स्वयं फीके पड़ गये?

(iv) छोटी लकीर के सामने बड़ी लकीर खींच देने का क्या तात्पर्य है?

(v) अहमिकाओं और अर्थहीन संकीर्णताओं की क्षुद्रता सिद्ध करने का सही उपाय क्या है?

(ङ) भगवान् जब अनुग्रह करते हैं तो अपनी दिव्य ज्योति ऐसे महान् सन्तों में उतार देते हैं। एक बार जब यह ज्योति मानव देह को आश्रय करके उतरती है तो चुपचाप नहीं बैठती। वह क्रियात्मक होती है, नीचे गिरे हुए अभाजन लोगों को वह प्रभावित करती है, ऊपर उठाती है। वह उतरती है और ऊपर उठाती है। इसे पुराने पारिभाषिक शब्दों में कहें तो कुछ इस प्रकार होगा कि एक ओर उसका 'अवतार' होता है, दूसरी ओर औरों का 'उद्धार' होता है। अवतार और उद्धार की यह लीला भगवान् के प्रेम का सक्रिय रूप है, जिसे पुराने भक्तजन 'अनुग्रह' कहते हैं। आज से लगभग पाँच सौ वर्ष से पहले परम प्रेयान् हरि का यह 'अनुग्रह' सक्रिय हुआ था, वह आज भी क्रियाशील है। आज कदाचित् गुरु की वाणी की सबसे अधिक तीव्र आवश्यकता अनुभूत हो रही है।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

(iii) भगवान के प्रेम में क्या सक्रिय रूप है?

(iv) सन्तजन क्या कार्य करते हैं?

(v) अनुग्रह का क्या तात्पर्य है?

(च) महागुरु, नयी आशा, नयी उमंग, नये उल्लास की आशा में आज इस देश की जनता तुम्हारे चरणों में प्रणति निवेदन कर रही है। आशा की ज्योति विकीर्ण करो, मैत्री और प्रीति की स्निग्ध धारा से आप्लावित करो। हम उलझ गये हैं, भटक गये हैं, पर कृतज्ञता अब भी हम में रह गयी है। आज भी हम तुम्हारी अमृतोपम वाणी को भूल नहीं गये हैं। कृतज्ञ भारत का प्रणाम अंगीकार करो।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) कृतज्ञ भारत का प्रणाम अंगीकार करने का क्या मतलब है?
(iv) कृतज्ञता से आप क्या समझते हैं?
(v) लेखक गुरु से किस प्रकार की ज्योति विकीर्ण करने का निवेदन कर रहा है?

2. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का जीवन-परिचय बताते हुए उनकी कृतियों पर प्रकाश डालिए।
3. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के जीवन एवं साहित्यिक परिचय का उल्लेख कीजिए।
4. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की साहित्यिक विशेषताएँ बताते हुए उनकी भाषा-शैली पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अपने समकालीन सन्तों से गुरु नानकदेव किस प्रकार भिन्न एवं विशिष्ट हैं?
2. 'अनुग्रह' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
3. 'गुरु नानकदेव' पाठ की भाषा-शैली पर तीन वाक्य लिखिए।
4. गुरु नानक की 'सहज-साधना' से सम्बन्धित लेखक के विचार संक्षेप में लिखिए।
5. 'गुरु नानकदेव' के आविर्भाव-काल को दर्शाते हुए उनमें आनेवाली समस्याओं का उल्लेख कीजिए।
6. किन तथ्यों के आधार पर लेखक ने कार्तिक पूर्णिमा को 'पवित्र तिथि' बताया है?
7. गुरु नानकदेव द्वारा दिये गये जनता के सन्देश को अपने शब्दों में लिखिए।
8. कार्तिक पूर्णिमा क्यों प्रसिद्ध है? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।
9. 'गुरु नानकदेव' पाठ से दस सुन्दर वाक्य लिखिए।
10. 'गुरु नानकदेव' के गुणों को स्पष्ट कीजिए।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के दो उपन्यासों के नाम लिखिए।
2. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइये–
   (अ) कार्तिक पूर्णिमा के साथ गुरु के आविर्भाव का सम्बन्ध जोड़ दिया गया है। ( )
   (ब) गुरु नानक ने प्रेम का सन्देश दिया है। ( )
   (स) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी द्विवेदी-युग के लेखक हैं? ( )
   (द) सीधी लकीर खींचना आसान काम है। ( )
3. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी किस युग के लेखक हैं?
4. 'कबीर' नामक रचना पर हजारीप्रसाद द्विवेदी को कौन-सा पारितोषिक प्राप्त हुआ?
5. गुरु नानकदेव का आविर्भाव कब हुआ था?

व्याकरण-बोध

1. **निम्नलिखित में सन्धि-विच्छेद करते हुए सन्धि का नाम लिखिए–**
   कुलाभिमान, सर्वाधिक, अनायास, लोकोत्तर, अमृतोपम।

2. निम्नलिखित समस्त–पदों का समास-विग्रह कीजिए तथा समास का नाम लिखिए–
अर्थहीन, महापुरुष, आप्लावित, स्वर्णकमल, चित्तभूमि, प्राणधारा।

3. निम्नलिखित पदों में से प्रत्यय अलग कीजिए–
अवतार, संजीवनी, स्वाभाविक, महत्त्व, प्रहार, अनुग्रह, उल्लसित।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म कब हुआ था?
(अ) **1907 ई. में** (ब) 1910 ई. में (स) 1912 ई. में (द) 1914 ई. में

2. हजारी प्रसाद द्विवेदी का देहावसान कब हुआ?
(अ) 1975 ई. (ब) **1979 ई.** (स) 1980 ई. (द) 1982 ई.

3. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यास के लेखक हैं—
(अ) महावीर प्रसाद द्विवेदी (ब) **हजारी प्रसाद द्विवेदी**
(स) प्रेमचन्द (द) इनमें से कोई नहीं

4. 'गुरु नानक देव' निबन्ध के लेखक हैं—
(अ) प्रताप नारायण मिश्र (ब) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(स) **हजारी प्रसाद द्विवेदी** (द) रामचन्द्र शुक्ल

5. कार्तिक पूर्णिमा पर किसका जन्म दिवस मनाया जाता है?
(अ) **गुरु नानक देव का** (ब) महात्मा गाँधी का (स) तुलसीदास का (द) रैदास का

6. गुरु नानक के बारे में कौन-सी बात सत्य है?
(अ) जाति-पाँति में विश्वास (ब) बाह्य आडम्बर में विश्वास
(स) **प्रेम का संदेश** (द) इनमें से कोई नहीं

7. गुरु नानक का आविर्भाव कब हुआ था?
(अ) 400 वर्ष पूर्व (ब) **500 वर्ष पूर्व** (स) 600 वर्ष पूर्व (द) 700 वर्ष पूर्व

8. 'नवो नवो भवसि जायमान' पंक्ति किस निबन्ध से उद्धृत है?
(अ) **गुरु नानक देव** (ब) मित्रता (स) अशोक के फूल (द) कुटज

9. 'ध्रुवं वपुः काञ्चनपद्म निर्मितम् मृदुप्रकृत्या स ससारमेव च' यह कथन किस विद्वान् का है?
(अ) भारवि (ब) **कालिदास** (स) बाणभट्ट (द) तुलसीदास

10. 'कबीर' नामक रचना पर हजारी प्रसाद द्विवेदी को कौन-सा पुरस्कार प्राप्त हुआ?
(अ) **मंगला प्रसाद** (ब) ज्ञानपीठ
(स) भारत-भारती (द) साहित्य अकादमी

11. हजारी प्रसाद द्विवेदी किस युग के लेखक हैं?
(अ) भारतेन्दु युग (ब) शुक्ल युग
(स) **शुक्लोत्तर युग** (द) इनमें से कोई नहीं

12. गुरु नानक देव की वाणी की विशेषता है—
(अ) सहज बेधक शक्ति (ब) आडम्बर रहित (स) बनावट रहित (द) **उपर्युक्त सभी**

उत्तरमाला : 1. (अ) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ) 6. (स) 7. (ब) 8. (अ) 9. (ब) 10. (अ) 11. (स) 12. (द)

●●

4 महादेवी वर्मा

जीवन-परिचय—महादेवी वर्मा 'पीड़ा की गायिका' के रूप में सुप्रसिद्ध छायावादी कवयित्री होने के साथ एक उत्कृष्ट गद्य-लेखिका भी थीं। गुलाबराय–जैसे शीर्षस्तरीय गद्यकार ने लिखा है–"मैं गद्य में महादेवी का लोहा मानता हूँ।" महादेवी वर्मा का जन्म फर्रुखाबाद के एक सम्पन्न कायस्थ परिवार में सन् 1907 ई0 में हुआ था। इन्दौर में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद इन्होंने क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज, इलाहाबाद में शिक्षा प्राप्त की। इनका विवाह ग्यारह वर्ष की अल्प आयु में ही हो गया था। श्वसुर जी के विरोध के कारण इनकी शिक्षा में व्यवधान आ गया, परन्तु उनके निधन के पश्चात् इन्होंने पुनः अध्ययन प्रारम्भ किया और प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत विषय में एम0 ए0 की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। वे 1965 ई0 तक प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या के रूप में कार्यरत रहीं। इन्हें उत्तर प्रदेश विधान परिषद् की सदस्या भी मनोनीत किया गया। इनका देहावसान 11 सितम्बर, 1987 ई0 में प्रयाग में हुआ।

लेखिका-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म-स्थान**–फर्रुखाबाद (उ0प्र0)।
- **जन्म एवं मृत्यु सन्**–1907 ई0, 1987 ई0।
- **पिता**–गोविन्द सहाय।
- **माता**–श्रीमती हेमरानी देवी।
- **छायावादी**-युग की लेखिका।
- **भाषा**–संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली।
- **शैली**–विवेचनात्मक, संस्मरणात्मक, भावात्मक, व्यंग्यात्मक, चित्रात्मक, आलंकारिक।
- **हिन्दी साहित्य में स्थान**–कविता के क्षेत्र में एक नवीन युग का सूत्रपात करने वाली कवयित्री के रूप में चर्चित।

साहित्यिक परिचय—महादेवी वर्मा के गद्य का आरम्भिक रूप इनकी काव्य-कृतियों की भूमिकाओं में देखने को मिलता है। ये मुख्यतः कवयित्री ही थीं, फिर भी गद्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट कोटि के संस्मरण, रेखाचित्र, निबन्ध एवं आलोचनाएँ लिखीं। रहस्यवाद एवं प्रकृतिवाद पर आधारित इनका छायावादी साहित्य; हिन्दी साहित्य की अमूल्य विरासत के रूप में स्वीकार किया जाता है। विरह की गायिका के रूप में महादेवी जी को 'आधुनिक मीरा' कहा जाता है। महादेवी जी के कुशल सम्पादन के परिणामस्वरूप ही 'चाँद' पत्रिका नारी-जगत् की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका बन सकी। इन्होंने साहित्य के प्रचार-प्रसार हेतु 'साहित्यकार-संसद्' नामक संस्था की स्थापना भी की। इन्हें 'नीरजा' काव्य-रचना पर 'सेकसरिया पुरस्कार' और 'यामा' कविता-संग्रह पर 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' से सम्मानित किया गया। कुमाऊँ विश्वविद्यालय ने इन्हें 'डी0 लिट्0' की मानद उपाधि से विभूषित किया। भारत सरकार से 'पद्म भूषण', 'पद्मविभूषण' भी इन्हें प्राप्त हुआ था। 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' इन्हें 1983 ई0 में दिया गया था।

कृतियाँ—महादेवी वर्मा की प्रमुख कृतियाँ अग्रलिखित हैं–

निबन्ध-संग्रह–'क्षणदा', 'शृंखला की कड़ियाँ', 'अबला और सबला', 'साहित्यकार की आस्था', 'संकल्पिता' आदि। इन निबन्ध-संग्रहों में इनके साहित्यिक तथा विचारात्मक निबन्ध संगृहीत हैं। **रेखाचित्र**–'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ'।

संस्मरण–'पथ के साथी', 'मेरा परिवार', 'स्मृति चित्र', 'संस्मरण'। **भाषण संग्रह**–'संभाषण'। **सम्पादन**–'चाँद' पत्रिका और 'आधुनिक कवि' का विद्वत्ता के साथ सम्पादन कार्य किया। **आलोचना**–'हिन्दी का विवेचनात्मक गद्य' तथा 'यामा' और 'दीपशिखा' की भूमिकाएँ। **काव्य-रचनाएँ**–'नीहार', 'नीरजा', 'रश्मि', 'सान्ध्यगीत', 'दीपशिखा', 'यामा', 'सप्तपर्णा', 'प्रथम आयाम' एवं 'अग्नि रेखा' आदि।

इन काव्य-कृतियों में महादेवी जी की अन्तर्वेदना और रहस्यमयी वृत्तियों की अभिव्यक्ति हुई है।

भाषा-शैली–महादेवी जी की काव्य-भाषा अत्यन्त उत्कृष्ट, समर्थ एवं सशक्त है। संस्कृतनिष्ठता इनकी भाषा की प्रमुख विशेषता है। इनकी रचनाओं में उर्दू और अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग भी इनकी रचनाओं में हुआ है जिससे इनकी भाषा में लोक-जीवन की जीवन्तता का समावेश हो गया है। लक्षणा एवं व्यंजना की प्रधानता इनकी भाषा की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। इस प्रकार महादेवी जी की भाषा शुद्ध साहित्यिक भाषा है। इनकी रचनाओं में चित्रोपम वर्णनात्मक शैली, विवेचनात्मक शैली, भावात्मक शैली, व्यंग्यात्मक शैली, आलंकारिक शैली, सूक्ति शैली, उद्धरण शैली आदि द्रष्टव्य हैं।

गिल्लू रेखाचित्र 'मेरा परिवार' नामक पुस्तक से लिया गया है। इसमें इन्होंने एक कोमल लघुप्राण सुन्दर जीव (गिलहरी) की प्रकृति का मानवीय संवेदना तथा ममता के आधार पर चित्रण किया है। इस प्रस्तुति में आत्मीयता, ममता तथा स्नेहशील भावों का समन्वय है।

●●

गिल्लू

सोनजुही में आज एक पीली कली लगी है। उसे देखकर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया, जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते ही कन्धे पर कूदकर मुझे चौंका देता था। तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघुप्राणी की खोज है।

परन्तु वह तो अब तक इस सोनजुही की जड़ में मिट्टी होकर मिल गया होगा कौन जाने स्वर्णिम कली के बहाने वही मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो।

अचानक एक दिन सवेरे कमरे से बरामदे में आकर मैंने देखा, दो कौए एक गमले के चारों ओर चोंचों से छुवा-छुवौवल-जैसा खेल खेल रहे हैं। यह कागभुशुण्डि भी विचित्र पक्षी है–एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित।

हमारे बेचारे पुरखे न गरुड़ के रूप में आ सकते हैं, न मयूर के, न हंस के। उन्हें पितरपक्ष में हमसे कुछ पाने के लिए काक बनकर ही अवतीर्ण होना पड़ता है। इतना ही नहीं, हमारे दूरस्थ प्रियजनों को भी अपने आने का मधु सन्देश इनके कर्कश स्वर ही में दे देना पड़ता है। दूसरी ओर हम कौआ और काँव-काँव करने को अवमानना के अर्थ में ही प्रयुक्त करते हैं।

मेरे काकपुराण के विवेचन में अचानक बाधा आ पड़ी, क्योंकि गमले और दीवार की सन्धि में छिपे एक छोटे-से जीव पर मेरी दृष्टि रुक गयी। निकट जाकर देखा, गिलहरी का छोटा-सा बच्चा है, जो सम्भवतः घोंसले से गिर पड़ा है और अब कौए जिसमें सुलभ आहार खोज रहे हैं।

काकद्वय की चोंचों के दो घाव उस लघुप्राण के लिए बहुत थे। अतः वह निश्चेष्ट-सा गमले में चिपटा पड़ा था।

सबने कहा कि कौए की चोंच का घाव लगने के बाद यह बच नहीं सकता, अतः इसे ऐसे ही रहने दिया जाय।

परन्तु मन नहीं माना, उसे हौले से उठाकर अपने कमरे में ले आयी, फिर रूई से रक्त पोंछकर घावों पर पेन्सिलीन का मरहम लगाया।

रूई की पतली बत्ती दूध में भिगोकर जैसे-तैसे उसके नन्हें-से मुँह में लगायी, पर मुँह खुल न सका और दूध की बूँदें दोनों ओर लुढ़क गयीं।

कई घण्टे के उपचार के उपरान्त उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका। तीसरे दिन वह इतना अच्छा और आश्वस्त हो गया कि मेरी उँगली अपने दो नन्हें पंजों से पकड़कर, नीले काँच की मोतियों-जैसी आँखों से इधर-उधर देखने लगा।

तीन-चार मास में उसके स्निग्ध रोएँ, झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकीली आँखें सबको विस्मित करने लगीं।

हमने उसकी जातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक का रूप दे दिया और इस प्रकार हम उसे गिल्लू कहकर बुलाने लगे। मैंने फूल रखने की एक हल्की डलिया में रूई बिछाकर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया।

वही दो वर्ष गिल्लू का घर रहा। वह स्वयं हिलाकर अपने घर में झूलता और अपनी काँच के मनकों-सी आँखों से कमरे के भीतर और खिड़की से बाहर न जाने क्या देखता-समझता रहता था, परन्तु उसकी समझदारी और कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था।

जब मैं लिखने बैठती तब अपनी ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने की उसे इतनी तीव्र इच्छा होती थी कि उसने एक अच्छा उपाय खोज निकाला।

वह मेरे पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेजी से उतरता। उसका यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता, जब तक मैं उसे पकड़ने के लिए न उठती।

कभी मैं गिल्लू को पकड़कर एक लम्बे लिफाफे में इस प्रकार रख देती कि अगले दो पंजों और सिर के अतिरिक्त सारा लघु गात लिफाफे के भीतर बन्द रहता। इस अद्भुत स्थिति में कभी-कभी घण्टों मेज पर दीवार के सहारे खड़ा रहकर वह अपनी

चमकीली आँखों से मेरा कार्यकलाप देखा करता।

भूख लगने पर चिक-चिक करके मानो वह मुझे सूचना देता और काजू या बिस्कुट मिल जाने पर उसी स्थिति में लिफाफे से बाहरवाले पंजों से पकड़कर उसे कुतरता रहता।

फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम वसन्त आया। नीम-चमेली की गन्ध मेरे कमरे में हौले-हौले आने लगी। बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक-चिक करके न जाने क्या कहने लगीं।

गिल्लू को जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकते देखकर मुझे लगा कि इसे मुक्त करना आवश्यक है।

मैंने कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच ही मुक्ति की साँस ली। इतने छोटे जीव को घर में पले कुत्ते और बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या ही थी।

आवश्यक कागज-पत्रों के कारण मेरे बाहर जाने पर कमरा बन्द ही रहता है। मेरे कॉलेज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला गया और मैंने भीतर पैर रखा, वैसे ही गिल्लू जाली के द्वार से भीतर आकर मेरे पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगा। तब से यह नित्य का क्रम हो गया।

मेरे कमरे से बाहर जाने पर गिल्लू भी खिड़की की खुली जाली की राह बाहर चला जाता और दिनभर गिलहरियों के झुण्ड का नेता बना, हर डाल पर उछलता-कूदता रहता और ठीक चार बजे वह खिड़की से भीतर आकर अपने झूले में झूलने लगता।

मुझे चौंकाने की इच्छा उसमें न जाने कब और कैसे उत्पन्न हो गयी थी। कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता, कभी परदे की चुन्नट में और कभी सोनजुही की पत्तियों में।

मेरे पास बहुत-से पशु-पक्षी हैं और उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं है, परन्तु उनमें से किसी को मेरे साथ मेरे थाली में खाने की हिम्मत हुई है, ऐसा मुझे स्मरण नहीं आता।

गिल्लू इनमें अपवाद था। मैं जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती, वह खिड़की से निकलकर आँगन की दीवार, बरामदा पार करके मेज पर पहुँच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना चाहता। बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया, जहाँ बैठकर वह मेरी थाली में से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफाई से खाता रहता। काजू उसका प्रिय खाद्य था और कई दिन काजू न मिलने पर वह अन्य खाने की चीजें या तो लेना बन्द कर देता था या झूले के नीचे फेंक देता था।

उसी बीच मुझे मोटर दुर्घटना में आहत होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब मेरे कमरे का दरवाजा खोला जाता, गिल्लू अपने झूले से उतरकर दौड़ता और फिर किसी दूसरे को देखकर उसी तेजी से अपने घोंसले में जा बैठता। सब उसे काजू दे जाते, परन्तु अस्पताल से लौटकर जब मैंने उसके झूले की सफाई की तो उसमें काजू भरे मिले, जिनसे ज्ञात हुआ कि वह उन दिनों अपना प्रिय खाद्य कम खाता रहा।

मेरी अस्वस्थता में वह तकिये पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हें-नन्हें पंजों से ये मेरे सिर और बालों को इतने हौले-हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता।

गर्मियों में जब मैं दोपहर में काम करती रहती तो गिल्लू न बाहर जाता, न अपने झूले में बैठता। उसने मेरे निकट रहने के साथ गर्मी से बचने का एक सर्वथा नया उपाय खोज निकाला था। वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठण्डक में भी रहता।

गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती, अतः गिल्लू की जीवन-यात्रा का अन्त आ ही गया। दिनभर उसने न कुछ खाया और न बाहर गया। रात में अन्त की यातना में भी वह अपने झूले से उतरकर मेरे बिस्तर पर आया और ठण्डे पंजों से मेरी वही उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था।

पंजे इतने ठण्डे हो रहे थे कि मैंने जागकर हीटर जलाया और उसे उष्णता देने का प्रयत्न किया, परन्तु प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया।

उसका झूला उतारकर रख दिया है और खिड़की की जाली बन्द कर दी गयी है, परन्तु गिलहरियों की नयी पीढ़ी जाली के उस पार चिक-चिक करती ही रहती है और सोनजुही पर वसन्त आता ही रहता है।

सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गयी–इसलिए भी कि उसे वह लता सबसे अधिक प्रिय थी– इसलिए भी कि लघुगात का, किसी वासन्ती दिन, जुही के पीलाभ छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास मुझे सन्तोष देता है।

● **महादेवी वर्मा**

अभ्यास प्रश्न

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. **निम्नलिखित गद्यांशों में रेखांकित अंशों की व्याख्या और तथ्यपरक प्रश्नों के उत्तर दीजिये–**

(क) सोनजुही में आज एक पीली कली लगी है। उसे देखकर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया, जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते ही कन्धे पर कूदकर मुझे चौंका देता था। तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघुप्राणी की खोज है।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) गिल्लू को कहाँ समाधि दी गयी?

(ख) मेरे पास बहुत-से पशु-पक्षी हैं और उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं है, परन्तु उनमें से किसी को मेरे साथ मेरे थाली में खाने की हिम्मत हुई है, ऐसा मुझे स्मरण नहीं आता।

गिल्लू इनमें अपवाद था। मैं जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती, वह खिड़की से निकलकर आँगन की दीवार, बरामदा पार करके मेज पर पहुँच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना चाहता। बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया, जहाँ बैठकर वह मेरी थाली में से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफाई से खाता रहता। काजू उसका प्रिय खाद्य था और कई दिन काजू न मिलने पर वह अन्य खाने की चीजें या तो लेना बन्द कर देता था या झूले के नीचे फेंक देता था।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) गिल्लू को क्या बेहद पसन्द था?

(ग) मेरी अस्वस्थता में वह तकिये पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हें-नन्हें पंजों से ये मेरे सिर और बालों को इतने हौले-हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता।

गर्मियों में जब मैं दोपहर में काम करती रहती तो गिल्लू न बाहर जाता, न अपने झूले में बैठता। उसने मेरे निकट रहने के साथ गर्मी से बचने का एक सर्वथा नया उपाय खोज निकाला था। वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठण्डक में भी रहता।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) गिल्लू गर्मी से बचने के लिए किस पर लेट जाता था?

2. महादेवी वर्मा के जीवन-परिचय एवं कृतियों का उल्लेख कीजिए।
3. महादेवी वर्मा के जीवन एवं साहित्यिक परिचय को अपने शब्दों में लिखिए।
4. महादेवी वर्मा के साहित्यिक परिचय एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
5. महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. इस पाठ से लेखिका के स्वभाव आदि के बारे में आपको क्या-क्या ज्ञात होता है?

2. लेखिका ने अपनी रचनाओं में किन-किन शैलियों का प्रयोग किया है?
3. 'गिल्लू' कौन था? उसकी विशेषताओं को अपने शब्दों में लिखिए।
4. महादेवी वर्मा को 'विरह की गायिका' के रूप में 'आधुनिक मीरा' किस आधार पर कहा जा सकता है? स्पष्ट कीजिए।
5. लेखिका ने कौए को समादरित, अनादरित, अति सम्मानित तथा अति अवमानित क्यों कहा है?
6. गिल्लू को लेखिका ने किन परिस्थितियों में प्राप्त किया था?
7. गिल्लू के किन-किन व्यवहारों से पता चलता है कि वह समझदार प्राणी था?
8. 'गिल्लू' पाठ से दस सुन्दर वाक्य लिखिए।
9. लेखिका के किन व्यवहारों से ज्ञात होता है कि गिल्लू को वह अपने परिवार के एक सदस्य की तरह मानती थीं?
10. अपने किसी पालतू जन्तु के विषय में वर्णन कीजिए।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. महादेवी वर्मा की दो रेखाचित्र कृतियों का नामोल्लेख कीजिए।
2. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइये–
   (अ) गिल्लू तीन वर्ष तक महादेवी जी के घर में रहा। ( )
   (ब) गिल्लू महादेवी जी के साथ उनकी थाली में भी खाता था। ( )
   (स) गिल्लू को कौए ने मार डाला था। ( )
   (द) सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गयी। ( )
3. महादेवी वर्मा किस युग की लेखिका थीं?
4. गिलहरियों के जीवन की अवधि कितने वर्ष की होती है?
5. 'गिल्लू' नामक पाठ महादेवी जी की किस कृति से संकलित है?

व्याकरण-बोध

1. **'समादरित'** शब्द का सन्धि-विच्छेद करते हुए सन्धि का नाम लिखिए।
2. **वाक्य-विश्लेषण कीजिए–**
   यह कागभुशुण्डि भी विचित्र पक्षी है–एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित।
3. **निम्नलिखित शब्दों का वाक्य-प्रयोग कीजिए–**
   गिल्लू, सोनजुही, वसन्त, जाली, काजू, गिलहरी।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. महादेवी वर्मा का जन्म कब हुआ था?
   (अ) **1907 ई.** (ब) 1909 ई.
   (स) 1910 ई. (द) 1911 ई.

2. महादेवी वर्मा का जन्म कहाँ हुआ था?
(अ) इलाहाबाद (ब) गाजियाबाद
(स) **फर्रुखाबाद** (द) मुरादाबाद

3. महादेवी वर्मा को ज्ञानपीठ पुरस्कार कब मिला?
(अ) **1983 ई.** (ब) 1985 ई.
(स) 1987 ई. (द) 1989 ई.

4. 'आधुनिक मीरा' के नाम से किसे जाना जाता है?
(अ) सुभद्राकुमारी चौहान (ब) **महादेवी वर्मा**
(स) मैत्रेयी पुष्पा (द) प्रभा खेतान

5. 'नीरजा' काव्य रचना पर महादेवी वर्मा को कौन-सा पुरस्कार प्राप्त हुआ?
(अ) **सेक्सरिया पुरस्कार** (ब) ज्ञानपीठ पुरस्कार
(स) मंगला प्रसाद पारितोषिक (द) साहित्य अकादमी

6. 'यामा' कविता संग्रह पर महादेवी वर्मा को कौन-सा पुरस्कार प्राप्त हुआ?
(अ) ज्ञानपीठ पुरस्कार (ब) **मंगला प्रसाद पारितोषिक**
(स) सेक्सरिया पुरस्कार (द) इनमें से कोई नहीं

7. महादेवी वर्मा की मृत्यु कब हुई थी?
(अ) **1987 ई.** (ब) 1990 ई.
(स) 1992 ई. (द) 1994 ई.

8. 'गिल्लू' नामक रेखाचित्र के रचनाकार हैं—
(अ) प्रताप नारायण मिश्र (ब) **महादेवी वर्मा**
(स) रामचन्द्र शुक्ल (द) प्रेमचन्द

9. गिलहरियों के जीवन की अवधि कितने वर्ष होती है?
(अ) **दो वर्ष** (ब) चार वर्ष
(स) छह वर्ष (द) आठ वर्ष

10. 'गिल्लू' नामक पाठ महादेवी जी की किस कृति से लिया गया है?
(अ) अतीत के चलचित्र (ब) स्मृति की रेखाएँ
(स) **मेरा परिवार** (द) पथ के साथी

11. गिल्लू का प्रिय खाद्य क्या था?
(अ) **काजू** (ब) बादाम
(स) अमरूद (द) केला

12. महादेवी वर्मा किस युग की लेखिका/कवयित्री थीं?
(अ) भारतेन्दु युग (ब) द्विवेदी युग
(स) **छायावादी युग** (द) इनमें से कोई नहीं

13. निम्न में से कौन-सा निबन्ध संग्रह महादेवी वर्मा जी द्वारा लिखित है?
(अ) क्षणदा (ब) शृंखला की कड़ियाँ
(स) अबला और सबला (द) **इनमें सभी**

उत्तरमाला : 1. (अ) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब) 5. (अ) 6. (ब) 7. (अ) 8. (ब) 9. (अ) 10. (स) 11. (अ) 12. (स) 13. (द)

●●

5 श्रीराम शर्मा

जीवन-परिचय—श्रीराम शर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले के किरथरा (मक्खनपुर के पास) नामक गाँव में 23 मार्च, सन् 1892 ई0 को हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा मक्खनपुर में ही हुई। इसके पश्चात् इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी0 ए0 की परीक्षा उत्तीर्ण की। ये अपने बाल्यकाल से ही अत्यन्त साहसी एवं आत्मविश्वासी थे। राष्ट्रीयता की भावना भी इनमें कूट-कूटकर भरी हुई थी। प्रारम्भ में इन्होंने शिक्षण-कार्य भी किया। राष्ट्रीय आन्दोलन में इन्होंने सक्रिय भाग लिया और जेल भी गये। आत्मविश्वास इनका इतना सबल था कि बड़ी-से-बड़ी कठिनाई आने पर भी विह्वल नहीं होते थे। इनका विशेष झुकाव लेखन और पत्रकारिता की ओर था। ये लम्बे समय तक 'विशाल भारत' पत्रिका के सम्पादक रहे। इनके जीवन के अन्तिम दिन बड़ी कठिनाई से बीते। लम्बी बीमारी के बाद सन् 1967 ई0 में इनका स्वर्गवास हो गया।

साहित्यिक परिचय—श्रीराम शर्मा ने अपना साहित्यिक जीवन पत्रकारिता से आरम्भ किया। 'विशाल भारत' के सम्पादन के अतिरिक्त इन्होंने गणेशशंकर विद्यार्थी के दैनिक पत्र 'प्रताप' में भी सहसम्पादक के रूप में कार्य किया। राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत एवं जनमानस को झकझोर देनेवाले लेख लिखकर इन्होंने अपार ख्याति अर्जित की। ये शिकार-साहित्य के प्रसिद्ध लेखक थे। हिन्दी-साहित्य में शिकार-साहित्य का प्रारम्भ इन्हीं के द्वारा माना जाता है। सम्पादन एवं शिकार-साहित्य के अतिरिक्त इन्होंने संस्मरण और आत्मकथा आदि विधाओं के क्षेत्र में भी अपनी प्रखर प्रतिभा का परिचय दिया। इन्होंने ज्ञानवर्द्धक एवं विचारोत्तेजक लेख भी लिखे हैं, जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं।

कृतियाँ—शर्मा जी ने संस्मरण, जीवनी, शिकार-साहित्य आदि विविध विधाओं में साहित्य का सृजन किया था। इनकी कृतियों का विवरण इस प्रकार है—

शिकार-साहित्य—'प्राणों का सौदा', 'जंगल के जीव', 'बोलती प्रतिमा' और 'शिकार'। इन सभी रचनाओं में शिकार का रोमांचकारी वर्णन किया गया है। इसके साथ ही पशुओं के मनोविज्ञान का भी सम्यक् परिचय मिलता है। **संस्मरण-साहित्य**—'सेवा ग्राम की डायरी', 'सन् बयालीस के संस्मरण'। इनमें लेखक ने तत्कालीन समाज की झाँकी बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत की है। **जीवनी**—'गंगा मैया' एवं 'नेताजी'। इसके अतिरिक्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित फुटकर लेख भी आपकी साहित्य-साधना के ही अंग हैं।

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म-स्थान**—किरथरा (मैनपुरी), उ0प्र0।
- **जन्म एवं मृत्यु सन्**—1892 ई0, 1967 ई0।
- **भाषा**—सहज, सरल, प्रवाहयुक्त खड़ीबोली।
- **शैली**—चित्रात्मक, आत्मकथात्मक, वर्णनात्मक, विवेचनात्मक।
- शुक्ल एवं शुक्लोत्तर-युग के लेखक।
- **सम्पादन**—विशाल भारत।
- **हिन्दी साहित्य में स्थान**—शिकार साहित्य के रूप में चर्चित।

भाषा-शैली—शर्मा जी की भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण एवं प्रभावशाली है। भाषा की दृष्टि से इन्होंने प्रेमचन्द जी के समान ही प्रयोग किये हैं। इन्होंने अपनी भाषा को सरल एवं सुबोध बनाने के लिए संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी के शब्दों के साथ-साथ लोकभाषा के शब्दों के भी प्रयोग किये हैं। मुहावरों एवं कहावतों का प्रयोग इनके कथन को स्पष्ट एवं प्रभावी बनाता है। 'रोजाना', 'आदत' आदि उर्दू के शब्दों के साथ मृग-शावक जैसे संस्कृत शब्द-प्रयोग भी किये हैं, पर कहीं भी भाषा का रूप अस्वाभाविक नहीं होने पाया।

शर्मा जी की रचना-शैली वर्णनप्रधान है। अपने वर्णन में दृश्य अथवा घटना का ऐसा चित्र खींच देते हैं जिससे पाठक का भावात्मक तादात्म्य स्थापित हो जाता है। इनकी कृतियों में चित्रात्मक, आत्मकथात्मक, वर्णनात्मक एवं विवेचनात्मक शैलियों के दर्शन होते हैं।

इस संकलन में संकलित '**स्मृति**' लेख इनकी 'शिकार' पुस्तक से लिया गया है। इनमें लेखक ने बचपन के दिनों की एक रोमांचकारी घटना का वर्णन किया है। वर्णन इतना सजीव है कि पाठक का कुतूहल आद्यन्त बना रहता है। बाल-प्रकृति और बाल-सुलभ चेष्टाओं का चित्रण इसमें विशेष रूप से द्रष्टव्य है। यह लेख वर्णनात्मक शैली में लिखा गया है।

●●

स्मृति

सन् 1908 ई० की बात है। दिसम्बर का आखिर या जनवरी का प्रारम्भ होगा। चिल्ला जाड़ा पड़ रहा था। दो-चार दिन पूर्व कुछ बूँदा-बाँदी हो गयी थी, इसलिए शीत की भयंकरता और भी बढ़ गयी थी। सायंकाल के साढ़े तीन या चार बजे होंगे। कई साथियों के साथ मैं झरबेरी के बेर तोड़-तोड़कर खा रहा था कि गाँव के पास से एक आदमी ने जोर से पुकारा कि तुम्हारे भाई बुला रहे हैं, शीघ्र ही घर लौट जाओ। मैं घर को चलने लगा। साथ में छोटा भाई भी था। भाई साहब की मार का डर था, इसलिए सहमा हुआ चला जाता था। समझ में नहीं आता था कि कौन-सा कसूर बन पड़ा। डरते-डरते घर में घुसा। आशंका थी कि बेर खाने के अपराध में ही तो पेशी न हो। पर आँगन में भाई साहब को पत्र लिखते पाया। अब पिटने का भ्रम दूर हुआ। हमें देखकर भाई साहब ने कहा–'इन पत्रों को ले जाकर मक्खनपुर डाकखाने में डाल आओ। तेजी से जाना जिससे शाम की डाक में ही चिट्ठियाँ निकल जायँ। ये बड़ी जरूरी हैं।'

जाड़े के दिन थे ही, तिस पर हवा के प्रकोप से कँपकँपी लग रही थी। हवा मज्जा तक ठिठुरा रही थी, इसलिए हमने कानों को धोती से बाँधा। माँ ने भुँजाने के लिए थोड़े-से चने एक धोती में बाँध दिये। हम दोनों भाई अपना-अपना डण्डा लेकर घर से निकल पड़े। उस समय उस बबूल के डण्डे से जितना मोह था, उतना इस उम्र में रायफल से नहीं। मेरा डण्डा अनेक साँपों के लिए नारायण-वाहन हो चुका था। मक्खनपुर के स्कूल और गाँव के बीच पड़नेवाले आम के पेड़ों से प्रतिवर्ष उससे आम झूरे जाते थे। इस कारण वह मूक डण्डा सजीव-सा प्रतीत होता था। प्रसन्नवदन हम दोनों मक्खनपुर की ओर तेजी से बढ़ने लगे। चिट्ठियों को मैंने टोपी में रख लिया, क्योंकि कुर्ते में जेबें न थीं।

हम दोनों उछलते-कूदते, एक ही साँस में गाँव से चार फर्लांग दूर उस कुएँ के पास आ गये जिसमें एक अति भयंकर काला साँप पड़ा हुआ था। कुआँ कच्चा था और चौबीस हाथ (36 फीट) गहरा था। उसमें पानी न था। उसमें न जाने साँप कैसे गिर गया था? कारण कुछ भी हो, हमारा उसके कुएँ में होने का ज्ञान केवल दो महीने का था। बच्चे नटखट होते ही हैं। मक्खनपुर पढ़ने जानेवाली हमारी टोली पूरी वानर-टोली थी। एक दिन हम लोग स्कूल से लौट रहे थे कि हमको कुएँ में उझकने की सूझी। सबसे पहले उझकनेवाला मैं ही था। कुएँ में झाँककर एक ढेला फेंका कि उसकी आवाज कैसी होती है। उसके सुनने के बाद अपनी बोली की प्रतिध्वनि सुनने की इच्छा थी, पर कुएँ में ज्यों ही ढेला गिरा त्यों ही एक फुसकार सुनायी पड़ी। कुएँ के किनारे खड़े हुए हम सब बालक पहले तो फुसकार से चकित हो गये, जैसे किलोलें करता हुआ मृगसमूह अति समीप के कुत्ते की भौंक से चकित हो जाता है। उसके उपरान्त सभी ने उझक-उझककर एक-एक ढेला फेंका और कुएँ से आनेवाली क्रोधपूर्ण फुसकार पर कहकहे लगाये।

गाँव से मक्खनपुर जाते और मक्खनपुर से लौटते समय प्रायः प्रतिदिन ही कुएँ में ढेले डाले जाते थे। मैं तो आगे भागकर आ जाता था और टोपी को एक हाथ से पकड़कर दूसरे हाथ से ढेला फेंकता था। यह रोजाना की आदत हो गयी थी। साँप से फुसकार करवा लेना मैं उस समय बड़ा काम समझता था। इसलिए जैसे ही हम दोनों उस कुएँ की ओर से निकले, कुएँ में ढेला फेंककर फुसकार सुनने की प्रवृत्ति जागृत हो गयी। मैं कुएँ की ओर बढ़ा। छोटा भाई मेरे पीछे हो लिया, जैसे बड़े मृगशावक के पीछे छोटा मृगशावक हो लेता है। कुएँ के किनारे से एक ढेला उठाया और उझककर एक हाथ से टोपी उतारते हुए साँप पर ढेला गिरा दिया, पर मुझ पर तो बिजली-सी गिर पड़ी। साँप ने फुसकार मारी या नहीं, ढेला उसे लगा या नहीं, यह बात अब तक स्मरण नहीं। टोपी के हाथ में लेते ही तीनों चिट्ठियाँ चक्कर काटती हुई कुएँ में गिर रही थीं। अकस्मात् जैसे घास चरते हुए हिरन की आत्मा गोली से हत होने पर निकल जाती है और वह तड़पता रह जाता है, उसी भाँति वे चिट्ठियाँ क्या टोपी से निकल गयीं, मेरी तो जान निकल गयी। उनके गिरते ही मैंने उनको पकड़ने के लिए एक झपट्टा भी मारा, ठीक वैसे जैसे घायल शेर शिकारी को पेड़ पर चढ़ते देख उस पर हमला करता है। पर वे तो पहुँच से बाहर हो चुकी थीं। उनको पकड़ने की घबराहट में मैं स्वयं झटके के कारण कुएँ में गिर गया होता।

कुएँ की पाट पर बैठे हम रो रहे थे–छोटा भाई ढाढ़ें मारकर और मैं चुपचाप आँखें डबडबाकर। पतीली में उफान आने से ढकना ऊपर उठ जाता है और पानी बाहर टपक जाता है। निराशा, पिटने के भय और उद्वेग से रोने का उफान आता था। पलकों के ढकने भीतरी भावों को रोकने का प्रयत्न करते थे, पर कपोलों पर आँसू ढलक ही जाते थे। माँ की गोद की याद आती थी। जी चाहता था कि माँ आकर छाती से लगा ले और लाड़-प्यार करके कह दे कि कोई बात नहीं, चिट्ठियाँ फिर लिख ली जायँगी। तबीयत करती थी कि कुएँ में बहुत-सी मिट्टी डाल दी जाय और घर जाकर कह दिया जाय कि चिट्ठी डाल आये, पर उस समय झूठ बोलना मैं जानता ही न था। घर लौटकर सच बोलने से रूई की भाँति धुनाई होती। मार के ख्याल से शरीर ही नहीं, मन भी काँप जाता था। सच बोलकर पिटने के भावी भय और झूठ बोलकर चिट्ठियों के न पहुँचने की जिम्मेदारी के बोझ से दबा मैं बैठा सिसक रहा था। इसी सोच-विचार में पन्द्रह मिनट होने को आये। देर हो रही थी, और उधर दिन का बुढ़ापा बढ़ता जाता था। कहीं भाग जाने की तबीयत करती थी, पर पिटने का भय और जिम्मेदारी की दुधारी तलवार कलेजे पर फिर रही थी।

दृढ़ संकल्प से दुविधा की बेड़ियाँ कट जाती हैं। मेरी दुविधा भी दूर हो गयी। कुएँ में घुसकर चिट्ठियों को निकालने का निश्चय किया। कितना भयंकर निर्णय था। पर जो मरने को तैयार हो, उसे क्या? मूर्खता अथवा बुद्धिमत्ता से किसी काम को करने के लिए कोई मौत का मार्ग ही स्वीकार कर ले, और वह भी जान-बूझकर, तो फिर वह अकेला संसार से भिड़ने को तैयार हो जाता है। और फल? उसे फल की क्या चिन्ता? फल तो किसी दूसरी शक्ति पर निर्भर है। उस समय चिट्ठियाँ निकालने के लिए मैं विषधर से भिड़ने को तैयार हो गया। पासा फेंक दिया था। मौत का आलिंगन हो अथवा साँप से बचकर दूसरा जन्म, इसकी कोई चिन्ता न थी। पर विश्वास यह था कि डण्डे से साँप को पहले मार दूँगा, तब फिर चिट्ठियाँ उठा लूँगा। बस इसी दृढ़ विश्वास के बूते पर मैंने कुएँ में घुसने की ठानी।

छोटा भाई रोता था और उसके रोने का तात्पर्य था कि मेरी मौत मुझे नीचे बुला रही है, यद्यपि वह शब्दों से न कहता था। वास्तव में मौत सजीव और नग्न रूप में कुएँ में बैठी थी, पर उस नग्न मौत से मुठभेड़ के लिए मुझे भी नग्न होना पड़ा। छोटा भाई भी नंगा हुआ। एक धोती मेरी, एक छोटे भाई की, एक चनेवाली, दो कानों से बँधी हुई धोतियाँ–पाँच धोतियाँ और कुछ रस्सी मिलाकर कुएँ की गहराई के लिए काफी हुई। हम लोगों ने धोतियाँ एक-दूसरी से बाँधीं और खूब खींच-खींचकर आजमा लिया कि गाँठें कड़ी हैं या नहीं। अपनी ओर से कोई धोखे का काम नहीं रखा। धोती के एक सिरे पर डण्डा बाँधा और कुएँ में डाल दिया। दूसरे सिरे को डेंग (वह लकड़ी जिस पर चरस से पुर टिकता है) के चारों ओर एक चक्कर देकर और एक गाँठ लगाकर छोटे भाई को दे दिया। छोटा भाई केवल आठ वर्ष का था, इसलिए धोती को डेंग से कड़ी करके बाँध दिया और तब उसे खूब मजबूती से पकड़ने के लिए कहा। मैं कुएँ में धोती के सहारे घुसने लगा। छोटा भाई फिर रोने लगा। मैंने उसे आश्वासन दिलाया कि मैं कुएँ के नीचे पहुँचते ही साँप को मार दूँगा और मेरा विश्वास भी ऐसा ही था। कारण यह था कि इसके पहले मैंने अनेक साँप मारे थे। इसलिए कुएँ में घुसते समय मुझे साँप का तनिक भी भय न था। उसको मारना मैं बायें हाथ का खेल समझता था। कुएँ के धरातल से जब चार-पाँच गज रहा होगा, तब ध्यान से नीचे को देखा। अकल चकरा गयी। साँप फन फैलाये धरातल से एक हाथ ऊपर उठा हुआ लहरा रहा था। पूँछ और पूँछ के समीप का भाग पृथ्वी पर था, आधा अग्रभाग ऊपर उठा हुआ मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। नीचे डण्डा बँधा था, मेरे उतरने की गति से जो इधर-उधर हिलता था। उसी के कारण शायद मुझे उतरते देख साँप घातक चोट के आसन पर बैठा था। सँपेरा जैसे बीन बजाकर साँप को खिलाता है और साँप क्रोधित हो फन फैलाकर खड़ा होता तथा फुंकार मारकर चोट करता है ठीक उसी प्रकार साँप तैयार था। उसका प्रतिद्वन्द्वी–मैं उससे कुछ ही ऊपर धोती पकड़े लटक रहा था। धोती डेंग से बँधी होने के कारण कुएँ के बीचोबीच लटक रही थी और मुझे कुएँ के धरातल की परिधि के बीचोबीच उतरना था। इसके माने थे साँप से डेढ़-दो फुट–गज नहीं–की दूरी पर पैर रखना और इतनी दूरी पर साँप पैर रखने ही चोट करता। स्मरण रहे, कच्चे कुएँ का व्यास बहुत कम होता है। नीचे तो वह डेढ़ गज से अधिक होता ही नहीं। ऐसी दशा में कुएँ में मैं साँप से अधिक-से-अधिक चार फुट की दूरी पर रह सकता था, वह भी उस दशा में जब साँप मुझसे दूर रहने का प्रयत्न करता, पर उतरना तो था कुएँ के बीच में क्योंकि मेरा साधन बीचोबीच लटक रहा था। ऊपर से लटककर तो साँप मारा नहीं जा सकता था। उतरना तो था ही। थकावट से ऊपर चढ़ भी नहीं सकता था। अब तक अपने प्रतिद्वन्द्वी को पीठ दिखाने का निश्चय नहीं किया था। यदि ऐसा करता भी तो कुएँ के धरातल पर उतरे बिना क्या मैं ऊपर चढ़ सकता था? धीरे-धीरे उतरने लगा। एक-एक इंच ज्यों-ज्यों मैं नीचे उतरता जाता था, त्यों-त्यों मेरी एकाग्रचित्तता बढ़ती जाती थी। मुझे एक सूझ सूझी। दोनों हाथों से धोती पकड़े हुए मैंने अपने पैर कुएँ की बगल में लगा दिये। दीवार से पैर लगाते ही कुछ मिट्टी नीचे गिरी और साँप ने फूँ करके उस पर मुँह मारा। मेरे पैर भी दीवार से हट गये और मेरी टाँगें कमर

से समकोण बनाती हुई लटकी रहीं, पर इससे साँप से दूरी और कुएँ की बगल से सटाये, और कुछ धक्के के साथ अपने प्रतिद्वन्द्वी के सम्मुख कुएँ की दूसरी ओर डेढ़ गज पर–कुएँ के धरातल पर खड़ा हो गया। आँखें चार हुईं। शायद एक-दूसरे ने पहचाना। साँप को चक्षुःश्रवा कहते हैं। मैं स्वयं चक्षुःश्रवा हो रहा था। अन्य इन्द्रियों ने मानो सहानुभूति से अपनी शक्ति आँखों को दे दी हो। साँप के फन की ओर मेरी आँखें लगी हुई थीं कि वह कब किस ओर को आक्रमण करता है, साँप ने मोहनी-सी डाल दी थी। शायद वह मेरे आक्रमण की प्रतीक्षा में था, पर जिस विचार और आशा को लेकर मैंने कुएँ में घुसने की ठानी थी, वह तो आकाश-कुसुम था। मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभी-कभी कितनी मिथ्या और उल्टी निकलती हैं। मुझे साँप का साक्षात् होते ही अपनी योजना और आशा की असम्भवता प्रतीत हो गयी। डण्डा चलाने के लिए स्थान ही न था। लाठी या डण्डा चलाने के लिए काफी स्थान चाहिए, जिसमें वे घुमाये जा सकें। साँप को डण्डे से दबाया जा सकता था, पर ऐसा करना मानो तोप के मुहरे पर खड़ा होना था। यदि फन या उसके समीप का भाग न दबा, तो फिर वह पलटकर जरूर काटता और फन के पास दबाने की कोई सम्भावना भी होती तो फिर उसके पास पड़ी हुई दो चिट्ठियों को कैसे उठाता? दो चिट्ठियाँ उसके पास उससे सटी हुई पड़ी थीं और एक मेरी ओर थी। मैं तो चिट्ठियाँ लेने ही उतरा था। हम दोनों अपने पैतरों पर डटे थे। उस आसन पर खड़े-खड़े मुझे चार-पाँच मिनट हो गये। दोनों ओर मोरचे पड़े हुए थे, पर मेरा मोरचा कमजोर था। कहीं साँप मुझ पर झपट पड़ता तो मैं–यदि बहुत करता तो–उसे पकड़कर कुचलकर मार देता, पर वह तो अचूक तरल विष मेरे शरीर में पहुँचा ही देता और अपने साथ-साथ मुझे भी ले जाता। अब तक साँप ने वार न किया था, इसलिए मैंने भी उसे डण्डे से दबाने का खयाल छोड़ दिया। ऐसा करना उचित भी न था। अब प्रश्न था कि चिट्ठियाँ कैसे उठायी जायँ? बस, एक सूरत थी। डण्डे से साँप की ओर से चिट्ठियों को सरकाया जाय। यदि साँप टूट पड़ा, तो कोई चारा न था। कुर्ता था, और कोई कपड़ा न था जिसे साँप के मुँह की ओर करके उसके फन को पकड़ लूँ। मारना या बिल्कुल छेड़खानी न करना–ये दो मार्ग थे। सो पहला मेरी शक्ति के बाहर था। बाध्य होकर दूसरे मार्ग का अवलम्बन करना पड़ा।

डण्डे को लेकर ज्यों ही मैंने साँप की दायीं ओर पड़ी हुई चिट्ठी की ओर उसे बढ़ाया कि साँप का फन पीछे की ओर हुआ। धीरे-धीरे डण्डा चिट्ठी की ओर बढ़ा और ज्यों ही चिट्ठी के पास पहुँचा कि फुंकार के साथ काली बिजली तड़पी और डण्डे पर गिरी। हृदय में कम्प हुआ और हाथों ने आज्ञा न मानी। डण्डा छूट पड़ा। मैं तो न मालूम कितना ऊपर उछल गया। जान-बूझकर नहीं, यों ही बिदककर। उछलकर जो खड़ा हुआ, तो देखा डण्डे के सिर पर तीन-चार स्थानों पर पीब-सा कुछ लगा हुआ है। वह विष था। साँप ने मानो अपनी शक्ति का सर्टिफिकेट सामने रख दिया था, पर मैं तो उसकी योग्यता का पहले ही से कायल था। उस सर्टिफिकेट की जरूरत न थी। साँप ने लगातार फूँ-फूँ करके डण्डे पर तीन-चार चोटें कीं। वह डण्डा पहली बार ही इस भाँति अपमानित हुआ था, या शायद वह साँप का उपहास कर रहा था।

उधर ऊपर फूँ-फूँ और मेरे उछलने और फिर वही धमाके से खड़े होने से छोटे भाई ने समझा कि मेरा कार्य समाप्त हो गया और बन्धुत्व का नाता फूँ-फूँ और धमाके में टूट गया। उसने खयाल किया कि साँप के काटने से मैं गिर गया। मेरे कष्ट और विरह के खयाल से उसके कोमल हृदय को धक्का लगा। भ्रातृ-स्नेह के ताने-बाने को चोट लगी। उसकी चीख निकल गयी।

छोटे भाई की आशंका बेजा न थी, पर उस फूँ और धमाके से मेरा साहस कुछ बढ़ गया। दुबारा फिर उसी प्रकार लिफाफे को उठाने की चेष्टा की। अबकी बार साँप ने वार भी किया और डण्डे से चिपट भी गया। डण्डा हाथ से छूटा तो नहीं, पर झिझक, सहम अथवा आतंक से अपनी ओर खिंच गया और गुंजल्क मारता हुआ साँप का पिछला भाग मेरे हाथों से छू गया। उफ, कितना ठण्डा था! डण्डे को मैंने एक ओर पटक दिया। यदि कहीं उसका दूसरा वार पहले होता, तो उछलकर मैं साँप पर गिरता और न बचता, लेकिन जब जीवन होता है, तब हजारों ढंग बचने के निकल आते हैं। वह दैवी कृपा थी। डण्डे के मेरी ओर खिंच आने से मेरे और साँप के आसन बदल गये। मैंने तुरन्त ही लिफाफे और पोस्टकार्ड चुन लिये। चिट्ठियों को धोती के छोर से बाँध दिया, और छोटे भाई ने उन्हें ऊपर खींच लिया।

डण्डे को साँप के पास से उठाने में भी बड़ी कठिनाई पड़ी। साँप उससे खुलकर उस पर धरना देकर बैठा था। जीत तो मेरी हो चुकी थी पर अपना निशान गँवा चुका था। आगे हाथ बढ़ाता तो साँप हाथ पर वार करता, इसलिए कुएँ की बगल से एक मुट्ठी मिट्टी लेकर मैंने उसकी दायीं ओर फेंकी कि वह उस पर झपटा, और मैंने दूसरे हाथ से उसकी बायीं ओर से डण्डा खींच लिया, पर बात-की-बात में उसने दूसरी ओर भी वार किया। यदि बीच में डण्डा न होता, तो पैर में उसके दाँत गड़ गये होते।

अब ऊपर चढ़ना कोई कम कठिन काम न था। केवल हाथों के सहारे, पैरों को बिना कहीं लगाये हुए 36 फुट ऊपर चढ़ना मुझसे अब नहीं हो सकता। 15-20 फुट बिना पैरों के सहारे, केवल हाथों के बल चलने की हिम्मत रखता हूँ, कम

ही, अधिक नहीं। पर उस ग्यारह वर्ष की अवस्था में मैं 36 फुट चढ़ा। बाँहें भर गयी थीं। छाती फूल गयी थी। धौंकनी चल रही थी। पर एक-एक इंच सरक-सरककर अपनी भुजाओं के बल मैं ऊपर चढ़ आया। यदि हाथ छूट जाते तो क्या होता, इसका अनुमान करना कठिन है। ऊपर आकर, बेहाल होकर थोड़ी देर तक पड़ा रहा। देह को झार-झूरकर धोती-कुर्ता पहना! फिर किशनपुर के लड़के को, जिसने ऊपर चढ़ने की चेष्टा को देखा था, ताकीद करके कि वह कुएँवाली घटना किसी से न कहे, हम लोग आगे बढ़े।

सन् 1915 ई0 में मैट्रीक्युलेशन पास करने के उपरान्त यह घटना मैंने माँ को सुनायी। सजल नेत्रों से माँ ने मुझे गोद में ऐसे बैठा लिया जैसे चिड़िया अपने बच्चों को डैने के नीचे छिपा लेती है।

कितने अच्छे थे वे दिन! उस समय रायफल न थी, डण्डा था और डण्डे का शिकार–कम-से-कम उस साँप का शिकार–रायफल के शिकार से कम रोचक और भयानक न था। ● **श्रीराम शर्मा**

अभ्यास प्रश्न

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. **निम्नलिखित गद्यांशों में रेखांकित अंशों की व्याख्या और तथ्यपरक प्रश्नों के उत्तर दीजिये–**

(क) जाड़े के दिन थे ही, तिस पर हवा के प्रकोप से कँपकँपी लग रही थी। हवा मज्जा तक ठिठुरा रही थी, इसलिए हमने कानों को धोती से बाँधा। माँ ने भुँजाने के लिए थोड़े-से चने एक धोती में बाँध दिये। हम दोनों भाई अपना-अपना डण्डा लेकर घर से निकल पड़े। उस समय उस बबूल के डण्डे से जितना मोह था, उतना इस उम्र में रायफल से नहीं। मेरा डण्डा अनेक साँपों के लिए नारायण-वाहन हो चुका था। मक्खनपुर के स्कूल और गाँव के बीच पड़नेवाले आम के पेड़ों से प्रतिवर्ष उससे आम झूरे जाते थे। इस कारण वह मूक डण्डा सजीव-सा प्रतीत होता था। प्रसन्नवदन हम दोनों मक्खनपुर की ओर तेजी से बढ़ने लगे। चिट्ठियों को मैंने टोपी में रख लिया, क्योंकि कुर्ते में जेबें न थीं।

प्रश्न (i) प्रस्तुत गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) लेखक ने चिट्ठियों को कहाँ रख लिया था?
(iv) लेखक ने चिट्ठियों को टोपी में क्यों रख लिया?
(v) लेखक ने डण्डे की तुलना किससे की है?

(ख) साँप से फुसकार करवा लेना मैं उस समय बड़ा काम समझता था। इसलिए जैसे ही हम दोनों उस कुएँ की ओर से निकले, कुएँ में ढेला फेंककर फुसकार सुनने की प्रवृत्ति जागृत हो गयी। मैं कुएँ की ओर बढ़ा। छोटा भाई मेरे पीछे हो लिया, जैसे बड़े मृगशावक के पीछे छोटा मृगशावक हो लेता है। कुएँ के किनारे से एक ढेला उठाया और उझककर एक हाथ से टोपी उतारते हुए साँप पर ढेला गिरा दिया, पर मुझ पर तो बिजली-सी गिर पड़ी।

प्रश्न (i) प्रस्तुत गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) लेखक को कब लगा कि उस पर बिजली सी गिर पड़ी?

(ग) साँप को चक्षुःश्रवा कहते हैं। मैं स्वयं चक्षुःश्रवा हो रहा था। अन्य इन्द्रियों ने मानो सहानुभूति से अपनी शक्ति आँखों को दे दी हो। साँप के फन की ओर मेरी आँखें लगी हुई थीं कि वह कब किस ओर को आक्रमण करता है, साँप ने मोहनी-सी डाल दी थी। शायद वह मेरे आक्रमण की प्रतीक्षा में था, पर जिस विचार और आशा को लेकर मैंने कुएँ में घुसने की ठानी थी, वह तो आकाश-कुसुम था। मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभी-कभी कितनी मिथ्या और उल्टी निकलती हैं। मुझे साँप का साक्षात् होते ही अपनी योजना और आशा की असम्भवता प्रतीत हो गयी। डण्डा चलाने के लिए स्थान ही न था। लाठी या डण्डा चलाने के लिए काफी

स्थान चाहिए, जिसमें वे घुमाये जा सकें। साँप को डण्डे से दबाया जा सकता था, पर ऐसा करना मानो तोप के मुहरे पर खड़ा होना था।

प्रश्न (i) प्रस्तुत गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) चक्षुःश्रवा के नाम से कौन-सा जीव जाना जाता है?

2. श्रीराम शर्मा का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए।
3. श्रीराम शर्मा की साहित्यिक विशेषताओं को बताते हुए उनकी भाषा-शैली भी स्पष्ट कीजिए।
4. श्रीराम शर्मा के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'स्मृति' निबन्ध के आधार पर बाल-सुलभ वृत्तियों को संक्षेप में लिखिए।
2. लेखक ने अपने डण्डे के विषय में क्या कहा है?
3. लेखक के कुएँ में साँप से संघर्ष के समय, उसके छोटे भाई की मनोदशा कैसी थी?
4. लेखक की तीन साहित्यिक विशेषताएँ लिखिए।
5. 'स्मृति' पाठ से आपने क्या समझा? अपने शब्दों में लिखिए।
6. 'स्मृति' पाठ से दस सुन्दर वाक्य लिखिए।
7. चिट्ठियों को कुएँ में गिरता देख लेखक की क्या मनोदशा हुई?
8. 'वह कुएँवाली घटना किसी से न कहे।' लेखक ने अपने साथी लड़के से क्यों कहा?
9. कुएँ में साहसपूर्वक उतरकर चिट्ठियों को निकाल लाने के कार्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
10. लेखक और साँप के बीच संघर्ष के विषय में लिखिए।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. श्रीराम शर्मा किस युग के लेखक थे?
2. श्रीराम शर्मा ने किस पत्रिका का सम्पादन किया था?
3. 'स्मृति' लेख किस शैली में लिखा गया है?
4. चिट्ठी किसकी लिखी थी?
5. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइये–
   (अ) साँप को चक्षुःश्रवा कहते हैं। ( )
   (ब) 'स्मृति' लेख 'शिकार' पुस्तक से लिया गया है। ( )
   (स) कुआँ पक्का और दस हाथ गहरा था। ( )
   (द) 'स्मृति' में सन् 1928 की बात है। ( )

व्याकरण-बोध

1. **निम्नलिखित समस्त-पदों का समास-विग्रह कीजिए तथा समास का नाम लिखिए–**
   विषधर, चक्षुःश्रवा, प्रसन्नवदन, भयंकर, मृगसमूह, वानर-टोली।
2. **निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ बताते हुए वाक्य-प्रयोग कीजिए–**
   बेड़ियाँ कट जाना, बेहाल होना, आँखें चार होना, तोप के मुहरे पर खड़ा होना, टूट पड़ना, मोरचे पड़ना।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. श्रीराम शर्मा का जन्म कब हुआ था?
   (अ) **1892 ई.** (ब) 1894 ई. (स) 1896 ई. (द) 1898 ई.
2. श्रीराम शर्मा का निधन कब हुआ था?
   (अ) 1960 ई. (ब) **1967 ई.** (स) 1970 ई. (द) 1975 ई.
3. 'स्मृति' लेख श्रीराम शर्मा की किस पुस्तक से लिया गया है?
   (अ) प्राणों का सौदा (ब) जंगल के जीव (स) **शिकार** (द) इनमें से कोई नहीं
4. श्रीराम शर्मा ने किस पत्रिका का सम्पादन किया?
   (अ) **विशाल भारत** (ब) सरस्वती
   (स) ब्राह्मण (द) आनन्द कादम्बिनी
5. चक्षुःश्रवा किसे कहा जाता है?
   (अ) हिरन (ब) **साँप** (स) नेवला (द) मेंढक
6. लेखक ने चिट्ठियों को अपनी टोपी में क्यों रख लिया था?
   (अ) **जेब न होने के कारण** (ब) भारी होने के कारण
   (स) बड़ी होने के कारण (द) इनमें से कोई नहीं
7. चिट्ठियाँ कहाँ गिरी थीं?
   (अ) **कुएँ में** (ब) तालाब में (स) रास्ते में (द) गड्ढे में
8. बबूल के डण्डे की तुलना लेखक ने किससे की है?
   (अ) चाकू से (ब) तलवार से
   (स) **रायफल से** (द) इनमें से कोई नहीं
9. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना श्रीराम शर्मा द्वारा लिखित है?
   (अ) प्राणों का सौदा (ब) जंगल के जीव (स) बोलती प्रतिमा (द) **इनमें सभी**
10. लेखक किस गाँव के विद्यालय में पढ़ता था?
    (अ) **मक्खनपुर** (ब) रामपुर
    (स) देवपुर (द) इनमें से कोई नहीं
11. साँप वाली घटना को लेखक ने अपनी माँ को कब सुनाया?
    (अ) 1910 ई. में (ब) **1915 ई. में** (स) 1920 ई. में (द) 1925 ई. में
12. श्रीराम शर्मा को लेखन की किस विधा में ख्याति मिली है?
    (अ) **शिकार साहित्य** (ब) कथा साहित्य (स) निबन्ध साहित्य (द) इनमें से कोई नहीं
13. जिस कुएँ में साँप गिरा था, वह कितना गहरा था?
    (अ) 30 फिट (ब) **36 फिट** (स) 40 फिट (द) 42 फिट
14. पाठ में 'नारायण वाहन' किसे कहा गया है?
    (अ) **बबूल के डंडे को** (ब) बन्दूक को (स) रायफल को (द) तलवार को
15. 'स्मृति' नामक पाठ की घटना किस वर्ष की है?
    (अ) 1905 ई. (ब) **1908 ई.** (स) 1910 ई. (द) 1912 ई.

उत्तरमाला : 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (अ) 5. (ब) 6. (अ) 7. (अ) 8. (स) 9. (द) 10. (अ) 11. (ब) 12. (अ) 13. (ब) 14. (अ) 15. (ब)

●●

6 काका कालेलकर

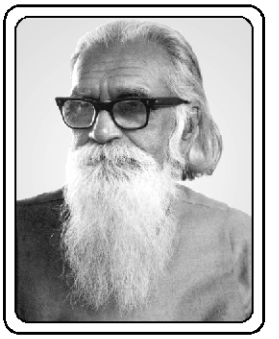

जीवन-परिचय—काका कालेलकर का जन्म सन् 1885 ई0 में महाराष्ट्र के सतारा जिले में हुआ था। ये बड़े प्रतिभासम्पन्न थे। मराठी इनकी मातृभाषा थी, पर इन्होंने संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी, गुजराती और बँगला भाषाओं का भी गम्भीर अध्ययन कर लिया था। जिन राष्ट्रीय नेताओं एवं महापुरुषों ने राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार में विशेष उत्सुकता दिखायी, उनकी पंक्ति में काका कालेलकर का भी नाम आता है। इन्होंने राष्ट्रभाषा के प्रचार को राष्ट्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत माना है। गाँधीजी के नेतृत्व में जितने भी आंदोलन हुए, काका कालेलकर ने सभी में भाग लिया और कुल मिलाकर 5 वर्ष कैद में बिताए। 1930 में पूना के यरवदा जेल में उन्होंने गाँधीजी के साथ महत्त्वपूर्ण समय बिताया। महात्मा गाँधी के सम्पर्क से इनका हिन्दी-प्रेम और भी जागृत हुआ। दक्षिण भारत, विशेषकर गुजरात में इन्होंने हिन्दी का प्रचार विशेष रूप से किया। प्राचीन भारतीय संस्कृति, नीति, इतिहास, भूगोल आदि के साथ ही इन्होंने युगीन समस्याओं पर भी अपनी सशक्त लेखनी चलायी। इन्होंने शान्ति निकेतन में अध्यापक, साबरमती आश्रम में प्रधानाध्यापक और बड़ौदा में राष्ट्रीय शाला के आचार्य के पद पर भी कार्य किये। गाँधीजी की मृत्यु के बाद उनकी स्मृति में निर्मित 'गाँधी संग्रहालय' के प्रथम संचालक यही थे। स्वतन्त्रता सेनानी होने के कारण अनेक बार जेल भी गये। संविधान सभा के सदस्य भी ये रहे। सन् 1952 से 1957 ई0 तक राज्य-सभा के सदस्य तथा अनेक आयोगों के अध्यक्ष रहे। भारत सरकार ने 'पद्मभूषण', राष्ट्र भाषा प्रचार समिति ने 'गाँधी पुरस्कार' से कालेलकर जी को सम्मानित किया है। ये रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं पुरुषोत्तमदास टण्डन के भी सम्पर्क में रहे। इनका निधन 21 अगस्त, 1981 ई0 को हो गया।

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **पूरा नाम**—दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर।
- **जन्म-स्थान**—सतारा (महाराष्ट्र)।
- **जन्म एवं मृत्यु**—सन् 1 दिसम्बर, 1885 ई0, 21 अगस्त, 1981 ई0।
- **भाषा**—सरल, बोधगम्य, प्रवाहयुक्त खड़ीबोली।
- **शैली**—विवेचनात्मक, विवरणात्मक, व्यंग्यात्मक, परिचयात्मक, वर्णनात्मक, चित्रात्मक।
- शुक्ल एवं शुक्लोत्तर-युग के लेखक।
- स्वतन्त्रता-संग्राम के सक्रिय कार्यकर्त्ता।
- **हिन्दी साहित्य में स्थान**—दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान।

साहित्यिक परिचय—काका कालेलकर मराठीभाषी होते हुए भी हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के प्रति जो रुचि प्रदर्शित की, वह हिन्दी-भाषियों के लिए अनुकरणीय है। इनका हिन्दी-साहित्य निबन्ध, जीवनी, संस्मरण, यात्रावृत्त आदि गद्य-विधाओं के रूप में उपलब्ध होता है। इन्होंने हिन्दी एवं गुजराती में तो अनेक रचनाओं का सृजन किया ही, साथ ही हिन्दी भाषा में अपनी कई गुजराती रचनाओं का अनुवाद भी किया। इनकी रचनाओं पर अनेक राष्ट्रीय नेताओं एवं साहित्यकारों का प्रभाव परिलक्षित होता है। तत्कालीन समस्याओं पर भी इन्होंने कई सशक्त रचनाओं का सृजन किया। कालेलकर जी की रचनाओं में भारतीय

संस्कृति के विभिन्न आयामों की झलक दिखायी देती है। व्यक्ति के जीवन के अन्तर्तम तक इनकी पैठ थी, इसलिए जब ये किसी के जीवन की विवेचना करते थे तो रचना में उसका व्यक्तित्व उभर आता था।

कृतियाँ—कालेलकर जी की प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं–

निबन्ध-संग्रह—'जीवन काव्य', 'जीवन साहित्य' एवं 'सर्वोदय'। **यात्रा-वृत्तान्त**—'हिमालय प्रवास', 'यात्रा', 'उस पार के पड़ोसी' एवं 'लोक-माता'। **संस्मरण**—'बापू की झाँकियाँ'। **आत्म-चरित**—'जीवन लीला' एवं 'सर्वोदय'। इनमें काका साहब के यथार्थ जीवन की झाँकी है।

भाषा-शैली—कालेलकर जी की भाषा परिष्कृत खड़ीबोली है। उसमें प्रवाह, ओज तथा अकृत्रिमता है। ये अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे, इसीलिए इनकी हिन्दी भाषा में रचित रचनाओं में अंग्रेजी, अरबी, फारसी, गुजराती, मराठी के शब्द भी मिल जाते हैं। तत्सम, तद्भव, देशज आदि सभी शब्द-रूप इनकी भाषा में एक साथ देखे जा सकते हैं। मुहावरों और कहावतों का प्रयोग भी इन्होंने किया है। भाषा में प्रसंग के अनुसार ओजगुण भी है। विषय और प्रसंग के अनुरूप कालेलकर जी ने परिचयात्मक, विवेचनात्मक, आत्मकथात्मक, विवरणात्मक, व्यंग्यात्मक, चित्रात्मक, वर्णनात्मक आदि शैलियाँ अपनायी हैं। इस प्रकार प्रसंग एवं विषय के अनुरूप इनकी भाषा-शैली बहुत ही सजीव, सरल एवं प्रभावपूर्ण है।

'निष्ठामूर्ति कस्तूरबा' में राष्ट्रमाता कस्तूरबा के जीवन की ऐसी अनेक झाँकियाँ दी गयी हैं जो भारतीय नारी के गरिमामय रूप का सुन्दर चित्र प्रस्तुत करती हैं। साथ ही इस पाठ में भारतीय संस्कृति के सफल अध्येता और राष्ट्रप्रेमी काका साहब की उपर्युक्त वर्णित अधिकांश साहित्यिक विशेषताओं के दर्शन भी होते हैं। विवेचनात्मक शैली में लिखे गये प्रस्तुत पाठ की भाषा अपेक्षाकृत संस्कृतनिष्ठ एवं परिष्कृत है। जैसे–दुनिया में दो अमोघ शक्तियाँ हैं–शब्द और कृति। इसमें कोई शक नहीं कि शब्दों ने सारी पृथ्वी को हिला दिया है, किन्तु अन्तिम शक्ति तो 'कृति' की है। महात्मा जी ने इन दोनों शक्तियों की असाधारण उपासना की है।

●●

निष्ठामूर्ति कस्तूरबा

महात्मा गाँधी-जैसे महान् पुरुष की सहधर्मचारिणी के तौर पर पूज्य कस्तूरबा के बारे में राष्ट्र को आदर मालूम होना स्वाभाविक है। राष्ट्र ने महात्मा जी को 'बापू जी' के नाम से राष्ट्रपिता के स्थान पर कायम किया ही है। इसलिए कस्तूरबा भी 'बा' के एकाक्षरी नाम से राष्ट्रमाता बन सकी हैं।

किन्तु सिर्फ महात्मा जी के साथ के सम्बन्ध के कारण ही नहीं, बल्कि अपने आन्तरिक सद्गुण और निष्ठा के कारण भी कस्तूरबा राष्ट्रमाता बन पायी हैं। चाहे दक्षिण अफ्रीका में हों या हिन्दुस्तान में, सरकार के खिलाफ लड़ाई के समय जब-जब चारित्र्य का तेज प्रकट करने का मौका आया कस्तूरबा हमेशा इस दिव्य कसौटी से सफलतापूर्वक पार हुई हैं।

इससे भी विशेष बात यह है कि बड़ी तेजी से बदलते हुए आज के युग में भी आर्य सती स्त्री का जो आदर्श हिन्दुस्तान ने अपने हृदय में कायम रखा है, उस आदर्श की जीवित प्रतिमा के रूप में राष्ट्र पूज्य कस्तूरबा को पहचानता है। इस तरह की विविध लोकोत्तर योग्यता के कारण आज सारा राष्ट्र कस्तूरबा की पूजा करता है।

कस्तूरबा अनपढ़ थीं। हम यह भी कह सकते हैं कि उनका भाषा ज्ञान सामान्य देहाती से अधिक नहीं था। दक्षिण अफ्रीका में जाकर रहीं इसलिए वह कुछ अंग्रेजी समझ सकती थीं और पचीस-तीस शब्द बोल भी लेती थीं। मिस्टर एण्ड्रूज-जैसे कोई विदेशी मेहमान घर आने पर उन शब्दों की पूँजी से वह अपना काम चला लेतीं और कभी-कभी तो उनके उस सम्भाषण से विनोद भी पैदा हो जाता।

कस्तूरबा को गीता के ऊपर असाधारण श्रद्धा थी। पढ़ानेवाला कोई मिले तो वह भक्तिपूर्वक गीता पढ़ने के लिए बैठ जातीं। किन्तु उनकी गाड़ी कभी भी बहुत आगे नहीं जा सकी। फिर भी आगाखाँ महल में–कारावास के दरमियान–उन्होंने बार-बार गीता के पाठ लेने की कोशिश चालू रखी थी।

उनकी निष्ठा का पात्र दूसरा ग्रन्थ था तुलसी-रामायण। बड़ी मुश्किल से दोपहर के समय उनको आधे घण्टे की जो फुरसत मिलती थी उसमें वह बड़े अक्षरों में छपी तुलसी-रामायण के दोहे चश्मा चढ़ाकर पढ़ने बैठती थीं। उनका यह चित्र देखकर हमें बड़ा मजा आता। कस्तूरबा रामायण भी ठीक ढंग से कभी पढ़ न सकीं। राष्ट्रीय सन्त तुलसीदास के द्वारा लिखा हुआ सती-सीता का वर्णन भले ही वह ठीक समझ न सकी हों, फिर भी प्रत्यक्ष सती-सीता तो बन ही सकीं।

दुनिया में दो अमोघ शक्तियाँ हैं–शब्द और कृति। इसमें कोई शक नहीं कि 'शब्दों' ने सारी पृथ्वी को हिला दिया है। किन्तु अन्तिम शक्ति तो 'कृति' की है। महात्मा जी ने इन दोनों शक्तियों की असाधारण उपासना की है। कस्तूरबा ने इन दोनों शक्तियों में से अधिक श्रेष्ठ शक्ति कृति की नम्रता के साथ उपासना करके सन्तोष माना और जीवनसिद्धि प्राप्त की।

दक्षिण अफ्रीका की सरकार ने जब उन्हें जेल भेज दिया, कस्तूरबा ने अपना बचाव तक नहीं किया। न कोई सनसनाती पैदा करनेवाला निवेदन प्रकट किया। ''मुझे तो वह कानून तोड़ना ही है जो यह कहता है कि मैं महात्मा जी की धर्मपत्नी नहीं हूँ।'' इतना कहकर वह सीधे जेल में चली गयीं। जेल में उनकी तेजस्विता तोड़ने की कोशिशें वहाँ की सरकार ने बहुत कीं किन्तु अन्त में सरकार की उस समय की जिद्द ही टूट गयी।

डॉक्टर ने जब उन्हें धर्मविरुद्ध खुराक लेने की बात कही तब भी उन्होंने धर्मनिष्ठा पर कोई व्याख्यान नहीं दिया। उन्होंने सिर्फ इतना ही कहा–''मुझे अखाद्य खाना खाकर जीना नहीं है। फिर भले ही मुझे मौत का सामना करना पड़े।''

कस्तूरबा की कसौटी केवल सरकार ने ही की हो ऐसी बात नहीं है। खुद महात्मा जी ने भी कई बार उनसे कठोर और मर्मस्पर्शी बातें कहीं, तब भी उन्होंने हार कबूल नहीं की। पति का अनुसरण करना ही सती का कर्त्तव्य है, ऐसी उनकी निष्ठा होने के कारण मन में किसी भी प्रकार का सन्देह लाये बिना वह धर्म के मामलों में पति का अनुसरण करती रहीं।

कस्तूरबा के प्रथम दर्शन मुझे शान्ति निकेतन में हुए। सन् 1915 के प्रारम्भ में जब महात्मा जी वहाँ पधारे, तब स्वागत का शुभारम्भ पूरा होते ही सब लोगों ने सोने की तैयारियाँ कीं। आँगन के बीच एक चबूतरा था। महात्मा जी ने कहा, हम दोनों

यहीं सोयेंगे। अगल-बगल में बिस्तरे बिछाकर बापू और बा सो गये और हम सब लोग आँगन में आस-पास अपने बिस्तरे बिछाकर सो गये। उस दिन मुझे लगा, मानो हमें आध्यात्मिक माँ-बाप मिल गये हैं।

उनके आखिरी दर्शन मुझे उस समय हुए जब वह बिड़ला हाउस में गिरफ्तार की गयीं। महात्मा जी को गिरफ्तार करने के लिए सरकार की ओर से कस्तूरबा को कहा गया, 'अगर आपकी इच्छा हो तो आप भी साथ में चल सकती हैं।' बा बोलीं, 'अगर आप गिरफ्तार करें तो मैं जाऊँगी वरना आने की मेरी तैयारी नहीं है।' महात्मा जी जिस सभा में बोलनेवाले थे उस सभा में जाने का उन्होंने निश्चय किया था। पति के गिरफ्तार होने के बाद उनका काम आगे चलाने की जिम्मेदारी बा ने कई बार उठायी है। शाम के समय जब वह व्याख्यान के लिए निकल पड़ीं, सरकारी अमलदारों ने आकर उनसे कहा, 'माता जी सरकार का कहना है कि आप घर पर ही रहें, सभा में जाने का कष्ट न उठायें।' बा ने उस समय उन्हें न देश-सेवा का महत्त्व समझाया और न उन्होंने उन्हें 'देशद्रोह करनेवाले तुम कुत्ते हो' कहकर उनकी निर्भर्त्सना ही की। उन्होंने एक ही वाक्य में सरकार की सूचना का जवाब दिया, 'सभा में जाने का मेरा निश्चय पक्का है, मैं जाऊँगी ही।'

आगाखाँ महल में खाने-पीने की कोई तकलीफ नहीं थी। हवा की दृष्टि से भी स्थान अच्छा था। महात्मा जी का सहवास भी था। किन्तु कस्तूरबा के लिए–यह विचार ही असह्य हुआ कि 'मैं कैद में हूँ।' उन्होंने कई बार कहा–"मुझे यहाँ का वैभव कतई नहीं चाहिए, मुझे तो सेवाग्राम की कुटिया ही पसन्द है।" सरकार ने उनके शरीर को कैद रखा किन्तु उनकी आत्मा को वह कैद सहन नहीं हुई। जिस प्रकार पिंजड़े का पक्षी प्राणों का त्याग करके बन्धनमुक्त हो जाता है उसी प्रकार कस्तूरबा ने सरकार की कैद में अपना शरीर छोड़ा और वह स्वतन्त्र हुईं। उनके इस मूक किन्तु तेजस्वी बलिदान के कारण अंग्रेजी साम्राज्य की नींव ढीली हुई और हिन्दुस्तान पर उनकी हुकूमत कमजोर हुई। कस्तूरबा ने अपनी कृतिनिष्ठा के द्वारा यह दिखा दिया कि शुद्ध और रोचक साहित्य के पहाड़ों की अपेक्षा कृति का एक कण अधिक मूल्यवान् और आबदार होता है। शब्दशास्त्र में जो लोग निपुण होते हैं उनको कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य की हमेशा ही विचिकित्सा करनी पड़ती है। कृतिनिष्ठ लोगों को ऐसी दुविधा कभी परेशान नहीं कर पाती। कस्तूरबा के सामने उनका कर्त्तव्य किसी दीये के समान स्पष्ट था। कभी कोई चर्चा शुरू हो जाती तब 'मुझसे यही होगा' और 'यह नहीं होगा'–इन दो वाक्यों में अपना ही फैसला सुना देतीं।

आश्रम में कस्तूरबा हम लोगों के लिए माँ के समान थीं। सत्याग्रहाश्रम यानी तत्त्वनिष्ठ महात्मा जी की संस्था थी। उग्रशासक मगनलाल भाई उसे चलाते थे। ऐसे स्थान पर अगर वात्सल्य की आर्द्रता हमें मिलती थी तो वह कस्तूरबा से ही। कई बार बा आश्रम के नियमों को ताक पर रख देतीं। आश्रम के बच्चों को जब भूख लगती थी तब उनकी बात बा ही सुनती थीं। नियमनिष्ठ लोगों ने बा के खिलाफ कई बार शिकायतें करके देखीं। किन्तु महात्मा जी को अन्त में हार खाकर निर्णय देना पड़ा कि अपने नियम बा को लागू नहीं होते।

आश्रम में चाहे बड़े-बड़े नेता आयें या मामूली कार्यकर्त्ता आयें, उनके खाने-पीने की पूछताछ अत्यन्त प्रेम के साथ यदि किसी ने की है तो वह पूज्य कस्तूरबा ने ही। आलस्य ने तो उनको कभी छुआ तक नहीं। किसी प्राणघातक बीमारी से मुक्त होकर चंगी हुई हों और शरीर में जरा-सी शक्ति आयी हो कि तुरन्त बा आश्रम की रसोई में जाकर काम करने लग जातीं। ठेठ आखिर में उनके हाथ-पाँव थक गये थे, शरीर जीर्ण-शीर्ण हुआ था। मुँह में एक दाँत बचा नहीं था। आँखें निस्तेज हो गयी थीं तब भी वह रसोई में जातीं और जो काम बन सके, आस्थापूर्वक करतीं। मैं जब उनसे मिलने जाता और जब वह खाने के लिए मुझे कुछ देतीं, तब छोटे बच्चों की तरह हाथ फैलाने में मुझे असाधारण धन्यता का अनुभव होता था।

वह भले ही अशिक्षित रही हों, संस्था चलाने की जिम्मेदारी लेने की महत्त्वाकांक्षा भले ही उनमें कभी जागी नहीं हो, देश में क्या चल रहा है और उसकी सूक्ष्म जानकारी वह प्रश्न पूछ-पूछकर या अखबारों के ऊपर नजर डालकर प्राप्त कर ही लेती थीं।

महात्मा जी जब जेल में थे तब दो-तीन बार राजकीय परिषदों का या शिक्षण सम्मेलनों के अध्यक्ष का स्थान कस्तूरबा को लेना पड़ा था। उनके अध्यक्षीय भाषण लिख देने का काम मुझे करना पड़ा था। मैंने उनसे कहा–"मैं अपनी ओर से एक भी दलील भाषण में नहीं लाऊँगा। आप जो बतावेंगी, मैं ठीक भाषा में लिख दूँगा।" हाँ-ना कहकर वह अपने भाषण की दलीलें मुझे बता देतीं। उस समय उनकी वह शक्ति देखकर मैं चकित हो जाता था।

अध्यक्षीय भाषण किसी से लिखवा लेना आसान है। लेकिन परिषद् जब समाप्त होती है, तब उसका उपसंहार करना हर एक को अपनी प्रत्युत्पन्नमति से करना पड़ता है। जब कस्तूरबा ने उपसंहार के भाषण किये उनकी भाषा बहुत ही आसान रहती

थी, किन्तु उपसंहार परिपूर्ण सिद्ध होता था। इनके इन भाषणों में परिस्थिति की समझ, भाषा की सावधानी और खानदानी की महत्ता आदि गुण उत्कृष्टता से दिखायी देते थे।

आज के जमाने में स्त्री-जीवन सम्बन्ध के हमारे आदर्श हमने काफी बदल लिये हैं। आज कोई स्त्री अगर कस्तूरबा की तरह अशिक्षित रहे और किसी तरह महत्त्वाकांक्षा का उदय उसमें न दिखायी दे तो हम उसका जीवन यशस्वी या कृतार्थ नहीं कहेंगे। ऐसी हालत में जब कस्तूरबा की मृत्यु हुई पूरे देश ने स्वयं स्फूर्ति से उनका स्मारक बनाने का तय किया और सहज इकट्ठी न हो पाये, इतनी बड़ी निधि इकट्ठी कर दिखायी। इससे यह सिद्ध होता है कि हमारा प्राचीन तेजस्वी आदर्श अब देशमान्य है। हमारी संस्कृति की जड़ें आज भी काफी मजबूत हैं।

यह सब श्रेष्ठता या महत्ता कस्तूरबा में कहाँ से आयी? उनकी जीवन-साधना किस प्रकार की थी? शिक्षण के द्वारा उन्होंने बाहर से कुछ नहीं लिया था। सचमुच, उनमें तो आर्य आदर्श को शोभा देनेवाले कौटुम्बिक सद्‌गुण ही थे। असाधारण मौका मिलते ही और उतनी ही असाधारण कसौटी आ पड़ते ही उन्होंने स्वभावसिद्ध कौटुम्बिक सद्‌गुण व्यापक किये और उनके जोरों पर हर समय जीवन-सिद्धि हासिल की। सूक्ष्म प्रमाण में या छोटे पैमाने पर जो शुद्ध साधना की जाती है उसका तेज इतना लोकोत्तरी होता है कि चाहे कितना ही बड़ा प्रसंग आ पड़े, व्यापक प्रमाण में कसौटी हो, चारित्र्यवान् मनुष्य को अपनी शक्ति का सिर्फ गुणाकार ही करने का होता है।

सती कस्तूरबा सिर्फ अपने संस्कार बल के कारण पातिव्रत्य को, कुटुम्ब-वत्सलता को और तेजस्विता को चिपकाये रहीं और उसी के जोरों महात्मा जी के माहात्म्य के बराबरी में आ सकीं। आज हिन्दू, मुस्लिम, पारसी, सिख, बौद्ध, ईसाई आदि अनेक धर्मी लोगों का यह विशाल देश अत्यन्त निष्ठा के साथ कस्तूरबा की पूजा करता है और स्वातन्त्र्य के पूर्व की शिवरात्रि के दिन उनका स्मरण करके सब लोग अपनी-अपनी तेजस्विता को अधिक तेजस्वी बनाते हैं।

● **काका कालेलकर**

अभ्यास प्रश्न

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. **निम्नलिखित गद्यांशों में रेखांकित अंशों की व्याख्या और तथ्यपरक प्रश्नों के उत्तर दीजिये–**

(क) चाहे दक्षिण अफ्रीका में हों या हिन्दुस्तान में, सरकार के खिलाफ लड़ाई के समय जब-जब चारित्र्य का तेज प्रकट करने का मौका आया कस्तूरबा हमेशा इस दिव्य कसौटी से सफलतापूर्वक पार हुई हैं।

इससे भी विशेष बात यह है कि बड़ी तेजी से बदलते हुए आज के युग में भी आर्य सती स्त्री का जो आदर्श हिन्दुस्तान ने अपने हृदय में कायम रखा है, उस आदर्श की जीवित प्रतिमा के रूप में राष्ट्र पूज्य कस्तूरबा को पहचानता है। इस तरह की विविध लोकोत्तर योग्यता के कारण आज सारा राष्ट्र कस्तूरबा की पूजा करता है।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) किस योग्यता के कारण सारा राष्ट्र कस्तूरबा की पूजा करता है?

(ख) दुनिया में दो अमोघ शक्तियाँ हैं–शब्द और कृति। इसमें कोई शक नहीं कि 'शब्दों' ने सारी पृथ्वी को हिला दिया है। किन्तु अन्तिम शक्ति तो 'कृति' की है। महात्मा जी ने इन दोनों शक्तियों की असाधारण उपासना की है। कस्तूरबा ने इन दोनों शक्तियों में से अधिक श्रेष्ठ शक्ति कृति की नम्रता के साथ उपासना करके सन्तोष माना और जीवनसिद्धि प्राप्त की।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) कस्तूरबा कैसी महिला थीं?

(iv) शब्द और कृति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
(v) गाँधीजी ने किसकी उपासना की?

(ग) यह सब श्रेष्ठता या महत्ता कस्तूरबा में कहाँ से आयी? उनकी जीवन-साधना किस प्रकार की थी? शिक्षण के द्वारा उन्होंने बाहर से कुछ नहीं लिया था। सचमुच, उनमें तो आर्य आदर्श को शोभा देनेवाले कौटुम्बिक सद्गुण ही थे। असाधारण मौका मिलते ही और उतनी ही असाधारण कसौटी आ पड़ते ही उन्होंने स्वभावसिद्ध कौटुम्बिक सद्गुण व्यापक किये और उनके जोरों पर हर समय जीवन-सिद्धि हासिल की। सूक्ष्म प्रमाण में या छोटे पैमाने पर जो शुद्ध साधना की जाती है उसका तेज इतना लोकोत्तरी होता है कि चाहे कितना ही बड़ा प्रसंग आ पड़े, व्यापक प्रमाण में कसौटी हो, चारित्र्यवान् मनुष्य को अपनी शक्ति का सिर्फ गुणाकार ही करने का होता है।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) चारित्र्यवान् मनुष्य को अपनी शक्ति का क्या करना चाहिए?
(iv) चारित्र्यवान् व्यक्ति की क्या विशेषता होती है?
(v) किस साधना का तेज लोकोत्तरी होता है?

2. काका कालेलकर का जीवन-परिचय देते हुए उनके कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
3. भाषा-शैली को स्पष्ट करते हुए कालेलकर जी की साहित्यिक विशेषताएँ लिखिए।
4. काका कालेलकर का जीवन एवं साहित्यिक परिचय दीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कस्तूरबा में एक आदर्श भारतीय नारी के कौन-कौन-से गुण विद्यमान थे?
2. स्वयं में शिक्षा के अभाव की पूर्ति 'बा' ने किस प्रकार की?
3. शब्द और कृति से लेखक का क्या तात्पर्य है? कस्तूरबा के सम्बन्ध में सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
4. 'निष्ठामूर्ति कस्तूरबा' पाठ से दस महत्त्वपूर्ण वाक्य लिखिए।
5. कस्तूरबा से सम्बन्धित संक्षिप्त गद्यांश लिखिए।
6. कस्तूरबा के 'मूक किन्तु तेजस्वी बलिदान' की कहानी लिखिए।
7. कस्तूरबा की मितभाषिता एवं कर्त्तव्यनिष्ठा के गुणों को प्रकट करनेवाले प्रसंगों एवं घटनाओं का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
8. 'निष्ठामूर्ति कस्तूरबा' पाठ की भाषा-शैली की दो विशेषताएँ लिखिए।
9. कस्तूरबा के गुणों को अपने शब्दों में लिखिए।
10. काका कालेलकर की भाषा-शैली की दो विशेषताएँ लिखिए।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. काका कालेलकर की दो रचनाओं के नाम लिखिए।
2. काका कालेलकर किस युग के लेखक माने जाते हैं?
3. राष्ट्रभाषा प्रचार को राष्ट्रीय कार्यक्रम माननेवाले हिन्दी लेखक का नाम लिखिए।
4. कस्तूरबा कौन थीं?
5. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइये–
   (अ) कस्तूरबा अनपढ़ थीं। ( )
   (ब) 'निष्ठामूर्ति कस्तूरबा' पाठ विवेचनात्मक शैली में लिखा गया है। ( )
   (स) कालेलकर जी का सम्पर्क टैगोर से नहीं था। ( )
   (द) दुनिया में 'शब्द' और 'कृति' दो अमोघ शक्तियाँ हैं। ( )

व्याकरण-बोध

1. **निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद करते हुए सन्धि का नाम लिखिए–**
   लोकोत्तर, सत्याग्रह, गुणाकार, महत्त्वाकांक्षा, एकाक्षरी, प्रत्युत्पन्न।
2. **निम्नलिखित में समास-विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए–**
   माँ-बाप, देशसेवा, राष्ट्रमाता, प्राणघातक, बन्धनमुक्त, धर्मनिष्ठा।
3. **निम्नलिखित विदेशज शब्दों के लिए हिन्दी शब्द लिखिए–**
   अमलदार, कायम, जिद्द, हासिल, कतई, खुद।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. काका कालेलकर का जन्म कब हुआ था?
   (अ) **1885 ई.** (ब) 1890 ई. (स) 1895 ई. (द) 1900 ई.
2. काका कालेलकर का जन्म-स्थान है—
   (अ) नागपुर (ब) **सतारा** (स) भंडारा (द) गोंदिया
3. काका कालेलकर का निधन कब हुआ था?
   (अ) **1981** (ब) 1983 (स) 1985 (द) 1987
4. कस्तूरबा कौन थीं?
   (अ) **गाँधीजी की पत्नी** (ब) गाँधीजी की माँ (स) गाँधीजी की बहन (द) इनमें से कोई नहीं
5. काका कालेलकर किस युग के लेखक माने जाते हैं?
   (अ) **शुक्लोत्तर युग** (ब) भारतेन्दु युग
   (स) द्विवेदी युग (द) इनमें से कोई नहीं
6. निम्न में से कौन-सी रचना काका कालेलकर की है?
   (अ) जीवन काव्य (ब) जीवन सर्वोदय (स) हिमालय प्रवास (द) **इनमें सभी**
7. 'बापू की झाँकियाँ' किसकी रचना है?
   (अ) श्रीराम शर्मा (ब) **काका कालेलकर**
   (स) प्रेमचन्द (द) हजारी प्रसाद द्विवेदी
8. निम्न में कौन-सी कस्तूरबा की चारित्रिक विशेषताएँ हैं?
   (अ) आदर्श भारतीय नारी (ब) पतिव्रता (स) धार्मिक प्रवृत्ति (द) **इनमें सभी**
9. आश्रम में कस्तूरबा किसके समान थीं?
   (अ) **माँ के समान** (ब) बहन के समान
   (स) एक सामान्य महिला की भाँति (द) इनमें से कोई नहीं
10. कस्तूरबा को किस देश की सरकार ने जेल में डाल दिया था?
   (अ) इंग्लैण्ड सरकार (ब) **अफ्रीकी सरकार**
   (स) भारत सरकार (द) इनमें से कोई नहीं

उत्तरमाला : 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (अ) 5. (अ) 6. (द) 7. (ब) 8. (द) 9. (अ) 10. (ब)

●●

7 धर्मवीर भारती

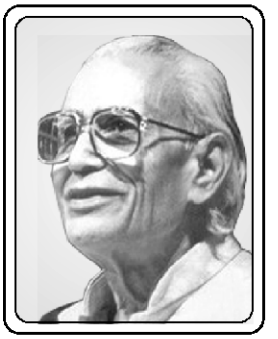

जीवन-परिचय–धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसम्बर, सन् 1926 ई० को इलाहाबाद में हुआ था। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिन्दी विषय लेकर एम० ए० और पी-एच० डी० की उपाधियाँ लीं। इन्होंने कुछ वर्षों तक यहीं से प्रकाशित होनेवाले साप्ताहिक पत्र 'संगम' का भी सम्पादन किया। कुछ समय तक ये इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक भी रहे। सन् 1959 ई० से 1987 ई० तक ये मुम्बई से प्रकाशित होनेवाले हिन्दी के प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र 'धर्मयुग' के सम्पादक रहे। सन् 1972 ई० में भारतीजी को 'पद्मश्री' की उपाधि, भारत-भारती सम्मान (1989), महाराष्ट्र गौरव (1990), व्यास सम्मान (1994), हल्दीघाटी श्रेष्ठ पत्रकारिता पुरस्कार से अलंकृत किया गया। 4 सितम्बर, 1997 ई० को यह कलम का सिपाही इस असार संसार से विदा लेकर परलोकवासी हो गया।

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**–25 दिसम्बर, सन् 1926 ई०।
- **जन्म-स्थान**–इलाहाबाद (उ०प्र०)।
- **मृत्यु**–4 सितम्बर, सन् 1997 ई०।
- **सम्पादन**–'संगम' तथा 'धर्मयुग'।
- **भाषा**–परिमार्जित खड़ीबोली।
- **हिन्दी साहित्य में स्थान**–कथाकार, नाटककार, निबन्धकार एवं कवि के रूप में।

साहित्यिक परिचय–धर्मवीर भारती प्रतिभाशाली कवि, कथाकार व नाटककार थे। इनकी कविताओं में रागतत्त्व की रमणीयता के साथ बौद्धिक उत्कर्ष की आभा दर्शनीय है। कहानियों और उपन्यासों में इन्होंने सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं को उठाते हुए बड़े ही जीवन्त चरित्र प्रस्तुत किये हैं। साथ ही समाज की विद्रूपता पर व्यंग्य करने की विलक्षण क्षमता भारतीजी में रही। कहानी, निबन्ध, एकांकी, उपन्यास, नाटक, आलोचना, सम्पादन व काव्य-सृजन के क्षेत्र में इन्होंने अपनी विलक्षण सृजन प्रतिभा का परिचय दिया। वस्तुतः साहित्य की जिस विधा का भी भारतीजी ने स्पर्श किया, वही विधा इनका स्पर्श पाकर धन्य हो गयी। 'गुनाहों का देवता' जैसा सशक्त उपन्यास लिखकर भारतीजी अमर हो गये। इस उपन्यास पर बनी फिल्म भारतीय समाज में अधिक लोकप्रिय हुई।

प्रमुख कृतियाँ–धर्मवीर भारती की प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं–

कहानी संग्रह–मुर्दों का गाँव, स्वर्ग और पृथ्वी, चाँद और टूटे हुए लोग, बन्द गली का आखिरी मकान, साँस की कलम से। **काव्य रचनाएँ**–ठण्डा लोहा, सात गीत, वर्ष, कनुप्रिया, सपना अभी-भी, आद्यान्त। **उपन्यास**–गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा, ग्यारह सपनों का देश, प्रारंभ व समापन। **निबन्ध**–ठेले पर हिमालय, पश्यंती, कहनी–अनकहनी। **कहानियाँ**–अनकही, नदी प्यासी थी, नीली झील, मानव मूल्य और साहित्य। **नाटक और एकांकी**–'नदी प्यासी थी' इनका चर्चित नाटक है। 'नीली झील' संग्रह में इनकी एकांकियाँ संकलित हैं। **पद्य नाटक**–अंधा युग। **आलोचना**–प्रगतिवाद : एक समीक्षा, मानव मूल्य और साहित्य। इसके अतिरिक्त विश्व की कुछ प्रसिद्ध भाषाओं की कविताओं का हिन्दी अनुवाद भी **'देशान्तर'** नाम से प्रकाशित हुआ है।

भाषा-शैली–भारतीजी की भाषा परिष्कृत एवं परिमार्जित खड़ीबोली है। इनकी भाषा में सरलता, सजीवता और आत्मीयता का पुट है तथा देशज, तत्सम एवं तद्भव शब्दों का प्रयोग हुआ है। मुहावरों और कहावतों के प्रयोग से भाषा में गति और बोधगम्यता आ गयी है। विषय और विचार के अनुकूल भारतीजी की रचनाओं में भावात्मक, समीक्षात्मक, वर्णनात्मक, चित्रात्मक शैलियों के प्रयोग हुए हैं।

प्रस्तुत निबन्ध **'ठेले पर हिमालय'** एक यात्रा-वृत्त है, जिसमें हिमालय की रमणीय शोभा का वर्णन है। शीर्षक की विचित्रता के साथ नैनीताल से कौसानी तक की यात्रा का वर्णन कम रोचक नहीं है और शैली में नवीनता इसका मुख्य कारण है। ●●

ठेले पर हिमालय

'ठेले पर हिमालय'—खासा दिलचस्प शीर्षक है न। और यकीन कीजिए, इसे बिल्कुल ढूँढ़ना नहीं पड़ा। बैठे-बिठाये मिल गया। अभी कल की बात है, एक पान की दुकान पर मैं अपने एक गुरुजन उपन्यासकार मित्र के साथ खड़ा था कि ठेले पर बर्फ की सिलें लादे हुए बर्फ वाला आया। ठण्डे, चिकने, चमकते बर्फ से भाप उड़ रही थी। मेरे मित्र का जन्म-स्थान अल्मोड़ा है, वे क्षण भर उस बर्फ को देखते रहे, उठती हुई भाप में खोये रहे और खोये-खोये से ही बोले, "यही बर्फ तो हिमालय की शोभा है।" और तत्काल शीर्षक मेरे मन में कौंध गया, 'ठेले पर हिमालय'। पर आपको इसलिए बता रहा हूँ कि अगर आप नये कवि हों तो भाई, इसे ले जायँ और इस शीर्षक पर दो-तीन सौ पंक्तियाँ बेडौल-बेतुकी लिख डालें—शीर्षक मौजूँ है, और अगर नयी कविता से नाराज हों, सुललित गीतकार हों तो भी गुंजाइश है, इस बर्फ को डाँटें, "उतर आओ। ऊँचे शिखर पर बन्दरों की तरह क्यों चढ़े बैठे हो? ओ नये कवियो! ठेले पर लादो। पान की दुकानों पर बिको।"

ये तमाम बातें उसी समय मेरे मन में आयीं और मैंने अपने गुरुजन मित्र को बतायी भी। वे हँसे भी, पर मुझे लगा कि वह बर्फ कहीं उनके मन को खरोंच गयी है और ईमान की बात यह है कि जिसने 50 मील दूर से भी बादलों के बीच नीचे आकाश में हिमालय की शिखर-रेखा को चाँद-तारों से बात करते देखा है, चाँदनी में उजली बर्फ को धुंध के हल्के नीले जाल में दूधिया समुद्र की तरह मचलते और जगमगाते देखा है; उसके मन पर हिमालय की बर्फ एक ऐसी खरोंच छोड़ जाती है, जो हर बार याद आने पर पिरा उठती है। मैं जानता हूँ, क्योंकि वह बर्फ मैंने भी देखी है।

सच तो यह है कि सिर्फ बर्फ को बहुत निकट से देख पाने के लिए ही हम लोग कौसानी गये थे। नैनीताल से रानीखेत और रानीखेत से मझकाली के भयानक मोड़ों को पार करते हुए कोसी। कोसी से एक सड़क अल्मोड़ा चली जाती है, दूसरी कौसानी। कितना कष्टप्रद, कितना सूखा और कितना कुरूप है वह रास्ता। पानी का कहीं नाम-निशान नहीं, सूखे भूरे पहाड़, हरियाली का नाम नहीं। ढालों को काटकर बनाये हुए टेढ़े-मेढ़े खेत, जो थोड़े-से हों तो शायद अच्छे भी लगें, पर उनका एकरस सिलसिला बिल्कुल शैतान की आँत मालूम पड़ता है। फिर मझकाली के टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर अल्मोड़े का एक नौसिखिया और लापरवाह ड्राइवर, जिसने बस के तमाम मुसाफिरों की ऐसी हालत कर दी कि जब हम कोसी पहुँचे तो सभी मुसाफिरों के चेहरे पीले पड़ चुके थे। कौसानी जानेवाले सिर्फ हम दो थे, वहीं उतर गये। बस अल्मोड़ा चली गयी। सामने के एक टीन के शेड में काठ की बेंच पर बैठकर हम वक्त काटते रहे। तबियत सुस्त थी और मौसम में उमस थी। दो घण्टे बाद दूसरी लारी आकर रुकी और जब उसमें से प्रसन्नवदन शुक्लजी को उतरते देखा तो हम लोगों की जान में जान आयी। शुक्लजी जैसा सफर का साथी पिछले जन्म के पुण्यों से ही मिलता है। उन्होंने हमें कौसानी आने का उत्साह दिलाया था और खुद तो कभी उनके चेहरे पर थकान या सुस्ती दिखी ही नहीं, पर उन्हें देखते ही हमारी भी सारी थकान काफूर हो जाया करती थी।

पर शुक्लजी के साथ यह नयी मूर्ति कौन है? लम्बा-दुबला शरीर, पतला-साँवला चेहरा, एमिल जोला-सी दाढ़ी, ढीला-ढाला पतलून, कन्धे पर पड़ी हुई ऊनी जर्किन, बगल में लटकता हुआ जाने थर्मस या कैमरा या बाइनाकुलर। और खासी अटपटी चाल थी बाबू साहब की। यह पतला-दुबला मुझी जैसा सींकिया शरीर और उस पर आपका झूमते हुए आना...मेरे चेहरे पर निरन्तर घनी होती हुई उत्सुकता को ताड़कर शुक्लजी ने कहा—"हमारे शहर के मशहूर चित्रकार हैं सेन, अकादमी से इनकी कृतियों पर पुरस्कार मिला है। उसी रुपये से घूमकर छुट्टियाँ बिता रहे हैं।" थोड़ी ही देर में हम लोगों के साथ सेन घुल-मिल गया, कितना मीठा था हृदय से वह। वैसे उसके करतब आगे चलकर देखने में आये।

कोसी से बस चली तो सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे-छोटे सुन्दर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुन्दर है सोमेश्वर की घाटी। हरी-भरी। एक के बाद एक बस स्टेशन पड़ते थे, छोटे-छोटे पहाड़ी डाकखाने, चाय की दुकानें और कभी-कभी कोसी या उसमें गिरने वाले नदी-नालों पर बने हुए पुल। कहीं-कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरती थी। टेढ़ी-मेढ़ी ऊपर-नीचे रेंगती हुई कंकड़ीली पीठ वाले अजगर-सी सड़क पर धीरे-धीरे बस चली जा रही थी। रास्ता सुहावना था और उस थकावट के बाद उसका सुहावनापन हमको और भी तन्द्रालस

बना रहा था। पर ज्यों-ज्यों वह आगे बढ़ रही थी, त्यों-त्यों हमारे मन में एक अजीब-सी निराशा छाती जा रही थी, अब तो हम लोग कौसानी के नजदीक हैं, कोसी से 18 मील चले आये, कौसानी सिर्फ छह मील है, पर कहाँ गया वह अतुलित सौन्दर्य, वह जादू, जो कौसानी के बारे में सुना जाता था। आते समय मेरे एक सहयोगी ने कहा था कि कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कौसानी ने अधिक मोहा है, गाँधीजी ने यहीं अनासक्तियोग लिखा था और कहा था स्विट्जरलैण्ड का आभास कौसानी में ही होता है। ये नदी, घाटी, खेत, गाँव सुन्दर हैं, किन्तु इतनी प्रशंसा के योग्य तो नहीं ही हैं। हम कभी-कभी अपना संशय शुक्लजी से व्यक्त भी करने लगे और ज्यों-ज्यों कौसानी नजदीक आती गयी, त्यों-त्यों अधैर्य, फिर असन्तोष और अन्त में तो क्षोभ हमारे चेहरे पर झलक आया। शुक्लजी की क्या प्रतिक्रिया थी, हमारी इन भावनाओं पर, यह स्पष्ट नहीं हो पाया, क्योंकि वे बिल्कुल चुप थे। सहसा बस ने एक बहुत लम्बा मोड़ लिया और ढाल पर चढ़ने लगी।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में ऊँची पर्वतमाला है, उसी पर, बिल्कुल शिखर पर कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसानी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा-सा, बिल्कुल उजड़ा-सा गाँव और बर्फ का तो कहीं नाम-निशान नहीं। बिल्कुल ठगे गये हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रह गया। कितना अपार सौन्दर्य बिखरा था, सामने की घाटी में। इस कौसानी की पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कत्यूर की रंग-बिरंगी घाटी छिपा रखी है; इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुन्दर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे-किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझ जानेवाली बेलों की लड़ियों-सी नदियाँ। मन में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लूँ, आँखों से लगा लूँ। अकस्मात् हम एक-दूसरे लोक में चले आये थे। इतना सुकुमार, इतना सुन्दर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए। धीरे-धीरे मेरी निगाहों ने इस घाटी को पार किया और जहाँ ये हरे खेत और नदियाँ और वन, क्षितिज के धुँधलेपन में, नीले कोहरे में धुल जाते थे, वहाँ पर कुछ छोटे पर्वतों का आभास, अनुभव किया, उसके बाद बादल थे और फिर कुछ नहीं। कुछ देर तक उन बादलों में निगाह भटकती रही कि अकस्मात् फिर एक हल्का-सा विस्मय का धक्का मन को लगा। इन धीरे-धीरे खिसकते हुए बादलों में यह कौन चीज है, जो अटल है। यह छोटा-सा बादल के टुकड़े-सा,.....और कैसा अजब रंग है इसका, न सफेद, न रूपहला, न हल्का नीला.....पर तीनों का आभास देता हुआ। यह है क्या? बर्फ तो नहीं है। हाँ जी। बर्फ नहीं है तो क्या है? और अकस्मात् बिजली-सा यह विचार मन में कौंधा कि इसी कत्यूर घाटी के पार वह नगाधिराज, पर्वत सम्राट्, हिमालय है, इन बादलों ने उसे ढाँक रखा है, वैसे वह क्या सामने है, उसका एक कोई छोटा-सा बाल-स्वभाव वाला शिखर बादलों की खिड़की से झाँक रहा है। मैं हर्षातिरेक से चीख उठा 'बरफ। वह देखा।' शुक्लजी, सेन, सभी ने देखा, पर अकस्मात् वह फिर लुप्त हो गया। लगा, उसे बाल-शिखर जान किसी ने अन्दर खींच लिया। खिड़की से झाँक रहा है, कहीं गिर न पड़े।

पर उस एक क्षण के हिमदर्शन ने हम में जाने क्या भर दिया था। सारी खिन्नता, निराशा, थकावट—सब छू-मन्तर हो गयी। हम सब आकुल हो उठे। अभी ये बादल छँट जायँगे और फिर हिमालय हमारे सामने खड़ा होगा—निरावृत्त....असीम सौन्दर्यराशि हमारे सामने अभी-अभी अपना घूँघट धीरे से खिसका देगी और.....और तब? और तब? सचमुच मेरा दिल बुरी तरह धड़क रहा था। शुक्लजी शान्त थे, केवल मेरी ओर देखकर कभी-कभी मुस्कुरा देते थे, जिसका अभिप्राय था, 'इतने अधीर थे, कौसानी आयी भी नहीं और मुँह लटका लिया। अब समझे यहाँ का जादू।' डाक बँगले के खानसामे ने बताया—'आप लोग बड़े खुशकिस्मत हैं साहब। 14 ट्युरिस्ट आकर हफ्तों भर पड़े रहे, बर्फ नहीं दिखी। आज तो आप के आते ही आसार खुलने के हो रहे हैं।'

सामान रख दिया गया। पर मैं, मेरी पत्नी, सेन, शुक्लजी सभी बिना चाय पिये सामने के बरामदे में बैठे रहे और एकटक सामने देखते रहे। बादल धीरे-धीरे नीचे उतर रहे थे और एक-एक कर नये-नये शिखरों की हिम-रेखाएँ अनावृत्त हो रही थीं। और फिर सब खुल गया। बायीं ओर से शुरू होकर दायीं ओर गहरे शून्य में धँसती जाती हुई हिमशिखरों की ऊबड़-खाबड़, रहस्यमयी, रोमांचक शृंखला।

हमारे मन में उस समय क्या भावनाएँ उठ रही थीं, यह अगर बता पाता तो यह खरोंच, यह पीर ही क्यों रह गयी

होती? सिर्फ एक धुँधला-सा संवेदन इसका अवश्य था कि जैसे बर्फ के सिल के सामने खड़े होने पर मुँह पर ठण्डी-ठण्डी भाप लगती है, वैसे ही हिमालय की शीतलता माथे को छू रही है और सारे संघर्ष, सारे अन्तर्द्वन्द्व, सारे ताप जैसे नष्ट हो रहे हैं। क्यों पुराने साधकों ने दैहिक, दैविक और भौतिक कष्टों को ताप कहा था और उसे नष्ट करने के लिए वे क्यों हिमालय जाते थे, यह पहली बार मेरी समझ में आ रहा था। और अकस्मात् एक दूसरा तथ्य मेरे मन के क्षितिज पर उदित हुआ। कितनी, कितनी पुरानी है यह हिमराशि। जाने किस आदिम काल से यह शाश्वत, अविनाशी हिम इन शिखरों पर जमा हुआ। कुछ विदेशियों ने इसीलिए इस हिमालय की बर्फ को कहा है—चिरन्तन हिम।

सूरज ढल रहा था। और सुदूर शिखरों पर दर्रे, ग्लेशियर, जल, घाटियों का क्षीण आभास मिलने लगा था। आतंकित मन से मैंने यह सोचा था कि पता नहीं इन पर कभी मनुष्य का चरण पड़ा भी है या नहीं या अनन्तकाल से इन सूने बर्फ ढँके दर्रों में सिर्फ बर्फ के अन्धड़ हू-हू करते हुए बहते रहते हैं।

सूरज डूबने लगा और धीरे-धीरे ग्लेशियरों में पिघली केसर बहने लगी। बरफ कमल के लाल फूलों में बदलने लगी, घाटियाँ गहरी नीली हो गयीं। अँधेरा होने लगा तो हम उठे और मुँह-हाथ धोने और चाय पीने में लगे। पर सब चुपचाप थे, गुमसुम जैसे सबका कुछ छिन गया हो या शायद सबको कुछ ऐसा मिल गया हो, जिसे अन्दर-ही-अन्दर सहेजने में सब आत्मलीन हो अपने में डूब गये हों।

थोड़ी देर में चाँद निकला और हम फिर बाहर निकले....इस बार सब शान्त था। जैसे हिम सो रहा हो। मैं थोड़ा अलग आरामकुर्सी खींचकर बैठ गया। यह मेरा मन इतना कल्पनाहीन क्यों हो गया है? इसी हिमालय को देखकर किसने-किसने क्या-क्या नहीं लिखा और यह मेरा मन है कि एक कविता तो दूर, एक पंक्ति, हाय एक शब्द भी तो नहीं जागता।....पर कुछ नहीं, यह सब कितना छोटा लग रहा है इस हिम सम्राट् के समक्ष। पर धीरे-धीरे लगा कि मन के अन्दर भी बादल थे, जो छँट रहे हैं, कुछ ऐसा उभर रहा है, जो इन शिखरों की ही प्रकृति का है....। कुछ ऐसा, जो इसी ऊँचाई पर उठने की चेष्टा कर रहा है, ताकि इनसे इन्हीं के स्तर पर मिल सके। लगा, यह हिमालय बड़े भाई की तरह ऊपर चढ़ गया है और मुझे—छोटे भाई को—नीचे खड़ा हुआ कुण्ठित और लज्जित देखकर थोड़ा उत्साहित भी कर रहा है, स्नेहभरी चुनौती भी दे रहा है—'हिम्मत है? ऊँचे उठोगे?'

और सहसा सन्नाटा तोड़कर सेन रवीन्द्र की कोई पंक्ति गा उठा और जैसे तन्द्रा टूट गयी। और हम सक्रिय हो उठे—अदम्य शक्ति, उल्लास, आनन्द जैसे हम में झलक पड़ रहा था। सबसे अधिक खुश था सेन, बच्चों की तरह चंचल, चिड़ियों की तरह चहकता हुआ। बोला, "भाई साहब, हम तो वण्डरस्ट्रक हैं—कि यह भगवान् का क्या-क्या करतूत इस हिमालय में होता है।" इस पर हमारी हँसी मुश्किल में ठण्डी हो पायी थी कि अकस्मात् वह शीर्षासन करने लगा। पूछा गया तो बोला, "हम हर पर्सपेक्टिव हिमालय देखूँगा।" बाद में मालूम हुआ कि वह बम्बई (अब मुम्बई) की अत्याधुनिक चित्रशैली से थोड़ा नाराज है और कहने लगा, "ओ सब जीनियस लोग शीर का बल खड़ा होकर दुनिया को देखता है। इसी से मैं भी शीर का बल खड़ा होकर हिमालय देखता हूँ।"

दूसरे दिन घाटी में उतरकर 12 मील चलकर हम बैजनाथ पहुँचे, जहाँ गोमती बहती है। गोमती की उज्ज्वल जलराशि में हिमालय की बर्फीली चोटियों की छाया तैर रही थी। पता नहीं, उन शिखरों पर कब पहुँचूँ, कैसे पहुँचूँ, पर उस जल में तैरते हुए हिमालय से जी भरकर भेंटा, उसमें डूबा रहा।

आज भी उसकी याद आती है तो मन पिरा उठता है। कल ठेले के बर्फ को देखकर मेरे मित्र उपन्यासकार जिस तरह स्मृतियों में डूब गये, उस दर्द को समझता हूँ और जब ठेले पर हिमालय की बात कहकर हँसता हूँ तो वह उस दर्द को भुलाने का ही बहाना है। ये बर्फ की ऊँचाइयाँ बार-बार बुलाती हैं और हम हैं कि चौराहों पर खड़े ठेले पर लदकर निकलने वाली बर्फ को ही देखकर मन बहला लेते हैं। किसी ऐसे क्षण में ऐसे ही ठेलों पर लदे हिमालयों से घिरकर ही तो तुलसी ने कहा था—'कबहुँक हौं यहि रहिन रहौंगो'—मैं क्या कभी ऐसे भी रह सकूँगा, वास्तविक हिमशिखरों की ऊँचाइयों पर? और तब मन में आता है कि फिर हिमालय को किसी के हाथ सन्देशा भेज दूँ—"नहीं बन्धु....आऊँगा। मैं फिर लौट-लौटकर वहीं आऊँगा। उन्हीं ऊँचाइयों पर तो मेरा आवास है। वहीं मन रमता है, मैं करूँ तो क्या करूँ?"

● **धर्मवीर भारती**

अभ्यास प्रश्न

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित गद्यांशों में रेखांकित अंशों की व्याख्या और तथ्यात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिये—

(क) ठेले पर बर्फ की सिलें लादे हुए बर्फ वाला आया। ठण्डे, चिकने, चमकते बर्फ से भाप उड़ रही थी। मेरे मित्र का जन्म-स्थान अल्मोड़ा है, वे क्षण भर उस बर्फ को देखते रहे, उठती हुई भाप में खोये रहे और खोये-खोये से ही बोले, "यही बर्फ तो हिमालय की शोभा है।" और तत्काल शीर्षक मेरे मन में कौंध गया, 'ठेले पर हिमालय'। पर आपको इसलिए बता रहा हूँ कि अगर आप नये कवि हों तो भाई, इसे ले जायँ और इस शीर्षक पर दो-तीन सौ पंक्तियाँ बेडौल-बेतुकी लिख डालें—शीर्षक मौजूँ है, और अगर नयी कविता से नाराज हों, सुललित गीतकार हों तो भी गुंजाइश है, इस बर्फ को डाँटें, "उतर आओ। ऊँचे शिखर पर बन्दरों की तरह क्यों चढ़े बैठे हो? ओ नये कवियो! ठेले पर लादो। पान की दुकानों पर बिको।"

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) हिमालय की शोभा क्या है?

(ख) सच तो यह है कि सिर्फ बर्फ को बहुत निकट से देख पाने के लिए ही हम लोग कौसानी गये थे। नैनीताल से रानीखेत और रानीखेत से मझकाली के भयानक मोड़ों को पार करते हुए कोसी। कोसी से एक सड़क अल्मोड़ा चली जाती है, दूसरी कौसानी। कितना कष्टप्रद, कितना सूखा और कितना कुरूप है वह रास्ता। पानी का कहीं नाम-निशान नहीं, सूखे भूरे पहाड़, हरियाली का नाम नहीं। ढालों को काटकर बनाये हुए टेढ़े-मेढ़े खेत, जो थोड़े-से हों तो शायद अच्छे भी लगें, पर उनका एकरस सिलसिला बिल्कुल शैतान की आँत मालूम पड़ता है।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) बर्फ को पास से देखने के लिए लेखक कहाँ गया?

(ग) कौसानी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा-सा, बिल्कुल उजड़ा-सा गाँव और बर्फ का तो कहीं नाम-निशान नहीं। बिल्कुल ठगे गये हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रह गया। कितना अपार सौन्दर्य बिखरा था, सामने की घाटी में। इस कौसानी की पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कत्यूर की रंग-बिरंगी घाटी छिपा रखी है; इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुन्दर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे-किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझ जानेवाली बेलों की लड़ियों-सी नदियाँ। मन में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लूँ, आँखों से लगा लूँ।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) कौन-सी घाटी थी, जिसमें अनन्त सौन्दर्य बिखरा पड़ा था?

(घ) हिमालय की शीतलता माथे को छू रही है और सारे संघर्ष, सारे अन्तर्द्वन्द्व, सारे ताप जैसे नष्ट हो रहे हैं। क्यों पुराने साधकों ने दैहिक, दैविक और भौतिक कष्टों को ताप कहा था और उसे नष्ट करने के लिए वे क्यों हिमालय जाते थे, यह पहली बार मेरी समझ में आ रहा था। और अकस्मात् एक दूसरा तथ्य मेरे मन

के क्षितिज पर उदित हुआ। कितनी, कितनी पुरानी है यह हिमराशि। जाने किस आदिम काल से यह शाश्वत, अविनाशी हिम इन शिखरों पर जमा हुआ। कुछ विदेशियों ने इसीलिए इस हिमालय की बर्फ को कहा है—चिरन्तन हिम।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) कुछ विदेशियों ने हिमालय की बर्फ को चिरन्तन हिम क्यों कहा है?

(ङ) सूरज डूबने लगा और धीरे-धीरे ग्लेशियरों में पिघली केसर बहने लगी। बरफ कमल के लाल फूलों में बदलने लगी, घाटियाँ गहरी नीली हो गयीं। अँधेरा होने लगा तो हम उठे और मुँह-हाथ धोने और चाय पीने में लगे। पर सब चुपचाप थे, गुमसुम जैसे सबका कुछ छिन गया हो या शायद सबको कुछ ऐसा मिल गया हो, जिसे अन्दर-ही-अन्दर सहेजने में सब आत्मलीन हो अपने में डूब गये हों।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) किस समय बर्फ कमल के लाल फूलों में बदलती-सी प्रतीत होने लगी?

(च) आज भी उसकी याद आती है तो मन पिरा उठता है। कल ठेले के बर्फ को देखकर मेरे मित्र उपन्यासकार जिस तरह स्मृतियों में डूब गये, उस दर्द को समझता हूँ और जब ठेले पर हिमालय की बात कहकर हँसता हूँ तो वह उस दर्द को भुलाने का ही बहाना है। ये बर्फ की ऊँचाइयाँ बार-बार बुलाती हैं और हम हैं कि चौराहों पर खड़े ठेले पर लदकर निकलने वाली बर्फ को ही देखकर मन बहला लेते हैं। किसी ऐसे क्षण में ऐसे ही ठेलों पर लदे हिमालयों से घिरकर ही तो तुलसी ने कहा था—'कबहुँक हौं यहि रहिन रहौंगो'—मैं क्या कभी ऐसे भी रह सकूँगा, वास्तविक हिमशिखरों की ऊँचाइयों पर?

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) किसने हिमालय के शिखरों पर रहने की इच्छा व्यक्त की है?

2. धर्मवीर भारती की जीवनी एवं कृतियों का उल्लेख कीजिए।
3. धर्मवीर भारती के साहित्यिक अवदान एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
4. धर्मवीर भारती के जीवन-परिचय एवं साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कौसानी की यात्रा में नैनीताल से कोसी तक लेखक का सफर कैसा रहा?
2. कोसी के आगे जो बदलाव आया उसका मुख्य कारण क्या था?
3. कौसानी पहुँचने पर पहले लेखक को अवाक्, मूर्ति-सा स्तब्ध कर देनेवाला कौन-सा दृश्य दिखायी दिया?
4. कत्यूर घाटी के पार बादलों की ओट के बीच से दिखता हिमालय का एक शृंग उसे कैसा लगा?
5. हिम-शृंग के क्षणिक दर्शन का उस पर क्या प्रभाव हुआ?
6. पूरी हिम-शृंखला देखने पर लेखक के मन में कैसे भाव उदित हुए?
7. रात होने पर जब चाँद दिखायी दिया तब लेखक को क्यों लगने लगा कि जैसे उसका मन कल्पनाहीन हो गया हो?
8. बैजनाथ पहुँच कर गोमती में स्नान करते हुए लेखक के मन में हिमालय के प्रति कैसे भाव जगते हैं?

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. धर्मवीर भारती की दो रचनाओं के नाम लिखिए।
2. धर्मवीर भारती किस युग के लेखक हैं।

3. धर्मवीर भारती का जन्म कब हुआ था?
4. हिमालय की शोभा क्या है?

व्याकरण-बोध

1. **निम्नलिखित में 'समास-विग्रह' कीजिए और समास का नाम भी लिखिए—**
   हिमालय, शीर्षासन, जलराशि, पर्वतमाला, तन्द्रालस, प्रसन्नवदन।
2. इस पाठ के आधार पर धर्मवीर भारती की भाषा-शैली पर एक लेख लिखिए।
3. **निम्नलिखित शब्दों से प्रत्यय अलग कीजिए—**
   सुहावनापन, कष्टप्रद, शीतलता।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. धर्मवीर भारती का जन्म कब हुआ था?
   (अ) **1926 ई.** (ब) 1930 ई. (स) 1932 ई. (द) 1934 ई.
2. धर्मवीर भारती का निधन कब हुआ था?
   (अ) 1990 ई. (ब) 1995 ई. (स) **1997 ई.** (द) 2000 ई.
3. धर्मवीर भारती ने किस पत्रिका का सम्पादन किया था?
   (अ) **धर्मयुग** (ब) सारिका (स) कादम्बिनी (द) हंस
4. धर्मवीर भारती का जन्म-स्थान है—
   (अ) फिरोजाबाद (ब) **इलाहाबाद**
   (स) मुरादाबाद (द) इनमें से कोई नहीं
5. 'ठेले पर हिमालय' किस विधा की रचना है?
   (अ) **यात्रा-वृत्त** (ब) कहानी (स) एकांकी (द) निबन्ध
6. धर्मवीर भारती किस युग के लेखक हैं?
   (अ) भारतेन्दु युग (ब) द्विवेदी युग (स) **आधुनिक युग** (द) शुक्ल युग
7. हिमालय की शोभा किसे कहा गया है?
   (अ) **बर्फ** (ब) पेड़ (स) पत्थर (द) पानी
8. 'गुनाहों का देवता' किसकी कृति है?
   (अ) जय प्रकाश भारती (ब) **धर्मवीर भारती**
   (स) विष्णु प्रभाकर (द) उपेन्द्रनाथ अश्क
9. निम्न में कौन-सी रचना धर्मवीर भारती की है?
   (अ) ठंडा लोहा (ब) कनुप्रिया (स) अंधा युग (द) **उपर्युक्त सभी**
10. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' किसकी रचना है?
   (अ) **धर्मवीर भारती** (ब) वृन्दावन लाल वर्मा
   (स) जय प्रकाश भारती (द) हजारी प्रसाद द्विवेदी

उत्तरमाला : 1. (अ) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब) 5. (अ) 6. (स) 7. (अ) 8. (ब) 9. (द) 10. (अ)

●●

8 रवीन्द्रनाथ टैगोर

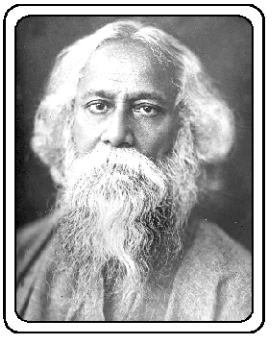

जीवन परिचय–रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई, 1861 ई0 को कलकत्ता (कोलकाता) में हुआ था। इनकी आरम्भिक शिक्षा प्रतिष्ठित सेंट जेवियर स्कूल में हुई। ग्यारह वर्ष की उम्र में उपनयन संस्कार के बाद अपने पिता देवेन्द्रनाथ के साथ हिमालय-यात्रा पर निकले थे। सितम्बर 1877 ई0 में अपने भाई के साथ इंग्लैण्ड चले गये। वहाँ इन्होंने अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन करते हुए पश्चिमी संगीत सीखा। इंग्लैण्ड से वापस लौटकर इन्होंने साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश किया। 1914 ई0 में कोलकाता विश्वविद्यालय द्वारा इन्हें 'डॉक्टर' की मानद उपाधि प्रदान की गयी। आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा भी इन्हें 'डी-लिट्' की उपाधि दी गयी।

इनका निधन 7 अगस्त, 1941 ई0 को हुआ।

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**–7 मई, सन् 1861 ई0।
- **पिता**–देवेन्द्रनाथ टैगोर।
- **जन्म-स्थान**–कलकत्ता (कोलकाता)।
- **मृत्यु**–7 अगस्त, सन् 1941 ई0।
- **पुरस्कार**–नोबल पुरस्कार (1913 ई0)।
- **हिन्दी साहित्य में स्थान**–कथाकार, नाटककार, निबन्धकार एवं कवि के रूप में।

साहित्यिक परिचय–रवीन्द्रनाथ टैगोर हमारे देश के एक प्रसिद्ध कवि, देशभक्त तथा दार्शनिक थे। ये बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। इन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक तथा कविताओं की रचना की। इन्होंने अपनी स्वयं की कविताओं के लिए अत्यन्त कर्णप्रिय संगीत का सृजन किया। ये हमारे देश के एक महान चित्रकार तथा शिक्षाविद् थे। 1901 ई0 में इन्होंने शान्ति निकेतन में एक ललित कला स्कूल की स्थापना की, जिसने कालान्तर में विश्व भारती का रूप ग्रहण किया। यह एक ऐसा विश्वविद्यालय रहा जिसमें सारे विश्व की रुचियों तथा महान आदर्शों को स्थान मिला तथा भिन्न-भिन्न सभ्यताओं एवं परम्पराओं के व्यक्तियों को साथ जीवन-यापन करने की शिक्षा प्राप्त हो सकी।

सर्वप्रथम टैगोर ने अपनी मातृभाषा बंगला में अपनी कृतियों की रचना की। जब इन्होंने अपनी रचनाओं का अनुवाद अंग्रेजी में किया तो इन्हें सारे संसार में बहुत ख्याति प्राप्त हुई। 1913 ई0 में इन्हें नोबल पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया, जो इनकी अमर कृति 'गीतांजलि' के लिए दिया गया। 'गीतांजलि' का अर्थ होता है गीतों की अंजलि अथवा गीतों की भेंट। यह रचना इनकी कविताओं का मुक्त काव्य में अनुवाद है जो स्वयं टैगोर ने मौलिक बंगला से किया तथा यह प्रसिद्ध आयरिश कवि डब्ल्यू. बी. येट्स के प्राक्कथन के साथ प्रकाशित हुई। यह रचना भक्ति गीतों की है, उन प्रार्थनाओं का संकलन है जो टैगोर ने परम पिता परमेश्वर के प्रति अर्पित की थी।

ब्रिटिश सरकार द्वारा टैगोर को 'सर' की उपाधि से सम्मानित किया गया परन्तु इन्होंने 1919 ई0 में जलियाँवाला नरसंहार

के प्रतिकारस्वरूप इस सम्मान का परित्याग कर दिया।

टैगोर की कविता गहन धार्मिक भावना, देशभक्ति और अपने देशवासियों के प्रति प्रेम से ओत-प्रोत है। टैगोर सारे संसार में अतिप्रसिद्ध तथा सम्मानित भारतीयों में से एक हैं। हम इन्हें अत्यधिक सम्मानपूर्वक 'गुरुदेव' कहकर सम्बोधित करते हैं। यह एक विचारक, अध्यापक तथा संगीतज्ञ रहे। इन्होंने अपने स्वयं के गीतों को संगीत दिया, उनका गायन किया और अपने अनेक रंगकर्मी शिष्यों को शिक्षित करने के साथ ही अपने नाटकों में अभिनय भी किया। आज के संगीत जगत में इनके रवीन्द्र संगीत को अद्वितीय स्थान प्राप्त है।

टैगोर एक गहरे धार्मिक व्यक्ति थे लेकिन अपने धर्म को 'मानव का धर्म' के नाम से वर्णित करना पसन्द करते थे। यह पूर्ण स्वतन्त्रता के प्रेमी थे। इन्होंने अपने शिष्यों के मस्तिष्क में सच्चाई का भाव भरा। प्रकृति, संगीत तथा कविता के निकट सम्पर्क के माध्यम से इन्होंने स्वयं अपनी तथा अपने शिष्यों की कल्पना-शक्ति को सौन्दर्य, अच्छाई तथा विस्तृत सहानुभूति के प्रति जाग्रत किया।

रचनायें–

कविताएँ– दूज का चाँद, भारत का राष्ट्रगान (जन-गण-मन), बागवान, मानसी, सोनार तारी, गीतांजलि, गीतिमय, बलक आदि।

कहानी– हंगरी स्टोन्स, काबुलीवाला, माई लॉर्ड, दी बेबी, नयनजोड़ के बाबू, भिखारिन, जिन्दा अथवा मुर्दा, अनधिकार प्रवेश, घर वापिसी, मास्टर साहब और पोस्टमास्टर।

उपन्यास– गोरा, नाव दुर्घटना, दि होम एण्ड दी वर्ल्ड, आँख की किरकिरी, राजर्षि, चोखेरवाली।

नाटक– पोस्ट ऑफिस, बलिदान, प्रकृति का प्रतिशोध, मुक्तधारा, नातिर-पूजा, चाण्डालिका, फाल्गुनी, वाल्मीकि प्रतिभा, राजा और रानी, रुद्रचण्ड, विसर्जन, चित्रांगदा।

आत्मजीवन चरित – मेरे बचपन के दिन।

निबन्ध व भाषण – मानवता की आवाज।

भाषा-शैली–इनकी भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण एवं प्रभावशाली है। यह अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे, इसीलिये इनकी रचनाओं में कई भाषाओं के शब्द मिलते हैं। विषय और प्रसंग के अनुरूप इन्होंने परिचयात्मक, विवेचनात्मक, आत्मकथात्मक, निबन्धात्मक आदि शैलियाँ अपनायी हैं।

●●

तोता

(1)

एक था तोता। वह बड़ा मूर्ख था। गाता तो था, पर शास्त्र नहीं पढ़ता था। उछलता था, फुदकता था, उड़ता था, पर यह नहीं जानता था कि कायदा-कानून किसे कहते हैं।

राजा बोले, "ऐसा तोता किस काम का? इससे लाभ तो कोई नहीं, हानि जरूर है। जंगल के फल खा जाता है, जिससे राजा-मण्डी के फल-बाजार में टोटा पड़ जाता है।"

मंत्री को बुलाकर कहा, "इस तोते को शिक्षा दो।"

(2)

तोते को शिक्षा देने का काम राजा के भानजे को मिला।

पंडितों की बैठक हुई। विषय था, "उक्त जीव की अविद्या का कारण क्या है?" बड़ा गहरा विचार हुआ।

सिद्धान्त ठहरा : तोता अपना घोंसला साधारण खर-पात से बनाता है। ऐसे आवास में विद्या नहीं आती। इसलिए सबसे पहले तो यह आवश्यक है कि इसके लिए कोई बढ़िया-सा पिंजरा बना दिया जाय।

राज-पण्डितों को दक्षिणा मिली और वे प्रसन्न होकर अपने-अपने घर गये।

(3)

सुनार बुलाया गया। वह सोने का पिंजरा तैयार करने में जुट पड़ा। पिंजरा ऐसा अनोखा बना कि उसे देखने के लिए देश-विदेश के लोग टूट पड़े। कोई कहता, "शिक्षा की तो इति हो गयी।" कोई कहता, "शिक्षा न भी हो तो क्या, पिंजरा तो बना। इस तोते का भी क्या नसीब है।"

सुनार को थैलियाँ भर-भरकर इनाम मिला। वह उसी घड़ी अपने घर की ओर रवाना हो गया।

पण्डित जी तोते को विद्या पढ़ाने बैठे। नस लेकर बोले, "यह काम थोड़ी पोथियों का नहीं है।"

राजा के भानजे ने सुना। उन्होंने उसी समय पोथी लिखने वालों को बुलवाया। पोथियों की नकल होने लगी। नकलों के और नकलों की नकलों के पहाड़ लग गये। जिसने भी देखा, उसने यही कहा कि "शाबाश! इतनी विद्या के धरने को जगह भी नहीं रहेगी।"

नकलनवीसों को लद्दू बैलों पर लाद-लादकर इनाम दिये गए। वे अपने-अपने घर की ओर दौड़ पड़े। उनकी दुनिया में तंगी का नाम-निशान भी बाकी न रहा।

दामी पिंजरे की देख-रेख में राजा के भानजे बहुत व्यस्त रहने लगे। इतने व्यस्त कि व्यस्तता की कोई सीमा न रही। मरम्मत के काम भी लगे ही रहते। फिर झाड़ू-पोंछ और पालिश की धूम भी मची ही रहती थी। जो ही देखता, यही कहता कि "उन्नति हो रही है।"

इन कामों पर अनेक-अनेक लोग लगाये गये और उनके कामों की देख-रेख करने पर और भी अनेक-अनेक लोग लगे। सब महीने-महीने मोटे-मोटे वेतन ले-लेकर बड़े-बड़े सन्दूक भरने लगे।

वे और उनके चचेरे-ममेरे-मौसेरे भाई-बंद बड़े प्रसन्न हुए और बड़े-बड़े कोठों-बालाखानों में मोटे-मोटे गद्दे बिछाकर बैठ गये।

(4)

संसार में और-और अभाव तो अनेक हैं, पर निन्दकों की कोई कमी नहीं है। एक ढूँढ़ो हजार मिलते हैं। वे बोले, "पिंजरे की तो उन्नति हो रही है, पर तोते की खोज-खबर लेने वाला कोई नहीं है।

बात राजा के कानों में पड़ी। उन्होंने भानजे को बुलाया और कहा, "क्यों भानजे साहब, यह कैसी बात सुनाई पड़ रही है?"

भानजे ने कहा, "महाराज, अगर सच-सच बात सुनना चाहते हों तो सुनारों को बुलाइये, पण्डितों को बुलाइये, नकलनवीसों को बुलाइये, मरम्मत करने वालों को और मरम्मत की देखभाल करने वालों को बुलाइये। निन्दकों को हलवे-मॉड़े में हिस्सा नहीं मिलता, इसीलिए वे ऐसी ओछी बात करते हैं।"

जवाब सुनकर राजा ने पूरे मामले को भली-भाँति और साफ-साफ तौर से समझ लिया। भानजे के गले में तत्काल सोने के हार पहनाये गये।

(5)

राजा का मन हुआ कि एक बार चलकर अपनी आँखों से यह देखें कि शिक्षा कैसे धूमधड़ाके से और कैसी बगटुट तेजी के साथ चल रही है। सो, एक दिन वह अपने मुसाहबों, मुँहलगों, मित्रों और मन्त्रियों के साथ आप ही शिक्षा-शाला में आ धमके।

उनके पहुँचते ही ड्योढ़ी के पास शंख, घड़ियाल, ढोल, तासे, खुरदक, नगाड़े, तुरहियाँ, भेरियाँ, दमामें, काँसे, बाँसुरियाँ, झाल, करताल, मृदंग, जगझम्प आदि-आदि आप ही आप बज उठे।

पण्डित गले फाड़-फाड़कर और बूटियाँ फड़का-फड़काकर मन्त्र-पाठ करने लगे। मिस्त्री, मजदूर, सुनार, नकलनवीस, देखभाल करने वाले और उन सभी के ममेरे, फुफेरे, चचेरे, मौसेरे भाई जय-जयकार करने लगे।

भानजा बोला, "महाराज, देख रहे हैं न?"

महाराज ने कहा, "आश्चर्य! शब्द तो कोई कम नहीं हो रहा!

भानजा बोला, "शब्द ही क्यों, इसके पीछे अर्थ भी कोई कम नहीं!" राजा प्रसन्न होकर लौट पड़े। ड्योढ़ी को पार करके हाथी पर सवार होने ही वाले थे कि पास के झुरमुट में छिपा बैठा निन्दक बोल उठा, "महाराज आपने तोते को देखा भी है?" राजा चौंके। बोले, "अरे हाँ! यह तो मैं बिलकुल भूल ही गया था। तोते को तो देखा ही नहीं।" लौटकर पण्डित से बोले, "मुझे यह देखना है कि तोते को तुम पढ़ाते किस ढंग से हो।" पढ़ाने का ढंग उन्हें दिखाया गया। देखकर उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। पढ़ाने का ढंग तोते की तुलना में इतना बड़ा था कि तोता दिखाई ही नहीं पड़ता था। राजा ने सोचा : अब तोते को देखने की जरूरत ही क्या है? उसे देखे बिना भी काम चल सकता है। राजा ने इतना तो अच्छी तरह समझ लिया कि बंदोबस्त में कहीं कोई भूल-चूक नहीं है। पिंजरे में दाना-पानी तो नहीं था, थी सिर्फ शिक्षा। यानी ढेर की ढेर पोथियों के ढेर के ढेर पन्ने फाड़-फाड़कर कलम की नोंक से तोते के मुँह में घुसेड़े जाते थे। गाना तो बन्द हो ही गया था, चीखने-चिल्लाने के लिए भी कोई गुंजायश नहीं छोड़ी गयी थी। तोते का मुँह ठसाठस भरकर बिलकुल बन्द हो गया था। देखने वाले के रोंगटे खड़े हो जाते।

अब दुबारा जब राजा हाथी पर चढ़ने लगे तो उन्होंने कान-उमेठू सरदार को ताकीद कर दी कि "निन्दक के कान अच्छी तरह उमेठ देना।"

(6)

तोता दिन पर दिन भद्र रीति के अनुसार अधमरा होता गया। अभिभावकों ने समझा कि प्रगति काफी आशाजनक हो रही है। फिर भी पक्षी-स्वभाव के एक स्वाभाविक दोष से तोते का पिंड अब भी छूट नहीं पाया था। सुबह होते ही वह उजाले की ओर टुकुर-टुकुर निहारने लगता था और बड़ी ही अन्याय भरी रीति से अपने डैने फड़फड़ाने लगता था। इतना ही नहीं, किसी-किसी दिन तो ऐसा भी देखा गया कि वह अपनी रोगी चोंचों से पिंजरे की सलाखें काटने में जुटा हुआ है।

कोतवाल गरजा, "यह कैसी बेअदबी है।"

फौरन लुहार हाजिर हुआ। आग, भाथी और हथौड़ा लेकर।

वह धम्माधम्म लोहा-पिटाई हुई कि कुछ न पूछिये! लोहे की सांकल तैयार की गई और तोते के डैने भी काट दिये गये।

राजा के सम्बन्धियों ने हाँड़ी-जैसे मुँह लटका कर और सिर हिलाकर कहा, "इस राज्य के पक्षी सिर्फ बेवकूफ ही नहीं, नमक-हराम भी हैं।" और तब, पण्डितों ने एक हाथ में कलम और दूसरे हाथ में बरछा ले-लेकर वह कांड रचाया, जिसे शिक्षा कहते हैं।

लुहार की लुहसार बेहद फैल गयी और लुहारिन के अंगों पर सोने के गहने शोभने लगे और कोतवाल की चतुराई देखकर राजा ने उसे सिरोपा अदा किया।

(7)

तोता मर गया। कब मरा, इसका निश्चय कोई भी नहीं कर सकता। कमबख्त निन्दक ने अफवाह फैलायी कि "तोता मर गया!"

राजा ने भानजे को बुलवाया और कहा, "भानजे साहब यह कैसी बात सुनी जा रही है?"

भानजे ने कहा, "महाराज, तोते की शिक्षा पूरी हो गई है।"
राजा ने पूछा, "अब भी वह उछलता-फुदकता है?"
भानजा बोला, "अजी, राम कहिये!"

(8)

"अब भी उड़ता है?"
"ना; कतई नहीं।"
"अब भी गाता है?"
"नहीं तो।"
"दाना न मिलने पर अब भी चिल्लाता है?"
"ना!"
राजा ने कहा, "एक बार तोते को लाना तो सही, देखूँगा जरा!"
तोता लाया गया। साथ में कोतवाल आये, प्यादे आये, घुड़सवार आये।
राजा ने तोते को चुटकी से दबाया। तोते ने न हाँ की, न हूँ की। हाँ, उसके पेट में पोथियों के सूखे पत्ते खड़खड़ाने जरूर लगे।
बाहर नव-बसन्त की दक्षिणी बयार में नव-पल्लवों ने अपने निश्वासों से मुकुलित वन के आकाश को आकुल कर दिया।

अभ्यास प्रश्न

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. **निम्नलिखित गद्यांशों में रेखांकित अंशों की व्याख्या और तथ्यपरक प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

(क) तोते को शिक्षा देने का काम राजा के भानजे को मिला। पण्डितों की बैठक हुई। विषय था, "उक्त जीव की अविद्या का कारण क्या है?" बड़ा गहरा विचार हुआ। सिद्धान्त ठहरा : तोता अपना घोंसला साधारण खर-पात से बनाता है। ऐसे आवास में विद्या नहीं आती। इसलिए सबसे पहले यह आवश्यक है कि इसके लिए कोई बढ़िया-सा पिंजरा बना दिया जाय। राज-पण्डितों को दक्षिणा मिली और वे प्रसन्न होकर अपने-अपने घर गये।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) तोते को शिक्षा देने का काम किसे मिला?
(iv) तोता अपना घोंसला किससे बनाता है?
(v) दक्षिणा किसे मिली?

(ख) संसार में और-और अभाव तो अनेक हैं, पर निन्दकों की कोई कमी नहीं है। एक ढूँढ़ो हजार मिलते हैं। वे बोले, "पिंजरे की तो उन्नति हो रही है, पर तोते की खोज-खबर कोई लेने वाला नहीं है।"
बात राजा के कानों में पड़ी। उन्होंने भानजे को बुलाया और कहा, "क्यों भानजे साहब, यह कैसी बात सुनायी पड़ रही है? भानजे ने कहा, "महाराज अगर सच-सच बात सुनना चाहते हों तो सुनारों को बुलाइए। निन्दकों को हलवे-माड़े में हिस्सा नहीं मिलता, इसलिए वे ऐसी ओछी बातें करते हैं।"

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।
(iii) संसार में किसकी कमी नहीं है?

(iv) किसकी उन्नति हो रही है?

(v) निन्दक निन्दा क्यों करते हैं?

(ग) तोता दिन भर भद्र रीति के अनुसार अधमरा होता गया। अभिभावकों ने समझा कि प्रगति काफी आशाजनक हो रही है। फिर भी पक्षी स्वभाव के एक स्वाभाविक दोष से तोते का पिंड अब भी छूट नहीं पाया था। सुबह होते ही वह उजाले की ओर टुकुर-टुकुर निहारने लगता था और बड़ी ही अन्याय भरी रीति से अपने डैने फड़फड़ाने लगता था। इतना ही नहीं, किसी-किसी दिन तो ऐसा भी देखा गया कि वह अपनी रोगी चोंचों से पिंजरे की सलाखें काटने में जुटा हुआ है।

प्रश्न (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

(iii) तोता क्यों अधमरा हो गया?

(iv) तोते का कौन-सा दोष छूट नहीं पाया था?

(v) तोता अपनी चोंचों से क्या कर रहा था?

2. रवीन्द्रनाथ टैगोर का संक्षिप्त जीवन परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा **रवीन्द्रनाथ टैगोर का जीवन परिचय एवं साहित्यिक सेवाओं का उल्लेख कीजिए।**

3. रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा लिखित कहानी 'तोता' का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. तोता स्वभाव से कैसा था?
2. टैगोर का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
3. टैगोर द्वारा रचित रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
4. टैगोर की रचनाओं की विषयवस्तु क्या है?
5. "टैगोर मानव-धर्म प्रेमी थे।" स्पष्ट कीजिए।
6. तोते को विद्वान् बनाने के लिए क्या किया गया?
7. तोता क्यों मर गया?

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. टैगोर ने शान्ति निकेतन में ललित कला स्कूल की स्थापना कब की?
2. रवीन्द्रनाथ टैगोर को नोबल पुरस्कार कब मिला?
3. टैगोर को उनकी किस रचना पर नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ?
4. टैगोर को 'सर' की उपाधि से किसने सम्मानित किया?
5. टैगोर ने 'सर' की उपाधि कब वापस की?
6. 'गोरा' नामक उपन्यास के रचनाकार कौन हैं?
7. टैगोर द्वारा लिखित नाटकों का नामोल्लेख कीजिए।
8. टैगोर द्वारा लिखित कहानियों का नामोल्लेख कीजिए।
9. गीतांजलि का क्या अर्थ है?
10. तोते को शिक्षा देने का काम राजा ने किसे सौंपा?
11. पण्डितों के अनुसार किस तरह के आवास में विद्या नहीं आती?

12. पिंजरा किस धातु का बना था?
13. राजा ने किसके गले में सोने का हार डाल दिया?
14. तोता गाना गाना क्यों बन्द कर दिया?
15. राजा ने किसके कान उमेठने के लिए कहा?

व्याकरण-बोध

निम्नलिखित समस्त पदों का समास विग्रह कीजिए तथा समास का नाम लिखिए—
कायदा-कानून, राजा-मण्डी, अविद्या।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म कब हुआ था?
(अ) **1861 ई.** (ब) 1863 ई. (स) 1865 ई. (द) 1870 ई.

2. रवीन्द्रनाथ टैगोर का निधन कब हुआ था?
(अ) 1940 ई. (ब) **1941 ई.** (स) 1942 ई. (द) 1944 ई.

3. टैगोर को नोबल पुरस्कार कब प्राप्त हुआ?
(अ) **1913 ई.** (ब) 1915 ई. (स) 1917 ई. (द) 1919 ई.

4. टैगोर को किस रचना पर नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ?
(अ) **गीतांजलि** (ब) गोरा
(स) पोस्ट आफिस (द) इनमें से कोई नहीं

5. 'तोता' कहानी के रचनाकार कौन हैं?
(अ) प्रताप नारायण मिश्र (ब) **रवीन्द्रनाथ टैगोर**
(स) मुंशी प्रेमचन्द (द) इनमें से कोई नहीं

6. टैगोर ने शान्ति निकेतन में ललित कला स्कूल की स्थापना कब की?
(अ) 1901 ई. में (ब) 1902 ई. में (स) 1903 ई. में (द) 1904 ई. में

7. तोता मर गया क्योंकि उसे नहीं मिला—
(अ) भोजन (ब) पानी
(स) **(अ) और (ब) दोनों** (द) इनमें से कोई नहीं

8. पिंजरा किस धातु का बना था?
(अ) **सोने का** (ब) चाँदी का
(स) लोहे का (द) इनमें से कोई नहीं

9. राजा ने किसके गले में सोने का हार डाल दिया था?
(अ) अपने मंत्री के (ब) **अपने भान्जे के**
(स) अपने सेनापति के (द) इनमें से कोई नहीं

10. निम्नलिखित में कौन-सा नाटक टैगोर द्वारा लिखित है?
(अ) पोस्ट ऑफिस (ब) बलिदान (स) प्रतिशोध (द) **उपर्युक्त सभी**

उत्तरमाला : 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (अ) 5. (ब) 6. (अ) 7. (स) 8. (अ) 9. (ब) 10. (द)

9 सड़क सुरक्षा एवं यातायात के नियम

'यातायात' दो शब्द से मिलकर बना है–''यात + आयात'; जिसका अर्थ है आना–जाना। प्राचीनकाल से ही मानव–सभ्यता की समस्त जीवन–शैली आवागमन पर ही निर्भर है। आधुनिक काल में बढ़ते संसाधन एवं विकास क्षेत्र को देखते हुए देश में नहीं, सम्पूर्ण विश्व में यातायात से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण नियम बनाये गये हैं, क्योंकि इससे न केवल यातायात सुगम बनता है, बल्कि सड़क दुर्घटना से होने वाले भयावह खतरों से बचा जा सकता है। आम जनता खासतौर से युवा-वर्ग के लोगों में अधिक जागरूकता लाने के लिये इसे शिक्षा, सामाजिक जागरूकता इत्यादि आयामों से जोड़ा जाना प्रासंगिक है, क्योंकि विश्व में सड़क-यातायात में मौतें और जख्मी होना एक साधारण घटना हो गयी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार प्रति वर्ष 10 लाख से अधिक सड़क-हादसों के शिकार व्यक्तियों की मौत हो जाती है।

हादसों से बचने के लिए यातायात के नियमों का पालन करना अति आवश्यक है। इसके ज्ञान के अभाव में एक सुचारु रूप से पालन न करने के कारण भारत में प्रत्येक वर्ष 1,50,000 से अधिक व्यक्ति सड़क-दुर्घटना में मारे जाते हैं। ऐसी विकट परिस्थितियों का अनुमान लगाया जा सकता है कि विश्व भर के कुल वाहनों में से केवल एक प्रतिशत ही वाहन भारत में हैं, जबकि विश्व की कुल सड़क-दुर्घटना में से 10% हादसे भारत में होते हैं। ''विडम्बना यह है कि कोई नियम तब तक अपने लक्ष्य को नहीं प्राप्त कर सकता जब तक पालनकर्ता उसे आत्मसात् करने की कोशिश न करे।''

सड़क यातायात के नियम विवेकपूर्ण होते हैं, और उनका विवेकपूर्ण पालन करना भी आवश्यक होता है। सड़क पर चलने वालों की सुरक्षा के लिए अनेक कानून एवं नियम बनाए गए हैं, जिसका पालन करना प्रत्येक नागरिक का दायित्व होता है, जिससे हर कोई सुरक्षित घर पहुँच सके। यदि हम इन नियमों का उल्लंघन करते हैं तो स्वयं के साथ-साथ दूसरों को भी हानि पहुँचाते हैं। यातायात के प्रमुख नियमों को सीखने की सुगमता के अनुसार दो भागों में विभक्त कर सकते हैं—(1) सुरक्षा से सम्बन्धित यातायात के नियम एवं सावधानियाँ, (2) वाहन चलाने के नियम एवं सावधानियाँ।

पैदल, साइकिल एवं रिक्शा चालकों को हमेशा अपनी लेन में अर्थात् बायीं तरफ रहना चाहिए एवं सड़क पार करते समय दायें-बायें देखने के बाद ही आगे बढ़ना चाहिए। व्यस्त सड़कों पर हमेशा जेब्रा-क्रासिंग का प्रयोग करना चाहिए तथा क्रास करते समय कभी यह न सोचना चाहिए कि वाहन चालक उसे देख रहा है। सड़क की संरचनात्मक ढाँचागत सुविधाओं का पूरा उपयोग हो इसलिए सब-वे (तल मार्ग), फुट ओवर ब्रिज सबका पालन नियमगत करना आवश्यक होता है। शार्टकट या आसान विकल्प खोजना खतरनाक हो सकता है।

पैदल यात्रियों को सड़क पार करते समय मोटर-वाहनों एवं अपने बीच पर्याप्त दूरी रखना चाहिए और पार्क की गई या खड़ी गाड़ियों के बीच से रास्ता नहीं बनाना चाहिए। सड़क के खतरों से अधिकांशतः बच्चे ज्यादा प्रभावित होते हैं, जिसमें हमेशा वाहन चालक की गलती नहीं होती है, क्योंकि बच्चों की लापरवाही और जागरूकता की कमी से भी सड़क दुर्घटना की सम्भावना बढ़ जाती है। बच्चे हमेशा बड़ों का अनुसरण करते हैं इसलिए उनके सामने विवशता में भी सड़क के नियम का उल्लंघन नहीं करना चाहिए और उन्हें ''रुकें, देखें, सुनें, सोचें'' का मूल मंत्र बताना व पालन कराना अति आवश्यक होता है।

वाहन चलाते समय यातायात नियम एवं सुरक्षा की जानकारी के साथ-साथ वाहन चलाने की योग्यता, उम्र एवं परिपक्वता की जानकारी भी आवश्यक होनी है। सड़कों पर तीव्रता से बढ़ती दुपहिया और चौपहिया वाहनों की भीड़ को व्यवस्थित करने

रुकिये

रास्ता दीजिए

प्रवेश निषेध/No Entry

वन वे प्रतिबन्धित

एवं सड़क पर आवश्यक जगहों पर लगे सड़क नियम से (यातायात नियम) सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण संकेतों की जानकारी रखना भी आवश्यक होता है क्योंकि भारत में वर्ष 2018 की अवधि में सड़क दुर्घटना में 1,51,471 लोगों की मृत्यु हुई। वाहन चलाते समय कुछ मानवीय भूलें होती हैं जिससे दुर्घटना हो जाती है, इसलिए ऐसे तथ्यों पर गहन विवेचना की आवश्यकता है। बहुत तेज गति से वाहन चलाना, नशे में गाड़ी चलाना, चालक की ध्यान भटकाने वाली चीजें, लालबत्ती का उल्लंघन करना, सीट-बेल्ट और हेलमेट जैसे सुरक्षा साधनों की उपेक्षा, लेन ड्राइविंग का पालन न करना और गलत तरीके से ओवरटेकिंग करना आदि कारणों से सड़क-दुर्घटना की सम्भावना बढ़ जाती है। इसलिए उपरोक्त निर्देशित समस्त बिन्दुओं पर ध्यान-केन्द्रित करते हुए सावधानी बरतनी चाहिए। वर्तमान में वाहन चलाते समय मोबाइल फोन के बढ़ते प्रयोग के कारण दुर्घटनाएँ बढ़ी हैं। सुरक्षा की दृष्टि से वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

सभी को पीछे छोड़ने की प्रवृत्ति प्रायः हर किसी में होती है, गति में तीव्रता दुर्घटना का जोखिम और दुर्घटना के दौरान चोट की गम्भीरता बढ़ाती है। खुशी के मौके या शौक के कारण लोगों में नशे की प्रवृत्ति होती है; परन्तु नशे की हालत में गाड़ी चलाना, दुर्घटना में वृद्धि करता है। कभी-कभी गाड़ी चलाते समय मोबाइल फोन, होर्डिंग पर ध्यान चले जाना जैसी क्रियाएँ मस्तिष्क-संकेन्द्रक को प्रभावित करता है, इसलिए गाड़ी चलाते समय ऐसी वस्तुओं से दूरी बना लेनी चाहिए। कुछ अन्य बातें भी इसमें शामिल होती हैं, जैसे गाड़ी का शीशा समायोजित करना, वाहन में स्टीरियो एवं रेडियो का चलाना, सड़क पर जानवरों का आ जाना, विज्ञापन या सूचनापट्ट आदि चीजों से चालक को अपना ध्यान नहीं भंग करना चाहिए और मार्ग-परिवर्तन एवं ध्यान हटाने वाली बाहरी चीजें देखने के दौरान सुरक्षित रहने के लिए वाहन गति धीमी रखने की आवश्यकता होती है।

वाहन चलाते समय चौराहों पर लगी बत्तियों एवं चौराहों पर किस नियम की आवश्यकता होती है उस पर चर्चा जरूरी है। लाल बत्ती संकेत देती है कि वाहन को रुकना है; पीली बत्ती का संकेत है कि चलने के लिए तैयार होना एवं अन्त में हरी बत्ती का संकेत होता है अब आगे बढ़ना या चलना है। इसके साथ ही चौराहे पर बायें मुड़ना (लेफ्ट टर्न) हमेशा खुला रहने का मतलब है कि बायीं तरफ मुड़ने के लिए या जाने के लिए रुकने की आवश्यकता नहीं है; परन्तु ध्यान रखना होता है कि चौराहे पर हमारी दाहिनी तरफ से आने वाले वाहन से भी हमें बायीं तरफ रहना है और जब तक पर्याप्त जगह न मिले हमें दाहिनी लेन में नहीं आना चाहिए। परिवहन विभाग से जारी किए गये सड़क से सम्बन्धित कई महत्त्वपूर्ण संकेत निर्धारित किए गये हैं, जिसकी जानकारी रखने एवं पालन करने से यातायात को सुगम, सहज एवं सुखद बनाया जा सकता है। सामान्य रूप से उसे दो भागों में बाँटा गया है, ''लिखित संकेत एवं चित्र संकेत''। लिखित संकेतों में शब्दों, अंकों तथा वाक्यों का प्रयोग करके आवश्यक बातें बतायी जाती हैं। लिखित संकेतों का इतिहास बहुत पुराना है पर इनकी संख्या बहुत कम है। 'मील के पत्थर', 'होर्डिंग द्वारा दिशा-निर्देश', 'गंतव्य स्थानों का ज्ञान कराना' तथा 'सड़क-यातायात से सम्बन्धित अचानक कोई परिवर्तन' आदि की जानकारी देने के लिए लिखित संकेतों का प्रयोग करते हैं। कभी-कभी कुछ मार्गों पर यातायात संकेत के साथ 'मोड़', 'तीव्र-मोड़', 'सड़क की मरम्मत हो रही है', कृपया धीरे चलें, सावधान बच्चे हैं' जैसे लिखित संकेतों के माध्यम से भी सावधानी बरतने के लिए आगाह किया जाता है। प्रयोजन के आधार पर चित्र संकेतों को तीन श्रेणी में प्रदर्शित करते हैं—

(क) खतरे की चेतावनी देने वाले संकेत, (ख) विनियामक संकेत तथा (ग) सूचनात्मक संकेत।

चित्र संकेतों का सबसे बड़ा लाभ यह है कि उन्हें आसानी से देखा, समझा, और पालन किया जा सकता है, प्रत्येक वाहन चालक को निर्देशित चिह्न को समझकर ही वाहन चलाना चाहिए। परिवहन विभाग द्वारा उक्त चिह्नों का सही ज्ञान कराकर ही वाहन-चालक को वाहन चलाने के लिए ड्राइविंग-लाइसेंस (चालन अनुमति पत्र) दिया जाता है। परन्तु उसका उचित पालन ही यातायात को सुगम एवं सुखदायी बनाता है। चित्र संकेतों के आकार और रंग अलग-अलग होते हैं। लाल रंग के गोलाकार संकेत

आदेशात्मक होते हैं; लाल रंग के त्रिकोणीय संकेत चेतावनी देने वाले होते हैं और नीले रंग के आयताकार संकेत सूचना प्रदायक होते हैं।

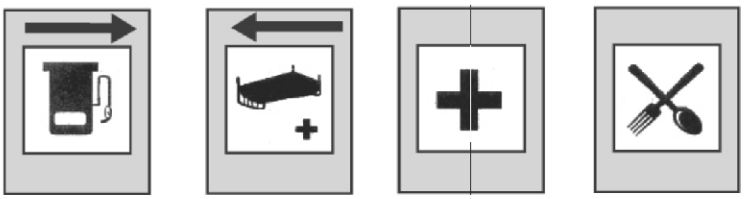

पेट्रोल पम्प दाहिनी ओर अस्पताल बाईं ओर प्राथमिक चिकित्सा स्थल भोजन स्थल

यातायात के संकेत ''भारतीय रोड-कांग्रेस'' (आई0आर0सी0) द्वारा जारी किये जाते हैं तथा संकेत चिह्नों और नियमों का प्रयोग कर बनाये जाते हैं, जिसका अनुपालन देश के सभी नागरिकों से करने की अपेक्षा की जाती है।

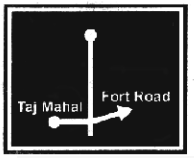

आगामी दिशा संकेत

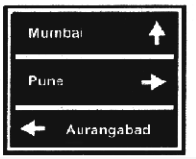

गंतव्य संकेत

गोल चक्कर पर दिशा संकेत

दिशा संकेत

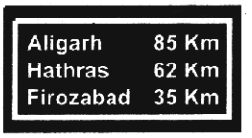

स्थान संकेत

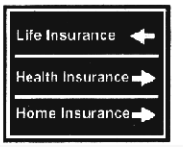

पुनरश्वासन संकेत

यातायात के नियमों का पालन करने में कभी-कभी अन्य गतिरोध उत्पन्न हो जाते हैं क्योंकि अधिकांशतः लोग नियमों की अनदेखी करके अतिशीघ्रता करने की कोशिश करते हैं, जिसके कारण सड़कों पर जाम की स्थिति बन जाती है एवं यातायात बाधित होने लगता है। ऐसी परिस्थिति में कभी-कभी विकल्प के अभाव में जनता यातायात के नियमों को तोड़ने के लिए विवश हो जाती है।

परिवहन नियम के अनुसार उक्त समस्याओं से निपटने के लिए विवेकपूर्ण तथ्यों का अनुपालन करना चाहिए जिससे कोई दुर्घटना या परेशानी का सामना न करना पड़े। उल्लिखित परिस्थिति में कभी-कभी रोड रेज (सड़क पर झगड़ा) की सम्भावना बन जाती है जिसको विविध संकेतों से पहचानकर बचा जा सकता है। उदाहरणार्थ–उत्तेजक वाहन चलाना, अचानक तीव्रता लाना और ब्रेक लगाना, सड़कों पर टेढ़ी-मेढ़ी (जिकजैक) ड्राइविंग करना; तीव्र गति में बार-बार लेन बदलना, अपनी लेन से अचानक दूसरे वाहन के आगे अपना वाहन लाना, जान बूझकर अन्य वाहनों के लिए अवरोध उत्पन्न करना, दूसरे वाहन को पीछे से या बगल से टक्कर मारना; वाहन को दूसरे वाहन के पीछे एकदम से सटाकर चलना, निरन्तर हार्न बजाना व लाइट फ्लैश करना। वाहन-चालक को समझदारी दिखाते हुए अपने बचाव के लिए ऐसी स्थिति में उलझने से बचने की कोशिश करनी चाहिए।

यातायात के नियम पालनार्थ भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने सड़क-सुरक्षा में सुधार करने के लिए अनेक कदम उठाये हैं जैसे–सड़क फर्नीचर, सड़क चिह्न (रोड मार्किंग), उन्नत परिवहन प्रणाली का प्रयोग करते हुए राजमार्ग यातायात प्रबन्धन प्रणाली आरम्भ करना, निर्माण कार्य के दौरान ठेकेदारों में अनुशासन को बनाए रखना, चुनिन्दा क्षेत्रों में सड़क सुरक्षा ऑडिट इत्यादि। असंगठित क्षेत्रों में भारी मोटर वाहनों के लिए 'पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाना', 'राज्यों में ड्राइविंग प्रशिक्षण स्कूलों की स्थापना', 'दृश्य-श्रव्य तथा प्रिण्ट माध्यमों के द्वारा सड़क सुरक्षा जागरूकता पर प्रचार अभियान', सड़क सुरक्षा के क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य के लिए स्वैच्छिक संगठनों/व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कारों का संचालन, वाहनों में सुरक्षा-मानकों को और अधिक सख्त बनाना, जैसे-'सीट-बेल्ट', 'पावर-स्टेयरिंग', 'रिटर-व्यू-मिरर' इत्यादि। राष्ट्रीय राजमार्ग दुर्घटना सहायता सेवा-योजना के अन्तर्गत विभिन्न राज्य सरकारों और सरकारी संगठनों को क्रेन तथा एम्बुलेन्स उपलब्ध कराना। राष्ट्रीय राजमार्गों को 2-लेन से 4-लेन, 4-लेन से 6-लेन करने का प्रावधान तथा युवा वर्ग में जागरूकता (सड़क-सुरक्षा) का प्रचार करने की प्रक्रिया को भी शामिल करना है।

अन्ततः यातायात के नियमों के बहुआयामी उद्देश्यों को ध्यान में रखकर प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य बनता है वह परिवहन विभाग द्वारा बनाए गये यातायात से सम्बन्धित समस्त सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक संकेतकों एवं नियमों का पालन कर देश की समृद्धि एवं विकास में अहम् योगदान देने का प्रयास करें, जिसमें हमारा देश, समाज एवं परिवार सुरक्षित रहकर विकास की पराकाष्ठा को प्राप्त करने में सफल रहे।

अभ्यास प्रश्न

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. 'सड़क सुरक्षा एवं यातायात के नियम' पर एक निबन्ध लिखिए।
2. यातायात के नियमों को संक्षेप में लिखिए।
3. सड़क दुर्घटना से हम अपना बचाव कैसे कर सकते हैं?
4. यातायात के नियमों का पालन करना क्यों आवश्यक है?
5. यातायात के पालन हेतु भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने सड़क सुरक्षा में सुधार करने के लिए कौन से कदम उठाये हैं?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सड़क सुरक्षा से आप क्या समझते हैं?
2. सड़क दुर्घटना से बचने के लिए हमें क्या करना चाहिए?
3. यातायात के किन्हीं पाँच नियमों का उल्लेख कीजिए।
4. यातायात के नियमों के पालन करने में कौन से गतिरोध उत्पन्न होते हैं?
5. पैदल, सायकिल एवं रिक्शा चालकों को सड़क पर चलते समय किस बात का ध्यान रखना चाहिए?
6. सड़क दुर्घटनाएँ क्यों होती हैं?

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. यातायात किन शब्दों से मिलकर बना है?
2. यातायात का क्या अर्थ है?
3. विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार प्रतिवर्ष सड़क हादसे में कितने व्यक्तियों की मौत हो जाती है?
4. भारत में सड़क दुर्घटनाओं में प्रतिवर्ष कितने व्यक्तियों की मृत्यु हो जाती है?
5. सड़क यातायात के नियम कैसे होते हैं?
6. विश्व की कुल सड़क दुर्घटना में से कितने प्रतिशत हादसे भारत में होते हैं?
7. विश्व भर के कुल वाहनों में से कितने प्रतिशत वाहन भारत में हैं?
8. यातायात के प्रमुख नियमों को कितने भागों में विभक्त किया जा सकता है?
9. पैदल, साइकिल एवं रिक्शा चालकों को किस लेन में चलना चाहिए?
10. सड़क पर चलने के लिए यातायात का मूल मंत्र क्या है?
11. भारत में वर्ष 2011 की अवधि में लगभग कितनी सड़क दुर्घटनायें हुईं?
12. भारत में वर्ष 2011 में सड़क दुर्घटना में कितने लोगों की मृत्यु हुई?
13. सड़क दुर्घटना होने के दो कारण लिखिए।
14. लाल बत्ती का संकेत क्या है?

15. पीली बत्ती का संकेत क्या है?

16. हरी बत्ती का संकेत क्या है?

17. यातायात को सुगम बनाने हेतु कितने प्रकार के चित्र संकेत होते हैं?

18. यातायात के संकेत किसके द्वारा जारी किये जाते हैं?

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. यातायात का अर्थ है—
(अ) **आना और जाना** (ब) यात्रा करना
(स) दूर तक जाना (द) इनमें से कोई नहीं

2. विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार प्रतिवर्ष सड़क हादसे में कितने व्यक्तियों की मौत होती है?
(अ) 5 लाख से अधिक (ब) 7 लाख से अधिक
(स) **10 लाख से अधिक** (द) इनमें से कोई नहीं

3. सड़क पर चलने के लिए यातायात का मूल मन्त्र है—
(अ) रुकें (ब) देखें
(स) सुनें (द) **इनमें सभी**

4. भारत में वर्ष 2011 में कितनी दुर्घटनाएँ हुई हैं?
(अ) **4.9 लाख** (ब) 5.9 लाख
(स) 6.9 लाख (द) 7.9 लाख

5. लाल बत्ती का संकेत है—
(अ) **वाहन का रुकना** (ब) आगे बढ़ना
(स) चलने के लिए तैयार होना (द) इनमें से कोई नहीं

6. पीली बत्ती का संकेत क्या है?
(अ) **चलने के लिए तैयार होना**
(ब) रुकना
(स) चलिए
(द) इनमें से कोई नहीं

7. पैदल, साइकिल एवं रिक्शा चालकों को हमेशा किस लेन में चलना चाहिए?
(अ) दाहिने (ब) **बायें**
(स) आगे (द) पीछे

उत्तरमाला : 1. (अ) 2. (स) 3. (द) 4. (अ) 5. (अ) 6. (अ) 7. (ब)

टिप्पणी

बात

पित्त = पित्ताशय का रस। **सहवर्ती** = साथ रहनेवाला, सहचर। **बात** = वचन, शरीर में स्थित वायु। **जलबात** = जलवायु। **सम्भाषण** = बातचीत। **अशरफुल मखलूकात** = (सम्पूर्ण) जगत् में श्रेष्ठ। **शुकसारिकादि** = शुक (तोता) और सारिका (मैना) आदि। **नभचारी** = नभचर, आकाश में विचरण करनेवाला अर्थात् पक्षी। **कुरआन शरीफ** = इस्लाम धर्म का अरबी भाषा में लिखित ग्रन्थ। **कलामुल्लाह** = अल्लाह (ईश्वर) का कलाम (वचन)। **होली बाइबिल** = पवित्र बाइबिल, ईसाइयों की धार्मिक पुस्तक। **निरवयव** = बिना अवयव (अंग) का निराकार। **प्रेम सिद्धान्ती** = प्रेम द्वारा ईश्वर-प्राप्ति के सिद्धान्त में विश्वास करनेवाले (भक्त)। **अपाणिपादो जवनो ग्रहीता** = बिना हाथ-पैरवाला (होकर भी) गमन करनेवाला और ग्रहण करनेवाला अर्थात् ईश्वर। **शालिग्राम** = शालिग्राम, जल-प्रवाह से घिसी श्याम वर्ण की पत्थर की चिकनी बटिया जिसकी विष्णु के रूप में पूजा की जाती है। **द्योतन करना** = प्रकाशित करना। **गात माँहि बात करामात है** = शरीर में बात की ही करामात है। **अनुत्साह आदि** = (अन् + उत्साह + आदि) उत्साह का न होना आदि। **सहजतया** = सहज रूप से। निर्गत = निकली हुई। **कुराही** = बुरी राह पर चलनेवाले। **आधिपत्य** = अधिकार। **साध्य** = सिद्ध या प्राप्त किये जाने योग्य। **सहृदयगण** = कोमल चित्तवाले, रसिक। **सत्यसन्ध** = सत्य प्रतिज्ञ। **शऊर** = ढंग। **विदग्धालाप** = (विदग्ध + आलाप) विद्वत्तापूर्ण कथन। **अंगीकार** = स्वीकार।

मन्त्र

सिगार = एक विशेष प्रकार का मोटा तथा बड़ा सिगरेट, चुरुट। **गोल्फ** = विशेष प्रकार की स्टिक (छड़ी) और गेंद से खेला जानेवाला हॉकी से भिन्न एक पाश्चात्य खेल। **दुहाई** = संकट में रक्षा के लिए की गयी पुकार। **मर्मभेदी** = मर्म पर आघात करनेवाला जैसे मर्मभेदी बाण। **हुक्काम** = शासक या अधिकारीगण। **प्रहसन** = हास्य रसप्रधान नाटक। **रद्दा चढ़ाना** = व्यंग्यपूर्ण बात कहकर कुछ करने के लिए उकसाना। **प्रतिघात** = रुकावट, बाधा। **महुअर** = सँपेरे मदारियों द्वारा मुँह से बजाया जानेवाला बाजा, तुमड़ी। **प्यानो** = हारमोनियम से मिलता-जुलता एक पाश्चात्य वाद्य-यन्त्र। **बाकमाल** = आश्चर्यजनक कार्य कर दिखानेवाला। **कारसाज** = काम बना देनेवाला। **चेतना** = सामान्य मानसिक स्थिति। **उपचेतना** = अन्तर्मन। **ठूँठ रहना** = अप्रभावित रहना, स्तब्ध रह जाना। **ग्लानि** = पश्चाताप। **जीवन-पर्यन्त** = आजीवन।

गुरु नानकदेव

अनुष्ठान = किसी फल के निमित्त किसी देवता की की जानेवाली आराधना, शास्त्रविहित कर्म करना। **मृदु-मन्थर** = मधुर और धीमा। **उद्वेलित** = छलकता हुआ या ऊपर से बहता हुआ। **आविर्भाव** = अवतार लेना, प्रकट होना। **षोडशकला** = चन्द्रमा की सोलह कलाएँ। **कला** = छोटा अंश, चन्द्र मण्डल का सोलहवाँ भाग। **पार्थिव** = पृथ्वी से उत्पन्न वस्तुओं का बना हुआ। **आध्यात्मिक दृष्टि** = आत्मा-परमात्मा तथा जन्म-मृत्यु सम्बन्धी विचारधारा। **आगन्तुक** = अतिथि, आया हुआ। **मृतप्राय** = मृत–जैसा, मरणासन्न। **संजीवनी** = पुनर्जीवित करनेवाली एक कल्पित ओषधि। **लोकोत्तर** = लोक से परे, अलौकिक, दिव्य, जो इस लोक में नहीं होता है। **उपचार** = इलाज, उपाय, चिकित्सा, सेवा। **सन्धान** = ढूँढ़ने का काम, मिलाना। **उद्भासित** = जो सुन्दर रूप में प्रकट हुआ हो, सुशोभित, प्रकाशित। **आस्था** = किसी महान् या पूज्य अथवा देवता में होनेवाली विश्वासपूर्ण भावना। **निरीह** = इच्छारहित, विरक्त, भोला-भाला। **दुर्धर** = कठिनाई से धारण करने योग्य, प्रचण्ड, विकट। **क्षुद्र अहमिका** = क्षुद्र अहंकार। **सम्मुखीन** = सामने की। **अनुग्रह** = निःस्वार्थ भाव से किया जानेवाला उपकार या भलाई। **अमृतोपम** = अमृत के समान।

गिल्लू

अनायास = (अन् + आयास) बिना प्रयत्न के, अपने आप। **कागभुशुण्डि** = राम के एक भक्त जो शाप के कारण कौआ हो गये थे, रामचरितमानस में उल्लिखित है कि उन्होंने गरुड़ को राम की कथा सुनायी थी। प्रस्तुत पाठ में हास्य-व्यंग्य

का पुट देने के लिए 'कौए' के सामान्य अर्थ में इसका प्रयोग हुआ है। **अवमानित** = (अव + मानित) निम्न के अर्थ में 'अव' उपसर्ग का प्रयोग, अपमानित। **काकपुराण** = पुराण, लम्बी धार्मिक कथाओं से युक्त प्राचीन पुस्तकें हैं। ये 18 हैं। काकपुराण नाम का कोई पुराण नहीं है। इसका प्रयोग यहाँ काक-वृत्तान्त के अर्थ में हास्य-विनोद उत्पन्न करने के लिए हुआ है। **सुलभ** = आसानी से प्राप्त हुआ। **पीलाभ** = पीली कान्ति। **कार्यकलाप** = कार्यों का समूह, विविध कार्य। **गात** = गात्र, शरीर। **अपवाद** = जिस पर सामान्य नियम न लागू होते हों।

स्मृति

नारायण-वाहन = विष्णु की सवारी, पक्षियों का राजा गरुड़। **उद्वेग** = बेचैनी, घबराहट। **चरस** = चमड़े का बड़ा थैला जिससे बैलों की सहायता से कुएँ से पानी निकाला जाता है। **चक्षुःश्रवा** = साँप (चक्षु या आँख से सुननेवाला)। लोगों की गलत धारणा रही है कि साँप के कान नहीं होते वह आँख से ही सुनता है। **आकाश-कुसुम** = आकाश में फूल उगने-जैसा असम्भव कार्य। **गुंजल्क** = गोलाई में सिमटना। **विरोधी** = विपक्षी, मुकाबला करनेवाला। **मिथ्या** = असत्य।

निष्ठामूर्ति कस्तूरबा

सहधर्मचारिणी = धर्म या कर्त्तव्यों के निर्वाह में साथ देनेवाली। **एकाक्षरी** = एक अक्षरवाला। **आन्तरिक** = अन्दर का, हृदय सम्बन्धी, भीतरी। **दिव्य** = अलौकिक। **लोकोत्तर** = अलौकिक, दिव्य। **अमोघ** = निष्फल न होनेवाली, अचूक। **कृति** = कार्य, कर्म, रचना। **निर्भर्त्सना** = निन्दा। **आबदार (फारसी)** = पानीदार, कान्तिमान्। **विचिकित्सा** = सन्देह या भूल। **दाद** = (फारसी) न्याय। **स्मारक** = स्मरण हेतु बनायी गयी कोई रचना। **प्रत्युत्पन्नमति** = तुरन्त बुद्धि, जो परिस्थिति-विशेष में तुरन्त बुद्धि से काम लेता हो। **पातिव्रत्य** = पति सेवा का व्रत। **कृतार्थ** = धन्य। **कसौटी** = परीक्षा, जाँच।

ठेले पर हिमालय

खासा = विशेष। **दिलचस्प** = दिल को रमानेवाला, रुचिकर। **यकीन** = विश्वास। **तत्काल** = उसी समय। **एमिल जोला** = एक फ्रांसीसी उपन्यासकार। **बाइनाकुलर** = दोनों आँखों से देखने के लिए प्रयुक्त दूरबीन। **तन्द्रालस** = (तन्द्रा + अलस) थकावट के कारण आलसी। **अतुलित** = जिससे किसी की तुलना न हो सके। **अनासक्ति योग** = गाँधीजी की पुस्तक का नाम जो गीता की टीका है। **खिन्न** = दुःखी। **कत्यूर** = हिमालय की एक घाटी का नाम। **किन्नर** = संगीत-कला-प्रिय देवयोनि विशेष। **यक्ष** = ऐश्वर्य-प्रिय देवयोनि विशेष। **बेसाख्यता** = (फारसी) स्वाभाविक रूप से। **हर्षातिरेक** = (हर्ष + अतिरेक) अत्यधिक हर्ष। **ग्लेशियर** = बर्फ की नदी। **निरावृत्त** = (निर् + आवृत्त) खुला। **आसार** = सम्भावना। **ट्यूरिस्ट** = पर्यटक, यात्री। **पीर** = पीड़ा। **अन्तर्द्वन्द्व** = भावों का संघर्ष। **साधक** = ईश्वर-प्राप्ति की साधना करनेवाले। **शाश्वत** = सदा रहनेवाला। **अदम्य** = जिसे दबाया न जा सके, सबल। **कबहुँक** = कभी। **हौं** = मैं। **रहौंगो** = रहूँगा।

तोता

कायदा-कानून = नियम-कानून। **टोटा** = कमी। **अविद्या** = जिसके पास विद्या न हो अथवा विद्या विहीन। **खर-पात** = घास-फूस। **अनोखा** = अद्भुत। **दामी** = कीमती। **रवाना हो गया** = चल दिया। **अभाव** = कमी। **तत्काल** = तुरन्त। **चौंके** = आश्चर्यचकित। **निहारने लगना** = देखने लगना। **डैने** = पंख। **आकुल** = व्याकुल।

सड़क सुरक्षा एवं यातायात के नियम

यातायात = आना-जाना। **सुगम** = आसान। **खासतौर** = विशेष रूप से। **जख्मी होना** = चोटिल होना। **आत्मसात** = ग्रहण। **अनुसरण** = नकल। **मानवीय** = मानव सम्बन्धी। **आगाह** = सावधान। **आसानी** = सरलता। **गतिरोध** = बाधा। **अचानक** = एकाएक। **कोशिश** = प्रयास।

●●

हिन्दी काव्य

भूमिका

कविता क्या है?

काव्य उस छन्दोबद्ध एवं लयात्मक साहित्यिक रचना को कहते हैं, जो श्रोता या पाठक के मन में भावात्मक आनन्द की सृष्टि करती है। चिन्तन की अपेक्षा काव्य में भावनाओं की प्रधानता होती है। उसका उद्देश्य सौन्दर्य की अनुभूति से आनन्द की प्राप्ति है। आनुवंशिक रूप से कविता भाषा की भी समृद्धि करती है, किन्तु मूलतः वह आनन्द का साधन है। तर्क, युक्ति एवं चमत्कार मात्र का आश्रय न लेकर कवि रसानुभूति का समवेत प्रभाव उत्पन्न करता है। अतः कविता में यथार्थ का यथारूप चित्रण नहीं मिलता, वरन् यथार्थ को कवि जिस रूप में देखता है तथा जिस रूप में उससे प्रभावित होता है, उसी का चित्रण करता है। कवि का सत्य सामान्य सत्य से भिन्न प्रतीत होता है। वह इसी प्रभाव को दिखाने के लिए अतिशयोक्ति का सहारा भी लेता है। अतः काव्य में अतिशयोक्ति दोष न होकर अलंकार बन जाता है।

कविता के विषय

मूलतः मानव ही काव्य का विषय है। जब कवि पशु-पक्षी अथवा निसर्ग का वर्णन करता है, तब भी वह मानव-भावनाओं का ही चित्रण करता है। व्यक्ति और समाज के जीवन का कोई भी पक्ष काव्य का विषय बन सकता है। आज के कवि का ध्यान जीवन के सामान्य एवं उपेक्षित पक्ष की ओर भी गया है। उसके विषय महापुरुषों तक ही सीमित नहीं हैं, अपितु वह छिपकली, केचुआ आदि पर भी काव्य-रचना करने लगा है। उन्नत विषय, भाव, विचार एवं आदर्श जीवन का सन्देश कविता को स्थायी, महत्त्वपूर्ण और प्रभावकारी बनाने में अधिक समर्थ होते हैं।

कविता और संगीत

कविता छन्दबद्ध रचना है। छन्द उसे संगीत प्रदान करता है। छन्द की लय यति-गति, वर्णों की आवृत्ति, तुकान्त पदावली इस संगीत के प्रमुख तत्त्व हैं, किन्तु संगीत और काव्य के क्षेत्र अलग-अलग हैं। संगीत का आनन्द मूलतः नाद का आनन्द है, जबकि काव्य में मूल आनन्द अर्थ का है। कविता में नाद का सौन्दर्य अर्थ का ही अनुगामी होता है।

सादृश्य-विधान

कविता भाव-प्रधान होती है। अपने भावों को पाठक के हृदय तक पहुँचाने के लिए कवि वर्ण्य-विषयों के सदृश अन्य वस्तु-व्यापार प्रस्तुत करता है। जैसे कमल के सदृश नेत्र, चन्द्र-सा मुख, सिंह के समान वीर। इसी को सादृश्य विधान या अप्रस्तुत योजना कहते हैं।

शब्द-शक्ति

शब्द का अर्थ-बोध करानेवाली शक्ति ही शब्द-शक्ति है। शब्द और अर्थ का सम्बन्ध ही शब्द-शक्ति है। शब्द-शक्तियाँ तीन हैं—अभिधा, लक्षणा और व्यंजना। अभिधा से मुख्यार्थ का बोध होता है तथा मुख्यार्थ में बाधा होने पर लक्षणा का आश्रय लेना पड़ता है। अन्त में व्यंजना से अर्थ मिलता है। कवि का अभिप्रेत अर्थ मुख्यार्थ तक ही सीमित नहीं रहता। कविता का आनन्द लेने के लिए शब्दों के लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ तक पहुँचना आवश्यक होता है। कवि फूलों को हँसता हुआ और मुख को मुरझाया हुआ कहना पसन्द करते हैं, सामान्यतः हँसना मनुष्य के लिए प्रयुक्त होता है और मुरझाना फूल के लिए परन्तु, मुख्यार्थ जाने बिना हम लक्ष्यार्थ तथा व्यंग्यार्थ तक नहीं पहुँच सकते। कवि भी बड़ी सावधानी से शब्द-चयन करता है। कविता के शब्दों का आग्रह जिधर सहज रूप में पड़े, पाठक अथवा श्रोता को उधर अभिमुख होना चाहिए।

कविता के सौन्दर्य-तत्त्व

कविता के निम्नांकित सौन्दर्य-तत्त्व हैं—

(i) भाव-सौन्दर्य (ii) विचार-सौन्दर्य (iii) नाद-सौन्दर्य और (iv) अप्रस्तुत योजना का सौन्दर्य।

(i) भाव-सौन्दर्य—प्रेम, करुणा, क्रोध, हर्ष, उत्साह आदि का विभिन्न परिस्थितियों में मर्मस्पर्शी चित्रण ही भाव-सौन्दर्य है। भाव-सौन्दर्य को ही साहित्य-शास्त्रियों ने रस कहा है। प्राचीन आचार्यों ने रस को काव्य की आत्मा माना है।

शृंगार, वीर, हास्य, करुण, रौद्र, शान्त, भयानक, अद्भुत तथा वीभत्स—नौ रस कविता में माने जाते हैं। परवर्ती आचार्यों ने वात्सल्य और भक्ति को भी अलग रस माना है। सूर के बाल वर्णन में वात्सल्य का, गोपी-प्रेम में शृंगार का, भूषण की 'शिवा बावनी' में वीर रस का चित्रण है। भाव, विभाव और अनुभाव के योग से रस की सृष्टि होती है। रस का संक्षिप्त वर्णन परिशिष्ट-3 में दिया गया है।

(ii) विचार-सौन्दर्य—विचारों की उच्चता से काव्य में गरिमा आती है। गरिमापूर्ण कविताएँ प्रेरणादायक भी सिद्ध होती हैं। उत्तम विचारों एवं नैतिक मूल्यों के कारण ही कबीर, रहीम एवं तुलसी के नीति-परक दोहे और गिरधर की कुण्डलियाँ अमर हैं। इनसे जीवन की व्यावहारिक शिक्षा, अनुभव तथा प्रेरणा प्राप्त होती है।

आज की कविता में विचार-सौन्दर्य के प्रचुर उदाहरण मिलते हैं। गुप्तजी की कविता में राष्ट्रीयता और देश-प्रेम आदि का विचार-सौन्दर्य है। 'दिनकर' के काव्य में सत्य, अहिंसा एवं अन्य मानवीय मूल्य हैं। 'प्रसाद' की कविता में राष्ट्रीयता, संस्कृति और गौरवपूर्ण अतीत के रूप में विचारों का सौन्दर्य देखा जा सकता है। आधुनिक प्रगतिवादी और प्रयोगवादी कवि जन-साधारण का चित्रण, शोषितों एवं दीन-हीनों के प्रति सहानुभूति और शोषकों के प्रति विरोध आदि प्रगतिवादी विचारों का ही वर्णन करते हैं।

(iii) नाद-सौन्दर्य—कविता छन्द-बद्ध रचना है। छन्द नाद-सौन्दर्य की सृष्टि करता है। छन्द के द्वारा कविता में लय, तुक, गति और प्रवाह का समावेश होता है। वर्ण और शब्द के सार्थक और समुचित विन्यास से, कविता में नाद-सौन्दर्य और संगीतात्मकता आ जाती है जिससे कविता का सौन्दर्य बढ़ जाता है। यह सौन्दर्य श्रोता और पाठक के हृदय में आकर्षण पैदा कर देता है। वर्णों की बार-बार आवृत्ति (अनुप्रास), विभिन्न अर्थवाले एक ही शब्द के बार-बार प्रयोग (यमक) से भी कविता में नाद-सौन्दर्य का समावेश होता है, जैसे—

खग-कुल कुल कुल सा बोल रहा।
किसलय का अञ्चल डोल रहा॥

यहाँ पक्षियों के कलरव में नाद-सौन्दर्य को देखा जा सकता है। कवि ने शब्दों के माध्यम से नाद-सौन्दर्य के साथ पक्षियों के समुदाय और हिलते हुए पत्तों का चित्र भी प्रस्तुत कर दिया है। **'घन घमण्ड नभ गरजत घोरा'** अथवा **'कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि'** में मेघों का गर्जन-तर्जन तथा नूपुर की ध्वनि का सुमधुर स्वर क्रमशः है। इन दोनों ही स्थलों पर नाद-सौन्दर्य ने भाव को स्पष्ट भी किया है और नाद-बिम्ब को साकार कर भाव को गरिमा भी प्रदान की है।

बिहारी के निम्नलिखित दोहे में वायुरूपी कुंजर की चाल का वर्णन है। शब्दों की ध्वनि में हाथी के घण्टे की ध्वनि भी सुनायी पड़ती है। कवि की शब्द-योजना में चित्र साकार हो उठा है—

रनित भृंग घण्टावली झरित दान मधु नीर।
मन्द-मन्द आवतु चल्यो, कुंजर कुंज समीर॥

इसी प्रकार 'घनन-घनन बज उठी गरज तत्क्षण रणभेरी' में मानो रणभेरी प्रत्यक्ष ही बज उठी है। आदि, मध्य अथवा अन्त में तुकान्त शब्दों के प्रयोग से भी नाद-सौन्दर्य उत्पन्न होता है, उदाहरणार्थ—

ढलमल ढलमल चञ्चल अञ्चल झलमल झलमल तारा।

इन पंक्तियों में नदी का कल-कल निनाद मुखरित हो उठा है। पदों की आवृत्ति से भी नाद-सौन्दर्य में वृद्धि होती है, जैसे—

माई री वा मुख की मुस्कान सँभारि न जैहै न जैहै न जैहै।

अथवा

हमकौं लिख्यौ है कहा, हमकौं लिख्यौ है कहा।
हमकौं लिख्यौ है कहा, कहन सबैं लगीं॥

(iv) अप्रस्तुत योजना का सौन्दर्य—कवि विभिन्न दृश्यों, रूपों तथा तथ्यों को मर्मस्पर्शी और हृदय-ग्राही बनाने के

लिए अप्रस्तुतों का सहारा लेता है। अप्रस्तुत-योजना में यह आवश्यक है कि उपमेय के लिए जिस उपमान की, प्रकृत के लिए जिस अप्रकृत की और प्रस्तुत के लिए जिस अप्रस्तुत की योजना की जाय उसमें सादृश्य अवश्य हो। सादृश्य के साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि उसमें जिस वस्तु, व्यापार और गुण के सदृश जो वस्तु, व्यापार और गुण लाया जाय वह उसके भाव के अनुकूल हो। इन अप्रस्तुतों के सहयोग से कवि भाव-सौन्दर्य की अनुभूति सुलभ बनाता है। कवि कभी रूप-साम्य, कभी धर्म-सत्य और कभी प्रभाव-साम्य के आधार पर दृश्य-बिम्ब उभार कर सौन्दर्य व्यंजित करता है।

रूप-साम्य

करतल परस्पर शोक से, उनके स्वयं घर्षित हुए,
तब विस्फुरित होते हुए, भुजदण्ड यों दर्शित हुए।
दो पद्म शुण्डों में लिये, दो शुण्ड वाला गज कहीं,
मर्दन करे उनको परस्पर, तो मिले उपमा कहीं।

शुण्ड के समान ही भुजदण्ड भी प्रचण्ड है और करतल अरुण तथा कोमल है, यह प्रभाव आकार-साम्य से ही उत्पन्न हुआ है।

धर्म-साम्य

नवप्रभा परमोज्ज्वल लीक-सी गतिमती कुटिला फणिनी समा।
दमकती दुरती घन अंक में विपुल केलि कला खनि दामिनी।।

फणिनी (सर्पिणी) और दामिनी दोनों का धर्म कुटिल गति है, दोनों ही आतंक का प्रभाव उत्पन्न करती हैं।

भाव-साम्य

प्रिय पति, वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है?
दुःख जलनिधि डूबी का सहारा कहाँ है?
लख मुख जिसका मैं आज लौं जी सकी हूँ,
वह हृदय हमारा नेत्र तारा कहाँ है?

यशोदा की विकलता को व्यक्त करने के लिए कवि ने कृष्ण को दुःखरूपी जलनिधि में डूबी का सहारा, प्राण प्यारा, नेत्र तारा, हृदय हमारा कहा है।

अग्रलिखित पंक्तियों में सादृश्य द्वारा श्रद्धा के सहज सौन्दर्य का चित्रण किया गया है। मेघों के बीच जैसे बिजली तड़प कर चमक पैदा कर देती है, वैसे ही नीले वस्त्रों से घिरी श्रद्धा का सौन्दर्य देखनेवाले के मन पर प्रभाव डालता है—

नील परिधान बीच सुकुमार खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली का फूल मेघ बन बीच गुलाबी रंग।।

इसी प्रकार : **लता भवन ते प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ।**
निकसे जनु जुग बिमल विधु जलद पटल बिलगाइ।।

लता-भवन से प्रकट होते हुए दोनों भाइयों की उत्प्रेक्षा मेघ-पटल से निकलते हुए दो चन्द्रमाओं से की गयी है।

काव्यास्वादन

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है कि कविता का आस्वादन उसके अर्थ-ग्रहण में है। इसलिए पहले शब्दों का मुख्यार्थ समझना आवश्यक है। मुख्यार्थ समझने के लिए अन्वय करना भी आवश्यक है, क्योंकि कविता की वाक्य-संरचना में प्रायः शब्दों का वह क्रम नहीं रहता, जो गद्य में होता है। अतः अन्वय से शब्दों का परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है।

प्रक्रिया में शब्द के वाक्यार्थ के साथ-साथ उसमें निहित लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ भी स्पष्ट हो जाते हैं। कवि कभी-कभी कविता में ऐसे शब्दों का भी साभिप्राय प्रयोग करता है, जिनके स्थान पर उनके पर्याय नहीं रखे जा सकते। कभी-कभी एक शब्द के एकाधिक अर्थ होते हैं और सभी उस प्रसंग में लागू होते हैं, कभी एक ही शब्द अलग-अलग अर्थों में एकाधिक बार प्रयुक्त होता है। कभी विरोधी शब्दों का प्रयोग भाव-वृद्धि के लिए किया जाता है और कभी एक ही प्रसंग के कई शब्द एक साथ आते हैं। इस प्रकार के शब्दों की ओर ध्यान देना चाहिए और अपेक्षित अर्थ जानना चाहिए।

कविता के जिन तत्त्वों का उल्लेख किया गया है उनके सन्दर्भ में कविता के आस्वादन का प्रयास करना चाहिए।

काव्यास्वादन के लिए कविता को बार-बार मुखर रूप से पढ़ना आवश्यक है। काव्यास्वादन के लिए निम्नलिखित बातें सहायक हैं—

1. कविता के मूल भाव को समझकर अपने शब्दों में लिखना।

2. रस, अलंकार, गुण और छन्द आदि को समझकर कविता में इनकी उपयोगिता को हृदयंगम करना।

3. अच्छे भाववाले पदों को कण्ठस्थ करना और उनका मुखर पाठ करना।

काव्य के भेद

काव्य के मुख्य दो भेद हैं—श्रव्य काव्य और दृश्य काव्य। श्रव्य काव्य वह काव्य है जो कानों से सुना जाता है। दृश्य काव्य वह है जो अभिनय के माध्यम से देखा-सुना जाता है, जैसे नाटक।

श्रव्य काव्य के दो भेद हैं—प्रबन्ध काव्य और मुक्तक काव्य। प्रबन्ध काव्य के अन्तर्गत महाकाव्य, खण्डकाव्य और आख्यानक गीतियाँ आती हैं।

मुक्तक काव्य के भी दो भेद हैं—पाठ्य मुक्तक तथा गेय मुक्तक।

प्रबन्ध काव्य

(i) महाकाव्य

महाकाव्य में जीवन का व्यापक रूप में चित्रण होता है। इसकी कथा इतिहास प्रसिद्ध होती है। इसका नायक उदात्त और महान् चरित्रवाला होता है। इसमें वीर, शृंगार और शान्त रस में से कोई एक रस प्रधान तथा शेष रस गौण रहते हैं। महाकाव्य सर्गबद्ध होता है तथा इसमें कम-से-कम आठ सर्ग होते हैं। महाकाव्य की कथा में धारावाहिता तथा हृदय को भाव-विभोर करनेवाले मार्मिक प्रसंगों का समावेश भी होना चाहिए।

आधुनिक युग के महाकाव्य में प्राचीन प्रतिमानों में परिवर्तन हुआ है। इतिहास के स्थान पर मानव-जीवन की कोई भी घटना, कोई भी समस्या इसका विषय हो सकती है। महान् पुरुष के स्थान पर समाज का कोई भी व्यक्ति इसका नायक हो सकता है परन्तु, उस पात्र में क्षमता का होना अनिवार्य है। हिन्दी के कुछ प्रसिद्ध महाकाव्य हैं—**पद्मावत, रामचरितमानस, साकेत, प्रिय-प्रवास, कामायनी, उर्वशी, लोकायतन।**

(ii) खण्डकाव्य

खण्डकाव्य में जीवन के व्यापक चित्रण के स्थान पर उसके किसी एक पक्ष अथवा रूप का संक्षिप्त चित्रण होता है। पर खण्डकाव्य महाकाव्य का संक्षिप्त रूप अथवा एक सर्ग नहीं है। खण्डकाव्य में अपनी पूर्णता होती है। सम्पूर्ण रचना में प्रायः एक ही छन्द प्रयुक्त होता है।

पंचवटी, जयद्रथ-वध, नहुष, सुदामा-चरित, पथिक, गंगावतरण, हल्दीघाटी हिन्दी के कुछ प्रसिद्ध खण्डकाव्य हैं।

(iii) आख्यानक गीतियाँ

महाकाव्य और खण्डकाव्य से भिन्न पद्यबद्ध कहानी का नाम आख्यानक गीति है। इसमें वीरता, साहस, पराक्रम, बलिदान, प्रेम और करुणा आदि के प्रेरक घटना-चित्रों से कथा कही जाती है। इसकी भाषा सरल, स्पष्ट और रोचक होती है। गीतात्मकता और नाटकीयता इसकी विशेषताएँ हैं। **झाँसी की रानी, रंग में भंग, विकट भट** आदि रचनाएँ आख्यानक गीतियों में आती हैं।

मुक्तक काव्य

मुक्तक काव्य महाकाव्य और खण्डकाव्य से भिन्न प्रकार का होता है। इसमें एक अनुभूति, एक भाव या कल्पना का चित्रण होता है। इसमें महाकाव्य या खण्डकाव्य जैसी धारावाहिता न होने पर भी इनका वर्ण्य-विषय अपने में पूर्ण होता है। प्रत्येक छन्द स्वतन्त्र होता है। जैसे—**बिहारी, कबीर, रहीम के दोहे** तथा **सूर** और **मीरा के पद**।

(i) पाठ्य मुक्तक

इसमें विषय की प्रधानता रहती है। किसी में किसी प्रसंग को लेकर भावानुभूति का चित्रण होता है और किसी में किसी विचार अथवा रीति का वर्णन किया जाता है। कबीर, तुलसी, रहीम के भक्ति एवं नीति के दोहे तथा बिहारी, मतिराम, देव आदि की रचनाएँ इसी कोटि में आती हैं।

(ii) गेय मुक्तक

इसे गीति या प्रगीति काव्य भी कहते हैं। यह अंग्रेजी के लिरिक का समानार्थक है। इसमें भावप्रवणता, आत्माभिव्यक्ति, सौन्दर्यमयी कल्पना, संक्षिप्तता, संगीतात्मकता की प्रधानता होती है।

हिन्दी पद्य साहित्य का इतिहास

हिन्दी पद्य साहित्य के इतिहास को विद्वानों ने मुख्यतः चार भागों में बाँटा है। यह विभाजन युग-विशेष की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों के आधार पर किया गया है जो इस प्रकार है—

1. आदिकाल (वीरगाथा काल)	800 विक्रमी सं० से 1400 वि० सं० तक (सन् 743 ई० से 1343 ई० तक)
2. पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल)	1400 वि० सं० से 1700 वि० सं० तक (सन् 1343 ई० से 1643 ई० तक)
3. उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल)	1700 वि० सं० से 1900 वि० सं० तक (सन् 1643 ई० से 1843 ई० तक)
4. आधुनिक काल	1900 वि० सं० से अब तक (सन् 1843 ई० से आज तक)

(1) आदिकाल (सन् 743 ई० से 1343 ई० तक)

हिन्दी के प्रथम उत्थान काल को वीरगाथा काल, चारण काल आदि नाम भी दिये गये हैं। उस समय देश अनेक छोटे-छोटे राज्यों में बँटा हुआ था। इन राज्यों के राजपूत राजा आपस में लड़ते रहते थे। स्वभाव से ये राजा वीर, साहसी और विलासी थे। छोटी-छोटी बातों पर मन-मुटाव, ईर्ष्या तथा एक-दूसरे को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति के कारण प्रायः इनमें लड़ाइयाँ होती रहती थीं। मुसलमानों के आक्रमण भी इसी समय आरम्भ हो गये थे। इस समय वीर पुरुषों के यशोगान तथा वीरता का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन ही कविता का मुख्य विषय रहा। इस काल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ संक्षेप में इस प्रकार हैं—

1. आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा।
2. सामूहिक राष्ट्रीयता की भावना का अभाव।
3. युद्धों के सुन्दर और सजीव वर्णन।
4. वीर रस के साथ शृंगार का भी वर्णन।
5. ऐतिहासिक वृत्तों में कल्पना का प्राचुर्य।

आदिकाल की रचनाएँ दो रूपों में मिलती हैं—

(1) प्रबन्ध काव्य के रूप में।
(2) वीर-गीतों के रूप में।

प्रमुख कवियों तथा उनकी रचनाओं का विवरण इस प्रकार है—

1. दलपति विजय	**खुमाण रासो**	प्रबन्ध काव्य
2. चन्दबरदायी	**पृथ्वीराज रासो**	प्रबन्ध काव्य
3. शारंगधर	**हमीर रासो**	प्रबन्ध काव्य
4. नल्ल सिंह	**विजयपाल रासो**	प्रबन्ध काव्य
5. जगनिक	**परमाल रासो (आल्ह खण्ड)**	वीर गीत
6. नरपति नाल्ह	**बीसलदेव रासो**	वीर गीत
7. केदार भट्ट	**जयचन्द्र प्रकाश**	वीर गीत
8. मधुकर	**जयमयंक जसचन्द्रिका**	वीर गीत

वीर गीत काव्यों में सर्वाधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय काव्य आल्ह खण्ड है। जगनिक नामक भाट कवि द्वारा रचित इस काव्य में महोबा के दो प्रसिद्ध वीरों आल्हा तथा ऊदल (उदय सिंह) के वीर चरित का विस्तृत वर्णन है। यह बहुत ही लोकप्रिय

है और इसके गीत आज भी वर्षा ऋतु में उत्तर भारत के गाँव-गाँव में ढोलक की थाप के साथ गाये जाते हैं।

इस काल में कुछ शृंगार रस की तथा भक्ति की रचनाएँ भी हुईं, किन्तु प्रमुखता वीर रस के काव्यों की ही रही। विद्यापति, अब्दुल रहमान इस युग के अन्य प्रसिद्ध रचनाकार हैं।

रासो ग्रन्थों की भाषा

रासो ग्रन्थों की भाषा डिंगल है। यह वीर काव्यों के लिए अत्यन्त उपयुक्त है। भाव-व्यञ्जना के लिए इसमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, अरबी, फारसी, पंजाबी, ब्रज आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग खुलकर किया गया है। इसमें हृदय को स्पर्श करने की अद्भुत क्षमता है। इन ग्रन्थों में विविध छन्दों का प्रयोग मिलता है। दोहा, सोरठा, त्रोटक, तोमर, चौपाई, गाथा, आर्या, सट्टक, रोला, छप्पय, कुण्डलियाँ आदि छन्दों का कलात्मक प्रयोग हुआ है। इनमें रसोत्कर्ष की अपूर्व शक्ति है।

(2) भक्तिकाल (सन् 1343 ई0 से 1643 ई0 तक)

आदिकाल के समाप्त होते-होते देश में राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियाँ बदल गयीं। मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर परस्पर लड़ते रहनेवाले छोटे-छोटे राजा भी अब न रहे। इसी परिवर्तित परिस्थिति में भक्ति-भावना का उदय हुआ। 14वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इस भक्ति-भावना ने हिन्दी काव्य को विशेष रूप से प्रभावित किया और भक्ति की कई शाखाओं का विकास हुआ। अध्ययन की सुविधा के लिए इस काल के काव्य को दो शाखाओं में विभाजित किया जाता है—निर्गुण शाखा तथा सगुण शाखा। प्रथम की ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी तथा द्वितीय की रामाश्रयी और कृष्णाश्रयी दो-दो उपशाखाएँ हैं।

भक्ति काव्य

- निर्गुण भक्ति काव्यधारा
  - ज्ञानमार्गी काव्य
  - प्रेममार्गी काव्य
- सगुण भक्ति काव्यधारा
  - राम काव्य
  - कृष्ण काव्य

(i) निर्गुण भक्ति शाखा—इसमें ब्रह्म (ईश्वर) के निराकार स्वरूप की उपासना की विधि अपनायी गयी। इसकी ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि **कबीरदास** हैं। अन्य प्रसिद्ध कवियों में **सन्त रैदास** (रविदास), **नानक, दादू, मलूकदास, धर्मदास** और **सुन्दरदास** हैं। इन भक्तों ने साधना के सहज मार्ग को अपनाया तथा जाति-पाँति, तीर्थ-व्रत आदि बाह्याडम्बरों का विरोध किया। इनकी रचनाओं में साहित्यिक सौन्दर्य चाहे उतना अधिक न हो किन्तु भाव की दृष्टि से वे अत्यन्त समृद्ध व प्रभावोत्पादक हैं। इनकी भाषा पंचमेल सधुक्कड़ी है।

निर्गुण शाखा की दूसरी उपशाखा प्रेमाश्रयी के नाम से प्रसिद्ध है। इसे पल्लवित करने का श्रेय सूफी मुसलमान कवियों को है। इन कवियों ने लोक-प्रचलित हिन्दू राजकुमारों तथा राजकुमारियों की प्रेम-गाथाओं को फारसी की मसनवी शैली में बड़े सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है। इनकी कविताएँ दोहा तथा चौपाई छन्दों में हैं। प्रेम की पीर, विरह वेदना की तीव्रता, कथा की रोचकता और कल्पना तथा इतिहास का समन्वय इन सूफी कवियों की प्रमुख विशेषताएँ हैं। इस शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि मलिक मुहम्मद जायसी हैं, जिनका पद्मावत (आख्यान काव्य) हिन्दी साहित्य का एक रत्न है। इस परम्परा का यह सबसे अधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसकी कहानी में इतिहास तथा कल्पना का योग है। चित्तौड़ की महारानी पद्मिनी या पद्मावती तथा राजा रत्नसेन की कहानी इसमें प्रस्तुत की गयी है। इसमें लौकिक आख्यान द्वारा पारलौकिक प्रेम की व्यञ्जना है। जायसी कृत पद्मावत की भाषा अवधी है। **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** के शब्दों में– "अवधी की खालिस, बेमेल मिठास के लिए पद्मावत बराबर याद किया जायगा।"

कुतबन कृत '**मृगावती**', मंझन कृत '**मधुमालती**', उस्मान कृत '**चित्रावली**', शेख नबी कृत '**ज्ञानदीप**', कासिमशाह कृत '**हंस-जवाहिर**' तथा नूर मुहम्मद कृत '**इन्द्रावती**' अन्य प्रमुख प्रेमाख्यानक काव्य हैं।

(ii) सगुण भक्ति-शाखा—निर्गुण उपासना के अन्तर्गत ईश्वर के निराकार रूप को माना गया है। अवतार-भावना अथवा ईश्वर के सुन्दर मधुर रूप के लिए उसमें अवकाश न था। 11वीं शताब्दी में स्वामी रामानुजाचार्य भक्ति के क्षेत्र में अवतार-भावना को प्रतिष्ठित कर चुके थे। उन्हीं की शिष्य-परम्परा में 15वीं शताब्दी में स्वामी रामानन्द जी हुए, जिन्होंने जनता की

चित्तवृत्तियों को समझने का प्रयास किया। इन्होंने जनता के बीच राम-भक्ति का प्रचार किया। रामानन्द जी की शिष्य परम्परा में गोस्वामी तुलसीदास जी हुए, जिन्होंने दशरथ-पुत्र मर्यादा-पुरुषोत्तम श्रीराम का शक्ति-शील-सौन्दर्य समन्वित रूप रामचरितमानस महाकाव्य में प्रस्तुत किया। राम-भक्ति की यह पावन मन्दाकिनी न जाने कितनों के मन का कल्मष बहा ले गयी। तुलसीदास जी द्वारा स्थापित लोक-आदर्श और राम-राज की महान् कल्पना भारतीय समाज को ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व को एक बड़ी देन है।

यह महाकाव्य अवधी में लिखा गया है और इसमें जायसी द्वारा अपनायी गयी दोहा-चौपाई शैली का परिष्कृत साहित्यिक रूप मिलता है। रामचरितमानस की कथा का मूल स्रोत वाल्मीकि रामायण है। इस महाकाव्य में जीवन की सर्वांगीणता है। रचना-कौशल, प्रबन्ध-पटुता, भाव-प्रवणता, रस, रीति, अलंकार, छन्द आदि सभी दृष्टियों से यह उत्कृष्ट काव्य-कृति है। तुलसीदास की रचना का उद्देश्य लोक-मंगल की साधना है। उन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामचन्द्र के लोक-संग्रही चरित्र को काव्य का विषय बनाकर भारतीय संस्कृति, समाज और साहित्य को शक्ति प्रदान की।

सगुणोपासना की दूसरी शाखा कृष्णाश्रयी शाखा कहलाती है। इसके अन्तर्गत श्रीकृष्ण की पूर्ण ब्रह्म के रूप में प्रतिष्ठा हुई। कृष्ण भक्ति के प्रवर्तन का श्रेय श्री वल्लभाचार्य को है। ये अपने आराध्य श्रीकृष्ण की जन्म-भूमि में रहे और इन्होंने गोवर्धन पर्वत पर श्रीनाथ जी का एक बड़ा मन्दिर बनवाया। कृष्ण भक्ति-शाखा के सर्वोत्कृष्ट कवि सूरदास हैं, जिन्होंने कृष्ण-लीला के मधुर पद गाकर प्रेम और संगीत की ऐसी धारा बहायी जिसमें डुबकी लगाकर जनता का हृदय आनन्दमग्न हो गया। सूरदास कृत **'सूर-सागर'** हिन्दी साहित्य की अक्षय निधि है। **'साहित्य लहरी'** और **'सूर-सारावली'** भी इन्हीं की रचनाएँ कही जाती हैं। सूर-सागर के अन्तर्गत सवा लाख पद रचने की बात कही गयी है, पर लगभग दस हजार ही पद मिलते हैं। इसमें विनय, बाल-लीला, गोचारण, गोपी-प्रेम, भ्रमर-गीत आदि से सम्बन्धित बड़े ही सूक्ष्म-भाव चित्र पाये जाते हैं। कृष्ण-भक्त कवियों में सूरदास के अतिरिक्त **नन्ददास, परमानन्ददास, कृष्णदास, कुंभनदास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी** तथा **गोविन्द स्वामी** हैं। आठ कवियों के इस समुदाय को अष्टछाप कहते हैं। अन्य अनेक कृष्णभक्त कवियों में मीराबाई और रसखान विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

सामान्य प्रवृत्तियाँ

ईश्वर में सहज विश्वास, उसकी दीन-वत्सलता, नाम-स्मरण की महत्ता, जप, कीर्त्तन, भजन का अवलम्बन, गुरु की महत्ता, अहंकार का त्याग, जाति-पाँति का विरोध, लोक-मंगल की भावना, सन्त-जीवन का आदर्श, सरलता, निस्पृहता, परोपकार तथा प्रेम-महिमा आदि भक्तिकाल की सामान्य प्रवृत्तियाँ हैं।

भक्तिकाल की साहित्यिक देन

भक्तिकाल में कबीर, जायसी, सूर, तुलसी जैसे रस-सिद्ध कवियों और महात्माओं की दिव्य वाणी उनके अन्तःकरणों से निकल कर देश के कोने-कोने में फैली थी। भाव, भाषा एवं शिल्प सभी दृष्टियों से हिन्दी साहित्य का यह उत्कर्ष काल माना जाता है। सन्त कवियों ने अपना सन्देश बड़ी स्पष्टता तथा निर्भीकता से जनता के समक्ष प्रस्तुत किया। ऐसा साहित्य किसी विशेष देश या काल का ही नहीं, अपितु, सार्वभौम एवं सार्वकालिक होता है। भक्तिकाल के काव्य में भाव तथा कला-पक्ष का उत्कृष्ट रूप मिलता है। इसी कारण इस काल को हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है।

(3) रीतिकाल (सन् 1643 ई0 से 1843 ई0 तक)

16वीं-17वीं शताब्दी तक इस देश में मुगल साम्राज्य पूर्णतः प्रतिष्ठित हो चुका था। वह वैभव के शिखर पर था। जन-जीवन भी सुख-शान्ति-पूर्ण था। साहित्य पर इस परिस्थिति का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। जो कृष्ण और राधा भक्ति के आलम्बन थे, वही अब शृंगार के आलम्बन बन गये। इसके अतिरिक्त एक और परिवर्तन आया। कवियों का ध्यान साहित्यशास्त्र की ओर गया और उन्होंने रस, अलंकार, छन्द, नायक-नायिका आदि के उदाहरण रूप में कविताओं की रचना की। इस प्रकार की रचनाओं को रीति ग्रन्थ या लक्षण ग्रन्थ कहा जाता है। इस काल में ऐसी रचनाएँ अधिक हुईं, इसी कारण इसे रीतिकाल कहा जाता है।

रीति ग्रन्थ दो रूपों में मिलते हैं। एक वे जो अलंकार पर आधारित हैं और दूसरे वे जो रस पर। यहाँ संस्कृत की ही परम्परा का पालन दिखायी पड़ता है। केशव, भूषण और राजा यशवन्त सिंह अलंकारवादी आचार्य कवि थे। मतिराम, देव और पद्माकर रसवादी कवि थे। रसवादी कवियों ने शृंगार रस के अन्तर्गत नायक-नायिकाओं की मनोदशाओं का विशद् वर्णन किया

है। कुछ ऐसे भी उत्कृष्ट कवि हुए हैं जिनकी रचनाएँ रीतिबद्ध नहीं हैं। बिहारी और घनानन्द के नाम इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय हैं। शृंगार के अतिरिक्त इस काल में कुछ भक्ति, नीति तथा वीर काव्य की भी रचना हुई। भूषण, गोरेलाल और सूदन वीर रस के कवि थे। वृन्द, गिरधर और दीनदयाल गिरि नीतिपरक रचनाओं के लिए प्रसिद्ध हैं। प्रकृति-चित्रण करनेवाले कवियों में सेनापति का नाम प्रसिद्ध है। इस काल के प्रमुख कवि तथा उनकी रचनाएँ निम्नांकित हैं—

केशव	:	**रामचन्द्रिका, कविप्रिया।**
भूषण	:	**शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक।**
मतिराम	:	**रसराज, ललित-ललाम, सतसई।**
बिहारी	:	**सतसई।**
पद्माकर	:	**पद्माभरण, जगद्विनोद, गंगालहरी।**

रीतिकाल के कवि प्रायः राजाश्रय में रहते थे, इसलिए इनकी रचनाओं में अपने आश्रयदाताओं की प्रशस्ति भी मिलती है।

प्रमुख प्रवृत्तियाँ—रीति ग्रन्थों का निर्माण, शृंगार रस की प्रमुखता, काव्य भाषा के रूप में ब्रजभाषा की प्रतिष्ठा और व्यापक प्रसार, सवैया और दोहा छन्दों का प्रचुर प्रयोग, प्रकृति का उद्दीपन रूप में चित्रण, आश्रयदाताओं की प्रशंसा, कला पक्ष की प्रधानता आदि इस काल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं।

रीतिकाल की देन—इस युग की प्रमुख देन यह है कि ब्रजभाषा, काव्य-भाषा के रूप में व्यापक रूप से प्रतिष्ठित हुई है। अर्थ-गौरव, चमत्कार, लाक्षणिकता, सूक्ष्म भावाभिव्यञ्जन आदि की दृष्टि से वह पूर्ण समर्थ भाषा बन गयी। घनानन्द की लाक्षणिकता तो अद्वितीय है। कवित्त, सवैया और दोहा मुक्तक काव्य-रचना के लिए सिद्ध छन्द बन गये।

(4) आधुनिक काल (सन् 1843 ई० से आज तक)

हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल अधिकतर विद्वानों ने सं० 1900 वि० से माना है। आधुनिक काल, गद्य काल, नवीन विकास का काल, पुनर्जागरण काल आदि इस काल के कुछ प्रमुख नाम हैं। हिन्दी काव्य के आधुनिक काल को भारतेन्दु, द्विवेदी, छायावादी धारा तथा नयी कविता के युगों में क्रमशः विभाजित किया गया है।

भारतेन्दु युग—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आधुनिक साहित्य के जन्मदाता माने जाते हैं। रीतिकाल में कवियों का नाता जन-जीवन से टूट चुका था। भारतेन्दु युग के कवियों ने इस सम्पर्क को फिर स्थापित किया और जन-भावना को वाणी दी। इस युग में खड़ीबोली गद्य की भाषा तो बन चुकी थी, किन्तु काव्य के क्षेत्र में ब्रज-भाषा की ही प्रधानता रही। काव्य-विषय की दृष्टि से भी नवीनता आयी। गद्य के क्षेत्र में जहाँ नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध और आलोचना आदि का विकास हुआ, वहाँ काव्य के क्षेत्र में स्वदेश-प्रेम, समाज-सुधार, प्रकृति-चित्रण आदि विषयों का समावेश हुआ।

द्विवेदी युग—महावीरप्रसाद द्विवेदी के अवतरित होते ही खड़ीबोली का आन्दोलन बड़े जोरों से चला। द्विवेदीजी से प्रेरणा पाकर अनेक तरुण कवियों ने खड़ीबोली में काव्य-रचना आरम्भ की। श्रीधर पाठक, मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मुकुटधर पाण्डेय, लोचनप्रसाद पाण्डेय, रामनरेश त्रिपाठी, रामचरित उपाध्याय आदि कवियों ने खड़ीबोली में काव्य-रचना की। मैथिलीशरण गुप्त ने **'साकेत'** तथा 'हरिऔध' ने **'प्रियप्रवास'** नामक महाकाव्य की रचना इसी युग में की। गुप्तजी ने अपने खण्डकाव्यों की भी रचना की। इस युग की कविता इतिवृत्तात्मक तथा वर्णन-प्रधान थी। खड़ीबोली को समृद्ध और गतिशील बनाने का बहुत कुछ श्रेय आचार्य द्विवेदी को ही है और इसी कारण इस युग का नाम द्विवेदी युग पड़ा।

छायावादी युग—द्विवेदी युग के बाद छायावाद का युग आया। ऐसा लगता है मानो विदेशी शासन के अत्याचारों, नैतिकता की कठोरता से जकड़े हुए नियमों तथा आर्थिक कष्टों से उत्पन्न कवियों का विक्षोभ और असन्तोष वर्तमान से दूर किसी काल्पनिक संसार में जाने के लिए मचल उठा। वास्तव में छायावादी काव्य द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता की प्रतिक्रिया थी। प्रसाद, पन्त, निराला और महादेवी छायावाद के प्रमुख कवि हैं।

वैयक्तिक अनुभूति की प्रबलता (आत्म-परक रचनाएँ), सौन्दर्य-भावना, शृंगार और प्रेम, वेदना, करुणा और नैराश्य की भावना, प्रकृति का मानवीकरण, रहस्य भावना इस युग की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं। छायावादी काव्य में अनुभूति एवं भावुकता के साथ चिन्तन की भी प्रधानता है। जीवन की चिरन्तन समस्याओं पर भी इस युग के कवियों ने अपने विचार व्यक्त किये हैं। मानवतावाद तथा देश-प्रेम की भावना भी इस काल के काव्य में मिलती है।

छायावादी युग प्रधानतः मुक्तक गीतों का युग है। ये मुक्तक गीत गेय तथा संगीतात्मक हैं। निराला और महादेवी के काव्य

में गीत का सुन्दर विधान है। रामकुमार वर्मा के गीत भी लोकप्रिय हुए हैं। चित्रमयी कल्पना तथा लाक्षणिक प्रतीकात्मक शैली को अपनाकर छायावादी कवियों ने कविता को सजीव और सरस बना दिया। भावानुकूल छन्द चयन करने में भी इन्होंने अपनी मौलिकता का प्रदर्शन किया है। अलंकारों के प्रयोग में भी नवीनता है। मानवीकरण तथा विशेषण-विपर्यय जैसे नये अलंकारों का प्रयोग है। भाषा (खड़ीबोली) को सँवारने, उसमें ब्रज भाषा जैसा लोच और सरसता लाने, उसकी अभिव्यञ्जना-शक्ति बढ़ाने का सम्पूर्ण श्रेय इस युग को है।

प्रगतिवादी युग—द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता, आदर्श और नैतिकता के विरुद्ध विद्रोह छायावादी काव्य में हुआ था किन्तु छायावादी काव्य में सूक्ष्म और वायवीय कल्पनाओं की इतनी अतिशयता हो गयी कि स्थूल जगत् की कठोर वास्तविकता से उसका कोई सम्बन्ध ही न रह गया। फलतः प्रगतिवादी कविता में छायावादी कविता की सूक्ष्मता और अतिकाल्पनिकता के प्रति विद्रोह हुआ। प्रगतिवादी कवि स्थूल जगत् की वास्तविकता की ओर लौटा। कार्ल मार्क्स के साम्यवाद को आधार बनाकर रोटी-कपड़ा-मकान की समस्या और मजदूरों-किसानों की दयनीय दशा को कविता का विषय बनाया गया। इन कवियों ने पूँजीवाद के विरुद्ध आवाज उठायी। सीधी-सादी अनलंकृत भाषा में अपनी बात कह देना इनकी विशेषता है। प्रगतिवादी कवियों में पन्त, निराला, दिनकर, भगवतीचरण वर्मा, नरेन्द्र शर्मा, अंचल, रामविलास शर्मा, शिवमंगल सिंह 'सुमन', नागार्जुन और केदारनाथ अग्रवाल मुख्य हैं। इनमें से कुछ कवियों की कविताओं में सामाजिक क्रान्ति का स्वर अधिक प्रखर है। प्रगतिवादी कवियों ने छन्द के बन्धन को अनिवार्य नहीं माना।

प्राचीन रूढ़ियों और मान्यताओं का विरोध, मानवतावादी प्रवृत्ति, शोषक वर्ग के प्रति घृणा और शोषितों के प्रति सहानुभूति, विद्रोह एवं क्रान्ति की भावना, समाज का यथार्थवादी चित्रण, नारी के प्रति परिवर्तित दृष्टिकोण आदि इस प्रगतिवादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं।

प्रयोगवादी धारा एवं नयी कविता का युग

प्रयोगवाद का आरम्भ 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित तथा सन् 1943 ई० में प्रकाशित **'तारसप्तक'** संकलन से माना जाता है। तारसप्तक में सप्त कवियों की रचनाएँ हैं। इन्हें अज्ञेय ने 'राहों का अन्वेषी' कहा था। ये सन्त कवि थे—अज्ञेय, गजाननमाधव मुक्तिबोध, नेमिचन्द्र, भारतभूषण, प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माथुर तथा रामविलास शर्मा। सन् 1951 ई० में **दूसरा सप्तक** प्रकाशित हुआ जिसके सात कवि थे—भवानीप्रसाद मिश्र, शकुन्तला माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेर बहादुर, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय तथा धर्मवीर भारती। सन् 1959 ई० में **तीसरा सप्तक** भी प्रकाशित हुआ। प्रयोगवाद के समर्थन में कुछ पत्र-पत्रिकाएँ भी निकलीं। कुछ प्रयोगवादी कवियों के कविता-संग्रह भी प्रकाशित हुए। अज्ञेय रचित **हरी घास पर क्षण भर, सुनहरे शैवाल, इन्द्रधनु रौंदे हुए ये, आँगन के पार द्वार,** भवानीप्रसाद मिश्र कृत **गीत फरोश, खुशबू के शिलालेख,** गिरिजाकुमार माथुर कृत **धूप के धान, शिलापंख चमकीले,** धर्मवीर भारती कृत **ठण्डा लोहा, कनुप्रिया** आदि उल्लेखनीय हैं।

घोर वैयक्तिकता, अति यथार्थवादी दृष्टिकोण, कुण्ठा और निराशा के स्वर, गहन बौद्धिकता, भदेस (अनगढ़, विरूप) का चित्रण, विद्रोह का स्वर, व्यंग्य तथा कटूक्ति प्रयोगवादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं।

भाषा और शिल्प के क्षेत्र में इन कवियों ने नये प्रयोग किये हैं। साहित्यिक हिन्दी के साथ अंग्रेजी, उर्दू, बँगला तथा अन्य आंचलिक शब्दों का प्रयोग भी इन्होंने किया है। यह कविता मुक्तक शैली में रची गयी है। नवीन बिम्ब-योजना तथा नवीन उपमानों का प्रयोग (लालटेन से नयन-दीप, हड्डी के रंग वाला बादल, मजदूरिनी-सी रात आदि) भी इसकी विशेषता है। प्रयोगवादी कविता ने हिन्दी काव्य को एक नयी सशक्त भाषा दी है तथा उसकी अभिव्यञ्जना शक्ति में वृद्धि की है।

प्रयोगवादी धारा विकसित होकर नयी कविता के रूप में आयी। सन् 1943 से 1953 ई० तक की दस वर्षों की काव्यधारा में जो नवीनतम प्रयोग हुए, उन्हें कविता कहा जाता है। प्रयोगवादी कविता में भावाभिव्यक्ति प्रतीकों के माध्यम से हुई है और प्रतीकों का अत्यन्त सांकेतिक वर्णन मिलता है। मनुष्य के मन में यथार्थ को अभिव्यक्त करनेवाली प्रयोगवादी काव्यधारा सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' के नेतृत्व में प्रवाहित हुई।

नयी कविता की आधारभूत विशेषता है कि वह किसी भी दर्शन के साथ बँधी नहीं है और वर्तमान जीवन के सभी स्तरों के यथार्थ को नयी भाषा, नवीन अभिव्यञ्जना विधान और नूतन कलात्मकता के साथ अभिव्यक्त करने में संलग्न है। हिन्दी का यह नया काव्य कविता के परम्परागत स्वरूप से इतना अलग हो गया है कि इसे कविता न कहकर अकविता कहा जाने लगा है।

●●

हिन्दी पद्य-साहित्य के इतिहास से सम्बन्धित प्रश्न

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. किस काल को हिन्दी काव्य का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है?
2. निर्गुण काव्य-धारा की शाखाओं के नाम लिखिए।
3. सगुण काव्यधारा की शाखाओं के नाम लिखिए।
4. सगुण भक्ति-शाखा के दो कवियों के नाम, उनकी एक-एक रचनाओं के साथ लिखिए।
5. निर्गुण भक्ति-शाखा के दो कवियों के नाम, उनकी एक-एक रचनाओं के साथ लिखिए।
6. कबीर के अतिरिक्त दो प्रमुख सन्त कवियों के नाम लिखिए।
7. सूफी काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि का नाम लिखिए।
8. रामभक्ति काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि का नाम लिखिए।
9. सन्त काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि का नाम लिखिए।
10. कृष्णभक्ति काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि का नाम लिखिए।
11. रामभक्ति काव्य की रचना किन भाषाओं में हुई है?
12. आदिकाल के विभिन्न नाम बताइए।
13. पूर्व-मध्यकाल किस काल को कहते हैं?
14. आदिकाल की अवधि लिखिए।
15. आदिकाल की भाषा का नाम लिखिए।
16. वीरगाथा काल के प्रथम कवि का नाम लिखिए।
17. वीरगाथा काल को 'चारणकाल' क्यों कहा जाता है?
18. आदिकाल की कविता का प्रमुख विषय क्या रहा?
19. वीरगीत की दो रचनाओं के नाम लिखिए।
20. वीरगीत काव्यों में सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रन्थ कौन-सा है?
21. आदिकाल (वीरगाथा काल) के दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।
22. आदिकाल की दो प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए।
23. भक्तिकाल कब से कब तक माना जाता है।
24. भक्तिकाल की दो शाखाओं के नाम लिखिए।
25. भक्तिकाल के दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भक्तिकाल की सगुण शाखा की विशेषताएँ लिखिए।
2. ज्ञानाश्रयी (सन्त) काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
3. प्रेमाश्रयी (सूफी) काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
4. कृष्ण काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।
5. राम काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।
6. अष्टछाप से क्या तात्पर्य है? अष्टछाप से सम्बन्धित कवियों का नामोल्लेख कीजिए।
7. भक्तिकाल का परिचय अपने शब्दों में लिखिए।
8. अष्टछाप के चार प्रमुख कवियों के नाम एवं उनकी रचनाएँ लिखिए।
9. आदिकाल को वीरगाथा काल क्यों कहा जाता है?
10. आदिकाल (वीरगाथा काल) की 5 प्रमुख विशेषताओं को लिखिए।
11. वीरगाथा काल के प्रमुख कवियों और उनकी रचनाओं के नाम लिखिए।
12. भक्तिकाल के नामकरण के विषय में लिखिए।
13. भक्तिकाल की विभिन्न धाराओं का नामोल्लेख कीजिए।
14. भक्तिकाल के प्रमुख कवियों एवं उनकी रचनाओं के नाम लिखिए।
15. भक्तिकाल की प्रमुख विशेषताएँ (प्रवृत्तियाँ) लिखिए।
16. भक्तिकाल को हिन्दी काव्य का 'स्वर्ण युग' क्यों कहा जाता है?
17. भक्तिकाल की निर्गुण शाखा की विशेषताएँ लिखिए।

अध्ययन-अध्यापन

कविता का मुख्य उद्देश्य काव्य-सौन्दर्य की रसानुभूति द्वारा आनन्द प्राप्त कराना है। यह आनन्द मूलतः अर्थ का आनन्द है, जो कविता में अन्तर्निहित रहता है। कविता का अध्ययन-अध्यापन इस प्रकार होना चाहिए कि इस उद्देश्य की पूर्ति हो सके। इस संकलन का उद्देश्य भी केवल प्रस्तुत कविताओं के अध्ययन तक ही सीमित नहीं है, अपितु उनके माध्यम से छात्र-छात्राओं को हिन्दी काव्य-साहित्य की सामान्य जानकारी देना और काव्य के पठन-पाठन के प्रति रुचि उत्पन्न करना भी है।

कक्षा में कविता का प्रभावशाली मुखर-वाचन बहुत महत्त्वपूर्ण है। अध्यापक अपने आदर्श-वाचन से इसमें सहायता दे सकते हैं। कक्षा में अच्छा पढ़ने वाले छात्र आदर्श वाचन प्रस्तुत कर सकते हैं और शेष छात्र उनका अनुकरण कर सकते हैं। वाचन के साथ ही कविता का केन्द्रीय भाव उभर कर सामने आने लगता है। अध्यापक को प्रारम्भ में इस पर कुछ चर्चा करनी चाहिए। इस कविता की मूल प्रेरणा क्या है? कवि इस कविता में क्या कहना चाहता है? किन पंक्तियों में इस कविता का केन्द्रीय भाव छिपा है? आदि ऐसे प्रश्न हैं, जिनसे इस चर्चा में सहायता मिल सकती है।

कविता के पठन-पाठन से परोक्ष रूप में छात्रों का भाषा-ज्ञान भी बढ़ता है। परन्तु कविता-शिक्षण का मुख्य लक्ष्य भाषा सिखाना नहीं है। उसका लक्ष्य आनन्द की अनुभूति कराना है। शिक्षक और छात्र मिलकर इसी आनन्द की खोज करें। शब्दार्थ, व्याख्या, घटना-व्यापार, वैज्ञानिक सत्य, पशु-पक्षी स्वभाव तथा कथा-कहानी से सम्बन्धित ज्ञान से आगे बढ़ने पर ही वास्तविक कविता-शिक्षण का कार्य आरम्भ होता है। शिक्षण की सुविधा की दृष्टि से काव्य-सौन्दर्य को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है— अभिव्यक्ति का सौन्दर्य, भाव-सौन्दर्य और विचार-सौन्दर्य। अभिव्यक्ति के अन्तर्गत नाद और चित्रात्मकता का सौन्दर्य है। अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, प्रतीप आदि के बहाने वस्तु-व्यापारों के चित्र प्रस्तुत किये जाते हैं। लज्जा, शोक, उत्साह, वात्सल्य आदि के वर्णन भाव-सौन्दर्य के अन्तर्गत आते हैं। जीवन-दर्शन तथा नीति- सम्बन्धी रचनाओं में विचारों की प्रमुखता रहती है। नरोत्तम का सुदामाचरित भाव-प्रधान रचनाओं का उदाहरण है। कबीर और रहीम के दोहों में विचारों की प्रधानता है। शिक्षण-कार्य में इन्हीं आनन्द तत्त्वों की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहिए।

रसास्वादन की शिक्षा देना कठिन कार्य है। यदि शिक्षक का मन किसी कविता में नहीं रम सका, तो वह छात्रों में उस कविता के प्रति राग उत्पन्न करने में कभी सफल नहीं होगा। परन्तु जिस शिक्षक को काव्य से प्रेम है, उसके लिए भी काव्य शिक्षण का कोई सिद्ध सूत्र निर्धारित करना कठिन होगा। कुछ सामान्य सिद्धान्तों की ओर यहाँ संकेत किया जा रहा है—

(1) रसास्वादन की क्षमता प्रत्येक बालक में अलग-अलग मात्रा में होती है, अतः प्रत्येक छात्र से एक ही प्रकार की प्रतिक्रिया की आशा नहीं करनी चाहिए।

(2) उचित शिक्षण और अभ्यास से यह क्षमता बढ़ायी जा सकती है।

(3) कविता का सुपाठ कठिन कार्य है, अतः छात्रों द्वारा कविता-पाठ कराते समय विवेक से काम लेना चाहिए।

(4) शिक्षक के सुपाठ से भी मार्ग बहुत कुछ प्रशस्त हो जाता है। सुपाठ में व्यञ्जनों तथा स्वर वर्णों का उच्चारण पूर्ण स्पष्ट तथा शुद्ध हो। ब्रज और अवधी की रचना में भाषाओं की प्रकृति के अनुरूप ही उच्चारण हो। संगीत-तत्त्व को उभर आना चाहिए। शिक्षक की वाणी तथा भावभंगी रसानुकूल हो, जैसे—वीर रस में उत्साह, राष्ट्र-प्रेम में ओज और शान्त रस की रचना के पाठ में गाम्भीर्य अपेक्षित है। वाणी से छन्द की गति और अर्थ की अभिव्यक्ति स्पष्ट होनी चाहिए।

(5) कविता का सौन्दर्य उसके अर्थ में निहित रहता है और शब्द उस अर्थ को व्यक्त करते हैं। शब्दों के अर्थ, प्रसंगानुकूल अर्थ, वाक्य के शब्द-क्रम आदि से परिचित होना रसास्वादन का प्रथम सोपान है, अतः शिक्षक को कविता की पृष्ठभूमि, शब्दार्थ आदि से छात्रों को परिचित कराना चाहिए। आवश्यकतानुसार पदान्वय भी करा देना चाहिए क्योंकि बाहर से अर्थ का आरोपण करना उचित नहीं होगा। इसके बाद व्याख्या, प्रश्न, तुलना आदि से विचारों, भावों और कल्पनाओं को व्यवस्थित करना वांछनीय है।

(6) कक्षा का वातावरण आनन्दमय हो, बातचीत के ढंग में अकृत्रिमता और साहचर्य का भाव हो जिससे छात्र-छात्राएँ सहभागिता का अनुभव करें।

(7) सुपाठ, व्याख्या, प्रश्नोत्तर आदि छात्रों से रसानुभूति की अभिव्यक्ति करायी जाय। कण्ठाग्र करने और सुपाठ द्वारा करने से कविता के पठन-पाठन के लिए अनुकूल संस्कार बनते हैं।

पाठ-संचालन के निम्न सोपान प्रस्तावित किये जा सकते हैं—

(1) शिक्षक द्वारा सुपाठ।

(2) केन्द्रीय भाव-ग्रहण।

(3) शब्दार्थ एवं सूक्ष्म भाव तथा विचार-विश्लेषण। यह कार्य जितना सहयुक्त एवं सम्बद्ध रूप से चल सके, उतना ही उपयोगी होगा।

(4) व्याख्या एवं आस्वादन।

(5) बालकों द्वारा सुपाठ।

(6) कण्ठाग्र करना एवं अन्य साधनों द्वारा अभिव्यक्ति।

मुक्तक रचनाओं में प्रायः एक ही अन्विति रहती है, अतः सम्पूर्ण कविता को लेकर ही शिक्षण-कार्य करना चाहिए। प्रसाद जैसे आधुनिक कवियों की संकलित रचनाएँ इसी कोटि की हैं। दोहे, पद तथा मुक्तक छन्द भी इसी कोटि में आते हैं। लम्बी कविताओं को अन्वितियों में बाँटने की आवश्यकता भी होगी।

छात्रों के रसास्वादन में सहायता प्रदान करने और उसकी अभिव्यक्ति के लिए प्रत्येक पाठ के अन्त में प्रश्न-अभ्यास दिये गये हैं। शिक्षक को इनसे सहायता लेनी चाहिए और आवश्यकतानुसार प्रश्न तथा अभ्यास बना लेने चाहिए। छात्रों का ध्यान कवि की शैली की ओर भी आकर्षित किया जाय। कवि के सामान्य परिचय में कवि की भाषा-शैली तथा अन्य विशेषताएँ भी उदाहरण देकर बतायी जायँ और छात्रों को उसकी रचनाओं का परिचय देकर उन्हें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।

रस, अलंकार एवं छन्दों की सामान्य जानकारी होना भी कक्षा 9 के विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है। इसके लिए परिभाषा और उदाहरण कण्ठस्थ कर लेना मात्र पर्याप्त नहीं है। उदाहरण द्वारा यह स्पष्ट करा देना चाहिए कि काव्य-सौन्दर्य के बोध में इनका क्या योगदान है। शिक्षण-क्रम में भी इन सौन्दर्य तत्त्वों की ओर निरन्तर ध्यान आकर्षित करते रहना चाहिए।

हिन्दी काव्य साहित्य के इतिहास का सामान्य परिचय भी छात्रों को देना है। इसके अन्तर्गत विभिन्न काव्यों की सामान्य प्रवृत्तियों का ज्ञान, प्रमुख कवियों और उनकी प्रमुख रचनाओं से परिचय कराना अपेक्षित है। प्रमुख काव्य रूपों और विधाओं के विकास का सामान्य ज्ञान भी अपेक्षित होगा।

इस परिप्रेक्ष्य में पाठ्य-पुस्तक के कवियों के योगदान और उनके स्थान का भी संक्षिप्त विवेचन हो जाना चाहिए और उनके जीवन तथा उनकी रचनाओं का कुछ विस्तार के साथ अध्ययन आवश्यक है।

शिक्षण से सम्बन्धित सामान्य बातों का ही यहाँ पर संकेत किया गया है। स्थानीय परिस्थितियों और कार्य की सीमाओं को देखते हुए शिक्षकों को अपने विवेक का सहारा सदैव लेना पड़ेगा।

●●

1 कबीरदास

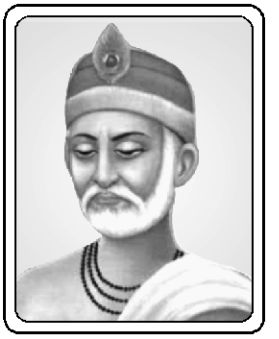

जीवन-परिचय—ऐसा माना जाता है कि महान् कवि एवं समाज-सुधारक महात्मा कबीर का जन्म काशी में सन् 1398 ई० (संवत् 1455 वि०) में हुआ था। 'कबीर पंथ' में भी इनका आविर्भाव-काल संवत् 1455 में ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा सोमवार के दिन माना जाता है। इनके जन्म-स्थान के सम्बन्ध में तीन मत हैं—काशी, मगहर और आजमगढ़। अनेक प्रमाणों के आधार पर इनका जन्म-स्थान काशी मानना ही उचित है।

भक्त-परम्परा में प्रसिद्ध है कि किसी विधवा ब्राह्मणी को स्वामी रामानन्द के आशीर्वाद से पुत्र उत्पन्न होने पर उसने समाज के भय से काशी के समीप लहरतारा (लहर तालाब) के पास फेंक दिया था, जहाँ से नूरी (नीरू) और नीमा नामक जुलाहा दम्पति ने उसे ले जाकर पाला-पोसा

और उसका नाम कबीर रखा। इस प्रकार कबीर पर बचपन से ही हिन्दू और मुस्लिम दोनों धर्मों के संस्कार पड़े। इनका विवाह 'लोई' नामक स्त्री से हुआ, जिससे कमाल और कमाली नाम की दो सन्तानें उत्पन्न हुईं। महात्मा कबीर के गुरु स्वामी रामानन्द जी थे, जिनसे गुरु-मन्त्र पाकर ये सन्त महात्मा बन गये।

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—संवत् 1455 वि०।
- **जन्म-स्थान**—काशी (उ० प्र०)।
- **गुरु**—स्वामी रामानन्द।
- **पत्नी**—लोई।
- **पुत्र**—कमाल।
- **पुत्री**-कमाली।
- भक्तिकाल के कवि।
- **रचनाएँ**—साखी, सबद, रमैनी।
- **मृत्यु**—संवत् 1575 वि०।

जीवन के अन्तिम दिनों में ये मगहर चले गये थे। उस समय यह धारणा प्रचलित थी कि काशी में मरने से व्यक्ति को स्वर्ग प्राप्त होता है तथा मगहर में मरने से नरक। समाज में प्रचलित इस अन्धविश्वास को दूर करने के लिए कबीर अन्तिम समय में मगहर चले गये थे। कबीर की मृत्यु के सम्बन्ध में अनेक मत हैं, लेकिन **कबीर परचई** में लिखा हुआ मत सत्य प्रतीत होता है कि बीस वर्ष में ये चेतन हुए और सौ वर्ष तक भक्ति करने के बाद मुक्ति पायी; अर्थात् कबीर ने 120 वर्ष की आयु पायी थी। संवत् 1455 से 1575 तक 120 वर्ष ही होते हैं। 'कबीर पंथ' के अनुसार इनका मृत्यु-काल संवत् 1575 माघ शुक्ल एकादशी बुधवार को माना जाता है। इनके शव का संस्कार किस विधि से हो, इस बात को लेकर हिन्दू-मुसलमानों में विवाद भी हुआ। हिन्दू इनका दाह-संस्कार करना चाहते थे और मुसलमान दफनाना। एक किंवदन्ती के अनुसार जब इनके शव पर से कफन उठाया गया तो शव के स्थान पर पुष्प-राशि ही दिखायी दी, जिसे दोनों धर्मों के लोगों ने आधा-आधा बाँट लिया और दोनों सम्प्रदायों में उत्पन्न विवाद समाप्त हो गया।

साहित्यिक सेवाएँ—कबीर को शिक्षा-प्राप्ति का अवसर नहीं प्राप्त हुआ था। उनकी काव्य-प्रतिभा उनके गुरु रामानन्द

जी की कृपा से ही जाग्रत हुई। अतः यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि इन्होंने स्वयं अपनी रचनाओं को लिपिबद्ध नहीं किया। अपने मन की अनुभूतियों को इन्होंने स्वाभाविक रूप से अपनी 'साखी' में व्यक्त किया है। अनपढ़ होते हुए भी कबीर ने जो काव्य-सामग्री प्रस्तुत की, वह अत्यन्त विस्मयकारी है। ये भावना की प्रबल अनुभूति से युक्त, उत्कृष्ट रहस्यवादी, समाज-सुधारक, पाखण्ड के आलोचक तथा मानवता की भावना से ओतप्रोत भक्तिकाल के कवि थे। अपनी रचनाओं में इन्होंने मन्दिर, तीर्थाटन, माला, नमाज, पूजा-पाठ आदि धर्म के बाहरी आचार-व्यवहार तथा कर्मकाण्डों की कठोर शब्दों में निन्दा की और सत्य, प्रेम, सात्विकता, पवित्रता, सत्संग, इन्द्रिय-निग्रह, सदाचार, गुरु-महिमा, ईश्वर-भक्ति आदि पर विशेष बल दिया।

रचनाएँ—कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे, इन्होंने स्वयं स्वीकार किया है—**'मसि कागद छुऔ नहीं, कलम गह्यौ नहिं हाथ।'** यद्यपि कबीर की प्रामाणिक रचनाओं और इनके शुद्ध पाठ का पता लगाना कठिन कार्य है, फिर भी इतना स्पष्ट है कि ये जो कुछ गा उठते थे, इनके शिष्य उसे लिख लिया करते थे। कबीर के शिष्य धर्मदास ने इनकी रचनाओं का **'बीजक'** नाम से संग्रह किया है, जिसके तीन भाग हैं—साखी, सबद, रमैनी।

(1) साखी—यह संस्कृत 'साक्षी' शब्द का विकृत रूप है और 'धर्मोपदेश' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। कबीर की शिक्षाओं और सिद्धान्तों का निरूपण अधिकतर 'साखी' में हुआ है। यह दोहा छन्द में लिखा गया है।

(2) सबद—यह गेय पद है, जिसमें पूरी संगीतात्मकता विद्यमान है। इसमें उपदेशात्मकता के स्थान पर भावावेश की प्रधानता है, क्योंकि कबीर के प्रेम और अन्तरंग साधना की अभिव्यक्ति हुई है।

(3) रमैनी—यह चौपाई एवं दोहा छन्द में रचित है। इसमें कबीर के रहस्यवादी और दार्शनिक विचारों को प्रकट किया गया है।

भाषा-शैली—कबीर की भाषा मिली-जुली भाषा है, जिसमें खड़ीबोली और ब्रजभाषा की प्रधानता है। इनकी भाषा में अरबी, फारसी, भोजपुरी, पंजाबी, बुन्देलखण्डी, ब्रज, खड़ीबोली आदि विभिन्न भाषाओं के शब्द मिलते हैं। कई भाषाओं के मेल के कारण इनकी भाषा को विद्वानों ने 'पंचरंगी मिली-जुली', 'पंचमेल खिचड़ी' अथवा 'सधुक्कड़ी भाषा' कहा है। कबीर ने सहज, सरल व सरस शैली में उपदेश दिये। यही कारण है कि इनकी उपदेशात्मक शैली क्लिष्ट अथवा बोझिल है। इसमें सजीवता, स्वाभाविकता, स्पष्टता एवं प्रवाहमयता के दर्शन होते हैं। इन्होंने दोहा, चौपाई एवं पदों की शैली अपनाकर, उनका सफलतापूर्वक प्रयोग किया। व्यंग्यात्मकता एवं भावात्मकता इनकी शैली की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

●●

साखी

सतगुरु हम सूँ रीझि करि, एक कह्या प्रसंग।
बरस्या बादल प्रेम का, भीजि गया सब अंग।।1।।

राम नाम के पटतरे, देबे कौं कछु नाहिं।
क्या ले गुर संतोषिए, हौंस रही मन माँहिं।।2।।

ग्यान प्रकास्या गुर मिल्या, सो जिनि बीसरि जाइ।
जब गोविन्द कृपा करी, तब गुरु मिलिया आइ।।3।।

माया दीपक नर पतंग, भ्रमि भ्रमि इवैं पड़ंत।
कहै कबीर गुर ग्यान थैं, एक आध उबरंत।।4।।

जब मैं था तब गुरु नहीं, अब गुरु हैं हम नाहिं।
प्रेम गली अति साँकरी, तामें दो न समाहिं।।5।।

भगति भजन हरि नावँ है, दूजा दुक्ख अपार।
मनसा बाचा कर्मनाँ, कबीर सुमिरण सार।।6।।

कबीर चित्त चमंकिया, चहुँ दिसि लागी लाइ।
हरि सुमिरण हाथूँ घड़ा, बेगे लेहु बुझाइ।।7।।

अंषड़ियाँ झाईं पड़ी, पंथ निहारि-निहारि।
जीभड़ियाँ छाला पड़्या, राम पुकारि-पुकारि।।8।।

झूठे सुख को सुख कहै, मानत हैं मन मोद।
जगत चबैना काल का, कछु मुख में कछु गोद।।9।।

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहिं।
सब अंधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहिं।।10।।

कबीर कहा गरबियौ, ऊँचे देखि अवास।
काल्हि पर्यूँ भ्वैं लोटणाँ, ऊपरि जामै घास।।11।।

यहुं ऐसा संसार है, जैसा सैंबल फूल।
दिन दस के ब्यौहार कौं, झूठै रंग न भूलि।।12।।

इहि औसरि चेत्या नहीं, पसु ज्यूँ पाली देह।
राम नाम जाण्या नहीं, अंति पड़ी मुख षेह।।13।।

यह तन काचा कुंभ है, लियाँ फिरै था साथि।
ढबका लागा फूटि गया, कछू न आया हाथि।।14।।

कबीर कहा गरबियौ, देही देखि सुरंग।
बीछड़ियाँ मिलिबौ नहीं, ज्यूँ काँचली भुवंग।।15।।

अभ्यास प्रश्न

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्यगत सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
   (अ) सतगुरु हम .....सब अंग।
   (ब) माया दीपक..... आध उबरंत।
   (स) अंषणियाँ झाईं.....पुकारि-पुकारि।
   (द) यहुं ऐसा संसार.....रंग न भूलि।
   (य) यह तन काचा.....आया हाथि।
2. कबीरदास का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा कबीर का जीवन-परिचय बताते हुए उनकी साहित्यिक सेवाओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा कबीर की रचनाएँ एवं भाषा-शैली स्पष्ट कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मोक्ष-प्राप्ति हेतु कबीर किन साधनों को अपनाने का उपदेश देते हैं?
2. कबीर के समाज-सुधार पर अपने विचार संक्षेप में लिखिए।
3. कबीर के काव्य की मुख्य विशेषताएँ लिखिए।
4. कबीर की भाषा का उल्लेख कीजिए।
5. कबीर के अनुसार जीवन में गुरु के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।
6. कबीर ने संसार को 'सेमल के फूल' के समान क्यों कहा है?
7. कबीर मनुष्य को गर्व न करने का उपदेश क्यों देते हैं?
8. सतगुरु की सरस बातों का कबीर पर क्या प्रभाव पड़ा?
9. कबीर की साखी से दो ऐसी पंक्तियाँ लिखिए, जिनमें उन्होंने अन्धकार को नष्ट करने का उपदेश दिया हो।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. भक्तिकाल के किसी एक कवि तथा उसकी एक रचना का नाम लिखिए।
2. कबीर किस धर्म के पोषक थे?
3. कबीर उस घर को कैसा बताते हैं जहाँ न तो साधु की पूजा होती है और न ही हरि की सेवा।
4. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइए—
   (अ) कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे। ( )
   (ब) साखी चौपाई छन्द में लिखा गया है। ( )
   (स) रावण के सवा लाख पूत थे। ( )
   (द) कबीर का लालन-पालन नीमा और नीरू ने किया था। ( )
5. कबीर किस काल के कवि हैं?
6. कबीर कैसी वाणी बोलने के लिए कहते हैं?
7. कबीर का जन्म एवं मृत्यु संवत् लिखिए।
8. 'साखी' किस छन्द में लिखा गया है?
9. कबीर की भाषा-शैली की मुख्य विशेषता लिखिए।
10. कबीरदास की रचनाओं की सूची बनाइए।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम-रूप लिखिए—
ग्यान, अंधियारा, सैंबल, भगति, दुक्ख, ब्यौहार।
2. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार और छन्द लिखिए—
(अ) सतगुरु हम सूँ रीझि करि, एक कह्या प्रसंग।
(ब) माया दीपक नर पतंग, भ्रमि भ्रमि इवैं पड़ंत।
(स) यहुं ऐसा संसार है, जैसा सैंबल फूल।
3. 'जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहिं' पंक्ति का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. कबीर का जन्म कब हुआ था?
(अ) **1398 ई.** (ब) 1400 ई. (स) 1405 ई. (द) 1410 ई.
2. कबीर का जन्म-स्थान है—
(अ) प्रयाग (ब) **काशी** (स) मथुरा (द) इनमें से कोई नहीं
3. कबीर की पत्नी का नाम था—
(अ) **लोई** (ब) नीमा (स) कमाली (द) इनमें से कोई नहीं
4. निम्न में से कौन-सी कबीर की रचना है?
(अ) साखी (ब) सबद (स) रमैनी (द) **उपर्युक्त सभी**
5. कबीर की भाषा है—
(अ) **पंचमेल खिचड़ी** (ब) अवधी (स) ब्रज (द) भोजपुरी
6. 'मसि कागद छुऔ नहीं, कलम गह्यौ नहिं हाथ' यह कथन किस कवि का है?
(अ) सूर (ब) **कबीर** (स) रहीम (द) तुलसीदास
7. कबीर किस भक्ति धारा के कवि थे?
(अ) **निर्गुण भक्ति धारा** (ब) सगुण भक्ति धारा
(स) (अ) और (ब) दोनों (द) इनमें से कोई नहीं
8. कबीर हिन्दी साहित्य के किस काल से सम्बन्धित हैं?
(अ) आदिकाल (ब) **भक्ति काल** (स) रीति काल (द) आधुनिक काल
9. कबीर की मृत्यु हुई थी—
(अ) **संवत् 1575 वि.** (ब) संवत् 1580 वि. (स) संवत् 1590 वि. (द) संवत् 1595 वि.
10. कबीर ने संसार को कैसा माना है?
(अ) **सेमल का फूल** (ब) गुलाब का फूल (स) कमल का फूल (द) गेंदा का फूल
11. कबीर ने इस शरीर की तुलना किससे की है?
(अ) **मिट्टी के कच्चे घड़े से** (ब) लोहे के घड़े से (स) सोने के घड़े से (द) इनमें से कोई नहीं

उत्तरमाला : 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (द) 5. (अ) 6. (ब) 7. (अ) 8. (ब) 9. (अ) 10. (अ) 11. (अ)

●●

2 मीराबाई

कवयित्री : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—सन् 1498 ई०।
- **जन्म-स्थान**—चौकड़ी (मेवाड़), राजस्थान।
- **पिता**—रत्नसिंह।
- **पति**—भोजराज।
- **मृत्यु**—सन् 1546 ई०।
- **भाषा**—ब्रजभाषा।

जीवन-परिचय—जोधपुर के संस्थापक राव जोधाजी की प्रपौत्री, जोधपुर नरेश राजा रत्नसिंह की पुत्री और भगवान् कृष्ण के प्रेम में दीवानी मीराबाई का जन्म राजस्थान के चौकड़ी नामक ग्राम में सन् 1498 ई० में हुआ था। बचपन में ही माता का निधन हो जाने के कारण ये अपने पितामह राव दूदा जी के पास रहती थीं और प्रारम्भिक शिक्षा भी उन्हीं के पास रहकर प्राप्त की थीं। राव दूदा जी बड़े ही धार्मिक एवं उदार प्रवृत्ति के थे, जिनका प्रभाव मीरा के जीवन पर पूर्णरूपेण पड़ा था। आठ वर्ष की मीरा ने कब श्रीकृष्ण को पति रूप में स्वीकार लिया, यह बात कोई नहीं जान सका। इनका विवाह चित्तौड़ के महाराजा राणा साँगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज के साथ हुआ था। विवाह के कुछ वर्ष बाद ही मीरा विधवा हो गयीं। अब तो इनका सारा समय श्रीकृष्ण-भक्ति में ही बीतने लगा। मीरा श्रीकृष्ण को अपना प्रियतम मानकर उनके विरह में पद गातीं और साधु-सन्तों के साथ कीर्त्तन एवं नृत्य करतीं। इनके इस प्रकार के व्यवहार ने परिवार के लोगों को रुष्ट कर दिया और उन्होंने मीरा की हत्या करने का कई बार असफल प्रयास किया। अन्त में राणा के दुर्व्यवहार से दुःखी होकर मीरा वृन्दावन चली गयीं। मीरा की कीर्ति से प्रभावित होकर राणा ने अपनी भूल पर पश्चाताप किया और इन्हें वापस बुलाने के लिए कई सन्देश भेजे; परन्तु मीरा सदा के लिए सांसारिक बन्धनों को छोड़ चुकी थीं। कहा जाता है कि मीरा एक पद की पंक्ति 'हरि तुम हरो जन की पीर' गाते-गाते भगवान् श्रीकृष्ण की मूर्ति में विलीन हो गयी थीं। मीरा की मृत्यु द्वारका में सन् 1546 ई० के आस-पास हुई थी।

साहित्यिक सेवाएँ—मीरा के काव्य का मुख्य स्वर कृष्ण-भक्ति है। इनके काव्य में इनके हृदय की सरलता तथा निश्छलता स्पष्ट रूप से प्रकट होती है। इनकी भक्ति-साधना ही इनकी काव्य-साधना है। दाम्पत्य-प्रेम के रूप में व्यक्त इनके सम्पूर्ण काव्य में, इनके हृदय के मधुर भाव गीत बनकर बाहर उमड़ पड़े हैं। विरह की स्थिति में इनके वेदनापूर्ण गीत अत्यन्त हृदयस्पर्शी बन पड़े हैं। इनका प्रत्येक पद सच्चे प्रेम की पीर से परिपूर्ण है। भाव-विभोर होकर गाये गये तथा प्रेम एवं भक्ति से ओत-प्रोत इनके गीत; आज भी तन्मय होकर गाये जाते हैं। कृष्ण के प्रति प्रेमभाव की व्यञ्जना ही इनकी कविता का उद्देश्य रहा है।

रचनाएँ—मीरा की रचनाओं में इनके हृदय की विह्वलता देखने को मिलती है। इनके नाम से सात-आठ रचनाओं के उल्लेख मिलते हैं—(1) नरसी जी का मायरा, (2) राग गोविन्द, (3) गीत गोविन्द की टीका, (4) राग-सोरठ के पद, (5) मीराबाई की मलार, (6) गरबा गीत, (7) राग विहाग तथा फुटकर पद। इनकी प्रसिद्धि का आधार 'मीरा पदावली' एक महत्त्वपूर्ण कृति है।

भाषा-शैली—मीरा ने ब्रजभाषा को अपनाकर अपने गीतों की रचना की। इनके द्वारा प्रयुक्त इस भाषा पर राजस्थानी, गुजराती एवं पंजाबी भाषा की स्पष्ट छाप परिलक्षित होती है। इनकी काव्य-भाषा अत्यन्त मधुर, सरस और प्रभावपूर्ण है। इनके सभी पद गेय हैं। इन्होंने गीतिकाव्य की भावपूर्ण शैली अथवा मुक्तक शैली को अपनाया है। इनकी शैली में हृदय की तन्मयता, लयात्मकता एवं संगीतात्मकता स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है।

●●

पदावली

बसो मेरे नैनन में नंदलाल।
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल, अरुण तिलक दिये भाल।।
मोहनि मूरति साँवरि सूरति, नैंना बने बिसाल।
अधर-सुधा-रस मुरली राजत, उर बैजंती-माल।।
छुद्र घंटिका कटि-तट सोभित, नूपुर सबद रसाल।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भक्त बछल गोपाल।।1।।

पायो जी म्हैं तो राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।।
जनम-जनम की पूंजी पाई, जग में सभी खोवायो।
खरचै नहिं कोइ चोर न लेवै, दिन दिन बढ़त सवायो।।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भव-सागर तर आयो।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस गायो।।2।।

माई री मैं तो लियो गोविन्दो मोल।
कोई कहै छाने कोई कहे चुपके, लियो री बजन्ता ढोल।।
कोई कहै मुँहघो कोई कहै सुँहघो, लियो री तराजू तोल।
कोई कहै कारो कोई कहै गोरो, लियो री अमोलक मोल।।
याही कूँ सब जाणत हैं, लियो री आँखी खोल।
मीरा कूँ प्रभु दरसण दीन्यौ, पूरब जनम कौ कौल।।3।।

मैं तो साँवरे के रंग राची।
साजि सिंगार बाँधि पग घुंघरू, लोक-लाज तजि नाँची।।
गयी कुमति लई साधु की संगति, भगत रूप भई साँची।
गाय-गाय हरि के गुण निसदिन, काल ब्याल सूँ बाँची।।
उण बिन सब जग खारो लागत, और बात सब काँची।
मीरा श्री गिरधरन लाल सूँ, भगति रसीली जाँची।।4।।

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।
तात मात भ्रात बन्धु, आपनो न कोई।।
छाँड़ि दई कुल की कानि, कहा करिहै कोई।
संतन ढिंग बैठि-बैठि, लोक लाज खोई।।
अँसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेल फैल गयी, आणंद फल होई।।
भगति देखि राजी हुई, जगत देखि रोई।
दासी मीरा लाल गिरधर, तारो अब मोई।।5।।

('मीरा सुधा-सिन्धु' से)

अभ्यास प्रश्न

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पदों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्यगत सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
   (अ) बसो मेरे नैनन..... भक्त बछल गोपाल।
   (ब) माई री मैं.....जनम कौ कौल।
   (स) पायो जी..... जस गायो।
   (द) मैं तो साँवरे.....रसीली जाँची।
   (य) मेरे तो गिरधर गोपाल.....तारो अब मोई।
2. मीराबाई का जीवन-परिचय बताते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा मीराबाई का जीवन-परिचय देते हुए उनकी साहित्यिक सेवाओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा मीरा की रचनाओं एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मीरा ने संसार की तुलना किससे की है और क्यों?
2. गिरधर के घर जाने को मीराबाई क्यों कहती हैं?
3. *'मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई'* से क्या तात्पर्य है?
4. धर्म के अन्तर्गत केवल बाहरी कर्मकाण्ड करने से क्या होता है?
5. मीरा के काव्य में व्यक्त रहस्यवाद का परिचय दीजिए।
6. कृष्ण के क्रय करने के सम्बन्ध में मीराबाई क्या कहती हैं?
7. मीरा ने संसार की तुलना किस खेल से की है और क्यों?
8. मीरा को कौन-सा धन प्राप्त हो गया है और उसकी क्या विशेषताएँ हैं?
9. मीरा ने संसार-सागर से पार होने का क्या उपाय बताया है?
10. मीरा भगवान् के किस रूप को अपने नयनों में बसाना चाहती हैं?
11. शरीर पर गर्व न करने का उपदेश मीरा ने क्यों दिया है?

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. मीरा की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए।
2. मीरा ने किस भाषा में रचना की है?
3. मीरा ने प्रेम की लता को किस प्रकार पल्लवित किया?
4. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइये—
   (अ) मीरा भगवान् के सगुण रूप की उपासिका थीं। ( )
   (ब) मीरा के अनुसार शरीर पर गर्व करना चाहिए। ( )
   (स) मीराबाई श्रीकृष्ण को पति-रूप में मानती हुई उनके घर जाना चाहती हैं। ( )
   (द) मीराबाई रत्नसिंह की पुत्री थीं। ( )
5. मीरा ने क्या मोल लिया है?

6. मीरा ईश्वर के किस रूप की उपासिका थीं?
7. मीरा किस भक्ति-शाखा की कवयित्री हैं?
8. मीरा किसके रंग में रँगी हैं?
9. मीरा के काव्य का मुख्य स्वर क्या है?

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए—
   (अ) बसो मेरे नैनन में नंदलाल।
   (ब) काल ब्याल सूँ बाँची।
   (स) मोर मुकुट मकराकृत कुंडल।
2. निम्नलिखित पंक्ति का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए— दासी मीरा लाल गिरधर, तारो अब मोई।
3. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए— भगति, सबद, नैना, बिसाल, किरपा, आणंद, अँसुवन।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. मीराबाई किस काल की कवयित्री हैं?
   (अ) आदि काल (ब) **भक्ति काल** (स) रीति काल (द) आधुनिक काल
2. मीराबाई का जन्म कब हुआ था?
   (अ) **1498 ई.** (ब) 1500 ई. (स) 1502 ई. (द) 1504 ई.
3. मीरा का जन्म-स्थान है—
   (अ) उदयपुर (ब) जोधपुर (स) **मेवाड़** (द) जयपुर
4. मीरा के आराध्य देव थे—
   (अ) **श्री कृष्ण** (ब) श्री राम (स) शंकरजी (द) भगवान विष्णु
5. निम्न में कौन-सी मीरा की रचनाएँ हैं?
   (अ) नरसी जी का मायरा (ब) राग गोविन्द (स) गरबा गीत (द) **इनमें से सभी**
6. मीरा ने अपना पति किसे माना था?
   (अ) भगवान शंकर को (ब) **श्री कृष्ण को** (स) श्री राम को (द) इनमें से कोई नहीं
7. 'बसो मेरे नैनन में नन्दलाल' नामक पंक्ति किस कवि/कवयित्री की है?
   (अ) सूरदास (ब) **मीराबाई** (स) रसखान (द) इनमें से कोई नहीं
8. मीराबाई ने किसे मोल ले लिया है?
   (अ) **भगवान कृष्ण को** (ब) भगवान राम को (स) भगवान विष्णु को (द) गणेश को
9. मीरा ने संसार की तुलना किससे की है?
   (अ) **चौसर खेल से** (ब) सेमल के फूल से (स) गुलाब के फूल से (द) इनमें से कोई नहीं
10. मीरा के काव्य का प्रमुख स्वर है—
   (अ) **कृष्ण भक्ति** (ब) राम भक्ति (स) शिव भक्ति (द) इनमें से कोई नहीं

उत्तरमाला : 1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (अ) 5. (द) 6. (ब) 7. (ब) 8. (अ) 9. (अ) 10. (अ)

3 रहीम

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—सन् 1556 ई०।
- **जन्म-स्थान**—लाहौर।
- **पिता का नाम**—बैरम खाँ।
- **पूरा नाम**—अब्दुर्रहीम खानखाना।
- **भाषा**—ब्रज।
- **मृत्यु**—सन् 1627 ई०।

जीवन-परिचय—रहीम का पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था। इनका जन्म सन् 1556 ई० में लाहौर (वर्तमान में पाकिस्तान) में हुआ था। इनके पिता बैरम खाँ मुगल सम्राट् अकबर के संरक्षक थे। किन्हीं कारणोंवश अकबर बैरम खाँ से रुष्ट हो गया था और उसने बैरम खाँ पर विद्रोह का आरोप लगाकर हज करने के लिए मक्का भेज दिया। मार्ग में उसके शत्रु मुबारक खाँ ने उसकी हत्या कर दी। बैरम खाँ की हत्या के पश्चात् अकबर ने रहीम और उनकी माता को अपने पास बुला लिया और रहीम की शिक्षा की समुचित व्यवस्था की। प्रतिभासम्पन्न रहीम ने हिन्दी, संस्कृत, अरबी, फारसी, तुर्की आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। इनकी योग्यता को देखकर अकबर ने इन्हें अपने दरबार के नवरत्नों में स्थान दिया। ये अपने नाम के अनुरूप अत्यन्त दयालु प्रकृति के थे। मुसलमान होते हुए भी ये श्रीकृष्ण के भक्त थे। अकबर की मृत्यु के पश्चात् जहाँगीर ने इन्हें चित्रकूट में नजरबन्द कर दिया था। केशवदास और गोस्वामी तुलसीदास से इनकी अच्छी मित्रता थी। इनका अन्तिम समय विपत्तियों से घिरा रहा और सन् 1627 ई० में मृत्यु हो गयी।

साहित्यिक सेवाएँ—पिता बैरम खाँ अपने युग के एक अच्छे नीतिज्ञ एवं विद्वान् थे, अतः बाल्यकाल से ही रहीम को साहित्य के प्रति अनुराग उत्पन्न हो गया था। योग्य गुरुओं के सम्पर्क में रह कर इनमें अनेक काव्य-गुणों का विकास हुआ। इन्होंने कई ग्रन्थों का अनुवाद किया तथा ब्रज, अवधी एवं खड़ीबोली में कविताएँ भी लिखीं। इनके 'नीति के दोहे' तो सर्वसाधारण की जिह्वा पर रहते हैं। दैनिक-जीवन की अनुभूतियों पर आधारित दृष्टान्तों के माध्यम से इनका कथन सीधे हृदय पर चोट करता है। इनकी रचना में नीति के अतिरिक्त भक्ति एवं शृंगार की भी सुन्दर व्यंजना दिखायी देती है। इन्होंने अनेक ग्रन्थों का अनुवाद भी किया।

रचनाएँ—रहीम की रचनाएँ इस प्रकार हैं—**रहीम सतसई, शृंगार सतसई, मदनाष्टक, रास पंचाध्यायी, रहीम रत्नावली एवं बरवै नायिका-भेद-वर्णन।** 'रहीम सतसई' नीति के दोहों का संकलन ग्रन्थ है। इसमें लगभग 300 दोहे प्राप्त हुए हैं। 'मदनाष्टक' में श्रीकृष्ण और गोपियों की प्रेम सम्बन्धी लीलाओं का सरस चित्रण किया गया है। 'रास पंचाध्यायी' श्रीमद्भागवत पुराण के आधार पर लिखा गया ग्रन्थ है जो अप्राप्य है। 'बरवै नायिका भेद' में नायिका भेद का वर्णन बरवै छन्द में किया गया है।

भाषा-शैली—रहीम जनसाधारण में अपने दोहों के लिए प्रसिद्ध हैं, पर इन्होंने कवित्त, सवैया, सोरठा तथा बरवै छन्दों में भी सफल काव्य-रचना की है। इन्होंने ब्रज भाषा में अपनी काव्य-रचना की। इनके ब्रज का रूप सरल, व्यावहारिक, स्पष्ट एवं प्रवाहपूर्ण है। ये कई भाषाओं के जानकार थे, इसलिए इनकी काव्य-भाषा में विभिन्न भाषाओं के शब्दों के प्रयोग भी देखने को मिलते हैं। अवधी में ब्रजभाषा के शब्द तो मिलते ही हैं, पर अवधी के ग्रामीण शब्दों का भी खुलकर प्रयोग इन्होंने किया है। इन्होंने मुक्तक शैली में काव्य-सृजन किया। इनकी यह शैली अत्यन्त सरस, सरल एवं बोधगम्य है।

●●

दोहा

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग।।1।।

रहिमन प्रीति सराहिए मिले होत रंग दून।
ज्यों जरदी हरदी तजै, तजै सफेदी चून।।2।।

टूटे सुजन मनाइए, जौ टूटे सौ बार।
रहिमन फिरि-फिरि पोइए, टूटे मुक्ताहार।।3।।

रहिमन अँसुआ नैन ढरि, जिय दुख प्रगट करेइ।
जाहि निकारो गेह ते, कस न भेद कहि देइ।।4।।

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीति।
बिपति-कसौटी जे कसे, तेही साँचे मीत।।5।।

जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाँड़त छोह।।6।।

दीन सबन को लखत हैं, दीनहि लखै न कोय।
जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबन्धु सम होय।।7।।

प्रीतम छबि नैननि बसी, पर छबि कहाँ समाय।
भरी सराय रहीम लखि, पथिक आपु फिरि जाय।।8।।

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरेउ चटकाय।
टूटे से फिरि ना जुरै, जुरै गाँठ परि जाय।।9।।

कदली, सीप, भुजंग-मुख, स्वांति एक गुन तीन।
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन।।10।।

तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम पर काज हित, संपति संचहिं सुजान।।11।।

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि।।12।।

यों रहीम सुख होत है, बढ़त देख निज गोत।
ज्यों बड़री अँखियाँ निरखि, आँखिन को सुख होत।।13।।
रहिमन ओछे नरन ते, तजौ बैर अरु प्रीति।
काटे-चाटे स्वान के, दुँहूँ भाँति विपरीति।।14।।

अभ्यास प्रश्न

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
   (अ) जो रहीम..... रहत भुजंग।
   (ब) कदली, सीप.....फल दीन।
   (स) रहिमन धागा.....परि जाय।
   (द) तरुवर फल.....संचहि सुजान।
   (य) रहिमन देखि बड़ेन.....करै तरवारि।
   (र) रहिमन ओछे.....भाँति विपरीति।
2. रहीम का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा रहीम का जीवन-परिचय बताते हुए उनकी साहित्यिक सेवाओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा रहीम की साहित्यिक सेवाओं का उल्लेख करते हुए उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

अथवा रहीम का जीवन-परिचय अपने शब्दों में लिखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. हमारे नेत्रों से आँसू निकलकर क्या प्रकट करते हैं?
2. रहीम के अनुसार सच्चे एवं झूठे मित्र की क्या पहचान है?
3. *'जुरै गाँठ परि जाय'* के द्वारा कवि ने प्रेम सम्बन्धों की किस विशेषता को बताया है?
4. रहीम ने किस प्रकृति के मनुष्य से प्रेम और शत्रुता दोनों घातक बताया है और क्यों?
5. कौन दीनबन्धु के समान होता है?
6. रहीम ने सच्चे और झूठे मित्र की क्या पहचान बतायी है?
7. रहीम किस प्रकार की प्रीति की सराहना करने को कहते हैं?
8. जल के प्रति मछली के प्रेम की क्या विशेषता है?
9. *'टूटे सुजन मनाइये, जौ टूटे सौ बार'* का भाव स्पष्ट कीजिए।
10. कुसंग का किस प्रकृति के लोगों पर प्रभाव नहीं पड़ता?

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. नेत्रों से निकला हुआ आँसू क्या प्रकट करता है?
2. रहीम ने किस भाषा में काव्य-सृजन किया?
3. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइये—
   (अ) कुसंग का सज्जनों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ( )
   (ब) धन का संचय सज्जन दूसरों के लिए करते हैं। ( )
   (स) ओछे लोगों से प्रेम रखना चाहिए। ( )
   (द) सज्जन यदि रूठ जाये तो उसे नहीं मनाना चाहिए। ( )

4. रहीम की दो रचनाओं के नाम बताइये।
5. रहीम का पूरा नाम क्या था?
6. रहीम को किस प्रकार का अमृत पीना अच्छा नहीं लगता?

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित में लक्षण बताते हुए अलंकार का नाम लिखिए–
   (अ) बनत बहुत बहु रीति।
   (ब) रहिमन फिरि-फिरि पोइए, टूटे मुक्ताहार।
2. निम्नलिखित का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
   (अ) टूटे सुजन.....टूटे मुक्ताहार।
   (ब) बिपति कसौटी.....साँचे मीत।
   (स) रहिमन देखि.....दीजिए डारि।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. रहीम हिन्दी साहित्य के किस काल से सम्बन्ध रखते हैं?
   (अ) **भक्ति काल** (ब) आदि काल (स) आधुनिक काल (द) रीति काल
2. रहीम का जन्म कब हुआ था?
   (अ) 1550 ई. (ब) **1556 ई.** (स) 1560 ई. (द) 1565 ई.
3. रहीम का जन्म-स्थान है—
   (अ) **लाहौर** (ब) मुल्तान (स) आगरा (द) दिल्ली
4. रहीम जी की भाषा थी—
   (अ) अवधी (ब) **ब्रज** (स) भोजपुरी (द) मैथिली
5. निम्न में से कौन-सी रचना रहीम जी की है?
   (अ) रहीम सतसई (ब) श्रृंगार सतसई (स) रहीम रत्नावली (द) **उपर्युक्त सभी**
6. 'रास पंचाध्यायी' के रचनाकार हैं—
   (अ) **रहीम** (ब) सूर (स) तुलसी (द) मीराबाई
7. रास पंचाध्यायी का आधार स्तम्भ है—
   (अ) रामायण (ब) **श्रीमद् भागवत पुराण**
   (स) महाभारत (द) इनमें से कोई नहीं
8. रहीम का कौन-सा ग्रन्थ 'नीति के दोहों' का संकलन है?
   (अ) **रहीम सतसई** (ब) श्रृंगार सतसई (स) मदनाष्टक (द) रहीम रत्नावली
9. 'टूटे सुजन मनाइए जौ टूटे सौ बार' नामक पंक्ति किस कवि की है?
   (अ) **रहीम** (ब) सूर (स) तुलसी (द) बिहारी
10. 'जुरै गाँठ परि जाय' नामक पंक्ति किस कवि की है?
   (अ) सूर (ब) मीरा (स) **रहीम** (द) तुलसी

उत्तरमाला : 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (द) 6. (अ) 7. (ब) 8. (अ) 9. (अ) 10. (स)

4 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

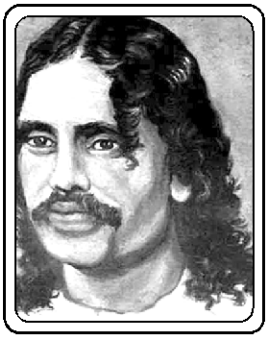

जीवन-परिचय—युग-प्रवर्तक कवि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म काशी के एक सम्पन्न वैश्य परिवार में सन् 1850 ई० के सितम्बर माह में हुआ था। इनके पिता गोपालचन्द्र जी 'गिरिधरदास' उपनाम से काव्य-रचना करते थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने सात वर्ष की अवस्था में ही एक दोहे की रचना की, जिसको सुनकर पिता ने इनको महान् कवि बनने का आशीर्वाद दिया। 10 वर्ष की अवस्था में ही भारतेन्दु हरिश्चन्द्र माता-पिता के सुख से वंचित हो गये थे। इनकी आरम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई, जहाँ इन्होंने हिन्दी, उर्दू, बँगला एवं अंग्रेजी का अध्ययन किया। इसके पश्चात् क्वीन्स कालेज, वाराणसी में प्रवेश लिया, किन्तु काव्य-रचना में रुचि होने के कारण इनका मन अध्ययन में नहीं लगा और इन्होंने शीघ्र ही कालेज छोड़ दिया। इनका विवाह 13 वर्ष की उम्र में ही मन्नो देवी के साथ हो गया था। काव्य-रचना के अतिरिक्त इनकी रुचि यात्राओं में भी थी। 15 वर्ष की अवस्था में ही जगन्नाथपुरी की यात्रा के पश्चात् ही इनके मन में साहित्य-सृजन की इच्छा अंकुरित हुई थी।

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—1850 ई०।
- **जन्म-स्थान**—वाराणसी (उ० प्र०)।
- **पिता**—गोपालचन्द्र।
- **भाषा**—ब्रज भाषा एवं खड़ीबोली।
- भारतेन्दु युग के प्रवर्तक।
- **मृत्यु**—1885 ई०।

भारतेन्दु जी बहुत उदार एवं दानी थे। उदारता के कारण शीघ्र ही इनकी आर्थिक दशा शोचनीय हो गयी और ये ऋणग्रस्त हो गये। छोटे भाई ने भी इनकी दानशीलता के कारण सम्पत्ति का बँटवारा करा लिया था। ऋणग्रस्तता के समय ही ये क्षय रोग के शिकार भी हो गये। इन्होंने रोग से मुक्त होने का हर-सम्भव प्रयत्न किया, किन्तु रोग से मुक्त नहीं हो सके। सन् 1885 ई० में इसी रोग के कारण मात्र 35 वर्ष की अल्पायु में ही भारतेन्दु जी का स्वर्गवास हो गया।

साहित्यिक सेवाएँ—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एक प्रतिभासम्पन्न एवं युग-प्रवर्तक साहित्यकार थे। अपनी विलक्षण प्रतिभा का परिचय देते हुए इन्होंने हिन्दी साहित्य के विकास में अमूल्य योगदान दिया। इन्होंने हरिश्चन्द्र चंद्रिका, कवि वचन सुधा और बालाबोधिनी पत्रिकाओं का सम्पादन किया। ये अनेक भारतीय भाषाओं में कविता करते थे, किन्तु ब्रजभाषा पर इनका विशेष अधिकार था। हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाने के लिए इन्होंने न केवल स्वयं साहित्य का सृजन किया, अपितु अनेक लेखकों को भी इस दिशा में प्रेरित किया। सामाजिक, राजनीतिक एवं राष्ट्रीयता की भावना पर आधारित अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतेन्दु जी ने

एक नवीन चेतना उत्पन्न की। इनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर तत्कालीन पत्रकारों ने सन् 1880 ई० में इन्हें 'भारतेन्दु' की उपाधि से सम्मानित किया।

रचनाएँ—अल्पायु में ही भारतेन्दु जी ने हिन्दी को अपनी रचनाओं का अप्रतिम कोष प्रदान किया। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

(1) काव्य-कृतियाँ—भक्त सर्वस्व, प्रेम-मालिका, प्रेम माधुरी, नए जमाने की मुकरी, सुमनांजलि, प्रेम तरंग, उत्तरार्द्ध-भक्तमाल, प्रेम-प्रलाप, गीत-गोविन्दानन्द, होली, मधु मुकुल, राग-संग्रह, वर्षा विनोद, विनय प्रेम पचासा, फूलों का गुच्छा, प्रेम फुलवारी, कृष्ण चरित्र, प्रेमाश्रु-वर्षण, दान लीला, प्रेम-सरोवर, वीरत्व, विजय-वल्लरी, विजयिनी, विजय पताका, बन्दर सभा, बकरी विलाप, तन्मय लीला।

(2) नाटक—'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति', 'सत्य हरिश्चन्द्र', 'श्री चन्द्रावली', 'भारत दुर्दशा', 'नीलदेवी', 'अंधेर नगरी', 'विषस्य विषमौषधम्', 'प्रेम जोगिनी' एवं 'सती प्रताप' आदि।

(3) उपन्यास—'पूर्णप्रकाश', 'चन्द्रप्रभा'। ये दोनों सामाजिक उपन्यास हैं।

(4) यात्रा-वृत्तान्त—'सरयूपार की यात्रा', 'लखनऊ की यात्रा'। इसके अतिरिक्त जीवनियाँ, इतिहास और पुरातत्त्व सम्बन्धी रचनाएँ भी इनकी प्राप्त होती हैं।

(5) अनूदित रचनाएँ—भारतेन्दु ने बांग्ला भाषा से 'विद्या सुंदर' नामक नाटक का हिन्दी में अनुवाद किया था। संस्कृत से मुद्राराक्षस और प्राकृत से 'कर्पूर मंजरी' नामक नाटकों का भी हिन्दी में अनुवाद किया। विद्या सुंदर, पाखण्ड विडम्बन, धनंजय विजय, भारत जननी, दुर्लभ बन्दु इनकी कुछ अन्य अनूदित रचनाएँ हैं।

(6) निबन्ध संग्रह—भारतेन्दु ग्रन्थावली, नाटक, कालचक्र, लेवी प्राण लेवी, भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?, कश्मीर कुसुम, जातीय संगीत, संगीत सार, हिन्दी भाषा, स्वर्ग में विचार सभा।

(7) आत्मकथा—एक कहानी–कुछ आपबीती, कुछ जगबीती।

भाषा-शैली—भारतेन्दु जी का खड़ीबोली एवं ब्रजभाषा; दोनों पर ही समान अधिकार था। इन्होंने अपने काव्य के सृजन हेतु ब्रजभाषा को ही अपनाया। साथ ही प्रचलित शब्दों, मुहावरों एवं कहावतों का यथास्थान प्रयोग किया है। इन्होंने मुख्य रूप से मुक्तक शैली का प्रयोग किया। इनके द्वारा प्रयुक्त शैली प्रवाहपूर्ण सरल, सरस एवं भावपूर्ण है।

♦

प्रेम-माधुरी

कूकै लगीं कोइलैं कदंबन पै बैठि फेरि
धोए-धोए पात हिलि-हिलि सरसै लगे।
बोलै लगे दादुर मयूर लगे नाचै फेरि
देखि के सँजोगी-जन हिय हरसै लगे।।
हरी भई भूमि सीरी पवन चलन लागी
लखि 'हरिचंद' फेरि प्रान तरसै लगे।
फेरि झूमि-झूमि बरषा की रितु आई फेरि
बादर निगोरे झुकि झुकि बरसै लगे।।1।।

जिय पै जु होइ अधिकार तो बिचार कीजै
लोक-लाज, भलो-बुरो, भले निरधारिए।
नैन, श्रौन, कर, पग, सबै पर-बस भए
उतै चलि जात इन्हैं कैसे कै सम्हारिए।
'हरिचंद' भई सब भाँति सों पराई हम
इन्हें ज्ञान कहि कहो कैसे कै निबारिए।
मन में रहै जो ताहि दीजिए बिसारि, मन
आपै बसै जामैं ताहि कैसे कै बिसारिए।।2।।

यह संग में लागियै डोलैं सदा, बिन देखे न धीरज आनती हैं।
छिनहू जो वियोग परै 'हरिचंद', तो चाल प्रलै की सु ठानती हैं।
बरुनी में थिरैं न झपैं उझपैं, पल मैं न समाइबो जानती हैं।
पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना, अँखियाँ, दुखियाँ नहिं मानती हैं।।3।।

पहिले बहु भाँति भरोसो दयो, अब ही हम लाइ मिलावती हैं।
'हरिचंद' भरोसे रही उनके सखियाँ जो हमारी कहावती हैं।।
अब वेई जुदा ह्वै रहीं हम सों, उलटो मिलि कै समुझावती हैं।
पहिले तो लगाइ कै आग अरी! जल को अब आपुहिं धावती हैं।।4।।

ऊधौ जू सूधो गहो वह मारग, ज्ञान की तेरे जहाँ गुदरी है।
कोऊ नहीं सिख मानिहै ह्याँ, इक स्याम की प्रीति प्रतीति खरी है।।
ये ब्रजबाला सबै इक सी, हरिचंद जू मण्डली ही बिगरी है।
एक जौ होय तो ज्ञान सिखाइए कूप ही में यहाँ भाँग परी है।।5।।

सखि आयो बसंत रितून को कंत, चहूँ दिसि फूलि रही सरसों।
बर सीतल मंद सुगंध समीर सतावन हार भयो गर सों।।
अब सुंदर साँवरो नंद किसोर कहै 'हरिचंद' गयो घर सों।
परसों को बिताय दियो बरसों तरसों कब पाँय पिया परसों।।6।।

इन दुखियान को न चैन सपनेहुँ मिल्यो,
तासों सदा व्याकुल बिकल अकुलायँगी।
प्यारे हरिचंदजू की बीती जानि औधि, प्रान,
चाहत चले पै ये तो संग ना समायँगी।।

देखौ एक बारहू न नैन भरि तोहिं यातें
जौन-जौन लोक जैहैं तहाँ पछतायँगी।
बिना प्रान-प्यारे भये दरस तुम्हारे हाय
मरेहू पै आँखें ये खुली ही रहि जायँगी।।7।।

अभ्यास प्रश्न

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्यगत सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
   (अ) कूकैं लगीं.....बरसै लगे।
   (ब) जिय पै जु..... बिसारिए।
   (स) पहिले बहु भाँति..... धावती हैं।
   (द) ऊधौ जू सूधो..... भाँग परी है।
   (य) इन दुखियान को.....रहि जायँगी।
2. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जीवन-परिचय एवं रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की साहित्यिक सेवाओं का उल्लेख करते हुए उनके जीवन-परिचय पर प्रकाश डालिए।

अथवा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की कृतियों का उल्लेख करते हुए उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

3. 'प्रेम माधुरी' के सम्बन्ध में भारतेन्दु जी के विचारों को अपने शब्दों में लिखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'प्रलय' की चाल से कवि का क्या तात्पर्य है?
2. श्रीकृष्ण को भूलने में गोपियाँ अपने को असमर्थ क्यों पाती हैं?
3. *'कूप ही में यहाँ भाँग परी है'* से क्या तात्पर्य है?
4. निगोरे का अर्थ स्पष्ट करते हुए बताइए कि बादलों को 'निगोड़े' क्यों कहा गया है?
5. 'आग लगाकर पानी के लिए दौड़ने' से कवि का क्या आशय है?
6. वियोगिनी की आँखों को सदैव पश्चाताप क्यों रहेगा?
7. कृष्ण के रूप-सौन्दर्य को देखे बिना गोपी के नेत्रों की क्या दशा हो गयी?
8. भारतेन्दु जी के लेखन की भाषा लिखिए।
9. 'उतै चलि जात' में किधर की ओर संकेत है?
10. 'रितून को कन्त' किसे और क्यों कहा गया है?
11. गोपियाँ उद्धव से ज्ञान का उपदेश वापस ले जाने के लिए क्यों कह रही हैं?

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र किस युग के साहित्यकार हैं?
2. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को 'भारतेन्दु' की उपाधि से किसने सम्मानित किया?
3. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए।
4. 'प्रेम माधुरी' भारतेन्दु जी की किस भाषा की रचना है?
5. भारतेन्दु-युग के उस कवि का नाम लिखिए, जिसे खड़ीबोली का जनक कहा जाता है।

6. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइये—
(अ) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र शुक्ल युग के कवि हैं। ( )
(ब) 'कवि-वचन-सुधा' पत्रिका के सम्पादक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र थे। ( )

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
(अ) परसों को बिताय दियो बरसों तरसों कब पाँय पिया परसों।
(ब) पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना अँखियाँ दुखियाँ नहिं मानती हैं।
(स) बोलै लगे दादुर मयूर लगे नाचै फेरि,
देखि कै संजोगी जन हिय हरसै लगे।
2. 'कूकै लगीं कोइलैं कदंबन पै बैठि फेरि' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
3. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए—
प्रलय ढाना, पलकों में न समाना, कुएँ में भाँग पड़ी होना।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. भारतेन्दु युग के प्रवर्तक थे—
(अ) **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** (ब) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(स) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (द) इनमें से कोई नहीं
2. भारतेन्दु जी का जन्म कब हुआ था?
(अ) **1850 ई.** (ब) 1855 ई. (स) 1860 ई. (द) 1865 ई.
3. भारतेन्दु जी का जन्म-स्थान है—
(अ) प्रयाग (ब) **काशी** (स) मथुरा (द) कानपुर
4. भारतेन्दु जी का निधन कब हुआ था?
(अ) **1885 ई.** (ब) 1890 ई. (स) 1895 ई. (द) 1900 ई.
5. 'प्रेम माधुरी' किसकी रचना है?
(अ) जयशंकर प्रसाद (ब) **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** (स) मैथिलीशरण गुप्त (द) इनमें से कोई नहीं
6. 'प्रेम माधुरी' किस भाषा में लिखी गयी है?
(अ) **ब्रजभाषा** (ब) अवधी भाषा (स) भोजपुरी भाषा (द) खड़ी बोली
7. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने किस पत्रिका का सम्पादन किया?
(अ) **कवि वचन सुधा** (ब) हंस (स) सरस्वती (द) ब्राह्मण
8. 'कूकैं लगी कोइलैं कदंबन पै बैठि फेरि' में कौन-सा अलंकार है?
(अ) **वृत्यानुप्रास** (ब) उपमा (स) रूपक (द) उत्प्रेक्षा
9. 'रितून को कंत' किसे कहा गया है?
(अ) शरद को (ब) **वसंत को** (स) ग्रीष्म को (द) वर्षा को
10. निम्न में कौन-सी कृति भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की है?
(अ) प्रेम माधुरी (ब) प्रेम तरंग (स) प्रेम प्रलाप (द) **इनमें से सभी**

उत्तरमाला : 1. (अ) 2. (अ) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब) 6. (अ) 7. (अ) 8. (अ) 9. (ब) 10. (द)

●●

5 मैथिलीशरण गुप्त

जीवन-परिचय—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 ई० में चिरगाँव जिला झाँसी में हुआ था। इनके पिता सेठ रामचरण जी रामभक्त और काव्यप्रेमी थे। उन्हीं से गुप्तजी को काव्य-संस्कार प्राप्त हुआ। इन्होंने कक्षा 9 तक ही विद्यालयीय शिक्षा प्राप्त की थी, किन्तु स्वाध्याय से अनेक भाषाओं के साहित्य का ज्ञान प्राप्त किया। इन्होंने बचपन में ही काव्य-रचना करके अपने पिता से महान् कवि बनने का आशीर्वाद प्राप्त किया था। महावीरप्रसाद द्विवेदी के सम्पर्क में आने के बाद उनको अपना काव्य-गुरु मानने लगे। पैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त गुप्तजी के संस्कार को द्विवेदीजी ने सँवारा एवं सजाया। द्विवेदीजी के आदेश पर गुप्तजी ने सर्वप्रथम 'भारत-भारती' नामक काव्य-ग्रन्थ की रचना कर युवाओं में देश-प्रेम की सरिता बहा दी। गुप्तजी गाँधीजी के स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रभाव में आये और उसमें सक्रिय भाग लिया। इन्होंने देश-प्रेम, समाज-सुधार, धर्म, राजनीति, भक्ति आदि सभी विषयों पर रचनाएँ कीं। राष्ट्रीय विषयों पर लिखने के कारण ये 'राष्ट्रकवि' कहलाये। सन् 1948 ई० में आगरा विश्वविद्यालय तथा सन् 1958 ई० में इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने डी० लिट् की मानद उपाधि से सम्मानित किया। सन् 1954 ई० में भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' की उपाधि से इन्हें अलंकृत किया। हिन्दुस्तान अकादमी पुरस्कार, मंगला प्रसाद पुरस्कार, साहित्य वाचस्पति पुरस्कार से भी इन्हें सम्मानित किया गया। दो बार ये राज्यसभा के सदस्य भी मनोनीत हुए। इनका देहावसान 12 दिसम्बर, सन् 1964 ई० को हुआ।

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—सन् 1886 ई०।
- **जन्म-स्थान**—चिरगाँव (झाँसी), उ० प्र०।
- **पिता**—सेठ रामचरण गुप्त।
- **मृत्यु**—सन् 1964 ई०।
- **भाषा**—खड़ीबोली।
- **प्रेरणास्रोत**—महावीरप्रसाद द्विवेदी।
- द्विवेदी युग के कवि।

साहित्यिक सेवाएँ—गुप्तजी की प्रारम्भिक रचनाएँ कलकत्ता से प्रकाशित पत्रिका 'वैश्योपकारक' में प्रकाशित होती थीं। द्विवेदीजी के सम्पर्क में आने के बाद इनकी रचनाएँ 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित होने लगीं। सन् 1909 ई० में इनकी सर्वप्रथम पुस्तक 'रंग में भंग' का प्रकाशन हुआ। इसके बाद सन् 1912 ई० में 'भारत भारती' के प्रकाशित होने से इन्हें अपार ख्याति प्राप्त हुई। इन्होंने अनेक अद्वितीय कृतियों का सृजन कर सम्पूर्ण हिन्दी-साहित्य-जगत् को विस्मित कर दिया। खड़ीबोली के स्वरूप-निर्धारण और उसके विकास में इन्होंने अपना अमूल्य योगदान दिया।

रचनाएँ—महाकाव्य—साकेत, यशोधरा।

खण्ड काव्य—जयद्रथ बध, भारत-भारती, पंचवटी, द्वापर, सिद्धराज, नहुष, अंजलि और अर्घ्य, अजित, अर्जन और विसर्जन, काबा और कर्बला, किसान, कुणाल गीत, गुरु तेग बहादुर, गुरुकुल, जय भारत, युद्ध, झंकार, पृथ्वी पुत्र, वक संहार, शकुंतला, विश्व वेदना, राजा-प्रजा, विष्णुप्रिया, उर्मिला, लीला, प्रदक्षिणा, दिवोदास, भूमि भाग।

नाटक—रंग में भंग, राजा-प्रजा, वन वैभव, विकट भट, विरहिणी, वैतालिक, शक्ति, सैरन्ध्री, स्वदेश संगीत, हिडिम्बा, हिन्दू, चंद्रहास।

कविताओं का संग्रह—उच्छ्वास।

पत्रों का संग्रह—पत्रावली।

गुप्त जी के नाटक—गुप्त जी के अनूदित नाटक जो भास के नाटकों पर आधारित है।

गुप्त जी के नाटक	भास के अनूदित नाटक
अनघ	स्वप्नवासवदत्ता
चरणदास	प्रतिमा
तिलोत्तमा	अभिषेक
निष्क्रिय प्रतिरोध	आविमारक

अन्य अनूदित रचनाएँ—रत्नावली–(हर्षवर्द्धन)। मेघनाथ वध, विरहिणी, वज्रांगना, पलासी का युद्ध, रूबाइयात उमर खय्याम।

भाषा-शैली—गुप्तजी ने शुद्ध, साहित्यिक एवं परिमार्जित खड़ीबोली में रचनाएँ की हैं। इनकी भाषा सुगठित तथा ओज एवं प्रसाद गुण से युक्त है। इन्होंने अपने काव्य में संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू एवं प्रचलित विदेशी शब्दों के भी प्रयोग किये हैं। इनके द्वारा प्रयुक्त शैलियाँ हैं—प्रबन्धात्मक शैली, उपदेशात्मक शैली, विवरणात्मक शैली, गीति शैली तथा नाट्य शैली। वस्तुतः आधुनिक युग में प्रचलित अधिकांश शैलियों को गुप्तजी ने अपनाया है।

●●

पंचवटी

(1)

चारु चन्द्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल-थल में,
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है अवनि और अम्बर-तल में।
पुलक प्रकट करती है धरती हरित तृणों की नोकों से,
मानो झूम रहे हैं तरु भी मन्द पवन के झोंकों से।

(2)

पंचवटी की छाया में है सुन्दर पर्ण-कुटीर बना,
उसके सम्मुख स्वच्छ शिला पर धीर वीर निर्भीक मना,
जाग रहा यह कौन धनुर्धर जब कि भुवन-भर सोता है?
भोगी कुसुमायुध योगी-सा बना दृष्टिगत होता है।।

(3)

किस व्रत में है व्रती वीर यह निद्रा का यों त्याग किए,
राजभोग के योग्य विपिन में बैठा आज विराग लिए।
बना हुआ है प्रहरी जिसका उस कुटीर में क्या धन है,
जिसकी रक्षा में रत इसका तन है, मन है, जीवन है।।

(4)

मर्त्यलोक-मालिन्य मेटने स्वामि-संग जो आयी है,
तीन लोक की लक्ष्मी ने यह कुटी आज अपनायी है।
वीर वंश की लाज यही है फिर क्यों वीर न हो प्रहरी?
विजन देश है, निशा शेष है, निशाचरी माया ठहरी।

(5)

क्या ही स्वच्छ चाँदनी है यह, है क्या ही निस्तब्ध निशा;
है स्वच्छंद-सुमंद गंध वह, निरानंद है कौन दिशा?
बंद नहीं, अब भी चलते हैं नियति-नटी के कार्य-कलाप,
पर कितने एकान्त भाव से कितने शान्त और चुपचाप।

(6)

है बिखेर देती वसुन्धरा मोती, सबके सोने पर,
रवि बटोर लेता है उनको सदा सबेरा होने पर।
और विरामदायिनी अपनी संध्या को दे जाता है,
शून्य श्याम तनु जिससे उसका नया रूप झलकाता है।

(7)

सरल तरल जिन तुहिन कणों से हँसती हर्षित होती है,
अति आत्मीया प्रकृति हमारे साथ उन्हीं से रोती है।
अनजानी भूलों पर भी वह अदय दण्ड तो देती है,
पर बूढ़ों को भी बच्चों-सा सदय भाव से सेती है।

(8)

तेरह वर्ष व्यतीत हो चुके, पर हैं मानो कल की बात,
वन को आते देख हमें जब आर्त, अचेत हुए थे तात।
अब वह समय निकट ही है जब अवधि पूर्ण होगी वन की।
किन्तु प्राप्ति होगी इस जन को इससे बढ़कर किस धन की?

(9)

और आर्य को? राज्य-भार तो वे प्रजार्थ ही धारेंगे,
व्यस्त रहेंगे, हम सबको भी मानो विवश बिसारेंगे।
कर विचार लोकोपकार का हमें न इससे होगा शोक,
पर अपना हित आप नहीं क्या कर सकता है यह नरलोक?

('पंचवटी' से)

अभ्यास प्रश्न

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्यगत सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
   (अ) चारु चन्द्र.....झोंकों से।
   (ब) है बिखेर देती.....झलकाता है।
   (स) किस व्रत में.....मन है, जीवन है।
   (द) मर्त्यलोक-मालिन्य.....माया ठहरी।
   (य) और आर्य को.....यह नरलोक।
2. मैथिलीशरण गुप्त की जीवनी एवं रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा मैथिलीशरण गुप्त की साहित्यिक सेवाओं एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

अथवा मैथिलीशरण गुप्त के साहित्यिक एवं जीवन-परिचय पर प्रकाश डालिए।

3. 'पंचवटी' शीर्षक कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'पंचवटी' की प्रकृति का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
2. प्रहरी बना हुआ, वीर व्रती लक्ष्मण किस धन की रक्षा कर रहा है और वह धन कैसा है?
3. लक्ष्मण संसार के लोगों से क्या करने की आशा करते हैं?
4. 'पंचवटी' कविता में निहित मूल भाव से सम्बन्धित चार वाक्य लिखिए।
5. मैथिलीशरण गुप्त की भाषा-शैली लिखिए।
6. सन्ध्या के समय सूर्य को विरामदायिनी क्यों कहा गया है?

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. मैथिलीशरण गुप्त किस युग के कवि हैं?
2. मैथिलीशरण गुप्त की दो प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए।
3. 'साकेत' रचना पर गुप्तजी को कौन-सा पुरस्कार प्राप्त हुआ?
4. साकेत की विषय-वस्तु क्या है?
5. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइए—
   (अ) पंचवटी में श्रीराम की कुटी बनी हुई है। ( )
   (ब) सूर्य के निकलने पर ओस की बूँदें गायब हो जाती हैं। ( )
   (स) मैथिलीशरण गुप्त भारतेन्दु युग के कवि हैं। ( )

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
   (अ) चारु चन्द्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल-थल में।
   (ब) जाग रहा यह कौन धनुर्धर जब कि भुवन-भर सोता है?
   (स) मर्त्यलोक मालिन्य मेटने, स्वामि-संग जो आयी है।
2. निम्नलिखित में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम लिखिए—
   लोकोपकार, कुसुमायुध, निरानन्द, निस्तब्ध।
3. निम्नलिखित पदों में समास-विग्रह करके समास का नाम लिखिए—
   पंचवटी, वीरवंश, सभय, कुसुमायुध, नरलोक।
4. 'पंचवटी' शीर्षक कविता से अनुप्रास अलंकार का कोई एक उदाहरण लिखिए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. मैथिलीशरण गुप्त किस युग के कवि थे?
   (अ) भारतेन्दु युग (ब) **द्विवेदी युग** (स) छायावादी युग (द) प्रयोगवादी युग
2. मैथिलीशरण गुप्त का जन्म कब हुआ था?
   (अ) **1886 ई.** (ब) 1890 ई. (स) 1892 ई. (द) 1894 ई.
3. 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से चर्चित हैं—
   (अ) **मैथिलीशरण गुप्त** (ब) सियाराम शरण गुप्त (स) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (द) जयशंकर प्रसाद
4. मैथिलीशरण गुप्त का देहावसान कब हुआ?
   (अ) 1960 ई. (ब) 1962 ई. (स) **1964 ई.** (द) 1966 ई.
5. मैथिलीशरण गुप्त का जन्म-स्थान है—
   (अ) **झाँसी (चिरगाँव)** (ब) कानपुर (स) प्रयाग (द) वाराणसी
6. 'साकेत' नामक महाकाव्य की रचना किसने की?
   (अ) **मैथिलीशरण गुप्त** (ब) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
   (स) जयशंकर प्रसाद (द) इनमें से कोई नहीं
7. 'पंचवटी' नामक कविता के रचनाकार हैं—
   (अ) जयशंकर प्रसाद (ब) **मैथिलीशरण गुप्त** (स) रामनरेश त्रिपाठी (द) धर्मवीर भारती
8. 'साकेत' की विषयवस्तु है—
   (अ) **लक्ष्मण और उर्मिला का त्याग** (ब) कौशल्या का त्याग
   (स) कैकेयी का लोभ (द) इनमें से कोई नहीं
9. मैथिलीशरण गुप्त को 'पद्म भूषण' से कब अलंकृत किया गया?
   (अ) 1950 ई. में (ब) **1954 ई. में** (स) 1960 ई. में (द) 1965 ई. में
10. भारत-भारती का प्रकाशन कब हुआ?
    (अ) **1912 ई.** (ब) 1915 ई. (स) 1917 ई. (द) 1920 ई.
11. 'यशोधरा' नामक महाकाव्य के रचनाकार हैं—
    (अ) जयशंकर प्रसाद (ब) **मैथिलीशरण गुप्त** (स) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (द) रामनरेश त्रिपाठी

उत्तरमाला : 1. (ब) 2. (अ) 3. (अ) 4. (स) 5. (अ) 6. (अ) 7. (ब) 8. (अ) 9. (ब) 10. (अ) 11. (ब)

6 जयशंकर प्रसाद

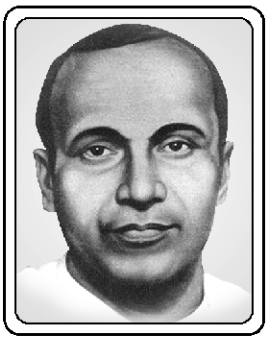

जीवन-परिचय—जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी के प्रसिद्ध 'सुँघनी साहु' परिवार में सन् 1889 ई० में हुआ था। पिता बाबू देवीप्रसाद एवं बड़े भाई का स्वर्गवास इनके बाल्यकाल में ही हो गया था। पिता ने प्रसाद की शिक्षा-दीक्षा की उचित व्यवस्था की थी, किन्तु उनके निधन के पश्चात् प्रसाद जी की शिक्षा का क्रम नियमित रूप से नहीं चल सका। पारिवारिक व्यवसाय का सारा बोझ इन्हीं को उठाना पड़ा। घर पर ही इन्होंने अंग्रेजी, हिन्दी, बँगला एवं संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त किया। प्रसाद जी को जीवन में अनेक विपत्तियों का सामना करना पड़ा। तीन पत्नियों की मृत्यु हुई, अनेक मुकदमे लड़ने पड़े। अपने पैतृक कार्य को करते हुए भी इन्होंने अपने भीतर काव्य-प्रेरणा को जीवित रखा। इनका जीवन बहुत सरल था। सभा-सम्मेलनों की भीड़ से ये दूर ही रहा करते थे। अत्यधिक श्रम तथा जीवन के अन्तिम दिनों में राजयक्ष्मा से पीड़ित रहने के कारण 1937 ई० को 48 वर्ष की अल्पायु में ही इनका निधन हो गया।

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—30 जनवरी, 1889 ई०।
- **जन्म-स्थान**—वाराणसी (उ०प्र०)।
- **पिता**—बाबू देवीप्रसाद।
- **मृत्यु**—14 जनवरी, 1937 ई०।
- **भाषा**—खड़ीबोली।
- छायावादी युग के प्रवर्तक।

साहित्यिक सेवाएँ—प्रसाद जी आधुनिक हिन्दी काव्य के सर्वप्रथम कवि थे। इन्होंने अपनी कविताओं में सूक्ष्म अनुभूतियों का रहस्यवादी चित्रण प्रारम्भ किया, जो इनके काव्य की एक प्रमुख विशेषता है। इनके इस नवीन प्रयोग ने काव्य-जगत् में एक क्रान्ति उत्पन्न कर दी और छायावादी युग का सूत्रपात किया। इन्होंने काव्य-सृजन के साथ ही 'हंस' एवं 'इन्दु' नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन भी कराया। 'कामायनी' पर इनको 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' ने 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' प्रदान किया था।

रचनाएँ—प्रसाद जी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—

(1) काव्य—कामायनी—इस ग्रन्थ में जहाँ मनु और श्रद्धा को प्रलय के बाद सृष्टि-संचालक बताया गया है, वहीं दार्शनिक बिन्दु पर मनु, श्रद्धा और इड़ा के माध्यम से मानव को हृदय (श्रद्धा) और बुद्धि (इड़ा) के समन्वय का आदेश दिया गया है। **आँसू**—यह आधुनिक हिन्दी साहित्य की अनुपम धरोहर है। इसमें हृदय की व्यथा को प्रवाहयुक्त शैली में कहा गया है। **झरना**—इसमें प्रेम और सौन्दर्य के साथ प्रकृति के मनोरम रूप का भी चित्रण किया गया है। **लहर**—इसमें छायावाद का प्रौढ़तम रूप मिलता है। इसमें हृदयगत भावों के बड़े ही मार्मिक चित्र प्रस्तुत किये गये हैं।

कानन कुसुम—इसमें खड़ीबोली की छह कविताएँ तथा शेष छायावादी गीत हैं। **चित्राधार**—इसमें प्रसाद जी की प्रारम्भिक ब्रज भाषा की रचनाएँ संकलित हैं। **महाराणा का महत्त्व**, **प्रेमपथिक** इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं।

(2) नाटक—प्रसाद जी एक सफल नाटक लेखक भी थे। आपके नाटकों में 'चन्द्रगुप्त', 'स्कन्दगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी', 'कामना', 'जनमेजय का नागयज्ञ', 'एक घूँट', 'विशाखा', 'करुणालय', 'राज्यश्री', 'अजातशत्रु' तथा 'प्रायश्चित्त' मुख्य हैं।

(3) उपन्यास—आपने तीन उपन्यास लिखे—(1) कंकाल, (2) तितली और (3) इरावती (अपूर्ण)।

(4) कहानी संग्रह—आपने उत्कृष्ट कहानियाँ भी लिखीं। इन कहानियों में भारत के अतीत का गौरव साकार हो उठता है। इनके कहानी संग्रह हैं—'प्रतिध्वनि', 'आँधी', 'इन्द्रजाल', 'आकाशदीप' एवं 'छाया'।

(5) निबन्ध—काव्य और कला, रहस्यवाद, रस, नाटकों में रस का प्रयोग, नाटकों में आरंभ, रंगमंच, आरंभिक-पाठ काव्य, यथार्थ वाद और छायावाद पहले 'हंस' में प्रकाशित हुए थे। बाद में पुस्तकाकार ''काव्य और कला और अन्य निबन्ध'' नाम से संपादित होकर प्रकाशित हुए। बाद में उन्होंने शोधपरक ऐतिहासिक निबन्ध यथा : सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य, प्राचीन आर्यावर्त और उसका प्रथम सम्राट आदि भी लिखे।

(6) चम्पू—'प्रसाद' ने कुल तीन चम्पू लिखे हैं। 'उर्वशी चम्पू' (1906 ई०), 'बभ्रुवाहन', 'उर्वशी'।

भाषा-शैली—प्रसाद जी की भाषा पूर्णतः साहित्यिक, परिमार्जित एवं परिष्कृत है। भाषा प्रवाहयुक्त होते हुए भी संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली है, जिसमें सर्वत्र ओज एवं माधुर्य गुण विद्यमान है। अपने सूक्ष्म भावों को व्यक्त करने के लिए प्रसाद जी ने लक्षणा एवं व्यंजना का आश्रय लिया है। प्रसाद जी की शैली काव्यात्मक चमत्कारों से परिपूर्ण है। संगीतात्मकता एवं लय पर आधारित इनकी शैली अत्यन्त सरस एवं मधुर है।

●●

पुनर्मिलन

चौंक उठी अपने विचार से
कुछ दूरागत ध्वनि सुनती,
इस निस्तब्ध निशा में कोई
चली आ रही है कहती—
"अरे बता दो मुझे दया कर
कहाँ प्रवासी है मेरा?
उसी बावले से मिलने को
डाल रही हूँ मैं फेरा।
रूठ गया था अपनेपन से
अपना सकी न उसको मैं,
वह तो मेरा अपना ही था
भला मनाती किसको मैं!
यही भूल अब शूल सदृश हो,
साल रही उर में मेरे,
कैसे पाऊँगी उसको मैं
कोई आकर कह दे रे!"
इड़ा उठी, दिख पड़ा राज-पथ
धुँधली-सी छाया चलती,
वाणी में थी करुण वेदना
वह पुकार जैसी जलती।
शिथिल शरीर वसन विशृंखल
कबरी अधिक अधीर खुली,
छिन्न पत्र मकरन्द लुटी-सी
ज्यों मुरझायी हुई कली।
नव कोमल अवलम्ब साथ में
वय किशोर उँगली पकड़े,
चला आ रहा मौन धैर्य-सा
अपनी माता को जकड़े।
थके हुए थे दुखी बटोही,
वे दोनों ही माँ-बेटे,
खोज रहे थे भूले मनु को
जो घायल हो कर लेटे।
इड़ा आज कुछ द्रवित हो रही
दुखियों को देखा उसने,
पहुँची पास और फिर पूछा
"तुमको बिसराया किसने?
इस रजनी में कहाँ भटकती
जाओगी तुम बोलो तो,

बैठो आज अधिक चंचल हूँ
व्यथा-गाँठ निज खोलो तो।
जीवन की लम्बी यात्रा में
खोए भी हैं मिल जाते,
जीवन है तो कभी मिलन है
कट जाती दुख की रातें।''
श्रद्धा रुकी कुमार श्रान्त था
मिलता है विश्राम यहीं,
चली इड़ा के साथ जहाँ पर
वह्नि शिखा-प्रज्वलित रही।
सहसा धधकी वेदी-ज्वाला
मण्डप आलोकित करती,
कामायनी देख पायी कुछ
पहुँची उस तक डग भरती।
और वही मनु! घायल सचमुच
तो क्या सच्चा स्वप्न रहा?
'आह प्राण प्रिय! यह क्या? तुम यों?''
घुला हृदय, बन नीर बहा।
इड़ा चकित, श्रद्धा आ बैठी
वह थी मनु को सहलाती,
अनुलेपन-सा मधुर स्पर्श था
व्यथा भला क्यों रह जाती?
उस मूर्च्छित नीरवता में कुछ
हलके से स्पन्दन आये,
आँखें खुलीं चार कोनों में
चार बिन्दु आकर छाये।
उधर कुमार देखता ऊँचे,
मन्दिर, मण्डप, वेदी को,
यह सब क्या है नया मनोहर
कैसे ये लगते जी को?
माँ ने कहा 'अरे आ तू भी
देख पिता हैं पड़े हुए'
'पिता! आ गया लो' यह कहते
उसके रोएँ खड़े हुए।
'माँ जल दे, कुछ प्यासे होंगे
क्या बैठी कर रही यहाँ?'
मुखर हो गया सूना मण्डप
यह सजीवता रही कहाँ?
आत्मीयता घुली उस घर में
छोटा-सा परिवार बना,
छाया एक मधुर स्वर उस पर
श्रद्धा का संगीत बना।

(कामायनी के 'निर्वेद' सर्ग से)

अभ्यास प्रश्न

● विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्यगत सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
   (अ) चौंक उठी.....मैं फेरा।
   (ब) रूठ गया था.....कह दे रे।
   (स) इड़ा आज.....खोलो तो।
   (द) श्रद्धा रुकी.....सच्चा स्वप्न रहा।
   (य) और वही मनु.....रह जाती?
   (र) मुखर हो गया.....संगीत बना।
2. जयशंकर प्रसाद की जीवनी एवं रचनाओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा जयशंकर प्रसाद की साहित्यिक सेवाओं एवं भाषा-शैली का उल्लेख कीजिए।

3. 'पुनर्मिलन' काव्यांश का सारांश एवं मूलभाव अपने शब्दों में लिखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रसाद के प्रकृति-चित्रण पर टिप्पणी लिखिए।
2. इड़ा को कामायनी 'धुँधली-सी छाया' क्यों लग रही थी?
3. विरहिणी के रूप में कामायनी का चित्रण कवि ने किस प्रकार किया है?
4. 'पुनर्मिलन' काव्यांश के मूलभाव से सम्बन्धित चार वाक्य लिखिए।
5. कामायनी तथा उसके पुत्र के मनु से पुनर्मिलन का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
6. जयशंकर प्रसाद की भाषा-शैली लिखिए।
7. 'पुनर्मिलन' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. जयशंकर प्रसाद किस काल के कवि हैं?
2. जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य का नाम लिखिए।
3. जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित दो काव्य-ग्रन्थों के नाम लिखिए।
4. जयशंकर प्रसाद को किस युग का प्रवर्तक माना जाता है?
5. श्रद्धा कौन थी?
6. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइये—
   (अ) श्रद्धा के पुत्र का नाम मानव है। ( )
   (ब) जयशंकर प्रसाद छायावादी कवि हैं। ( )
   (स) पुनर्मिलन कामायनी 'निर्वेद सर्ग' से उद्धृत है। ( )

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
   (अ) मुखर हो गया सूना मण्डप।
   (ब) आत्मीयता घुली उस घर में, छोटा-सा परिवार बना।
2. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रस का नाम बताइए—
   (अ) धुला हृदय, बन नीर बहा।
   (ब) इड़ा आज कुछ द्रवित हो रही दुखियों को देखा उसने।
3. 'मुखर हो गया सूना मण्डप' में कौन-सा अलंकार है?

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. छायावादी युग के प्रवर्त्तक माने जाते हैं—
   (अ) **जयशंकर प्रसाद** (ब) मैथिलीशरण गुप्त (स) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (द) महादेवी वर्मा
2. जयशंकर प्रसाद का जन्म कब हुआ था?
   (अ) 1885 ई. (ब) **1889 ई.** (स) 1890 ई. (द) 1892 ई.
3. जयशंकर प्रसाद का जन्म-स्थान है—
   (अ) **वाराणसी** (ब) प्रयाग (स) मथुरा (द) कानपुर
4. जयशंकर प्रसाद का निधन कब हुआ था?
   (अ) 1935 ई. (ब) **1937 ई.** (स) 1940 ई. (द) 1945 ई.
5. 'कामायनी' के रचनाकार थे—
   (अ) **जयशंकर प्रसाद** (ब) मैथिलीशरण गुप्त (स) महादेवी वर्मा (द) सुमित्रानन्दन पंत
6. 'कामायनी' पर प्रसाद को हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा कौन-सा पुरस्कार दिया गया?
   (अ) **मंगला प्रसाद पारितोषिक** (ब) साहित्य वाचस्पति
   (स) भारत-भारती (द) इनमें से कोई नहीं
7. निम्न में से कौन-सा काव्य ग्रन्थ जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित है?
   (अ) आँसू (ब) लहर (स) झरना (द) **उपर्युक्त सभी**
8. 'पुनर्मिलन' कविता के रचनाकार हैं—
   (अ) **जयशंकर प्रसाद** (ब) महादेवी वर्मा (स) सुमित्रानन्दन पन्त (द) निराला
9. निम्न में कौन-सी प्रसाद की भाषा की विशेषता है?
   (अ) साहित्यिक (ब) प्रवाहयुक्त (स) संस्कृतनिष्ठ (द) **इनमें सभी**
10. पुनर्मिलन कविता में किसके मिलन का वर्णन है?
   (अ) श्रद्धा-मनु (ब) श्रद्धा और कुमार
   (स) **श्रद्धा-मनु और कुमार** (द) इनमें से कोई नहीं

उत्तरमाला : 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (अ) 6. (अ) 7. (द) 8. (अ) 9. (द) 10. (स)

●●

7 सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

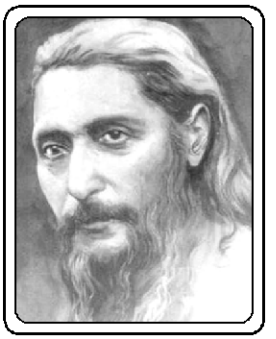

जीवन-परिचय—निरालाजी का जन्म सन् 1896 ई० में बंगाल के मेदिनीपुर जिले में हुआ था। इनके पिता रामसहाय त्रिपाठी उन्नाव जिले के गढ़कोला गाँव के रहने वाले थे और मेदिनीपुर में नौकरी करते थे। वहीं पर निराला की शिक्षा बँगला के माध्यम से आरम्भ हुई। इन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की। बचपन से ही इनको कुश्ती, घुड़सवारी और खेलों में बहुत अधिक रुचि थी। बचपन में ही इनका विवाह 'मनोहरा देवी' से हो गया था। 'रामचरितमानस' से इन्हें विशेष प्रेम था। बालक सूर्यकान्त के सिर से माता-पिता की छाया अल्पायु में ही उठ गयी। निराला जी को बंगला भाषा और हिन्दी साहित्य का अच्छा ज्ञान था। इन्होंने संस्कृत और अंग्रेजी का भी अध्ययन किया था। इनकी पत्नी एक पुत्र और एक पुत्री को जन्म देकर स्वर्ग सिधार गयीं। पत्नी के वियोग के समय में ही आपका परिचय पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी से हुआ। निराला जी को बार-बार आर्थिक कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ा। आर्थिक कठिनाइयों के बीच ही इनकी पुत्री सरोज का देहान्त हो गया। ये स्वामी रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द जी से बहुत प्रभावित थे। इनकी मृत्यु सन् 1961 ई० में हुई।

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—21 फरवरी, 1896 ई०।
- **जन्म-स्थान**—मेदिनीपुर (बंगाल)।
- **पिता**—पं० रामसहाय त्रिपाठी।
- **मृत्यु**—15 अक्टूबर, 1961 ई०।
- **भाषा**—खड़ीबोली।
- छायावादी रचनाकार।

साहित्यिक सेवाएँ—महाकवि निराला का उदय छायावादी कवि के रूप में हुआ। इन्होंने अपने साहित्यिक जीवन का प्रारम्भ 'जन्मभूमि की वन्दना' नामक एक कविता की रचना करके किया। इन्होंने 'सरस्वती' और 'मर्यादा' पत्रिकाओं का निरन्तर अध्ययन करके हिन्दी का ज्ञान प्राप्त किया। 'जुही की कली' नामक कविता की रचना करके इन्होंने हिन्दी जगत् में अपनी पहचान बना ली। छायावादी लेखक के रूप में प्रसाद, पन्त और महादेवी वर्मा के समकक्ष ही इनकी गणना की जाती है। ये छायावाद के चार स्तम्भों में से एक माने जाते हैं।

रचनाएँ—निराला जी की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

काव्य संग्रह—अनामिका (1923), परिमल (1930), गीतिका (1936), अनामिका (द्वितीय) (1939) (इसी संग्रह में 'सरोज स्मृति' और 'राम की शक्तिपूजा' जैसी प्रसिद्ध कविताओं का संकलन है), तुलसीदास (1939), कुकुरमुत्ता (1942),

अणिमा (1943), बेला (1946), नए पत्ते (1946), अर्चना (1950), आराधना (1953), गीत कुंज (1954), सांध्य काकली, अपरा (संचयन)।

उपन्यास—अप्सरा (1931), अलका (1933), प्रभावती (1936), निरूपमा (1936), कुल्ली भाट (1938-39), बिल्लेसुर बकरिहा (1942), चोटी की पकड़ (1946), काले कारनामे (1950) (अपूर्ण), चमेली (अपूर्ण), इन्दुलेखा (अपूर्ण)।

कहानी संग्रह—लिलि (1934), सखी (1935), सुकुल की बीवी (1941), चतुरी चमार (1945), ['सखी' संग्रह की कहानियों का ही इस नए नाम से पुनर्प्रकाशन]

निबन्ध-आलोचना—रवीन्द्र कविता कानन (1929), प्रबंध पद्म (1934), प्रबंध प्रतिमा (1940), चाबुक (1942), चयन (1957), संग्रह (1963)।

पुराण कथा—महाभारत (1939), रामायण की अन्तर्कथाएँ (1956)।

बालोपयोगी साहित्य—भक्त ध्रुव (1926), भक्त प्रहलाद (1926), भीष्म (1926), महाराणा प्रताप (1927), सीखभरी कहानियाँ (ईसप की नीति कथाएं) (1969)।

अनुवाद—रामचरितमानस (विनय भाग) (1948), आनंदमठ, विषवृक्ष, कृष्णकांत का वसीयतनामा, कपालकुंडला, दुर्गेश नन्दिनी, राजसिंह, राजरानी, देवी चौधरानी, युगलांगुलीय, चन्द्रशेखर, रजनी, श्री रामकृष्णवचनामृत, परिव्राजक, भारत में विवेकानंद, राजयोग (अंशानुवाद)।

भाषा-शैली—निराला जी ने अपनी रचनाओं में शुद्ध एवं परिमार्जित खड़ीबोली का प्रयोग किया है। भाषा में अनेक स्थलों पर शुद्ध तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है, जिसके कारण इनके भावों को सरलता से समझने में कठिनाई होती है। इनकी छायावादी रचनाओं में जहाँ भाषा की क्लिष्टता मिलती है, वहीं इसके विपरीत प्रगतिवादी रचनाओं की भाषा अत्यन्त सरल, सरस एवं व्यावहारिक है। छायावाद पर आधारित इनकी रचनाओं में कठिन एवं दुरूह शैली तथा प्रगतिवादी रचनाओं में सरल एवं सुबोध शैली का प्रयोग हुआ है।

♦

दान

निकला पहिला अरविन्द आज,
देखता अनिन्द्य रहस्य-साज;
सौरभ - वसना समीर बहती,
कानों में प्राणों की कहती;
गोमती क्षीण-कटि नटी नवल
नृत्यपर-मधुर आवेश-चपल।
मैं प्रातः पर्यटनार्थ चला
लौटा, आ पुल पर खड़ा हुआ,
सोचा "विश्व का नियम निश्चल"
जो जैसा, उसको वैसा फल
देती यह प्रकृति स्वयं सदया,
सोचने को न रहा कुछ नया,
सौन्दर्य, गीत, बहु वर्ण, गन्ध,
भाषा, भावों के छन्द-बन्ध,
और भी उच्चतर जो विलास,
प्राकृतिक दान वे, सप्रयास
या अनायास आते हैं सब,
सब में है श्रेष्ठ, धन्य, मानव।"
फिर देखा, उस पुल के ऊपर
बहु संख्यक बैठे हैं वानर।
एक ओर पन्थ के, कृष्णकाय
कंकाल शेष नर मृत्यु-प्राय
बैठा सशरीर दैन्य दुर्बल,
भिक्षा को उठी दृष्टि निश्चल,
अति क्षीण कण्ठ, है तीव्र श्वास,
जीता ज्यों जीवन से उदास।
ढोता जो वह, कौन-सा शाप?
भोगता कठिन, कौन-सा पाप?
यह प्रश्न सदा ही है पथ पर,
पर सदा मौन इसका उत्तर।
जो बड़ी दया का उदाहरण,
वह पैसा एक, उपायकरण!
मैंने झुक नीचे को देखा,
तो झलकी आशा की रेखा
विप्रवर स्नान कर चढ़ा सलिल
शिव पर दूर्वादल, तण्डुल, तिल,
लेकर झोली आए ऊपर,

देखकर चले तत्पर वानर।
द्विज राम-भक्त, भक्ति की आस
भजते शिव को बारहों मास;
कर रामायण का पारायण,
जपते हैं श्रीमन्नारायण,
दुख पाते जब होते अनाथ,
कहते कपियों के जोड़ हाथ,
मेरे पड़ोस के वे सज्जन,
करते प्रतिदिन सरिता-मज्जन,
झोली से पुए, निकाल लिये,
बढ़ते कपियों के हाथ दिये,
देखा भी नहीं उधर फिर कर
जिस ओर रहा वह भिक्षु इतर,
चिल्लाया किया दूर दानव,
बोला मैं—"धन्य, श्रेष्ठ मानव!"

('अपरा' से)

अभ्यास प्रश्न

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्यगत सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) निकला पहिला..... आवेश-चपल।

(ब) ढोता जो वह..... उपायकरण!

(स) मैंने झुक..... तत्पर वानर।

(र) द्विज राम-भक्त..... धन्य, श्रेष्ठ मानव!

2. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा निराला जी की साहित्यिक सेवाओं एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

अथवा निराला जी की साहित्यिक सेवाओं एवं काव्य-रचनाओं पर प्रकाश डालिए।

3. निराला जी द्वारा रचित 'दान' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'दान' शीर्षक कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।

2. पुल पर खड़े होकर निराला जी क्या सोचते हैं?

3. निराला ने 'दान' कविता के माध्यम से किस पर प्रहार किया है?

4. मानव के विषय में कवि की धारणा पहले क्या थी?
5. 'कानों में प्राणों की कहती' से निराला का क्या तात्पर्य है?
6. 'दान' कविता में कवि द्वारा किये गये व्यंग्य को लिखिए।
7. 'दान' शीर्षक कविता पर एक अनुच्छेद लिखिए।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. निराला किस युग के कवि माने जाते हैं?
2. निराला की दो रचनाओं के नाम लिखिए।
3. निराला की पुत्री का क्या नाम था?
4. छायावाद के स्तम्भ कहे जानेवाले कवि का नाम लिखिए।
5. निराला के काव्य की भाषा क्या है?
6. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइये—
   (अ) भिखारी का रंग काला था। ( )
   (ब) शिव-भक्त बन्दरों को पुए खिला रहा था। ( )
   (स) निराला भारतेन्दु युग के कवि माने जाते हैं। ( )

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
   (अ) सोचा 'विश्व का नियम निश्चल' जो जैसा, उसको वैसा फल।
   (ब) विप्रवर स्नान कर चढ़ा सलिल, शिव पर दूर्वादल, ताण्डुल, तिल।
2. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए—
   (अ) जीता ज्यों जीवन से उदास।
   (ब) भाषा भावों के छन्द-बन्ध।
   (स) कहते कपियों के जोड़ हाथ।
3. निम्नलिखित में समास-विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए—
   कृष्णकाय, दूर्वादल, सरिता-मज्जन, रामभक्त।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' किस युग के कवि हैं?
   (अ) **छायावादी युग** (ब) प्रयोगवादी युग
   (स) प्रगतिवादी युग (द) इनमें से कोई नहीं
2. निराला जी का जन्म कब हुआ था?
   (अ) **1896 ई.** (ब) 1898 ई.
   (स) 1900 ई. (द) 1902 ई.

3. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म-स्थान है—
(अ) प्रयाग (उ.प्र.) (ब) वाराणसी (उ.प्र.)
(स) **मेदिनीपुर (बंगाल)** (द) पटना (बिहार)

4. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का निधन कब हुआ था?
(अ) **1961 ई.** (ब) 1962 ई.
(स) 1963 ई. (द) 1964 ई.

5. निराला द्वारा रचित कविता 'दान' किस काव्य संग्रह से उद्धृत है?
(अ) अनामिका (ब) परिमल
(स) **अपरा** (द) अणिमा

6. 'जीता ज्यों जीवन से उदास' में कौन-सा अलंकार है?
(अ) **अनुप्रास** (ब) उपमा
(स) रूपक (द) उत्प्रेक्षा

7. निराला की पुत्री का नाम था—
(अ) कमला (ब) **सरोज**
(स) विमला (द) निर्मला

8. शिवभक्त बन्दरों को क्या खिला रहे थे?
(अ) **पुए** (ब) फल
(स) मिठाई (द) रोटी

9. 'राम की शक्ति पूजा' के रचनाकार हैं—
(अ) सुमित्रानन्दन पन्त (ब) **निराला**
(स) जयशंकर प्रसाद (द) महादेवी वर्मा

10. 'सरोज स्मृति' के रचनाकार हैं—
(अ) महादेवी वर्मा (ब) **सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'**
(स) जयशंकर प्रसाद (द) सुमित्रानन्दन पन्त

11. निराला के काव्य की भाषा है—
(अ) **खड़ी बोली** (ब) ब्रज
(स) अवधी (द) भोजपुरी

उत्तरमाला : 1. (अ) 2. (अ) 3. (स) 4. (अ) 5. (स) 6. (अ) 7. (ब) 8. (अ) 9. (ब) 10. (ब) 11. (अ)

●●

8 सोहनलाल द्विवेदी

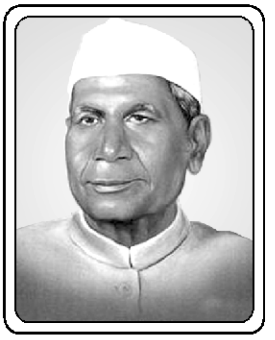

जीवन-परिचय—सोहनलाल द्विवेदी का जन्म सन् 1906 ई० में फतेहपुर जिले के बिन्दकी नामक कस्बे में हुआ था। द्विवेदीजी का परिवार सम्पन्न था, अतः इनकी शिक्षा की व्यवस्था बचपन से ही अच्छी थी।

हाईस्कूल तक की शिक्षा फतेहपुर में हुई। उच्च शिक्षा के लिए यह काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी गये। वहीं से इन्होंने एम० ए० और एल० एल० बी० की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। हिन्दी के सुयोग्य अध्यापक पं० बलदेवप्रसाद शुक्ल से इन्हें साहित्यिक संस्कार प्राप्त हुए। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में ये मदनमोहन मालवीय के सम्पर्क में आये। इनके मन में देश-प्रेम की भावना दृढ़ हुई। महात्मा गाँधी की विचारधारा से यह परिचित हुए। स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया और जेल भी गये। सन् 1938 से 1942 ई० तक दैनिक राष्ट्रीय पत्र 'अधिकार' का लखनऊ से सम्पादन करते रहे। कुछ वर्षों तक 'बालसखा' के अवैतनिक सम्पादक भी रहे। स्वतन्त्रता के बाद गाँधीवाद की मशाल जलाये रखने वाले इस कवियोद्धा का निधन 29 फरवरी, सन् 1988 ई० को हुआ।

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—22 फरवरी, 1906 ई०।
- **जन्म-स्थान**—बिन्दकी (फतेहपुर), उ०प्र०।
- **मृत्यु**—29 फरवरी, 1988 ई०।
- **भाषा**—खड़ीबोली।
- **सम्पादन**—'अधिकार' और 'बालसखा'।

साहित्यिक सेवाएँ—द्विवेदीजी ने किसानों की दशा, खादी का प्रचार, ग्रामोद्योग की उन्नति आदि विषयों को लेकर अपने गीतों की रचना की है। अपनी कविताओं के माध्यम से इन्होंने देश के नवयुवकों में अभूतपूर्व उत्साह एवं देश-प्रेम की भावना का संचार किया। इनकी बाल-कविताएँ भी नवीन उत्साह और जागरण का मन्त्र फूँकने वाली हैं। सन् 1941 ई० में इनका प्रथम काव्य-संग्रह 'भैरवी' प्रकाशित हुआ। इसके बाद द्विवेदीजी निरन्तर साहित्य-साधना में लगे रहे। बालकों को प्रेरित करने के उद्देश्य से भी इन्होंने श्रेष्ठ साहित्य का सृजन किया।

रचनाएँ—द्विवेदीजी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—

(1) कविता संग्रह—'भैरवी', 'पूजा गीत', 'चेतना', 'प्रभाती' आदि। इनमें राष्ट्रीयता, समाज-सुधार एवं मानवोत्थान का आह्वान करने वाली कविताएँ संकलित हैं।

(2) बाल कविता संग्रह—'शिशु भारती', 'दूध बतासा', 'बाल भारती', 'बिगुल', 'बाँसुरी', 'झरना' तथा 'बच्चों के बापू' द्विवेदीजी के बाल-कविता संग्रह हैं।

(3) प्रेमगीत संग्रह—'वासन्ती' द्विवेदीजी का प्रेम के गीतों का संग्रह है, जिसमें प्रेम के उदात्त रूप की सरस अभिव्यक्ति हुई है।

(4) आख्यान काव्य—'विषपान', 'वासवदत्ता', 'कुणाल' द्विवेदीजी के प्रसिद्ध प्रबन्ध आख्यान काव्य हैं। इनमें इतिहास तथा कल्पना का अद्भुत समन्वय है।

भाषा-शैली—द्विवेदीजी की भाषा सरल, परिष्कृत खड़ीबोली है। कहीं-कहीं पर संस्कृत शब्दों का तत्सम रूप में प्रयोग किया गया है। भाषा में व्यावहारिक शब्दों तथा मुहावरों का अनेक स्थलों पर प्रयोग कवि ने किया है। कुछ स्थानों पर उर्दू भाषा के प्रचलित शब्दों के प्रयोग भी देखने को मिलते हैं। इन्होंने प्रबन्ध एवं मुक्तक दोनों ही शैलियों में काव्य-रचना की है। ●●

उन्हें प्रणाम

भेद गया है दीन-अश्रु से जिनका मर्म,
मुहताजों के साथ न जिनको आती शर्म,
किसी देश में किसी वेश में करते कर्म,
मानवता का संस्थापन ही है जिनका धर्म।
ज्ञात नहीं है जिनके नाम।
उन्हें प्रणाम! सतत प्रणाम!

कोटि-कोटि नंगों, भिखमंगों के जो साथ,
खड़े हुए हैं कंधा जोड़े, उन्नत माथ,
शोषित जन के, पीड़ित जन के, कर को थाम,
बढ़े जा रहे उधर जिधर है मुक्ति प्रकाम!
ज्ञात और अज्ञात मात्र ही जिनके नाम!
वन्दनीय उन सत्पुरुषों को सतत प्रणाम!

जिनके गीतों के पढ़ने से मिलती शान्ति,
जिनकी तानों के सुनने से झिलती भ्रान्ति,
छा जाती मुखमण्डल पर यौवन की कान्ति,
जिनकी टेकों पर टिकने से टिकती क्रान्ति।

मरण मधुर बन जाता है जैसे वरदान,
अधरों पर खिल जाती है मादक मुस्कान,
नहीं देख सकते जग में अन्याय वितान,
प्राण उच्छ्वसित होते, होने को बलिदान।

जो घावों पर मरहम का कर देते काम!
उन सहृदय हृदयों को मेरे कोटि प्रणाम!

उन्हें जिन्हें है नहीं जगत में अपना काम,
राजा से बन गये भिखारी तज आराम,
दर-दर भीख माँगते सहते वर्षा घाम
दो सूखी मधुकरियाँ दे देतीं विश्राम!
जिनकी आत्मा सदा सत्य का करती शोध,
जिनको है अपनी गौरव गरिमा का बोध,
जिन्हें दुखी पर दया, क्रूर पर आता क्रोध
अत्याचारों का अभीष्ट जिनको प्रतिशोध!
उन्हें प्रणाम! सतत प्रणाम!

जो निर्धन के धन निर्बल के बल अविराम!
उन नेताओं के चरणों में कोटि प्रणाम।

मातृभूमि का जगा जिन्हें ऐसा अनुराग!
यौवन में ही लिया जिन्होंने है वैराग,
नगर-नगर की ग्राम-ग्राम की छानी धूल
समझे जिससे सोई जनता अपनी भूल!
जिनको रोटी नमक न होता कभी नसीब,
जिनको युग ने बना रखा है सदा गरीब,
उन मूर्खों को विद्वानों को जो दिन-रात,
इन्हें जगाने को फेरी देते हैं प्रात;
जगा रहे जो सोए गौरव को अभिराम।

उस स्वदेश के स्वाभिमान को कोटि प्रणाम!
जंजीरों में कसे हुए सीकचों के पार
जन्मभूमि जननी की करते जय-जयकार
सही कठिन, हथकड़ियों की बेतों की मार
आजादी की कभी न छोड़ी टेक पुकार!

स्वार्थ, लोभ, यश कभी सका है जिन्हें न जीत
जो अपनी धुन के मतवाले मन के मीत
ढाने को साम्राज्यवाद की दृढ़ दीवार
बार-बार बलिदान चढ़े प्राणों को वार!
बंद सीकचों में जो हैं अपने सरनाम
धीर, वीर उन सत्पुरुषों को कोटि प्रणाम!
उन्हीं कर्मठों, ध्रुव धीरों को है प्रतियाम!
कोटि प्रणाम!
जो फाँसी के तख्तों पर जाते हैं झूम,
जो हँसते-हँसते शूली को लेते चूम,
दीवारों में चुन जाते हैं जो मासूम,
टेक न तजते, पी जाते हैं विष का धूम!

उस आगत को जो कि अनागत दिव्य भविष्य
जिनकी पावन ज्वाला में सब पाप हविष्य!
सब स्वतन्त्र, सब सुखी जहाँ पर सुख विश्राम
नवयुग के उस नव प्रभात की किरण ललाम।

उस मंगलमय दिन को मेरे कोटि प्रणाम!
सर्वोदय हँस रहा जहाँ, सुख-शान्ति प्रकाम!

('जय भारत जय' से)

अभ्यास प्रश्न

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्यगत सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
   (अ) भेद गया.....सतत प्रणाम!
   (ब) कोटि-कोटि.....सतत प्रणाम!
   (स) जो घावों.....देतीं विश्राम!
   (द) मातृभूमि का..... अपनी भूल!
   (य) उस आगत.....शान्ति प्रकाम!
2. सोहनलाल द्विवेदी की जीवनी एवं रचनाओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा सोहनलाल द्विवेदी की साहित्यिक विशेषताएँ एवं भाषा-शैली का उल्लेख कीजिए।

अथवा सोहनलाल द्विवेदी की रचनाओं एवं भाषा-शैली का उल्लेख कीजिए।

3. 'उन्हें प्रणाम' कविता का सारांश लिखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'उन्हें प्रणाम' कविता के आधार पर लिखिए कि कवि ने किन-किन को प्रणाम करने की बात कही है?
2. क्रान्ति के आश्रयदाताओं के कौन-कौन से लक्षण बताये गये हैं।
3. 'उन्हें प्रणाम' कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।
4. कवि ने स्वदेश का स्वाभिमान किसे कहा है?
5. कवि किस मंगलमय दिन को अपना प्रणाम अर्पित करता है?
6. देशभक्त किस उद्देश्य से नगर-नगर तथा ग्राम-ग्राम धूल चाटते हैं?

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. सोहनलाल द्विवेदी की दो रचनाओं के नाम लिखिए।
2. द्विवेदीजी ने किन पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया?
3. किसी एक गाँधीवादी कवि का नाम लिखिए।
4. कवि की दृष्टि में वन्दनीय पुरुष कौन-से हैं?
5. राष्ट्र-निर्माता को कवि ने क्या कहा है?
6. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइये—
   (अ) कवि कर्मठ वीरों को प्रणाम करता है। ( )
   (ब) द्विवेदीजी की भाषा खड़ीबोली है। ( )
   (स) कवि परतन्त्रता के दिन को प्रणाम करता है। ( )

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
   (अ) नगर-नगर की ग्राम-ग्राम की छानी धूल।
   (ब) ढाने को साम्राज्यवाद की दृढ़ दीवार।
   (स) नव युग के उस नव प्रभात की किरण ललाम।
2. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद करते हुए सन्धि का नाम लिखिए—
   स्वाभिमान, सर्वोदय।
3. निम्नलिखित शब्द-युग्मों से विशेषण-विशेष्य अलग कीजिए—
   मरण मधुर, मादक मुस्कान, दृढ़ दीवार, बन्द सीकचे।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. सोहन लाल द्विवेदी का जन्म कब हुआ था?
   (अ) **1906 ई.** (ब) 1910 ई. (स) 1912 ई. (द) 1914 ई.
2. सोहन लाल द्विवेदी का जन्म-स्थान है—
   (अ) कानपुर (ब) **फतेहपुर (बिन्दकी)** (स) सहारनपुर (द) मथुरा
3. सोहन लाल द्विवेदी का निधन कब हुआ था?
   (अ) **1988 ई.** (ब) 1990 ई. (स) 1992 ई. (द) 1914 ई.
4. द्विवेदी जी ने कौन-से दैनिक-पत्र का सम्पादन किया?
   (अ) **अधिकार** (ब) कादम्बिनी (स) सरस्वती (द) कविवचन सुधा
5. द्विवेदी जी की भाषा है—
   (अ) ब्रज (ब) अवधी (स) **खड़ी बोली** (द) भोजपुरी
6. निम्न में कौन-सा द्विवेदी जी का काव्य संग्रह है?
   (अ) भैरवी (ब) पूजागीत (स) चेतना (द) **इनमें सभी**
7. निम्न में से कौन-सा द्विवेदी जी का 'प्रेम गीत' संग्रह है?
   (अ) **वासन्ती** (ब) भैरवी (स) विषपान (द) वासवदत्ता
8. 'दूध बतासा' किस प्रकार की रचना है?
   (अ) प्रेमगीत (ब) **बाल कविता** (स) आख्यान काव्य (द) इनमें से कोई नहीं
9. द्विवेदी जी का प्रथम काव्य संग्रह 'भैरवी' कब प्रकाशित हुआ?
   (अ) **1941 ई.** (ब) 1942 ई. (स) 1944 ई. (द) 1946 ई.
10. 'उन्हें प्रणाम' के रचनाकार हैं—
   (अ) जयशंकर प्रसाद (ब) **सोहन लाल द्विवेदी** (स) महादेवी वर्मा (द) निराला

उत्तरमाला : 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (अ) 5. (स) 6. (द) 7. (अ) 8. (ब) 9. (अ) 10. (ब)

9 हरिवंशराय बच्चन

जीवन-परिचय—हरिवंशराय बच्चन का जन्म प्रयागराज में मार्गशीर्ष कृष्ण 7, संवत् 1964 वि0 (सन् 1907 ई0) में हुआ। इन्होंने काशी और प्रयागराज में शिक्षा प्राप्त की। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से इन्होंने डॉक्टरेट की। कुछ समय ये प्रयाग विश्वविद्यालय में अध्यापक रहे और फिर दिल्ली स्थित विदेश मन्त्रालय में कार्य किया और वहीं से अवकाश ग्रहण किया।

बच्चन उत्तर छायावादी काल के आस्थावादी कवि थे। इनकी कविताओं में मानवीय भावनाओं की सामान्य एवं स्वाभाविक अभिव्यक्ति हुई है। सरलता, संगीतात्मकता, प्रवाह और मार्मिकता इनके काव्य की विशेषताएँ हैं और इन्हीं से इनको इतनी अधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई। बच्चन जी को उनकी आत्मकथा के लिये भारतीय साहित्य के सर्वोच्च पुरस्कार '**सरस्वती सम्मान-1991**' से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, **सोवियत लैण्ड नेहरू** पुरस्कार तथा एफ्रो-एशियन राइटर्स कान्फ्रेन्स का **लोटस पुरस्कार** भी प्राप्त हुआ है। राष्ट्रपति ने भी इन्हें **पद्मभूषण** से अलंकृत किया। 18 जनवरी, सन् 2003 ई0 में बच्चनजी का निधन हो गया।

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—27 नवंबर, 1907 ई0।
- **जन्म-स्थान**—प्रयागराज।
- **पिता**—प्रताप नारायण।
- **मृत्यु**—18 जनवरी, सन् 2003 ई0।
- **भाषा**—खड़ीबोली।
- **शैली**—भावात्मक गीत शैली।

रचनाएँ—आरम्भ में बच्चन जी उमर खैयाम के जीवन-दर्शन से बहुत प्रभावित रहे। इसी ने इनके जीवन को मस्ती से भर दिया। इनकी काव्य-कृतियों में प्रमुख हैं—'**मधुशाला**', '**निशा निमन्त्रण**', '**प्रणय पत्रिका**', '**मधुकलश**', '**एकान्त संगीत**', '**सतरंगिणी**', '**मिलन यामिनी**', '**बुद्ध का नाचघर**', '**त्रिभंगिमा**', '**आरती और अंगारे**' तथा '**जाल समेटा**'। मधुशाला, मधुबाला, हाला और प्याला को इन्होंने प्रतीकों के रूप में स्वीकार किया।

साहित्यिक सेवाएँ—पहली पत्नी की मृत्यु के बाद घोर विषाद और निराशा ने इनके जीवन को घेर लिया। इसके स्वर हमको 'निशा-निमन्त्रण' और 'एकान्त संगीत' में सुनने को मिलते हैं। इसी समय से इनके हृदय की गम्भीर वृत्तियों का विश्लेषण आरम्भ हुआ, किन्तु 'सतरंगिणी' में फिर नीड़ का निर्माण किया गया और जीवन का प्याला एक बार फिर उल्लास और आनन्द के आसव से छलकने लगा। बच्चन वास्तव में व्यक्तिवादी कवि रहे हैं। 'बंगाल का काल' तथा इसी प्रकार की अन्य रचनाओं में इन्होंने अपने जीवन के बाहर विस्तृत जनजीवन पर भी दृष्टि डालने का प्रयत्न किया। इन परवर्ती रचनाओं में कुछ नवीन विषय भी उठाये गये और कुछ अनुवाद भी प्रस्तुत किये गये। इनमें कवि की विचारशीलता तथा चिन्तन की प्रधानता रही। वास्तव में इनकी कविताओं में राष्ट्रीय उद्गारों, व्यवस्था में व्यक्ति की असहायता और बेबसी के चित्र दिखायी पड़ते हैं।

भाषा एवं शैली—परवर्ती रचनाओं में कवि की वह भावावेशपूर्ण तन्मयता नहीं है, जो उसकी आरम्भिक रचनाओं में पाठकों और श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध करती रही। इन्होंने सरस खड़ीबोली का प्रयोग किया है। शैली भावात्मक गीत शैली है, जिसमें लाक्षणिकता और संगीतात्मकता है।

●●

पथ की पहचान

पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(1)

पुस्तकों में है नहीं
छापी गयी इसकी कहानी,
हाल इसका ज्ञात होता
है न औरों की जबानी,
अनगिनत राही गये इस
राह से, उनका पता क्या,
पर गये कुछ लोग इस पर
छोड़ पैरों की निशानी,
यह निशानी मूक होकर
भी बहुत कुछ बोलती है,
खोल इसका अर्थ, पंथी,
पंथ का अनुमान कर ले।
पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(2)

यह बुरा है या कि अच्छा,
व्यर्थ दिन इस पर बिताना
अब असंभव, छोड़ यह पथ
दूसरे पर पग बढ़ाना,
तू इसे अच्छा समझ,
यात्रा सरल इससे बनेगी,
सोच मत केवल तुझे ही
यह पड़ा मन में बिठाना,
हर सफल पंथी, यही
विश्वास ले इस पर बढ़ा है,
तू इसी पर आज अपने
चित्त का अवधान कर ले।
पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(3)

है अनिश्चित किस जगह पर
सरित, गिरि, गह्वर मिलेंगे,
है अनिश्चित, किस जगह पर
बाग, बन सुन्दर मिलेंगे।

किस जगह यात्रा खतम हो
जायगी, यह भी अनिश्चित,

है, अनिश्चित, कब सुमन, कब
कंटकों के शर मिलेंगे,
कौन सहसा छूट जायेंगे,
मिलेंगे कौन सहसा
आ पड़े कुछ भी, रुकेगा
तू न, ऐसी आन कर ले।

पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(4)

कौन कहता है कि स्वप्नों
को न आने दे हृदय में,
देखते सब हैं इन्हें
अपना उमर, अपने समय में,

और तू कर यत्न भी तो
मिल नहीं सकती सफलता,

ये उदय होते, लिए कुछ
ध्येय नयनों के निलय में,
किन्तु जग के पंथ पर यदि
स्वप्न दो तो सत्य दो सौ,
स्वप्न पर ही मुग्ध मत हो,
सत्य का भी ज्ञान कर ले।

पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(5)

स्वप्न आता स्वर्ग का, दृग-
कोरकों में दीप्ति आती,
पंख लग जाते पगों को,
ललकती उन्मुक्त छाती,

रास्ते का एक काँटा
पाँव का दिल चीर देता,

रक्त की दो बूँद गिरतीं,
एक दुनिया डूब जाती,
आँख में हो स्वर्ग लेकिन
पाँव पृथ्वी पर टिके हों,
कंटकों की इस अनोखी
सीख का सम्मान कर ले।

पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(बच्चन : 'सतरंगिणी' से)

अभ्यास प्रश्न

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
   (क) पुस्तकों में ..... की जबानी।
   (ख) है अनिश्चित ..... सुन्दर मिलेंगे।
   (ग) कौन कहता है कि .....बाट की पहचान कर ले।
   (घ) स्वप्न आता ..... चीर देता।
   (ङ) आँख में हो स्वर्ग .....पहचान कर ले।
2. हरिवंशराय बच्चन का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
3. बच्चन जी की साहित्यिक विशेषताओं एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
4. हरिवंशराय बच्चन का जीवनवृत्त लिखकर उनके साहित्यिक योगदान का उल्लेख कीजिए।
5. हरिवंशराय बच्चन की जीवनी का उल्लेख करते हुए उनकी रचनाओं और शैली पर प्रकाश डालिए।
6. हरिवंशराय बच्चन का जीवन-परिचय लिखिए तथा उनकी काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बटोही को चलने के पूर्व बाट की पहचान करने की सलाह कवि किस अभिप्राय से देता है?
2. यात्रा सुगम और सफल होने के लिए कवि क्या सुझाव देता है?
3. यात्रा में विघ्न-बाधाओं को किन प्रतीकों से बतलाया गया है?
4. *'स्वप्न पर ही मुग्ध मत हो, सत्य का भी ज्ञान कर ले'* कहने का क्या तात्पर्य है?
5. कवि 'आदर्श और यथार्थ के समन्वय' पर किन पंक्तियों द्वारा बल देता है और उसके लिए किस वस्तु का उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है?
6. 'पथ की पहचान' शीर्षक कविता का सारांश लिखिए।
7. 'पथ की पहचान' कविता में कवि ने क्या सन्देश दिया है? संक्षेप में लिखिए।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. हरिवंशराय बच्चन किस युग के कवि हैं?
2. बच्चन जी की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए।
3. मधुशाला किसकी रचना है?
4. बच्चन जी की भाषा पर प्रकाश डालिए।
5. बच्चन जी ने अपनी भाषा में किस शैली का प्रयोग किया है?
6. मधुशाला की विषय-वस्तु क्या है?
7. बच्चन जी ने मधुशाला, मधुबाला, हाला और प्याला को किस रूप में स्वीकार किया है?
8. 'पथ की पहचान' शीर्षक कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।
9. 'पथ की पहचान' कविता का उद्देश्य क्या है?

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
(अ) पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।
(ब) रास्ते का एक काँटा, पाँव का दिल चीर देता।

2. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए—
(अ) रक्त की दो बूँद गिरती एक दुनिया डूब जाती।
(ब) है अनिश्चित, किस जगह पर बाग, बन सुन्दर मिलेंगे।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. हरिवंश राय बच्चन का जन्म कब हुआ था?
(अ) **1907 ई.** (ब) 1910 ई. (स) 1912 ई. (द) 1914 ई.

2. हरिवंश राय बच्चन का जन्म-स्थान है—
(अ) वाराणसी (ब) **इलाहाबाद** (स) कानपुर (द) प्रतापगढ़

3. हरिवंश राय बच्चन का निधन कब हुआ था?
(अ) **2003 ई.** (ब) 2005 ई. (स) 2007 ई. (द) 2009 ई.

4. बच्चन जी को सरस्वती सम्मान कब प्राप्त हुआ?
(अ) 1990 ई. (ब) **1991 ई.** (स) 1992 ई. (द) 1994 ई.

5. 'पथ की पहचान' कविता के रचनाकार हैं—
(अ) **हरिवंश राय बच्चन** (ब) सोहन लाल द्विवेदी
(स) महादेवी वर्मा (द) इनमें से कोई नहीं

6. 'रक्त की दो बूँद गिरती एक दुनिया डूब जाती' पंक्ति में कौन सा अलंकार है?
(अ) सम्भावना (ब) **अतिशयोक्ति** (स) रूपक (द) उपमा

7. बच्चन जी की भाषा है—
(अ) **खड़ी बोली** (ब) अवधी (स) ब्रज (द) भोजपुरी

8. निम्न में कौन-सी रचना बच्चन जी की है?
(अ) मधुशाला (ब) मधुकलश (स) मधुबाला (द) **उपर्युक्त सभी**

9. भारत सरकार ने बच्चन जी को पद्मभूषण से कब सम्मानित किया?
(अ) **1976 ई.** (ब) 1980 ई. (स) 1982 ई. (द) 1984 ई.

10. बच्चन जी की किस रचना ने उन्हें कीर्ति के शिखर पर पहुँचा दिया?
(अ) **मधुशाला** (ब) निशा निमंत्रण (स) मधुकलश (द) मधुबाला

उत्तरमाला : 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (अ) 6. (ब) 7. (अ) 8. (द) 9. (अ) 10. (अ)

10 नागार्जुन

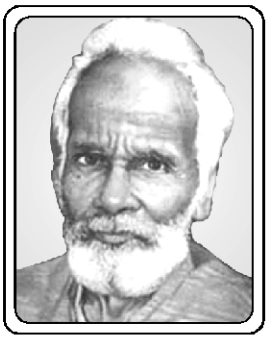

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**–30 जून, 1911 ई0।
- **जन्म-स्थान**–सतलखा (दरभंगा)।
- **वास्तविक नाम**–वैद्यनाथ मिश्र।
- **मृत्यु**–5 नवम्बर, सन् 1998 ई0।

जीवन-परिचय–श्री वैद्यनाथ मिश्र (यात्री : नागार्जुन) का जन्म दरभंगा जिले के सतलखा ग्राम में सन् 1911 ई0 में हुआ था। इनका आरम्भिक जीवन अभावों का जीवन था। जीवन के अभाव ने ही आगे चलकर इनके संघर्षशील व्यक्तित्व का निर्माण किया। व्यक्तिगत दुःख ने इन्हें मानवता के दुःख को समझने की क्षमता प्रदान की। इनके जीवन की यही रागिनी इनकी रचनाओं में मुखर हुई है। 5 नवम्बर, सन् 1998 ई0 को इनकी मृत्यु हो गयी।

साहित्यिक परिचय–इनके हृदय में सदैव दलित वर्ग के प्रति संवेदना रही है। अपनी कविताओं में ये अत्याचार-पीड़ित, त्रस्त व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करके ही सन्तुष्ट नहीं हो गये, बल्कि उनको अनीति और अन्याय का विरोध करने की प्रेरणा भी दी। सम-सामयिक, राजनीतिक तथा सामाजिक समस्याओं पर इन्होंने काफी लिखा है। व्यंग्य करने में इन्हें संकोच नहीं। तीखी और सीधी चोट करनेवाले ये अपने समय के प्रमुख व्यंग्यकार थे। इनकी रचनाओं पर उत्तर प्रदेश का **'भारत-भारती'**, मध्य प्रदेश का **'कबीर'** तथा बिहार का **'राजेन्द्र प्रसाद'** सम्मान प्राप्त हुआ। इन्हें 1965 में साहित्य अकादमी पुरस्कार और 1994 में साहित्य अकादमी फेलो के रूप में नामांकित कर सम्मानित किया गया।

नागार्जुन जीवन के, धरती के, जनता के तथा श्रम के गीत गानेवाले ऐसे कवि हैं, जिनकी कविताओं को किसी वाद की सीमा में नहीं बाँधा जा सकता। अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व की भाँति इन्होंने अपनी कविता को भी स्वतन्त्र रखा है।

रचनाएँ—उपन्यास–*'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'नयी पौध', 'बाबा बटेसरनाथ', 'दुःखमोचन' और 'वरुण के बेटे', दुःखमोचन, उग्रतारा, कुंभीपाक, पारो, आसमान में चाँद तारे।*

काव्य–*'युगधारा', 'सतरंगे पंखोंवाली', 'प्यासी-पथरायी आँखें', 'खून और शोले', 'हजार-हजार बाँहोंवाली', 'तुमने कहा था', पुरानी जूतियों का कोरस, आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने, इस गुबार की छाया में, ओममंत्र, भूल जाओ पुराने सपने, रत्नगर्भ, खिचड़ी विप्लव देखा हमने, तालाब की मछलियों।*

मैथिली रचनाएँ–चित्रा, पत्रहीन नग्न गाछ (कविता संग्रह), पारो, नवतुरिया (उपन्यास), **बांग्ला रचनाएँ** : मैं मिलिट्री का पुराना घोड़ा (हिन्दी अनुवाद), ऐसा क्या कह दिया मैंने–नागार्जुन रचना संचयन।

व्यंग्य—अभिनन्दन।

निबन्ध संग्रह—अन्न हीनम क्रियानाम।

बाल साहित्य—कथामंजरी-भाग-1, कथामंजरी भाग-2, मर्यादा पुरुषोत्तम, विद्यापति की कहानियाँ।

नागार्जुन जी की शैली—नागार्जुन जी की शैली पर उनके व्यक्तित्व की अमिट छाप है। वे अपनी बात अपने ढंग से कहते हैं, इसलिए उनकी काव्य-शैली किसी से मेल नहीं खाती। उनकी कविताएँ प्रगति और प्रयोग के मणिकांचन संयोग के कारण एक प्रकार के सहज भाव-सौन्दर्य से दीप्त हो उठी हैं। वे अपनी ओर से अपनी शैली में भाषा का न तो शृंगार करते दीख पड़ते हैं और न रस-परिपाक की योजना का अनुष्ठान करते हैं। उनके भाव स्वयं ही अपनी अभिव्यक्ति के अनुकूल अपनी भाषा के रूप-निर्माण कर उसमें रस की प्रतिष्ठा कर लेते हैं इसलिए उनकी शैली स्वाभाविक और पाठकों के हृदय में तत्सम्बन्धी भावनाओं को उद्दीप्त करनेवाली होती है। उन्होंने अधिकांशतः मुक्तक काव्यों की ही रचना की है। मुक्तक काव्य दो प्रकार के होते हैं—(1) भाव-मुक्तक और (2) प्रबन्ध-मुक्तक। भाव-मुक्तक दो प्रकार के होते हैं—(i) गेय और (ii) सुपाठ्य। नागार्जुन जी की अधिकांश भाव-मुक्तक सुपाठ्य हैं। उनके सुपाठ्य भाव-मुक्तक उनकी भावाभिव्यक्ति के अनुरूप कई प्रकार के हैं। कुछ भाव-मुक्तकों में प्रगति और प्रयोग का मणिकांचन संयोग है, कुछ में प्रगतिवादी स्वर मुखरित हो उठा है, कुछ में ग्राम्य एवं नागरिक जीवन की संघर्षमय परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण है, कुछ में प्रणय-निवेदन है, कुछ में प्रकृति-चित्रण है और कुछ में शिष्ट-गम्भीर हास्य तथा सूक्ष्म तीखे व्यंग्य की सृष्टि है। अपने मुक्तकों में उन्होंने मात्रिक छन्दों को स्थान देने के साथ अतुकान्त छन्दों को भी स्थान दिया है। 'युगधारा' में उनकी काव्य-शैली की समस्त विशेषताएँ देखी जा सकती हैं। उनकी काव्य-शैली में न तो अलंकारों के प्रयोग के प्रति विशेष आग्रह है और न रस-परिपाक के प्रति। फिर भी अलंकारों में उपमा, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास आदि के अनेक उदाहरण मिलते हैं। रसों में शृंगार, करुण, हास्य, वीर, रौद्र, शान्त आदि की सृष्टि स्वाभाविक ढंग से हुई है। नागार्जुन जी ने अपने काव्य-विषय को तत्सम्बन्धी प्रतीकों के माध्यम से उभारने में अच्छी सफलता प्राप्त की है। उन्होंने अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व की भाँति अपनी काव्य-शैली को भी स्वतन्त्र रखने की चेष्टा की है।

नागार्जुन जी की भाषा—नागार्जुन जी की भाषा अधिकांशतः लोक भाषा के अधिक निकट है। इसलिए उनकी भाषा सहज, सरल, बोधगम्य, स्पष्ट, स्वाभाविक और मार्मिक प्रभाव डालनेवाली है। कुछ थोड़ी-सी कविताओं में संस्कृत के क्लिष्ट-तत्सम, विसतन्तु, मदिरारुण, उन्माद आदि शब्दों का प्रयोग अधिक मात्रा में अवश्य किया गया है, किन्तु ऐसे शब्दों के प्रयोग से उनकी भावाभिव्यक्ति में बाधा नहीं पड़ती है। संस्कृत, पालि और प्राकृत भाषाओं के ज्ञाता होकर भी उनमें पाण्डित्य-प्रदर्शन की लालसा नहीं है। जिन कविताओं में संस्कृत की क्लिष्ट-तत्समों की अधिकता है उनमें भी पाण्डित्य-प्रदर्शन के प्रति उनका आग्रह न होकर भावाभिव्यक्ति के अनुरूप भाषा की प्रतिष्ठा करने का स्वाभाविक प्रयास है। उन्होंने अपनी भाषा में तद्भव तथा ग्रामीण शब्दों का भी यत्र-तत्र प्रयोग किया है। किन्तु ऐसे शब्द उनकी भावाभिव्यक्ति में बाधक न होकर उसमें एक विविध प्रकार की मिठास उत्पन्न करते हैं। कुछ कविताओं को छोड़कर उन्होंने अपनी शेष कविताओं में लोक-मुख को वाणी दी है। उनकी भाषा में न तो शब्दों की तोड़-मरोड़ है और न उस पर मैथिली का प्रभाव है।

♦

बादल को घिरते देखा है

अमल धवल गिरि के शिखरों पर, बादल को घिरते देखा है।
छोटे मोटे मोती जैसे, अतिशय शीतल वारि कणों को
मानसरोवर के उन स्वर्णिम-कमलों पर गिरते देखा है।
तुंग हिमालय के कंधों पर छोटी बड़ी कई झीलों के
श्यामल शीतल अमल सलिल में
समतल देशों के आ-आकर
पावस की ऊमस से आकुल
तिक्त मधुर बिसतंतु खोजते, हंसों को तिरते देखा है।

एक दूसरे से वियुक्त हो
अलग अलग रहकर ही जिनको
सारी रात बितानी होती
निशा काल के चिर अभिशापित
बेबस उन चकवा-चकई का,
बन्द हुआ क्रन्दन फिर उनमें
उस महान सरवर के तीरे
शैवालों की हरी दरी पर, प्रणय कलह छिड़ते देखा है।

कहाँ गया धनपति कुबेर वह,
कहाँ गयी उसकी वह अलका?
नहीं ठिकाना कालिदास के,
व्योम-वाहिनी गंगाजल का!
ढूँढ़ा बहुत परन्तु लगा क्या, मेघदूत का पता कहीं पर!
कौन बताये यह यायावर, बरस पड़ा होगा न यहीं पर!

जाने दो वह कवि-कल्पित था,
मैंने तो भीषण जाड़ों में, नभचुम्बी कैलाश शीर्ष पर
महामेघ को झंझानिल से, गरज-गरज भिड़ते देखा है।

दुर्गम बर्फानी घाटी में,
शत सहस्र फुट उच्च शिखर पर
अलख नाभि से उठने वाले
अपने ही उन्मादक परिमल
के ऊपर धावित हो-होकर
तरल तरुण कस्तूरी मृग को अपने पर चिढ़ते देखा है।

शत-शत निर्झर निर्झरिणी-कल
मुखरित देवदारु कानन में
शोणित धवल भोज पत्रों से छाई हुई कुटी के भीतर
रंग बिरंगे और सुगन्धित फूलों से कुन्तल को साजे
इन्द्रनील की माला डाले शंख सरीखे सुघर गले में,
कानों में कुवलय लटकाये, शतदल रक्त कमल वेणी में;

रजत-रचित मणि खचित कलामय
पान-पात्र द्राक्षासव पूरित
रखे सामने अपने-अपने,
लोहित चन्दन की त्रिपदी पर
नरम निदाग बाल कस्तूरी
मृग छालों पर पल्थी मारे
मदिरारुण आँखों वाले उन
उन्मद किन्नर किन्नरियों की
मृदुल मनोरम अँगुलियों को वंशी पर फिरते देखा है।

(नागार्जुन : 'प्यासी-पथराई आँखों से')

अभ्यास प्रश्न

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
(क) निशा काल ..... के तीरे।
(ख) दुर्गम ..... हो-होकर।
(ग) रजत-रचित ..... त्रिपदी पर।
(घ) कहाँ गया धनपति ..... भिड़ते देखा है।

2. नागार्जुन का जीवन-परिचय देते हुए भाषा-शैली का उल्लेख कीजिए।

3. नागार्जुन का जीवन-वृत्त लिखकर उनके साहित्यिक योगदान का उल्लेख कीजिए।

4. नागार्जुन के साहित्यिक अवदान एवं रचनाओं पर प्रकाश डालिए।

5. नागार्जुन का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए तथा उनके काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. नागार्जुन ने अपनी कविता 'बादल को घिरते देखा है' में प्रकृति के किस रूप के सौन्दर्य का वर्णन किया है?

2. *'महामेघ को झंझानिल से गरज-गरज भिड़ते देखा है'* पंक्ति में प्राकृतिक वर्णन के अतिरिक्त मुख्य भाव क्या है?

3. कवि ने नरेतर (मनुष्य से इतर) दम्पतियों का किस प्रकार वर्णन किया है?

4. 'बादल को घिरते देखा है' शीर्षक कविता का सारांश लिखिए।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. नागार्जुन किस युग के कवि हैं?

2. नागार्जुन की रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

3. नागार्जुन की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

4. 'बादल को घिरते देखा है' शीर्षक कविता का सारांश लिखिए।

5. 'बादल को घिरते देखा है' शीर्षक कविता का उद्देश्य क्या है?
6. 'बादल को घिरते देखा है' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
   (अ) श्यामल शीतल अमल सलिल में
   समतल देशों के आ-आकर
   पावस की ऊमस से आकुल
   तिक्त मधुर बिसतंतु खोजते, हंसों को तिरते देखा है।
   (ब) मृदुल मनोरम अंगुलियों को वंशी पर फिरते देखा है।
2. निम्नलिखित शब्द-युग्मों से विशेषण-विशेष्य अलग कीजिए—
   अतिशय शीतल, स्वर्णिम कमलों, प्रणय कलह, रजत-रचित।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. नागार्जुन किस युग के कवि थे?
   (अ) छायावादी (ब) **छायावादोत्तर** (स) प्रगतिवाद (द) प्रयोगवाद
2. नागार्जुन का जन्म कब हुआ था?
   (अ) **1911 ई.** (ब) 1915 ई. (स) 1920 ई. (द) 1925 ई.
3. नागार्जुन का जन्म-स्थान है—
   (अ) **दरभंगा** (ब) पटना (स) मोतिहारी (द) भागलपुर
4. नागार्जुन का वास्तविक नाम था—
   (अ) रामचन्द्र मिश्र (ब) **वैद्यनाथ मिश्र** (स) रामकृष्ण मिश्र (द) देवव्रत मिश्र
5. बाबा नागार्जुन का निधन कब हुआ था?
   (अ) **1998 ई.** (ब) 2000 ई. (स) 2002 ई. (द) 2004 ई.
6. 'बादल को घिरते देखा है' के रचनाकार हैं—
   (अ) **नागार्जुन** (ब) केदारनाथ अग्रवाल (स) केदारनाथ सिंह (द) रघुवीर सहाय
7. निम्न में से कौन-सा उपन्यास नागार्जुन द्वारा लिखित है—
   (अ) रतिनाथ की चाची (ब) बलचनमा (स) बाबा बटेसरनाथ (द) **उपर्युक्त सभी**
8. नागार्जुन को साहित्य अकादमी पुरस्कार कब मिला?
   (अ) **1965 ई.** (ब) 1970 ई. (स) 1975 ई. (द) 1980 ई.
9. निम्न में कौन-सी काव्य रचना नागार्जुन की है?
   (अ) युगधारा (ब) सतरंगे पंखोंवाली (स) हजार-हजार बाहोंवाली (द) **इनमें सभी**
10. नागार्जुन को निम्न में से कौन-सा पुरस्कार प्राप्त हुआ था?
   (अ) भारत भारती (ब) कबीर
   (स) साहित्य अकादमी पुरस्कार (द) **उपर्युक्त सभी**

उत्तरमाला : 1. (ब) 2. (अ) 3. (अ) 4. (ब) 5. (अ) 6. (अ) 7. (द) 8. (अ) 9. (द) 10. (द)158

11 केदारनाथ अग्रवाल

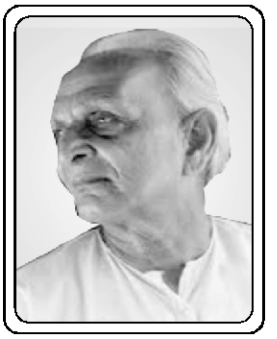

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**–1 अप्रैल, सन् 1911 ई0।
- **जन्म-स्थान**–बाँदा (कमासिन गाँव)।
- **पिता**–श्री हनुमान प्रसाद।
- **मृत्यु**–22 जून, सन् 2000 ई0।
- **भाषा**–सरल-सहज, सीधी-ठेठ।

जीवन-परिचय–अमर कवि केदारनाथ अग्रवाल का जन्म बाँदा की धरती में कमासिन गाँव में 1 अप्रैल, 1911 ई0 को हुआ था। इनकी माँ का नाम घसिट्टो एवं पिता हनुमान प्रसाद थे, जो बहुत ही रसिक प्रवृत्ति के थे। रामलीला में अभिनय करने के साथ ब्रजभाषा में कविता भी लिखते थे। केदार बाबू ने काव्य के संस्कार अपने पिता से ही ग्रहण किये थे।

केदार बाबू की शुरुआती शिक्षा अपने गाँव कमासिन में ही हुई। कक्षा तीन पढ़ने के बाद रायबरेली पढ़ने के लिए भेजे गये, जहाँ उनके बाबा के भाई गया बाबा रहते थे। छठी कक्षा तक रायबरेली में शिक्षा पाकर, सातवीं-आठवीं की शिक्षा प्राप्त करने के लिए कटनी एवं जबलपुर भेजे गये, वह सातवीं में पढ़ ही रहे थे कि नैनी (प्रयागराज) में एक धनी परिवार की लड़की पार्वती देवी से विवाह हो गया, जिसे उन्होंने पत्नी के रूप में नहीं प्रेमिका के रूप में लिया—*गया, ब्याह में युवती लाने/प्रेम ब्याह कर संग में लाया।*

विवाह के बाद उनकी शिक्षा इलाहाबाद में हुई। नवीं में पढ़ने के लिए उन्होंने क्रिश्चियन कालेज में दाखिला लिया। इण्टर की पढ़ाई पूरी करने के बाद केदार बाबू ने बी0ए0 की पढ़ाई के लिए **इलाहाबाद विश्वविद्यालय** में दाखिला लिया।

यहाँ उनका सम्पर्क शमशेर और नरेन्द्र शर्मा से हुआ। घनिष्ठता बढ़ी। उनके काव्य संस्कारों में एक नया मोड़ आया। साहित्यिक गतिविधियों में सक्रियता बढ़ी। फलतः वह बी0ए0 में फेल हो गये। इसके बाद वकालत पढ़ने कानपुर आये। यहाँ डी0ए0वी0 कालेज में दाखिला लिया।

सन् 1937 में कानपुर से वकालत पास करने के बाद सन् 1938 में बाँदा आये। इस समय उनके चाचा बाबू मुकुन्द लाल शहर के नामी वकीलों में से थे। उनके साथ रहकर वकालत करने लगे।

वकालत केदार जी के लिए कभी पैसा कमाने का जरिया नहीं रही। कचहरी ने उनके दृष्टिकोण को मार्क्स के दर्शन के प्रति और आधारभूत दृढ़ता प्रदान की।

सन् 1963 से 1970 तक सरकारी वकील रहे। सन् 1972 ई0 में बाँदा में अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के सम्मेलन का आयोजन किया। सन् 1973 ई0 में उनके काव्य संकलन, *'फूल नहीं रंग बोलते हैं'* के लिए उन्हें 'सोवियत लैण्ड नेहरू' सम्मान दिया गया। 1974 ई0 में उन्होंने रूस की यात्रा सम्पन्न की। 1981 ई0 में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

ने पुरस्कृत एवं सम्मानित किया। 1981 ई0 में मध्य प्रदेश प्रगतिशील लेखक संघ ने उनके कृतित्व के मूल्यांकन के लिए 'महत्त्व केदारनाथ अग्रवाल' का आयोजन किया। 1987 ई0 में 'साहित्य अकादमी' ने उन्हें उनके *'अपूर्वा'* काव्य संकलन के लिए अकादमी सम्मान से सम्मानित किया। वर्ष 1990-91 ई0 में मध्य प्रदेश शासन ने उन्हें मैथिलीशरण गुप्त सम्मान से सम्मानित किया। वर्ष 1986 ई0 में मध्य प्रदेश साहित्य परिषद् द्वारा **'तुलसी सम्मान'** से सम्मानित किया गया। वर्ष 1993-94 ई0 में उन्हें 'बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय ने डी0 लिट्0 की उपाधि प्रदान की और हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ने **'साहित्य वाचस्पति'** उपाधि से सम्मानित किया। 22 जून, 2000 ई0 को केदारनाथ अग्रवाल का 90 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया।

साहित्यिक सेवाएँ–केदारनाथ अग्रवाल हिन्दी प्रगतिशील कविता के अन्तिम रूप से गौरवपूर्ण स्तम्भ थे। ग्रामीण परिवेश और लोकजीवन को सशक्त वाणी प्रदान करने वाले कवियों में केदारनाथ अग्रवाल विशिष्ट हैं। परम्परागत प्रतीकों को नया अर्थ सन्दर्भ देकर केदार जी ने वास्तुतत्त्व एवं रूपतत्त्व दोनों में नयेपन के आग्रह को स्थापित किया है। अग्रवाल जी प्रज्ञा और व्यक्तित्व बोध को महत्त्व देने वाले प्रगतिशील सोच के अग्रणी कवि हैं।

समग्रतः केदारनाथ अग्रवाल सूक्ष्म मानवीय संवेदनाओं, प्रगतिशील चेतना और सामाजिक परिवर्तन के पक्षधर कवि हैं। संवेदनशील होकर कला के प्रति बिना आग्रह रखे वे काव्य की जनवादी चेतना से जुड़े हैं। **'युग की गंगा'** में वे लिखते हैं— "अब हिन्दी की कविता रस की प्यासी है, न 'अलंकार' की इच्छुक है और न संगीत की तुकान्त की भूखी है।" इन तीनों से मुक्त काव्य का प्रणयन करनेवाले केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में रस अलंकार और संगीतात्मकता के साथ प्रवहमान है और भावबोध एवं गहन संवेदना उनके काव्य की अन्यतम विशेषता है।

रचनाएँ– *युग की गंगा* (1947), *नींद के बादल* (1947), *लोक और आलोक* (1957), *फूल नहीं रंग बोलते हैं* (1965), *आग का आईना* (1970), *देश-देश की कविताएँ, अनुवाद* (1970), *गुल मेंहदी* (1978), *पंख और पतवार* (1979), *हे मेरी तुम* (1981), *मार प्यार की थापें* (1981), *कहे केदार खरी-खरी* (1983), *बम्बई का रक्त स्नान* (1983), *अपूर्वा* (1984), *बोले बोल अबोल* (1985), *जो शिलाएँ तोड़ते हैं* (1985), *जमुन जल तुम* (1984), *अनिहारी हरियाली* (1990), *खुली आँखें-खुले डैने* (1992), *आत्मगन्ध* (1986), *पुष्पदीप* (1994), *वसन्त में हुई प्रसन्न पृथ्वी* (1996), *कुहकी कोयल खड़े पेड़ की देह* (1997), *चेता नैया खेता* (नयी कविताओं का संग्रह, परिमल प्रकाशन, प्रयागराज)।

गद्य साहित्य—*समय-समय पर (1970), विचार बोध (1980), विवेक-विवेचन (1980), यात्रा संस्मरण-बस्ती खिले गुलाबों की (1974), दतिया (उपन्यास) (1985), बैल बाजी मार ले गये (अधूरा उपन्यास) जो साक्षात्कार* मध्य प्रदेश साहित्य परिषद् की पत्रिका में प्रकाशित।

भाषा-शैली—प्रगतिवादी काव्य में जनसाधारण की चेतना को स्वर मिला है, अतः उसमें एक सरसता विद्यमान है। छायावादी काव्य की भाँति उसमें दूरारूढ़, कल्पना की उड़ान नहीं है। प्रायः सभी कवियों ने काव्य-भाषा के रूप में जनप्रचलित भाषा को ही प्रगतिवादी काव्य में अपनाया है परन्तु केदार कुछ मामलों में अन्य कवियों से विशिष्ट हैं। उनकी काव्य-भाषा में जहाँ एक ओर गाँव की सीधी-ठेठ शब्दावली जुड़ गयी है, वहीं प्राकृतिक दृश्यों की प्रमुखता के कारण भाषा में मसृणता और कोमलता है। गाँव की गन्ध, वन फूलों की महक, गँवई भाषा, सरल जीवन और आसपास के परिवेश को मिलाकर केदारनाथ अग्रवाल ने कविता को प्रगतिशील बौद्धिक चेतना से जोड़े रखकर भी मोहकता बनाये रखी है।

●●

अच्छा होता

अच्छा होता
अगर आदमी
आदमी के लिए
परार्थी–
पक्का–
और नियति का सच्चा होता
न स्वार्थ का चहबच्चा–
न दगैल-दागी–
न चरित्र का कच्चा होता।
अच्छा होता
अगर आदमी
आदमी के लिए
दिलदार–
दिलेर–
और हृदय की थाती होता,
न ईमान का घाती–
ठगैत ठाकुर
न मौत का बराती होता।

('अपूर्वा' से)

सितार-संगीत की रात

आग के ओंठ बोलते हैं
सितार के बोल,
खुलती चली जाती हैं
शहद की पंखुरियाँ,
चूमतीं अँगुलियों के नृत्य पर,
राग-पर-राग करते हैं किलोल,
रात के खुले वक्ष पर,
चन्द्रमा के साथ,
शताब्दियाँ झाँकती हैं
अनंत की खिड़कियों से,
संगीत के समारोह में कौमार्य बरसता है,
हर्ष का हंस दूध पर तैरता है,
जिस पर सवार भूमि की सरस्वती
काव्य-लोक में विचरण करती हैं।

अभ्यास प्रश्न

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
(क) अच्छा होता ..... कच्चा होता।
(ख) अच्छा होता ..... बराती होता।
(ग) आग के ..... के साथ।
(घ) शताब्दियाँ ..... करती हैं।

2. केदारनाथ अग्रवाल की जीवनी एवं रचनाओं का परिचय दीजिए।
अथवा केदारनाथ की साहित्यिक सेवाओं एवं भाषा-शैली का उल्लेख कीजिए।

3. 'अच्छा होता' का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

4. 'सितार-संगीत की रात' कविता का सारांश एवं मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'अच्छा होता' में कवि ने मनुष्य की किन विशेषताओं को उजागर किया है?

2. 'सितार-संगीत की रात' कविता के आधार पर संगीत के प्रभाव का वर्णन कीजिए।

3. 'शहद की पंखुड़ियाँ' से कवि का क्या आशय है?

4. 'शताब्दियाँ झाँकती हैं' कवि के इस कथन में छिपे भाव की व्याख्या कीजिए।

5. 'हृदय की थाती' का आशय समझाइए।

6. 'चरित्र का कच्चा' का क्या तात्पर्य है?

7. 'कौमार्य बरसता है' शब्दों द्वारा कवि क्या बताना चाहता है?

8. 'मौत का बराती' कहने का क्या तात्पर्य है?

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. केदारनाथ अग्रवाल किस काल के कवि हैं?

2. केदारनाथ अग्रवाल मूलतः कवि हैं या लेखक?

3. केदारनाथ अग्रवाल किस धारा के कवि हैं?

4. 'अच्छा होता' कविता में 'ठगैत ठाकुर' का अर्थ क्या है?

5. 'हर्ष का हंस' में अलंकार बताइए।

6. 'अच्छा होता' कविता कवि के किस काव्य में संकलित है?

7. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइये—
(अ) 'अच्छा होता' कविता में कवि ने नैतिक मनुष्य की अभिलाषा की है। ( )
(ब) 'अच्छा होता' कविता में कवि ने मनुष्य को ठगैत ठाकुर बताया है। ( )
(स) दगैल-दागी मनुष्य ही नियति का सच्चा होता है। ( )
(द) अनंत की खिड़कियों से शताब्दियाँ झाँकती हैं। ( )

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
(अ) 'अगर आदमी आदमी के लिए'। (ब) राग-पर-राग करते हैं किलोल।
(स) संगीत के समारोह में कौमार्य बरसता है। (द) हर्ष का हंस दूध पर तैरता है।

2. 'आग के ओंठ' का काव्य-सौन्दर्य बताइए।

3. निम्नलिखित पंक्तियों में स्थायी भाव सहित रस का नाम लिखिये—
(अ) शताब्दियाँ झाँकती हैं, अनंत की खिड़कियों से।
(ब) हर्ष का हंस दूध पर तैरता है,
जिस पर सवार भूमि की सरस्वती
काव्य लोक में विचरण करती है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. केदारनाथ अग्रवाल का जन्म कब हुआ था?
(अ) **1911 ई.** (ब) 1913 ई. (स) 1915 ई. (द) 1917 ई.
2. केदारनाथ अग्रवाल का जन्म-स्थान है—
(अ) प्रयाग (ब) काशी (स) **बाँदा (कमासिन)** (द) मथुरा
3. केदारनाथ अग्रवाल का निधन हुआ था—
(अ) **2000 ई.** (ब) 2002 ई. (स) 2004 ई. (द) 2005 ई.
4. 'फूल नहीं रंग बोलते हैं' नामक काव्य का प्रकाशन कब हुआ?
(अ) 1970 ई. (ब) **1973 ई.** (स) 1975 ई. (द) 1977 ई.
5. 'अच्छा होता' कविता के रचनाकार हैं—
(अ) **केदारनाथ अग्रवाल** (ब) केदारनाथ सिंह
(स) भवानी प्रसाद मिश्र (द) इनमें से कोई नहीं
6. 'अच्छा होता' नामक कविता केदारनाथ अग्रवाल के किस काव्य संग्रह से लिया गया है?
(अ) **अपूर्वा** (ब) युग की गंगा (स) नींद के बादल (द) पंख और पतवार
7. 'सितार-संगीत की रात' कविता के रचनाकार हैं—
(अ) केदारनाथ सिंह (ब) **केदारनाथ अग्रवाल**
(स) भवानी प्रसाद मिश्र (द) शमशेर बहादुर सिंह
8. 'अपूर्वा' काव्य संकलन पर केदारनाथ अग्रवाल को कौन-सा पुरस्कार मिला?
(अ) **साहित्य अकादमी सम्मान** (ब) तुलसी सम्मान (स) भारत-भारती (द) कबीर सम्मान
9. 'हर्ष का हंस' में कौन-सा अलंकार है?
(अ) उपमा (ब) रूपक (स) **अनुप्रास** (द) उपमा
10. केदारनाथ अग्रवाल किस धारा के कवि हैं?
(अ) **समकालीन धारा** (ब) प्रगतिवादी काव्यधारा
(स) प्रयोगवादी काव्यधारा (द) छायावादी काव्यधारा

उत्तरमाला : 1. (अ) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब) 5. (अ) 6. (अ) 7. (ब) 8. (अ) 9. (स) 10. (अ)

12 शिवमंगल सिंह 'सुमन'

जीवन-परिचय—डॉ0 शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म 5 अगस्त, सन् 1915 ई0 (संवत् 1972 श्रावण मास शुक्ल पक्ष नागपंचमी) को ग्राम झगरपुर, जिला उन्नाव (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। इनके पिता का नाम ठाकुर साहब बख्श सिंह था।

सुमन जी ने अधिकांश रूप से रीवा, ग्वालियर आदि स्थानों में रहकर आरम्भिक शिक्षा से लेकर कॉलेज तक की शिक्षा प्राप्त की है। तत्पश्चात् सन् 1940 ई0 में उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से परास्नातक (हिन्दी) की उपाधि प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। सन् 1942 ई0 में उन्होंने विक्टोरिया कॉलेज में हिन्दी प्रवक्ता के पद पर कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। सन् 1948 ई0 में माधव कॉलेज उज्जैन में हिन्दी विभागाध्यक्ष बने, दो वर्षों के पश्चात् सन् 1950 ई0 में उनको 'हिन्दी गीतिकाव्य का उद्भव-विकास और हिन्दी-साहित्य में उसकी परम्परा' शोध प्रबन्ध पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने डी0लिट् की उपाधि प्रदान की। आपने सन् 1954-56 तक होल्कर कॉलेज इन्दौर में हिन्दी विभागाध्यक्ष के पद पर भी सुचारु रूप से कार्य किया। सन् 1956-61 ई0 तक नेपाल स्थित भारतीय दूतावास में सांस्कृतिक और सूचना विभाग का कार्यभार आपको सौंपा गया।

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—5 अगस्त, सन् 1915 ई0। (ग्राम-झगरपुर, जनपद-उन्नाव, उ0प्र0)
- **मृत्यु**—27 नवम्बर, सन् 2002 ई0। (उज्जैन, मध्य प्रदेश)
- **रचनाएँ**—मिट्टी की बारात, हिल्लोल, जीवन के गान
- **पुरस्कार**— 1958 – देव पुरस्कार
  1974 – सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार
  1974 – साहित्य अकादमी पुरस्कार
  1974 – पद्मश्री
  1993 – शिखर सम्मान
  1993 – 'भारत भारती' पुरस्कार
  1999 – पद्म भूषण।

सन् 1961-68 तक माधव कॉलेज उज्जैन में वे प्राचार्य के पद पर कार्य करते रहे। इन आठ वर्षों के बीच सन् 1964 ई0 में वे विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में कला संकाय के डीन तथा व्यावसायिक संगठन, शिक्षण समिति एवं प्रबन्धकारिणी सभा के सदस्य भी रहे। सन् 1968-70 ई0 तक सुमन जी विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में कुलपति के पद पर आसीन रहे।

डॉ0 शिवमंगल सिंह 'सुमन' को सन् 1958 ई0 में मध्य प्रदेश सरकार द्वारा उनके काव्य संग्रह 'विश्वास बढ़ता ही गया' पर 'देव' पुरस्कार प्राप्त हुआ। सन् 1964 ई0 में 'पर आँखें नहीं भरीं' काव्य संग्रह पर 'नवीन' पुरस्कार से सम्मानित किये गये। आपको सन् 1973 ई0 में मध्य प्रदेश राजकीय उत्सव में सम्मानित किया गया। जनवरी सन् 1974 में भारत सरकार द्वारा उन्हें 'पद्मश्री' की उपाधि से विभूषित किया गया। भागलपुर विश्वविद्यालय बिहार द्वारा 20 मई सन् 1973 ई0 को डी0लिट् की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। नवम्बर सन् 1974 ई0 को उन्हें 'सोवियत-भूमि नेहरू पुरस्कार' प्रदान किया गया। 26 फरवरी, 1973 ई0 को 'मिट्टी की बारात' नामक काव्य संग्रह पर 'सुमन जी' को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपने अक्टूबर सन् 1974 ई0 को नागपुर विश्वविद्यालय महाराष्ट्र में दीक्षान्त भाषण दिया। पुनः 24 अप्रैल, 1977

ई0 को राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में पंचम दिनकर स्मृति व्याख्यान माला के अन्तर्गत भाषण के लिए आपको आमन्त्रित किया गया। सन् 1975 ई0 में राष्ट्रकुल विश्वविद्यालय परिषद् के लन्दन विश्वविद्यालय स्थित मुख्यालय में कार्यकारिणी परिषद् के सदस्य के रूप में उनकी नियुक्ति की गयी। 17-18 जनवरी सन् 1977 ई0 को भारतीय विश्वविद्यालय परिषद् कोयम्बटूर (तमिलनाडु) में हुए बावनवें वार्षिक अधिवेशन की अध्यक्षता की। पुनः 15-16 जनवरी सन् 1978 ई0 को सौराष्ट्र विश्वविद्यालय राजकोट में भारतीय विश्वविद्यालय परिषद् के तिरपनवें अधिवेशन की अध्यक्षता की। 27 नवम्बर, 2002 ई0 को शिवमंगल सिंह 'सुमन' का 87 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया।

रचनाएँ–सुमन जी की रचनाएँ निम्नलिखित हैं–

(1) **हिल्लोल**–यह सुमन जी के प्रेम गीतों का प्रथम काव्य संग्रह है। इसमें हृदय की कोमल भावनाओं को चित्रित किया गया है।

(2) **जीवन के गान, प्रलय सृजन, विश्वास बढ़ता ही गया**– इन सभी संग्रहों की कविताओं में क्रान्तिकारी भावनाएँ व्याप्त हैं। इन कविताओं में पीड़ित मानवता के प्रति सहानुभूति तथा पूँजीवाद के प्रति आक्रोश है।

(3) **विन्ध्य हिमालय**–इसमें देश-प्रेम तथा राष्ट्रीयता की कविताएँ हैं।

(4) **पर आँखें नहीं भरीं**–यह प्रेम गीतों का संग्रह है।

(5) **मिट्टी की बारात**–इस पर सुमन जी को अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

साहित्यिक सेवाएँ–डॉ0 'सुमन' जी प्रगतिवादी कवि के रूप में हमारे समक्ष अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से उपस्थित होते हैं। आपकी कविताओं में दलित, पीड़ित, शोषित एवं वंचित श्रमिक वर्ग का समर्थन किया गया है, साथ ही सामान्य रूप से पूँजीपति वर्ग तथा उनके अत्याचारों का खण्डन भी अपनी रचनाओं के माध्यम से किया है। सामयिक समस्याओं का विवेचन उनकी कविताओं का प्रमुख अंग रहा है। आपकी कविताओं में आस्था और विश्वास का स्वर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। आपने समाज की रूढ़िवादी परम्पराओं तथा वर्ण जातिगत विषमताओं एवं भाग्यवादी विचारधारा का खण्डन भी किया है।

भाषा–सुमन जी की भाषा जनजीवन के समीप सरल तथा व्यावहारिक भाषा है। छायावादी रचनाओं की भाषा अलंकरण, दृढ़ता, अस्पष्टता, वयवीयता आदि आपकी रचनाओं में नहीं है। इसके विपरीत स्पष्टता और सरलता है। जनसाधारण में प्रस्तुत होने वाली भाषा का प्रयोग हुआ है। भाषा में उर्दू शब्दों को पर्याप्त प्रश्रय मिला है।

सुमन जी ने अनेक नये शब्दों का निर्माण भी किया है, जिन्हें हम तीन भागों में बाँट सकते हैं– (क) नवीन सन्धि, शब्द, (ख) सरल सामाजिक योजना तथा (ग) देशज शब्द।

भाषा को प्रभविष्णु बनाने के लिए सुमन जी ने पुनरुक्ति को अपनाया है।

शैली–सुमन जी की शैली में ओज और प्रसाद गुणों की प्रधानता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में लाक्षणिकता का भी प्रयोग किया है। सुमन जी की कविताओं की अभिव्यक्ति सौन्दर्य की एक विशेषता काव्यवाद का निर्वहन भी है। इसके अन्तर्गत जीवन की वर्तमान समस्याओं का पौराणिक घटनाओं से साम्य स्थापित किया है। आपकी कविताओं में प्रतीक विधान भी दर्शनीय है। सुमन जी की कविताओं में अलंकारों की समास योजना नहीं है। अनायास ही जो अलंकार आपकी कविताओं में आ गये हैं, ये भावोत्कर्ष में सहायक हुए हैं।

हिन्दी साहित्य में स्थान–'सुमन' जी भारतीय माटी की वह गन्ध हैं, जिसमें जीवन रस-आनन्द सर्वत्र महकता रहता है। जिस प्रकार पृथ्वी की अभिव्यक्ति वनस्पतियों द्वारा होती है उसी प्रकार वनस्पतियों के रस से जीवित मानव प्राणी की अभिव्यक्ति उसकी कलात्मकता और वैज्ञानिकता में होती है। 'सुमन' जी भारतीय संस्कृति के अभिवक्ता हैं। प्रकृति के रूप, रस, गन्ध आदि के चितेरे भी हैं। जीवन रस की मादकता के गायक हैं। जनसामान्य के दुःख-दर्द से द्रवित होने वाले मानव और परम्परागत गौरव गरिमा के संरक्षक हैं। उनके इन्हीं विशिष्ट रूपों को काव्य में पहचाना गया है। एक युग विशेष की मानसिकता की झाँकी उनके काव्य के गुणों से परिपूर्ण एवं प्रभावशाली है।

अंत में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि 'सुमन' जी का हिन्दी साहित्य में अपना एक विशिष्ट स्थान है। वे हिन्दी साहित्य को ऐसी निधि प्रदान कर गये हैं जो कभी भी नष्ट नहीं हो सकती है। शरीर तो नश्वर है लेकिन वैचारिक शरीर शाश्वत रूप से जीवित रहता है। सुमन जी अपनी कृतियों के माध्यम से हिन्दी साहित्य के प्रेमियों के मानस पटल पर सदैव नित नवीन रूप में मुस्कराते रहेंगे। ●●

युगवाणी

हर क्यारी में पद-चिह्न तुम्हारे देखे हैं,
हर डाली में मुस्कान तुम्हारी पायी है,
हर काँटे में दुःख-दर्द किसी का कसका है,
हर शबनम ने जीवन की प्यास जगायी है।

हर सरिता की लचकीली लहरें डसती हैं,
हर अंकुर की आँखों में कोर समाती है,
हर किसलय में अधरों की आभा खिलती है,
हर कली हवा में मचल-मचल इठलाती है।

अम्बर में उगती सोने-चाँदी की फसलें,
ये ज्वार-बाजरे की मस्ती लहराती है,
अन्तर में इसका बिम्ब उभरता आता है,
चाँदनी, सिन्धु में सौ-सौ ज्वार जगाती है।

मैं कैसे इनकी मोहकता से मुख मोड़ूँ,
मैं कैसे जीवन के सौ-सौ धन्धे छोड़ूँ,
दोनों को साथ लिए चलना क्या सम्भव है?
तन का, मन का पावन नाता कैसे तोड़ूँ?

क्या उम्र ढलेगी तो यह सब ढल जाएगा,
सूरज चन्दा का पानी गल, जल जाएगा,
जिनके बल पर जीने-मरने का स्वर साधा,
उनका आकर्षण साँसों को छल जाएगा।

जिस दिन सपनों के मोल-भाव पर उतरूँगा,
जिस दिन संघर्षों पर जाली चढ़ जाएगी,
जिस दिन लाचारी मुझ पर तरस दिखाएगी,
उस दिन जीवन से मौत कहीं बढ़ जाएगी।

इन सबसे बढ़कर भूख बिलखती मिट्टी की
पथ पर पथराई आँखें पास बुलाती हैं,
भगवान भूल में रचकर जिनको भूल गया
जिनकी हड्डी पर धर्म-ध्वजा फहराती है।

इनको भूलूँ तो मेरी मिट्टी मिट्टी है
मेरी आँखों का पानी केवल पानी है,
इनको भूलूँ तो मेरा जन्म अकारथ है
मेरा जीना मरने की मूक कहानी है।

मैं देख रहा हूँ तुम इनको फिर भूल चले
बातों-बातों में हमें बहुत बहलाते हो,
बेबसी चीखती जब बच्चों की लाशों पर
उसको आजादी की प्रतिध्वनि बतलाते हो।

यों खेल करोगे तुम कब तक असहायों से
कब तक अफीम आशा की हमें खिलाओगे,
बरबाद हो गयी फसल कहीं जोती-बोई
क्या बैठ अकेले ही मरघट पर गाओगे?

विश्वास सर्वहारा का तुमने खोया तो
आसन्न-मौत की गहन गोंस गड़ जाएगी,
यदि बाँध बाँधने के पहले जल सूख गया
धरती की छाती में दरार पड़ जाएगी।

सदियों की कुर्बानी यदि यों बेमोल बिकी
जमुहाई लेने में खो गया सबेरा यदि,
जनता पूर्णिमा मनाने की जब तक सोचे
घिर गया अमावस का अम्बर में घेरा यदि।

इतिहास न तुमको माफ करेगा याद रहे
पीढ़ियाँ तुम्हारी करनी पर पछताएँगी,
पूरब की लाली में कालिख पुत जाएगी
सदियों में फिर क्या ऐसी घड़ियाँ आएँगी?

इसलिए समय के सैलाबों को मत रोको
खुशहाल हवाओं में न खिड़कियाँ बन्द करो,
हर किरण जिन्दगी की आँगन तक आने दो
नव-निर्माणों की लपटों को मत मन्द करो।

इस नए सबेरे की लाली को देखो तो
इसकी अपनी कितनी पहचान पुरानी है,
भू, भुवः, स्वर्ग को एक बनाने आयी जो
युग की गायत्री सब छन्दों की रानी है।

('विन्ध्य हिमालय' से)

अभ्यास प्रश्न

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
(क) हर क्यारी में ..... मचल-मचल इठलाती है।
(ख) क्या उम्र ढलेगी तो ..... मौत कहीं बढ़ जायेगी।
(ग) विश्वास सर्वहारा..... दरार पड़ जायेगी।
(घ) सदियों की कुर्बानी .....अम्बर में घेरा यदि।
(ङ) इतिहास न तुमको ..... को मत मन्द करो।

2. शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

3. शिवमंगल सिंह 'सुमन' के जीवन-वृत्त एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

4. शिवमंगल सिंह 'सुमन' की साहित्यिक विशेषताएँ एवं भाषा-शैली का उल्लेख कीजिए।

5. शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जीवन-परिचय देते हुए उनके साहित्यिक योगदान का उल्लेख कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'युगवाणी' कविता के माध्यम से कवि क्या सन्देश देना चाहता है?
2. 'युगवाणी' कविता की भाषागत विशेषताएँ लिखिए।
3. शिवमंगल सिंह 'सुमन' द्वारा रचित 'युगवाणी' कविता का सारांश संक्षेप में लिखिए।
4. कवि प्रस्तुत कविता के माध्यम से किन वास्तविकताओं के प्रति आगाह किया है?
5. 'युगवाणी' कविता में कवि ने शासकों को क्या परामर्श दिया है?
6. 'युगवाणी' कविता में कवि किसके इतिहास को माफ न करने को कहा है?

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. शिवमंगल सिंह 'सुमन' किस काल के कवि हैं?
2. शिवमंगल सिंह 'सुमन' किस धारा के कवि हैं?
3. शिवमंगल सिंह 'सुमन' की रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
4. शिवमंगल सिंह 'सुमन' की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
5. 'युगवाणी' कविता का तात्पर्य बताइए।

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
   (क) तन का, मन का पावन नाता कैसे तोड़ूँ?
   (ख) इतिहास न तुमको माफ करेगा याद रहे।
   (ग) नव निर्माण की लपटों को मत मन्द करो।
   (घ) विश्वास सर्वहारा का तुमने खोया तो
   आसन्न मौत की गहन गोंस गड़ जायेगी।
2. निम्नलिखित शब्द-युग्मों से विशेषण-विशेष्य अलग कीजिए—
   पद-चिह्न, धर्म-ध्वजा, दुःख-दर्द।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म कब हुआ था?
   (अ) **1915 ई.** (ब) 1920 ई. (स) 1925 ई. (द) 1930 ई.
2. शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म-स्थान है—
   (अ) कानपुर (ब) **उन्नाव** (स) लखनऊ (द) फतेहपुर
3. 'सुमन' जी का निधन कब हुआ?
   (अ) **2002 ई.** (ब) 2004 ई. (स) 2006 ई. (द) 2008 ई.

4. 'युगवाणी' के रचनाकार हैं—
   (अ) सुमित्रानन्दन पन्त (ब) **शिवमंगल सिंह 'सुमन'**
   (स) भवानी प्रसाद मिश्र (द) रघुवीर सहाय
5. युगवाणी कविता में किसको न माफ करने की बात कही गयी है?
   (अ) **पूँजीपति वर्ग** (ब) श्रमिक वर्ग
   (स) कर्मचारी वर्ग (द) नौकरशाह
6. युगवाणी कविता का सन्देश है—
   (अ) **मानवता का कल्याण** (ब) मानव का शोषण
   (स) अत्याचार का अन्त (द) इनमें से कोई नहीं
7. शिवमंगल सिंह 'सुमन' किस धारा के कवि हैं?
   (अ) **प्रगतिवादी** (ब) प्रयोगवादी
   (स) छायावादी (द) द्विवेदी युगीन
8. 'इतिहास न तुमको माफ करेगा याद रहे' प्रस्तुत पंक्ति किस कविता से उद्धृत है?
   (अ) हिल्लोल (ब) **युगवाणी**
   (स) पर आँखें नहीं भरीं (द) प्रलय सृजन
9. 'विश्वास बढ़ता ही गया' नामक काव्य संग्रह पर सुमन जी को कौन-सा पुरस्कार मिला?
   (अ) **देव** (ब) साहित्य अकादमी पुरस्कार
   (स) पद्मश्री (द) सोवियत-भूमि नेहरू पुरस्कार
10. 'मिट्टी की बारात' नामक काव्य संग्रह पर सुमन जी को कौन-सा पुरस्कार प्राप्त हुआ?
   (अ) पद्मश्री (ब) **साहित्य अकादमी पुरस्कार**
   (स) देव पुरस्कार (द) इनमें से कोई नहीं

उत्तरमाला : 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (अ) 6. (अ) 7. (अ) 8. (ब) 9. (द) 10. (ब)

●●

13 संत रैदास

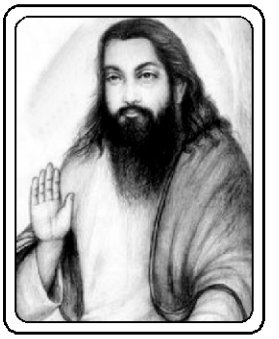

जीवन-परिचय–भक्ति कालीन कवियों में सन्त रैदास का महत्त्वपूर्ण स्थान है, किन्तु सटीक साक्ष्यों के अभाव में आज भी इनका जीवन अन्धकारपूर्ण है। रैदास की अनेक कृतियों में उनके अनेक नाम देखने को मिलते हैं। देश के विभिन्न भागों में उनके ऐसे अनेक नाम प्रचलित हैं जिनमें उच्चारण की दृष्टि से बहुत थोड़ा अन्तर है। रैदास (पंजाब), रविदास (आधुनिक), रयदास, रदास (बीकानेर की प्रतियों में), रयिदास आदि नाम इस उच्चारण की भिन्नता को ही प्रकट करते हैं। इसलिए लोक-प्रचलन और सुविधा की दृष्टि से उनका मूल नाम रैदास ही स्वीकार किया जाता है। भक्तमाल में कहा गया है कि रैदास रामानन्द के शिष्य थे। स्वतः रैदास की वाणी में भी ऐसे उद्धरण उपलब्ध हैं, जहाँ उन्होंने स्वामी रामानन्द को अपना गुरु स्वीकार किया है—

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**–संवत् 1471
- **जन्म स्थान**–मडुवाडीह (वाराणसी)
- कबीर के गुरुभाई थे।
- **गुरु**–रामानन्द
- **मृत्यु**–संवत् 1597

रामानन्द मोहि गुरु मिल्यो, पायो ब्रह्मविसास।
रस नाम अमीरस पिऔ, रैदास ही भयौ पलास।।

रामानन्द का समय 14वीं शताब्दी के मध्य से 15वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक माना जाता है किन्तु इसकी विरोधी धारणा यह भी प्रचलित है कि रैदास मीरा के गुरु थे। मीरा का समय 16वीं शताब्दी के मध्य से 17वीं शताब्दी के आरम्भ तक माना गया है। प्रायः सभी विद्वानों की धारणा है कि रैदास कबीर (जन्म सं0 1455) के समकालीन थे। रैदास के माता-पिता के बारे में प्रामाणिक रूप से कुछ कहना कठिन जान पड़ता है।

रैदास के जन्म के सन्दर्भ में विद्वानों की आम राय यह है कि रविदास स्वामी रामानन्द के बारह शिष्यों में से एक थे। उनका नाम रैदास प्रचलित है। उनका जन्म काशी में मडुवाडीह ग्राम में संवत् 1471 में माघी पूर्णिमा को रविवार के दिन हुआ। रविवार को जन्म होने के कारण उनका नाम रविदास पड़ा।

रैदास के निर्वाण की तिथि तथा स्थल के विषय में कोई प्रामाणिक सूचना नहीं मिलती। चित्तौड़ के रविदासी भक्तों का कथन है कि चित्तौड़ में कुम्भनश्याम के मन्दिर के निकट जो रविदास की छतरी बनी हुई है, वही उनके निर्वाण का स्थल है। उस छतरी में रैदास जी के निर्वाण की स्मृतिस्वरूप रैदास जी के चरण-चिह्न भी बने हुए हैं। रैदास-रामायण के रचयिता ने लिखा है

कि रैदास गंगा तट पर तपस्या करते हुए जीवन-मुक्त हुए। दोनों ही विचारधारावाले लोग रैदास का 'सदेह गुप्त' होना मानते हैं। श्रद्धालु भक्त महापुरुषों का सदेह गुप्त होना ही मान सकते हैं, किन्तु इस सदेह गुप्त होने से एक संशय उत्पन्न होता है। वस्तुतः रैदास के निर्वाण को किसी ने देखा नहीं और इसीलिए उनकी मृत्यु को श्रद्धापूर्वक 'सन्देह गुप्त' अथवा 'सदेह गुप्त' कह दिया गया। वस्तुतः रैदास जी अचानक किसी स्थल पर अनायास स्वर्गवासी हो गये होंगे और भक्तों को ज्ञात नहीं हो सका होगा, इसीलिए उनके विषय में श्रद्धापूर्वक सदेह-गुप्त होने की बात चल पड़ी। रैदास के मृत्यु-स्थल का किसी को भी पता नहीं है।

रविदासी सम्प्रदाय तथा भक्तों में रैदास की निर्वाण-तिथि चैत बदी चतुर्दशी मानी जाती है। किसी अन्य प्रमाण के अभाव में हम भी इसी तिथि को रैदास की निर्वाण-तिथि मान सकते हैं। जहाँ तक रैदास के निर्वाण के वर्ष का प्रश्न है, कुछ विद्वानों ने रैदास का मृत्यु-वर्ष संवत् 1597 माना है। 'मीरा-स्मृति-ग्रंथ' में उनका मृत्यु-वर्ष संवत् 1576 माना गया है। हाँ, यह बात अवश्य है कि रैदास के निर्वाण के सम्बन्ध में इन वर्षों को मानने वाले श्रद्धालु भक्तों ने उनकी आयु 130 वर्ष तक मानकर उनको कबीर से भी ज्येष्ठ सिद्ध करने की चेष्टा अवश्य की है।

साहित्यिक सेवाएँ–संत रैदास उन महान सन्तों में स्थान रखते हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। इनकी वाणी ज्ञानाश्रयी होते हुए भी ज्ञानाश्रयी एवं प्रेमाश्रयी शाखाओं के मध्य सेतु की तरह है।

रैदास से सम्बन्धित रचनाएँ–अनेक विद्वानों ने रैदास की वाणियों का संकलन करके रचना की है, जो निम्न हैं– (1) आदि ग्रन्थ में उपलब्ध रैदास की वाणी, (2) रैदास की वाणी, वेलवेडियर प्रेस, (3) सन्त रैदास और उनका काव्य (सम्पादक : रामानन्द शास्त्री तथा वीरेन्द्र पाण्डेय), (4) सन्त सुधासार (सम्पादक : वियोगी हरि), (5) सन्त-काव्य (परशुराम चतुर्वेदी), (6) सन्त रैदास : व्यक्तित्व एवं कृतित्व (संगमलाल पाण्डेय), (7) सन्त रैदास (डॉ0 जोगिन्दर सिंह), (8) रैदास दर्शन (सम्पादक : आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद), (9) सन्त रविदास (श्री रत्नचन्द), (10) सन्त रविदास : विचारक और कवि (डॉ0 पदम गुरुचरण सिंह) और (11) सन्त गुरु रविदास वाणी (डॉ0 वेणीप्रसाद शर्मा)।

भाषा-शैली–रैदास की भाषा वस्तुतः तत्कालीन उत्तर भारत की सामान्य जनता के प्रति ग्राह्य भाषा बनकर राष्ट्रीय एकसूत्रता की भाषा बन गयी थी। इनकी भाषा में अवधी एवं ब्रज के शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग हुआ है। इनकी शैली भी प्रसाद गुण सम्पन्न और मुख्यतः अभिधात्मक ही रही है। रैदास के काव्य में भावातिरेक की मात्रा अधिक थी, अतः उनकी रचनाओं में उस अतिरेक को प्रकट करने के लिए प्रतीकात्मक लाक्षणिक शैली अनेक स्थलों पर सहायक सिद्ध हुई है।

●●

प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी। जाकी अंग-अंग बास समानी।।
प्रभु जी तुम घन बन हम मोरा। जैसे चितवत चंद चकोरा।।
प्रभु जी तुम दीपक हम बाती। जाकी जोति बरै दिन राती।।
प्रभु जी तुम मोती हम धागा। जैसे सोनहिं मिलत सोहागा।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा। ऐसी भक्ति करै रैदासा।।

अभ्यास प्रश्न

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्यगत सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(क) प्रभुजी तुम चन्दन ---------- चन्द चकोरा।

(ख) प्रभु जी तुम दीपक ----------मिलत सोहागा।

(ग) प्रभु जी तुम स्वामी ---------- करै रैदासा।

2. रैदास का जीवन परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा **रैदास की साहित्यिक सेवाओं एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।**

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।
2. 'प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी' कविता के आधार पर रैदास की भक्ति पर प्रकाश डालिए।
3. 'जाकी जोति बरै दिन राती' का आशय स्पष्ट कीजिए।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. रैदास किस काल के कवि थे?
2. रैदास की रचनाओं के नाम लिखिए।
3. रैदास के पिता का क्या नाम था?
4. रैदास की माता का नाम लिखिए।
5. रैदास किस कवि के समकालीन थे?

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. 'जैसे चितवत चन्द चकोरा' में कौन-सा अलंकार है?
2. निम्नलिखित के तत्सम रूप लिखिए–
   राती, सोनहिं, मोती।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. संत रैदास किस काल के कवि थे?
   (अ) आदिकाल (ब) **भक्तिकाल**
   (स) रीतिकाल (द) आधुनिक काल
2. सन्त रैदास के गुरु थे—
   (अ) **रामानन्द** (ब) नरिहर्यानन्द
   (स) वल्लभाचार्य (द) इनमें से कोई नहीं
3. संत रैदास का जन्म कब हुआ था?
   (अ) संवत् 1465 (ब) **संवत् 1471**
   (स) संवत् 1480 (द) संवत् 1485
4. संत रैदास की मृत्यु कब हुई थी?
   (अ) **संवत् 1597** (ब) संवत् 1600
   (स) संवत् 1610 (द) संवत् 1620
5. 'जैसे चितवत चन्द चकोरा' में कौन-सा अलंकार है?
   (अ) रूपक (ब) उत्प्रेक्षा
   (स) **अनुप्रास** (द) यमक
6. रैदास किस कवि के समकालीन थे?
   (अ) **कबीर** (ब) सूरदास
   (स) तुलसीदास (द) बिहारी
7. 'प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी' नामक कविता किस कवि की है?
   (अ) रसखान (ब) मीराबाई
   (स) **रैदास** (द) बिहारी
8. रैदास का जन्म-स्थान है—
   (अ) **वाराणसी (मडुवाडीह)** (ब) प्रयाग
   (स) मथुरा (द) अयोध्या

उत्तरमाला : 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (अ) 5. (स) 6. (अ) 7. (स) 8. (अ)

टिप्पणी

कबीरदास

● साखी

(1) **रीझि करि**—मुग्ध होकर। **प्रसंग**—उपदेश, कथा। **भीजि**—भीग।

(2) **पटतरे**—समतुल्य, **हौंस**—अभिलाषा।

(3) **जिनि बीसरि जाइ**—भूल न जाना (अन्यथा तुझे फिर संसार चक्र में भटकना पड़ेगा।)

(4) **भ्रमि-भ्रमि**—अनेक योनियों से भटकता हुआ। **इवै पड़न्त**—इसमें गिर पड़ता है। **उबरंत**—बच जाता है, उद्धार होता है। रूपक अलंकार है। नर का प्रयोग सभी जीवों के लिए किया गया है।

(5) **मैं**—अहं भाव। **प्रेमगली**—आत्मा एवं परमात्मा का प्रेम-मार्ग। **सांकरी**—संकीर्ण या तंग।

(6) **दूजा दुक्ख अपार**—इसके अतिरिक्त सब अपार दुःख के कारण हैं।

(7) **चित्त चमंकिया**—कबीर के हृदय में ज्ञान की ज्योति जग गयी है। **लाइ**—आग रूपक अलंकार है। भगवान् के स्मरण से ही संसार के कष्टों का निवारण हो सकता है।

(8) **झांई पड़ी**—अन्धेरा छाने लगा।

(9) **झूठे सुख**—सांसारिक सुख। **मोद**—प्रसन्नता, आनन्द। **जगत चबैना काल का**—सारा संसार मरणशील है।

(10) **मैं था**—मुझ में अहंकार था। **मैं नाहिं**—भगवान् को प्राप्त करने पर अहंकार नष्ट हो गया। **दीपक देख्या माहि**—अन्तःकरण में ज्ञान के जलते दीपक के प्रकाश में।

(11) **काल्हि परयुँ**—कल-परसों अर्थात् निकट भविष्य में। **भ्वैं**—पृथ्वी।

(12) **रंग**—लगाव, अनुरक्ति।

(13) **इहि औसरि**—इस अवसर पर जब मनुष्य योनि में जन्म हुआ है। **अन्ति पड़ी मुख षेह**—अन्त में मुख पर धूल पड़ती है।

(14) **ढबका**—धक्का।

(15) **बीछड़ियाँ**—बिछड़ जाने पर अर्थात् मृत्यु हो जाने पर। **कांचली भुजंग**—जैसे साँप केंचुली को छोड़कर उसे फिर नहीं धारण करता।

मीराबाई

● पदावली

(1) **मकराकृत**—मछली की आकृति के। **अरुण**—लाल। **रसाल**—रस से पूर्ण, कानों को मधुर प्रतीत होनेवाला। **भाल**—मस्तक। **बछल**—वत्सल।

(2) **म्है**—मैंने। **अमोलक**—अमूल्य। **हरख-हरख**—प्रसन्न होकर।

(3) **छाने**—छिपाकर, आँख बचाकर। **बजन्ता ढोल**—ढोल बजाकर, घोषणा करके, प्रकट रूप में। **मुंहघो**—महँगा। **सुँहघो**—सस्ता। **तराजू तोल**—नाप-जोखकर। **अमोलक मोल**—अत्यधिक मूल्य देकर। **कौल**—प्रतिज्ञा, प्रण।

(4) **राची**—रची हुई। **बांची**—बची। **ब्याल**—सर्प। **काँची**—कच्ची। **जाँची**—प्रतीत हुई।

(5) **कानि**—मर्यादा। **ढिग**—पास। **राजी**—प्रसन्न। **मोई**—मुझे।

रहीम

● दोहा

(1) **उत्तम**—श्रेष्ठ। **प्रकृति**—स्वभाव। **भुजंग**—साँप।
(2) **दून**—दो गुना। **जरदी**—पीलापन। **हरदी**—हल्दी। **चून**—चूना।
(3) **टूटे सुजन**—सज्जन व्यक्ति के नाराज होने पर। **पोइए**—पिरोइये, पिरोना चाहिए। **मुक्ताहार**—(मुक्ता + हार) मोतियों का हार।
(4) **गेह**—घर। **भेद**—रहस्य। **जिय**—हृदय। **ढरि**—ढलकते ही।
(5) **विपति कसौटी**—विपत्तिरूपी कसौटी। **कसौटी**—स्वर्ण परखने का काला पत्थर। **मीत**—मित्र।
(6) **छोह**—प्रेम। **मीनन कौ**—मछलियों का। **तजि**—छोड़कर।
(7) **दीन**—गरीब, दुःखी। **दीन बन्धु**—दीनों के भाई।
(8) **छवि**—रूप। **पर**—दूसरी। **लखि**—देखकर।
(9) **चटकाय**—झटककर। **जुरै**—जुड़ने पर।
(10) **कदली**—केला। **भुजंग**—काला नाग।
(11) **तरुवर**—वृक्ष। **सरवर**—तालाब। **सुजान**—सज्जन।
(12) **तरवारि**—तलवार। **न दीजिए डारि**—निरस्त मत करो, तिरस्कृत मत करो।
(13) **यों**—इस प्रकार। **गोत**—गोत्र। **बड़री**—बड़ी।
(14) **ओछे**—नीच। **नरन**—व्यक्तियों से। **स्वान**—कुत्ता।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

● प्रेम-माधुरी

कूकै लगीं कोइलैं—इस कविता में वर्षा के चित्र प्रस्तुत किये गये हैं; जैसे—कदम्ब के पेड़ पर कोयल का बोलना, वृक्ष के पत्तों का वर्षा के जल से धुलकर निर्मल हो जाना, मेढकों का टर्र-टर्र करना, मोरों का नृत्य करना, भूमि पर हरियाली छा जाना तथा बादलों का झुक-झुककर बरसना। वर्षा का सौन्दर्य वियोगियों के लिए दुःखदायी होता है। इस कविता में भी वर्षा को वियोगिनी के लिए दुःखदायी कहा गया है। **जिय पै जु होइ.....अधिकार**—यह उद्धव के प्रति गोपियों की उक्ति है। **यह संग में लागिये डोलैं सदा**—कृष्ण के प्रति गोपी की उक्ति है। संयोग और वियोग दोनों दिशाओं में गोपी की आँखें दुःखी हैं। **चाल प्रलै कि सु ठानती हैं**—आँखों से इतने आँसू निकलते हैं कि प्रलयकाल के समान जल ही जल हो जाता है। **उझपैं**—खुलना। **पहिले बहु भाँति**—श्रीकृष्ण से मिलन न होने पर गोपी द्वारा सखियों के प्रति उपालम्भ है। **ऊधौ जु सूधो गहो**—गोपियों की उद्धव के प्रति उक्ति है। **सखि आयो वसंत.....**। वसन्त ऋतु में वियोगिनी के दुःख का वर्णन है। **रितून को कंत**—ऋतुराज। **गर सों**—आकंठ, पूरी तरह। **परसों**—(1) आगामी कल से आगे वाला दिन। (2) स्पर्श करूँगी। **बीती जानि औधि**—प्रियतम के आने की अवधि समाप्त हो गयी, यह जानकर ये दो आँखें। मृत्यु के समय आँखें प्रायः खुली रह जाती हैं, उसी पर यह उक्ति है। **जौन-जौन**—जिस-जिस।

मैथिलीशरण गुप्त

● पंचवटी

अन्तिम चार छन्द लक्ष्मण के आत्म-कथन हैं।

चारु—सुन्दर। **अवनि**—धरती। **गन्धवह**—हवा, वायु। **नटी**—नर्तकी। **तुहिन**—ओस। **आर्त**—दुःखी। **आर्य**—बड़े भाई। **नरलोक**—आदमियों की दुनिया।

जयशंकर प्रसाद

● पुनर्मिलन

मनु श्रद्धा पर अपना पूर्ण अधिकार चाहते थे। श्रद्धा के मन में भावी सन्तति के प्रति प्रेम को पल्लवित होते देखकर वे असन्तुष्ट हो श्रद्धा को निराश्रित छोड़कर चले गये। श्रद्धा अपने पुत्र के साथ जीवन-यापन कर रही थी। एक रात्रि उसने स्वप्न में मनु को घायल, मरणासन्न अवस्था में देखा। उस स्वप्न से प्रेरित होकर वह मनु को खोजने के लिए चल पड़ी।

साल रही—चुभ रही है, कसक रही है। **वह पुकार जैसी जलती**—श्रद्धा की पुकार दुःख के दाह से जलती हुई-सी प्रतीत होती थी। **विशृंखल**—अस्त-व्यस्त, बिखरे हुए। **कबरी**—जूड़ा, केशों का समूह। **छिन्न-पत्र मकरंद-लुटी-सी ज्यों मुरझाई हुई कली**—जिसकी पंखुड़ियाँ बिखर गयी हों और मधु लुट चुका हो ऐसी मुरझाई कली के समान श्रद्धा थकी हुई टूटी हुई थी। उपमा अलंकार है।

घुला हृदय बन नीर बहा—वेदना से द्रवित होकर मानो हृदय आँसुओं के रूप में बह निकला। **अनुलेपन**—उबटन, किसी तरल पदार्थ का लेप करना। **स्पन्दन**—कम्पन। **वेदी**—यज्ञवेदी, चबूतरा।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

● दान

पहला अरविन्द—इसके दो अर्थ हो सकते हैं—(1) उपवन में पहला कमल खिला। (2) पहला लाल मुखवाला सूर्य (ज्ञान का प्रतीक) निकला—पहला इसलिए कि इस दिन ही कवि को धर्म का आडम्बरपूर्ण स्वरूप देखकर ज्ञान हुआ है।

अनिन्द्य—प्रशंसनीय, निर्दोष। **सौरभ-वसना**—सुगन्धित से वस्त्र धारण किये। रूपक है। **कानों में प्राणों की कहती**—प्रेम का सन्देश दे रही है। **क्षीण कटि**—पतली कमर वाली (अर्थात् पतली धारा वाली)। **नटी नवल**—नवीन आयु वाली नर्तकी। **पर्यटनार्थ**—घूमने के लिए। **सदया**—दया से पूर्ण। **कृष्णकाय**—काले शरीर वाला। **मृत प्राय**—मृत्यु के समीप। **दूर्वादल**—हरी घास। **मज्जन**—स्नान। **इतर**—दूसरा, अन्य।

सोहनलाल द्विवेदी

● उन्हें प्रणाम

निर्धन के धन, निर्बल के बल, त्यागी, स्वाभिमानी, धीर, फाँसी के फन्दों को चूमने वाले और शोषक साम्राज्यवाद की दीवारें ढहाने वाले नेताओं में कवि का प्रणाम इन पंक्तियों में प्रस्तुत है। **प्रकाम**—यथेष्ट। **टेक**—संकल्प, आश्रय। **वितान**—विस्तार, फैलाव। **मधुकरियाँ**—पके अन्न की भिक्षा। **सरनाम**—प्रसिद्ध। **प्रतियाम**—पहर-पहर पर। **हविष्य**—हवन सामग्री।

हरिवंशराय बच्चन

● पथ की पहचान

पथ की पहचान गीत का मूल भाव यह है कि सफल जीवनयापन हेतु मनुष्य को साहस के साथ जीवन-मार्ग पर अग्रसर होना चाहिए। जीवन की कठिनाइयों से घबराना नहीं चाहिए तथा अन्य महापुरुषों के आदर्शों से प्रेरणा लेनी चाहिए। **चित्त का अवधान** = मनोयोग, निश्चय। **गह्वर** = गड्ढे। **सरित, गिरि, गह्वर** बाधाओं एवं कठिनाइयों के प्रतीक हैं। **बाग, वन, सुमन** सुख के प्रतीक हैं। **कण्टकों के शर** = बाण की तरह चुभनेवाले काँटे, दुःख के प्रतीक। **कोरकों** = कली। **आन** = हठ। **निलय** = कक्ष, स्वप्न का प्रयोग कल्पना के लिए किया गया है। **रास्ते का एक काँटा पाँव का दिल चीर देता** = जीवन की एक कठिनाई कभी-कभी मनुष्य को हताश कर देती है। **आँख में हो स्वर्ग लेकिन पाँव पृथ्वी पर टिके हों** = मन में चाहे कितनी ऊँची कल्पना हो परन्तु कार्य व्यावहारिक होना चाहिए।

नागार्जुन

● बादल को घिरते देखा है

अमल = स्वच्छ। **बिसतन्तु =** कमलनाल के भीतर स्थित कोमल रेशे या तन्तु। **अभिशापित =** बुरे शाप के कारण दुःखी। कवि समय के अनुसार चकवा-चकवी को यह शाप है कि वे रात को साथ नहीं रह सकते। **क्रन्दन** = रुदन, चीत्कार। **शैवाल** = सिवार, पानी में उगनेवाली घास। **प्रणय-कलह** = किलोल, क्रीड़ा। **धनपति कुबेर** = उत्तर दिशा का तथा धन का स्वामी कुबेर। **अलका** = कुबेर की राजधानी का नाम। **मेघदूत** = कालिदास का प्रसिद्ध काव्य जिसमें उन्होंने मेघ को दूत बनाकर उसके द्वारा सन्देश भिजवाया है। **यायावर** = यात्री, घुमक्कड़, जो एक स्थान पर टिक कर न रहता हो। **झंझानिल =** वात्याचक्र, तूफानी हवा। **बर्फानी =** हिमाच्छादित, बर्फ से ढकी। **अलख =** न दिखायी देनेवाला। **उन्मादक =** नशीला। **परिमल =** सुगन्ध। **कुन्तल =** केश। **कुवलय =** नीलकमल। **शतदल रक्त कमल =** सौ पंखुड़ियोंवाला लाल कमल। **लोहित** = लाल। **त्रिपदी** = तिपाही, तीन पैरों वाली छोटी मेज। **निदाग** = दागहीन, स्वच्छ। **मदिरारुण** = मद्यपान के कारण हुई लाल (आँखें)। **उन्मद** = उन्मादपूर्ण, नशे से युक्त। **निर्झरिणी** = तटिनी, कल्लोलिनी, नदी। **रजत रचित मणि खचित** = चाँदी से बनी हुई (हुए) तथा मणियों से जड़े हुए। **द्राक्षासव** = अंगूर की मदिरा। **किन्नर** = स्वर्ग के गायक, गाने बजाने का पेशा करनेवाली एक जाति विशेष, नाग किन्नर आदि।

केदारनाथ अग्रवाल

● अच्छा होता

परार्थी = दूसरे के लिए। **नियति** = प्रकृति, स्वभाव। **दगैल-दागी** = दोषी-कलंकी। **कच्चा** = कमजोर। **दिलदार** = सहृदय। **दिलेर** = हिम्मतवाला। **थाती** = धरोहर। **घाती** = धोखा देनेवाला। **ठगैत** = ठगनेवाला।

● सितार-संगीत की रात

ओठ = ओष्ठ। **बोल** = स्वर। **किलोल** = क्रीड़ा। **हर्ष** = प्रसन्नता। **विचरण** = भ्रमण।

शिवमंगल सिंह 'सुमन'

● युगवाणी

पद-चिह्न = पैर के चिह्न। **मुस्कान** = हँसी। **शबनम** = ओस। **सरिता** = नदी। **किसलय** = नव पल्लव या कोमल पत्ते। **अधरों** = ओष्ठ। **आभा** = सौन्दर्य। **अम्बर** = आकाश। **बिम्ब** = छाया। **सिन्धु** = समुद्र। **जाली चढ़ जायेगी** = विनष्ट हो जायेगी। **लाचारी** = विवशता। **जन्म अकारथ** = व्यर्थ जीवन। **आजादी** = स्वतन्त्रता। **मरघट** = श्मशान घाट। **सर्वहारा** = श्रमिक वर्ग। **कालिख** = कलंक। **घड़ियाँ आएँगी** = अवसर आयेंगे। **सैलाबों** = बाढ़ों।

संत रैदास

प्रभुजी = ईश्वर। **बास =** सुगन्ध। **घन =** बादल। **मोरा =** मयूर। **चकोर =** पपीहा। **बरै =** जले। **सोनहिं =** सोना। **स्वामी** = मालिक। **दासा** = दास, नौकर। **चितवत** = देखना। **समानी** = समाया हुआ है। **ज्योति** = प्रकाश।

●●

संस्कृत

● **प्रथमः पाठः**

वन्दना

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।
वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि।
बलमसि बलं मयि धेहि।
ओजोऽसि ओजो मयि धेहि।।१।।

असतो मा सद् गमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर् मामृतं गमय।।२।।

यतो यतः समीहसे,
ततो नोऽभयं कुरु,
शन्नः कुरु प्रजाभ्यो-
ऽभयं नः पशुभ्यः ।।३।।

नमो ब्रह्मणे त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि।
त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि।
ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि।
तन्मामवतु तद् वक्तारमवतु।
अवतु माम्, अवतु वक्तारम्।।४।।

सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं,
सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये।
सत्यस्य सत्यम् ऋतसत्यनेत्रं,
सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नाः।।५।।

अभ्यास प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

१. भक्तस्य कः स्वरूपः अस्ति?
२. भक्तः कां प्रतिज्ञां करोति?
३. भक्तः ईश्वरं किं याचते?
४. भक्तः कुत्र गन्तुम् इच्छति?
५. ईश्वरस्य के नेत्रे स्तः?

अनुवादात्मक प्रश्न

१. **निम्नलिखित श्लोकों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–**
(अ) तेजोऽसि तेजो ..... मयि धेहि।
(ब) असतो मा ..... गमय।
(स) यतो यतः ..... नः पशुभ्यः।
(द) सत्यव्रतं ..... शरणं प्रपन्नाः।

२. **निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–**
(अ) ब्रह्म को नमस्कार है।
(ब) तुम तेज स्वरूप हो।
(स) सत्य बोलो।
(द) मेरी रक्षा करो।

व्याकरणात्मक प्रश्न

१. **निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम बताइए–**
वीर्यमसि, तेजोऽसि, मामृतं, त्वमेव, सत्यात्मकं, शन्नः।

२. **निम्नलिखित धातु-रूपों में लकार, वचन और पुरुष लिखिए–**
वदिष्यामि, कुरु, अवतु, असि।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. भक्तस्य कः स्वरूपः अस्ति?
(अ) **सत्यः** (ब) असत्यः
(स) कर्मः (द) धर्मः

2. भक्तः ईश्वरं किम् याचते?
   (अ) तेज (ब) बलं
   (स) ओजः (द) **सर्वे**
3. भक्तः कुत्र गन्तुम् इच्छति?
   (अ) असतः सत् प्रति (ब) तमसः ज्योतिः प्रति
   (स) मृत्योः अमरत्वं प्रति (द) **सर्वे**
4. भक्त ईश्वर से याचना कर रहा है—
   (अ) बल (ब) पराक्रम
   (स) सामर्थ्य (द) **उक्त सभी**
5. भक्त सत्य का प्रवर्त्तक किसे माना है?
   (अ) **ईश्वर** (ब) व्यक्ति
   (स) पुजारी (द) इनमें सभा

उत्तरमाला : 1. (अ) 2. (द) 3. (द) 4. (द) 5. (अ)

शब्दार्थ

मयि = मुझ में। **धेहि** = धारण करो। **ओजः** = तेज, प्राण-बल, सामर्थ्य। **वीर्यम्** = बल, शक्ति, पराक्रम। **तेज** = आभा। **असतो** = असत्य से (अस्थिरता, बुराई से)। **मा** = मुझको। **सद्** = सत्य (स्थिरता, भलाई)। **गमय** = ले चलो (ले जाओ)। **तमसः** = अन्धकार से। **ज्योतिः** = प्रकाश। **मृत्योः** = मृत्यु से। **अमृतम्** = अमरता (की ओर)। **यतोयतः** = जिस-जिससे। **समीहसे** = चाहते हो। **ततः** = उससे। **नः** = हमें। **अभयं** = निर्भय। **शम्** = कल्याण। **ब्रह्मणे** = ब्रह्म को। **त्वाम्** = तुमको, आपको। **ऋतम्** = यथास्थिति। **माम्** = मुझको (मेरी)। **अवतु** = रक्षा करें। **वक्तारम्** = वक्ता को (की)। **सत्यव्रतम्** = सत्य का पालन करनेवाले। **सत्यपरम्** = सत्यमार्ग पर तत्पर रहनेवाले। **त्रिसत्यम्** = त्रिकाल सत्य। **त्रिकाल** = (भूत, भविष्य एवं वर्तमान; पृथ्वी, आकाशादि पञ्चभूत)। **सत्यस्य सत्यं** = पंचभूतों के नष्ट होने पर भी सत्य (स्थित)। **नेत्रम्** = प्रवर्तक। **सत्यपरम्** = सत्य ही श्रेष्ठ साधन है जिसका। **सत्** = पृथ्वी, जल, तेज, वायु तथा आकाश। **शरणं** = शरण में। **प्रपन्नाः** = प्राप्त हुए हैं।

●●

● **द्वितीयः पाठः**

सदाचारः

(उत्तम आचरण)

सतां सज्जनानाम् आचारः सदाचारः। ये जनाः सद् एव विचारयन्ति, सद् एव आचरन्ति च, ते एव सज्जनाः भवन्ति। सज्जनाः यथा आचरन्ति तथैवाचरणं सदाचारः भवति। सदाचारेणैव सज्जनाः स्वकीयानि इन्द्रियाणि वशे कृत्वा सर्वैः सह शिष्टं व्यवहारं कुर्वन्ति।

विनयः हि मनुष्याणां भूषणम्। विनयशीलः जनः सर्वेषां जनानां प्रियः भवति। विनयः सदाचारात् उद्भवति। सदाचारात् न केवलं विनयः अपितु विविधाः अन्येऽपि सद्गुणाः विकसन्ति; यथा-धैर्यम्, दाक्षिण्यम्, संयमः, आत्मविश्वासः, निर्भीकता। अस्माकं भारतभूमेः प्रतिष्ठा जगति सदाचारादेव आसीत्। पृथिव्यां सर्वमानवाः स्वं स्वं चरित्रं भारतस्य सदाचार-परायणात् जनात् शिक्षेरन्। भारतभूमिः अनेकेषां सदाचारिणां पुरुषाणां जननी। एतेषां महापुरुषाणाम् आचारः अनुकरणीयः।

सदाचारः नाम नियमसंयमयोः पालनम्। इन्द्रियसंयमः सदाचारस्य मूले तिष्ठति। इन्द्रियसंयमः युक्ताहारविहारेण युक्तस्वप्नावबोधेन च सम्भवति। किं युक्तं किम् अयुक्तम् इति सदाचारेण निर्णेतुं शक्यते।

ये केऽपि पुरुषाः महान्तः अभवन् ते संयमेन सदाचारेणैव उन्नतिं गताः। यः जनः नियमेन अधीते, यथासमयं शेते, जागर्ति, खादति, पिबति च सः निश्चयेन अभ्युदयं गच्छति। सदाचारस्य महिमा शास्त्रेषु अपि वर्णितः–

सर्वलक्षणहीनोऽपि यः सदाचारवान् नरः।
श्रद्धालुरनसूयश्च शतं वर्षाणि जीवति।।
आचाराल्लभते ह्यायुराचाराल्लभते श्रियम्।
आचाराल्लभते कीर्तिम् आचारः परमं धनम्।।

अतएव सदाचारः सर्वथा रक्षणीयः। महाभारते अपि सत्यम् एव उक्तं यत् अस्माभिः सदा चरित्रस्य रक्षा कार्या, धनं तु आयाति याति च, चरित्रं यदि नष्टं स्यात् तर्हि सर्वं विनष्टं भवति।

वृत्तं यत्नेन संरक्षेत्, वित्तमायाति याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो, वृत्ततस्तु हतोहतः।।

अभ्यास प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

१. सदाचारस्य कोऽर्थः?
२. सज्जनाः के भवन्ति?
३. मनुष्याणां भूषणं किमस्ति?
४. केषाम् आचारः अनुकरणीयः?

५. सर्वेषां जनानां प्रिय: क: भवति?
६. विनय: कस्मात् उद्भवति?
७. सदाचारात् के गुणा: विकसन्ति?
८. सदाचारस्य मूले क: तिष्ठति?
९. शतं वर्षाणि क: जीवति?
१०. जगति अस्माकं भारत भूमे: प्रतिष्ठा कस्मात् आसीत्?
११. क: जन: निश्चयेन अभ्युदयं गच्छति?
१२. अस्माभि: कस्य रक्षा कार्या?
१३. महाभारते किम् उक्तम्?

अनुवादात्मक प्रश्न

१. निम्नलिखित अंशों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

(अ) सतां सज्जनानाम् ..... व्यवहारं कुर्वन्ति।
(ब) विनय: हि मनुष्याणां ..... आचार: अनुकरणीय:।
(स) सदाचार: नाम ..... निर्णेतुं शक्यते।
(द) ये केऽपि पुरुषा: ..... अपि वर्णित:।
(य) सर्वलक्षणहीनोऽपि ..... परमं धनम्।
(र) अतएव सदाचार: ..... विनष्टं भवति।
(ल) वृत्तं यत्नेन ..... हतोहत:।

२. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(अ) सज्जनों का आचार ही सदाचार होता है।
(ब) संयम से लोग महान् हो जाते हैं।
(स) विनय सदाचार से उत्पन्न होता है।
(द) विनय मनुष्यों का आभूषण है।
(य) सदा चरित्र की रक्षा करनी चाहिए।
(र) विनयशील लोग सब लोगों के प्रिय होते हैं।
(ल) सज्जन सत् कहते हैं और सत् ही करते हैं।

व्याकरणात्मक प्रश्न

१. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम लिखिए–
तथैवाचरणम्, सज्जन:, अभ्युदय:, युक्ताहार, आचाराल्लभते।

२. निम्नलिखित शब्द-रूपों में विभक्ति और वचन लिखिए–
सज्जना:, सर्वेषां, वशे, सदाचारात्, अस्माकं, भारतस्य।

३. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग या प्रत्यय लिखिए–
अनुभवति, अनुकरणीय:, कृत्वा, सद्गुणा:।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. मनुष्याणां भूषणं किमस्ति?
   (अ) **विनयः** (ब) विद्या (स) बलं (द) बुद्धिः
2. शतं वर्षाणि कः जीवति?
   (अ) श्रद्धालु (ब) अनसूयश्च (स) सदाचारवान (द) **सर्वे**
3. सदाचारात् के गुणाः विकसन्ति?
   (अ) धैर्यम् (ब) संयमः (स) आत्मविश्वासः (द) **सर्वे**
4. सज्जन कौन होते हैं?
   (अ) जो सत्य बोलते हैं (ब) सत्य सोचते हैं (स) सदाचरण करते हैं (द) **उक्त सभी**
5. मनुष्याणां परमं धनं किमस्ति?
   (अ) **आचारः** (ब) धनं (स) धर्मं (द) पौरुषं
6. आचार से क्या प्राप्त होता है?
   (अ) **उन्नतिं** (ब) अवनतिं
   (स) अपयशं (द) एतेषु न कश्चिदपि
7. किसका आचरण अनुकरणीय होता है?
   (अ) दुर्जनों का (ब) **महापुरुषों का**
   (स) राजनेताओं का (द) इनमें से कोई नहीं

उत्तरमाला : 1. (अ) 2. (द) 3. (द) 4. (द) 5. (अ) 6. (अ) 7. (ब)

शब्दार्थ

सद् = अच्छा। **ये** = जो। **तथैवाचरणम्** = तथा + एव + आचरणम् = वैसा ही व्यवहार। **आचरन्ति** = आचरण करते हैं। **सह** = साथ। **स्वकीयानि** = स्वयं की। **शिष्टं** = विनम्र। **सदाचारेणैव** = सदाचार से ही। **मनुष्याणां** = मनुष्यों का। **सदाचारात्** = सदाचार से। **दाक्षिण्यम्** = शिष्टाचार, शालीनता। **अन्येऽपि** = अन्य भी। **उद्भवति** = पैदा होता है। **नियमसंयमयोः** = नियम और संयम का। **युक्ताहार** = युक्त + आहार = अच्छा भोजन। **विहारेण** = विहार से। **युक्तस्वप्नावबोधेन** = सही समय पर सोना और जागना। **अयुक्तम्** = अनुचित। **अभ्युदयः** = उन्नति। **श्रद्धालुः** = श्रद्धा रखनेवाला। **अनसूयः** = दूसरों का दोष न देखनेवाला। **आचाराल्लभते** = आचार से प्राप्त करते हैं। **रक्षणीय** = रक्षा करते हैं। **उक्तम्** = कहा गया है। **आयाति** = आता है। **वृत्तं** = चरित्र। **वित्तम्** = धन। **हतो** = नष्ट हुआ।

● तृतीयः पाठः

पुरुषोत्तमः रामः

(पुरुषों में श्रेष्ठ राम)

इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः।
नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान् धृतिमान् वशी।।१।।

बुद्धिमान् नीतिमान् वाग्मी श्रीमाञ्छत्रुनिवर्हणः।
विपुलांसो महाबाहुः कम्बुग्रीवो महाहनुः।।२।।

महोरस्को महेष्वासो गूढजत्रुररिन्दमः।
आजानुबाहुः सुशिराः सुललाटः सुविक्रमः।।३।।

समः समविभक्ताङ्गः स्निग्धवर्णः प्रतापवान्।
पीनवक्षा विशालाक्षो लक्ष्मीवाञ्छुभलक्षणः।।४।।

धर्मज्ञः सत्यसन्धश्च प्रजानां च हिते रतः।
यशस्वी ज्ञानसम्पन्नः शुचिर्वश्यः समाधिमान्।।५।।

प्रजापति समः श्रीमान् धाता रिपुनिषूदनः।
रक्षिता जीवलोकस्य धर्मस्य परिरक्षिता।।६।।

रक्षिता स्वस्य धर्मस्य स्वजनस्य च रक्षिता।
वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञो धनुर्वेदे च निष्ठितः।।७।।

सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः स्मृतिमान् प्रतिभावान्।
सर्वलोकप्रियः साधुरदीनात्मा विचक्षणः।।८।।

स च नित्यं प्रशान्तात्मा मृदुपूर्वं च भाषते।
उच्चमानोऽपि परुषं नोत्तरं प्रतिपद्यते।।९।।

कदाचिदुपकारेण कृतेनैकेन तुष्यति।
न स्मरत्यपकाराणां शतमप्यात्मशक्तया।।१०।।

सर्वविद्याव्रतस्नातो यथावत् साङ्गवेदवित्।
अमोघक्रोधहर्षश्च त्यागसंयमकालवित्।।११।।

अभ्यास प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

१. रामः कस्मिन् वंशे उत्पन्नः आसीत्?
२. जीवलोकस्य रक्षकः कः आसीत्?
३. रामः गाम्भीर्ये केन समः आसीत्?
४. कः प्रजापतिः समः श्रीमान् आसीत्?
५. रामः वीर्ये केन सदृशः आसीत्?
६. कः साङ्गवेदवित् आसीत्?
७. रामस्य के विशिष्टाः गुणाः आसन्?

अनुवादात्मक प्रश्न

१. निम्नलिखित श्लोकों का ससन्दर्भ हिन्दी-अनुवाद कीजिए–

(अ) इक्ष्वाकुवंशप्रभवो ..... धृतिमान् वशी।
(ब) बुद्धिमान् नीतिमान् ..... महाहनुः।
(स) धर्मज्ञः सत्यसन्धश्च ..... समाधिमान्।
(द) प्रजापति समः ..... परिरक्षिता।
(य) स च नित्यं ..... प्रतिपद्यते।

२. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(अ) राम बड़े धैर्यवान् और कान्तिमान् थे।
(ब) राम मृदुभाषी थे।
(स) राम लोक के रक्षक थे।
(द) वे धनुर्विद्या में निपुण थे।
(य) राम दूसरों का कल्याण करते थे।
(र) राम स्वजनों की रक्षा करते थे।
(ल) श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम थे।

व्याकरणात्मक प्रश्न

(१) निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए–
पुण्यात्मा, नियतात्मा, विशालाक्षो, प्रशान्तात्मा।

(२) निम्नलिखित शब्द-रूपों में विभक्ति एवं वचन लिखिए–
रामात्, रामेभ्यः, रामाणाम्, रामाभ्याम्, रामौ।

(३) जिस प्रकार **मान शब्द** लगाकर बुद्धिमान बना है, उसी प्रकार **मान् प्रत्यय** लगाकर चार शब्द बनाइए।

(४) निम्नलिखित शब्दों में समास-विग्रह कीजिए–
सुललाटः, महाबाहुः, क्रोधहर्षौ, रामलक्ष्मणौ।

बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. 'पुरुषोत्तमः रामः' पाठ कहाँ से संकलित किया गया है?
   (अ) **वाल्मीकि रामायण से** (ब) महाभारत से
   (स) पुराणों से (द) स्मृतियों से
2. रामः कस्मिन् वंशे उत्पन्नः आसीत्?
   (अ) चन्द्र वंशे (ब) **इक्ष्वाकु वंशे**
   (स) यदु वंशे (द) एतेषु न कश्चिदामपि
3. राम वीरता में किसके समान थे?
   (अ) **विष्णु के** (ब) कृष्ण के
   (स) शिव के (द) गणेश के
4. रामः कीदृशं भाषते?
   (अ) कटुः (ब) **मृदुः**
   (स) असत्यः (द) एतेषु न कश्चिदामपि
5. जीवलोकस्यः रक्षकः कः आसीत्?
   (अ) **रामः** (ब) ब्रह्मा
   (स) प्राणिनः (द) राजा
6. रामः वीर्ये केन सदृशः आसीत्?
   (अ) **समुद्र इव** (ब) आकाश इव
   (स) पृथ्वी इव (द) एतेषु न कश्चिदामपि
7. भगवान राम में कौन-कौन से गुण थे?
   (अ) बुद्धि (ब) धर्मज्ञता
   (स) सत्यवादिता (द) **इनमें सभी**

उत्तरमाला : 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (अ) 6. (अ) 7. (द)

शब्दार्थ

इक्ष्वाकुवंशप्रभवः = इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न। **जनैः** = लोगों के द्वारा। **श्रुतः** = सुना गया। **नियतात्मा** = जिसका मन वश में हो। **द्युतिमान्** = कान्तिमान्। **धृतिमान्** = धैर्यवान्। **वशी** = इन्द्रियों को जीतनेवाला। **वाग्मी** = कुशल वक्ता। **श्रीमाञ्छत्रुनिवर्हणः** = श्रीमान् + शत्रु + निवर्हणः = श्रीसम्पन्न एवं शत्रु का नाश करनेवाला। **विपुलांसो** = ऊँचे कन्धोंवाला। **कम्बुग्रीवो** = शंख के समान गर्दनवाला। **महाहनुः** = बड़ी ठोड़ीवाला। **महोरस्को** = विशाल वक्षस्थलवाला। **महेष्वासो** = विशाल धनुषवाला। **गूढजत्रुः** = जिसकी नसें मांस में दबी हों। **अरिन्दमः** = शत्रु का दमन करनेवाला। **विशालाक्षो** = विशाल नेत्रोंवाला। **शुचिः** = पवित्र। **वश्यः** = वशीभूत। **धाता** = सहारा देनेवाले। **निषूदनः** = दबानेवाला। **निष्ठितः** = निपुण। **स्मृतिमान्** = अच्छी स्मृतिवाले। **प्रतिभावान्** = अपने ज्ञान का सदुपयोग करनेवाला। **अदीनात्मा** = स्वतन्त्र। **विचक्षणः** = चतुर, विद्वान्। **अभिगतः** = सहित। **सर्वशास्त्रार्थ तत्त्वज्ञः** = सभी शास्त्रों के अर्थ का ज्ञाता। **नित्यं** = सदा। **नोत्तरं** = उत्तर नहीं देते। **कदाचिदुपकारेण** = एक बार उपकार। **तुष्येति** = सन्तुष्ट हो जाते हैं। **वीर्ये** = पराक्रम में। **साङ्ग** = अंगों सहित। **पृथिवीसमः** = पृथ्वी के समान।